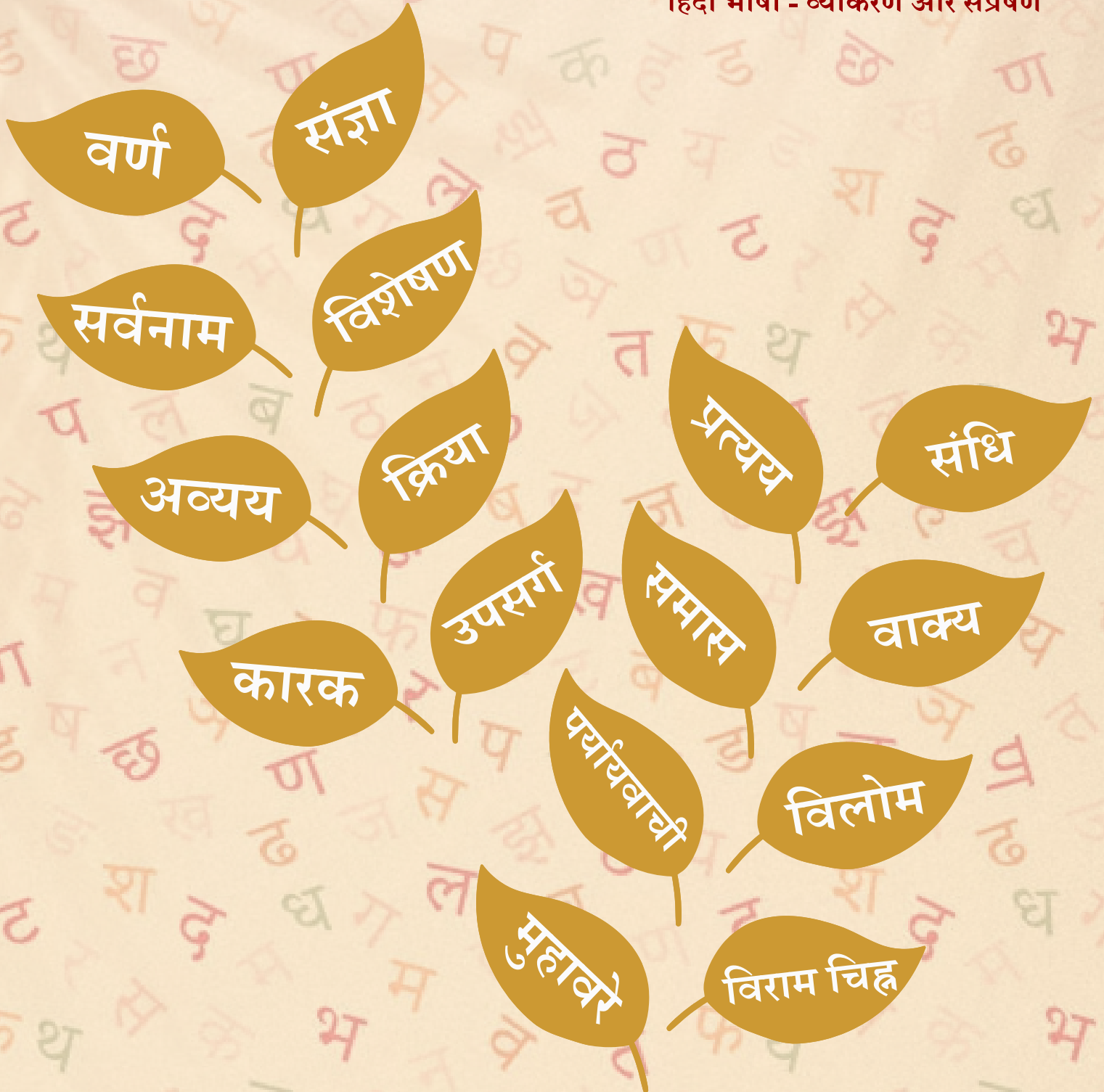


बी. ए. द्वितीय वर्ष
हिंदी मुख्य
(HNDM-205)

हिंदी भाषा - व्याकरण और संप्रेषण



स्वाध्याय का उजास

भारत के संविधान के निर्माता भारतरत्न बाबासाहेब आंबेडकर जी की पुण्य स्मृति में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और डिस्टेंस एजुकेशन काउन्सिल की मान्यता के साथ गुजरात सरकार ने सन् 1994 ई. में अहमदाबाद में गुजरात के एकमात्र मुक्त विश्वविद्यालय 'डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी' की स्थापना की. स्थापना के क्रम में यह देश की सातवीं ओपन यूनिवर्सिटी है. गुजरात राज्य के शैक्षिक गतिविधियों को तीव्रता प्रदान करते हुए यूनिवर्सिटी आज सन् 2023 में सर्टिफिकेट से लेकर पीएच.डी. तक विभिन्न स्तरों के लगभग 58 पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश आमंत्रित कर रही है.

बाबासाहेब आंबेडकर जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर गुजरात सरकार ने यूनिवर्सिटी को एक सुगम शांत स्थान उपलब्ध कराया और आधुनिक सुविधाओं से लैस इमारतों के साथ यूनिवर्सिटी का अपना परिसर – 'ज्योतिर्मय परिसर' विकसित करने में सहायता दी. यूनिवर्सिटी प्रबंध मंडल के प्रत्येक सदस्य ने संपूर्ण समर्पण और लगन के साथ इस यूनिवर्सिटी को एक मुकाम पर पहुँचाने में अपना पूरा पूरा योगदान दिया है और आशा है, आगे भी देते रहेंगे.

कहते हैं, शिक्षा वह निवेश है, जो बिना व्यवधान के निरंतर लाभ प्रदान करता है और लोगों के जीवन में गुणवत्ता का आधान करता है, बढ़ाता है. मैं स्वामी विवेकानंद जी के शिक्षा दर्शन के मूल का यहाँ उल्लेख करना चाहूँगी :

“हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं, जो चरित्र का निर्माण करे, बौद्धिक शक्ति का वर्धन करे, मेधा का विस्तार करे और जिसके माध्यम से प्राप्तकर्ता अपने पैरों पर खड़ा हो सके.”

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी अपने विद्यार्थियों को उनके द्वार पर ऐसी ही गुणवत्तापूर्ण कौशल और वास्तविक जीवन संकेद्रित शिक्षा देने के प्रति कटिबद्ध है. गुजरात राज्य के बृहत्तर जन समुदाय को उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने की दिशा में यूनिवर्सिटी सतत कार्यरत है, जिससे वे आने वाली नित नयी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकें और अपनी पूरी क्षमता के साथ समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए सन्नद्ध हो सकें.

अपने मुख्य आदर्श वाक्य **“स्वाध्यायः परमं तपः”** का अनुसरण करते हुए यूनिवर्सिटी विद्यार्थियों को समृद्ध पाठ्यचर्या उपलब्ध कराने में विश्वास रखती है. इसी आवश्यकता की पूर्ति के क्रम में यूनिवर्सिटी यह नवीन, अधिक सुस्पष्ट पाठ्यसामग्री लेकर उपस्थित हुई है, जिससे विद्यार्थियों की उनके विषय में बेहतर समझ बन सके. इसके माध्यम से यूनिवर्सिटी ने उन विद्यार्थियों के लिए संभावनाओं का विस्तार किया है, जिनके लिए नियमित पारंपरिक शिक्षा पद्धति के द्वार बंद हो चुके हैं. सभी विषयों में विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप स्वाध्याय सामग्री निर्माण के लिए पाठ्यक्रम सलाहकार समिति के सदस्यों से आरंभ करते हुए, स्वाध्याय सामग्री लेखकों, विषय और भाषा परामर्शकों का एक समर्पित दल गठित किया गया है.

आज की डिजिटल दुनिया की गति से एकरूपता रखते हुए यूनिवर्सिटी ने स्वयं का एक डिजिटल मंच – ओमकार-ई (OMKAR-E) विकसित किया है, जो ICT (इन्फॉर्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजीज़) के माध्यम से शिक्षा प्रदान करता है. योग, प्राकृतिक चिकित्सा और भारतीय शास्त्रीय नृत्य जैसे विषयों पर ऑनलाइन सर्टिफिकेट और डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी यूनिवर्सिटी के माध्यम से उपलब्ध कराने की दिशा में हम तेजी से काम कर रहे हैं. शीघ्र ही ये पाठ्यक्रम वैकल्पिक विषय के रूप में चयनित किये जा सकेंगे.

अपने सभी प्रयासों के साथ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी ज्ञान और शिक्षा का प्रमुख केंद्र बनने की प्रक्रिया में है और हम आपको इस पवित्र यज्ञ में सम्मिलित होकर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के समरस समाज निर्माण के स्वप्न को साकार करने के लिए आमंत्रित करते हैं.

प्रो. (डॉ.) अमी उपाध्याय

कुलपति

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी

अहमदाबाद.

बी.ए. द्वितीय वर्ष के लिए हिंदी मुख्य पाँचवें प्रश्नपत्र की स्वाध्याय सामग्री
हिंदी भाषा – व्याकरण और संप्रेषण

प्रधान संपादक :

प्रो. (डॉ.) अमी उपाध्याय

निदेशक, स्कूल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

संपादक :

डॉ. अर्चना मिश्रा

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

सहसंपादक :

डॉ. गिरीश बंजारा

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

डॉ. सुनील परमार

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

विषय समिति :

प्रो. दयाशंकर त्रिपाठी

प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, भाषा भवन, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर, आणंद.

डॉ. अरुणेंद्रसिंह राठौर

प्राचार्य, धर्मेन्द्रसिंहजी आर्ट्स कॉलेज, राजकोट.

डॉ. अर्चना मिश्रा

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

इकाई लेखक :

डॉ. पार्वती गोसाईं

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, आणंद, गुजरात

डॉ. अर्चना मिश्रा

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

डॉ. सुनील परमार

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

परामर्शक :

डॉ. गोवर्धन बंजारा

एसोसिएट प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री एच. के. आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद.

आवरण सज्जा :

सुश्री मार्वी मकवाणा

ग्राफिक डिजाइनर, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

प्रकाशक : कुलसचिव, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

मुद्रक : सरकारी मुद्रणालय, गाँधीनगर

ISBN : 978-93-5598-845-4

© दिसंबर, 2023 डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

सर्वाधिकार सुरक्षित. यह स्वाध्याय सामग्री डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी द्वारा मुक्त दूरस्थ शिक्षा के उद्देश्यों को केंद्र में रखते हुए विद्यार्थियों के स्वाध्याय के लिए तैयार की गयी है, जिसका सर्वाधिकार यूनिवर्सिटी के पास सुरक्षित है. इस स्वाध्याय सामग्री का पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी प्रकार डिजिटली या इलेक्ट्रॉनिकली पुनरुत्पादन डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी की लिखित अनुमति के बिना अवैध माना जायेगा.

हिन्दी भाषा- व्याकरण और सम्प्रेषण

इकाई - 1 हिंदी भाषा की अवधारणा और उसका कालक्रमिक विकास	1-13
इकाई - 2 हिन्दी की वर्ण व्यवस्था- स्वर और व्यंजन	14-22
इकाई - 3 हिन्दी की वर्तनी	23-36
इकाई - 4 हिन्दी में विशम चिह्न	37-55
इकाई - 5 संज्ञा और सर्वनाम: परिभाषा और प्रकार	56-64
इकाई - 6 विशेषण और अव्यय : परिभाषा और प्रकार	65-75
इकाई - 7 क्रिया : परिभाषा और प्रकार	76-93
इकाई - 8 कारक और विभक्ति परिभाषा और प्रकार	94-107

इकाई - 9 उपसर्ग और प्रत्यय	108-124
इकाई - 10 संधि और समास	125-137
इकाई - 11 पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थी शब्द और वाक्यांश के लिए एक शब्द	138-160
इकाई - 12 वाक्य : परिभाषा और प्रकार	162-169
इकाई - 13 संप्रेषण— अवधारणा, प्रकार, माध्यम, तकनीक, चरण और महत्व	170-190
इकाई - 14 मुहावरे तथा लोकोत्तियाँ	191-197
इकाई - 15 पल्लवन एवं संक्षेपण	198-207
इकाई - 16 पत्रलेखन : विविध प्रकार	208-215
इकाई - 17 रचनात्मक लेखन	216-229

पाठ्यक्रम परिचय

(पाठ्यक्रम आरंभ करने से पहले विद्यार्थी कृपया इसे अवश्य पूरा पढ़ें)

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज, एंड सोशल साइंसेज, में बी.ए. द्वितीय वर्ष में हिंदी मुख्य विषय के रूप में पढ़ने वाले आप सब विद्यार्थियों के लिए यह दूसरा पाठ्यक्रम – हिन्दी भाषा- व्याकरण और सम्प्रेषण आपके सामने है।

इसके पहले आपने द्वितीय वर्ष में चौथा पाठ्यक्रम पढ़ा था जिसमें हिंदी की कथेतर गद्य विधाओं से परिचित हुए। इस पाठ्यक्रम में हमने हिन्दी भाषा- व्याकरण और सम्प्रेषण आपके अध्ययन के लिए रखा है। यह पाठ्यक्रम कुल १७ इकाइयों में विभाजित है। ये पूरा पाठ्यक्रम व्याकरण पर आधारित है। जिससे विद्यार्थी हिन्दी भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान हो सके और विद्यार्थी लिखने और बोलने के लिए आत्मविश्वास के साथ साधिकाइ हिन्दी भाषा का प्रयोग कर सकें। व्याकरण से विद्यार्थी विविध ध्वनियों का ज्ञान प्राप्त कर सकें तथा उनकी सृजनात्मक प्रवृत्ति का विकास हो सके। उनमें ऐसी योग्यता पैदा हो जिससे वे भाषा की अशुद्धता को भी समझ सकें एवं उनमें भाषा को पढ़ने की शक्तिका विकास हो सके।

पाठ्यक्रम की इकाइयों का लेखन कई एक अनुभवी प्राध्यापकों ने किया है। ये इकाइयाँ वैसी ही हैं, जैसे पाठ्यपत्रिक विश्वविद्यालयों में होने वाले व्याख्यान। जैसे कुछ व्याख्यान बहुत अच्छे लगते हैं और तुरंत समझ में आ जाते हैं, वैसे ही कुछ इकाइयाँ एक बार पढ़ते ही समझ में आ जाएँगी; कुछ को एक से अधिक बार पढ़ना पड़ेगा और कुछ ऐसी भी हो सकती हैं जिन्हें पढ़ने से संतुष्टि न मिले अधूरापन लगे, कुछ प्रश्न खड़े हो जाएँ। जब आप उन प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयत्न कीजियेगा, तब आपकी वास्तविक अध्ययन यात्रा शुरू होगी। जिन प्रश्नों के उत्तर आप स्वयं खोजेंगे, वे ही आपको हमेशा के लिए याद हो जाएँगे और आपके अध्ययन का वास्तविक फल होंगे। आपकी इस अध्ययन यात्रा में यूनिवर्सिटी सदा आपके साथ है। आप अध्ययन संबंधी अपने किसी भी प्रश्न को नीचे लिखी ईमेल आई डी पर भेज सकते हैं। आपको निश्चय ही आपके प्रश्नों के जवाब, समस्याओं का समाधान मिलेगा।

तो अपना अध्ययन आरंभ करें! खूब सारी शुभकामनाएँ!!

बी.ए. हिंदी अध्ययन के लिए संपर्क ईमेल आई डी : baou.ba.hindi@gmail.com

इकाई 1 : हिंदी भाषा की अवधारणा और उसका कालक्रमिक विकास

रूपरेखा

- 1.1 उद्देश्य
- 1.2 प्रस्तावना
- 1.3 हिंदी भाषा का स्वरूप
- 1.4 हिंदी भाषा की अवधारणा
- 1.5 हिंदी भाषा का कालक्रमिक विकास
- 1.6 हिंदी के विविध रूप
- 1.7 सारबिंदु
- 1.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी
- 1.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

1.1 उद्देश्य

आप द्वितीय वर्ष बी.ए.के पंचम् प्रश्नपत्र के खंड-१ की पहली इकाई पढ़ने जा रहे हैं। इस इकाई में हिंदी भाषा की अवधारणा और उसके कालक्रमिक विकास के बारे में बताया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- (1) हिंदी भाषा से परिचित हो सकेंगे.
- (2) हिंदी भाषा की अवधारणा से परिचित हो सकेंगे.
- (3) हिंदी भाषा की उपभाषाएँ और उपभाषाओं के अंतर्गत आनेवाली क्षेत्रीय बोलियों से परिचित हो सकेंगे.
- (4) हिंदी भाषा के कालक्रमिक विकास से परिचित हो सकेंगे.
- (5) हिंदी भाषा के विविध रूप को समझ सकेंगे.

1.2 प्रस्तावना

द्वितीय वर्ष बी.ए. के पंचम् प्रश्नपत्र संबंधित खंड-1 की यह पहली इकाई है। इस इकाई में आप हिंदी भाषा की अवधारणा और कालक्रमिक विकास का अध्ययन

करेंगे. “जिसे हम हिंदी भाषा कहते हैं, उसका भाषायी स्वरूप क्या है? यह तो आप जानते हैं कि अंग्रेजों की भाषा अंग्रेजी है, फ्रांसीसियों की फ्रेंच, महाश्व की भाषा मराठी है और पंजाब की पंजाबी. हिंदी किसकी भाषा है? हिंदी प्रदेश की या हिंदुस्तान की? आप यह भी जानते हैं कि हिंदी प्रदेश भी निश्चित रूप से परिभाषित नहीं किया जा सकता. पश्चिम में राजस्थान से लेकर पूरब में बंगाल की सीमा तक, उत्तर में हिमालय की तराईयों से दक्षिण में महाश्व की सीमा तक कई राज्यों में हिंदी बोली जाती है. लेकिन इन प्रदेशों में आम आदमी अपनी-अपनी बोलियों का भी व्यवहार करते हैं. क्या वे बोलियाँ ही उनकी अपनी भाषा है? फिर हिंदी का अपना स्थान क्या है? अक्सर हिंदी के विद्वानों के सामने कुछ जटिल प्रश्न उपस्थित होते हैं- हिंदी क्या है, उसका मानक स्वरूप क्या है. उसका क्षेत्र कौन-सा है, उसके बोलने वाले कौन लोग हैं आदि. वही हिंदी है जिसके माध्यम से यह पुस्तक लिखी गई है, या जिस भाषा में हम फिल्में देखते हैं अथवा दूरदर्शन के कार्यक्रम देखते हैं, वही हिंदी है जिसमें साहित्य रचना होती है और जिसमें लोग पत्र-पत्रिकाएँ तथा अखबार पढ़ते हैं.”

1.3 हिंदी भाषा का स्वरूप

हिंदी शब्द की उत्पत्ति इरानी भाषा से मानी जाती है. इरानियों ने भारत पर आक्रमण किया था तब सिन्धु नदी के पूरब का जो क्षेत्र था उसे उन्होंने हिंदुस्तान और वहाँ की बोली जानेवाली भाषा को हिंदुस्तान हिंदी कहा था. क्योंकि उन्होंने सिन्धु नदी को इसलिए हिन्दू कहा था कि इरानी भाषा में ‘स’ के स्थान पर ‘ह’ का प्रयोग होता है. इसलिए सिन्धु न कहकर हिन्दू कहा.

हिंदी भाषा की उत्पत्ति कैसे हुई इस विषय में विद्वानों में मतभेद है. सर्वप्रथम आचार्य किशोरीदास बाजपेयी ने अपनी पुस्तक ‘हिंदी शब्दानुशासन’ में हिंदी को लेकर अपना विचार व्यक्त किया. उनका मानना है कि हिंदी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने ‘हिंदी साहित्य का इतिहास’ पुस्तक में इसे पाकृत की अंतिम अपभ्रंश अवस्था कहा है. रामविलास शर्मा ने ‘भाषा और समाज’ नामक पुस्तक में इसे जनपदी बोलियों से विकसित माना है.

सर्वप्रथम रूप से हिंदी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से मानी जाती है. संस्कृत भाषा हमारे देश की सबसे पुरानी भाषा है. इसे आर्यभाषा, देवभाषा या देववाणी भी कहते हैं. और इसी से हिंदी भाषा का स्वरूप निर्मित हुआ है.

भाषाविदों ने हिंदी भाषा का स्वरूप निर्धारण करने में संस्कृत जो आर्यभाषा के रूप में जानी जाती है इनको तीन भागों में विभाजित किया है-

- (1) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा
- (2) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा
- (3) आधुनिक भारतीय आर्यभाषा

(1) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा का समय 1500 ई.पू.से लेकर 500 ई.पू.के बीच है। इसमें भाषा के दो रूप मिलते हैं-(1) वैदिक संस्कृत (2) लौकिक संस्कृत। संस्कृत का यह रूप वैदिक संहिताओं, आरण्यकों तथा प्राचीन उपनिषदों आदि में मिलता है।

(2) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं का समय 500 ई.पू. से 1000 ई.तक माना गया है। मध्ययुगीन भारतीय आर्यभाषा का विकास तीन उत्थानों में हुआ-(1) पाली (2) प्राकृत

(3) अपभ्रंश

(3) आधुनिक भारतीय आर्यभाषा

आधुनिक भारतीय आर्यभाषा का समय 1000 ई.से आज तक का माना गया है। हिंदी भाषा अपभ्रंश के छ भेद किये हैं-

विकसित होनेवाली भाषा

1.	शौरसेनी अपभ्रंश-	पश्चिमी हिंदी- (जैसे- खड़ीबोली, ब्रज, हरियाणी, बुन्देली, कन्नोजी) राजस्थानी (जैसे- मेवाती, मारवाड़ी, मालवी, जयपुरी) गुजराती
2.	पैशाची अपभ्रंश	पंजाबी, लहंदा
3.	ब्राचड अपभ्रंश	सिन्धी
4.	खस अपभ्रंश	पहाड़ी- (जैसे- पश्चिमी पहाड़ी, मध्यवती पहाड़ी)
5.	महाराष्ट्री अपभ्रंश	मराठी
6.	अर्ध मागधी अपभ्रंश	पूर्वी हिंदी (जैसे- अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी)
7.	अर्ध मागधी अपभ्रंश	पूर्वी हिंदी (जैसे- अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी)
8.	मागधी अपभ्रंश	बिहारी (जैसे- मगही, मैथिली, भोजपुरी) बंगला उड़िया असमिया

हिंदी भाषा का स्वरूप 5 उपभाषाओं और 18 बोलियों से निर्मित होता है। हिंदी भाषा खड़ीबोली का मानक रूप है।

❖ बोध प्रश्न-

सही/गलत बताइए।

1. प्राचीन भारतीय आर्यभाषा का समय 1500 ई.पू. से लेकर 500 ई.पू. के बीच है।
2. गुजराती शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित भाषा है।
3. उड़िया खस अपभ्रंश से विकसित होने वाली भाषा है।
4. पंजाबी पैशाची अपभ्रंश से विकसित होने वाली भाषा है।
5. हिन्दी भाषा की पाँच उपभाषाएँ हैं।

1.4 हिंदी भाषा की अवधारणा

विद्यार्थी कई बार यह सोचते हैं कि हिंदी क्या सिर्फ खड़ीबोली है? या अवधी, ब्रज जैसी बोलियों को भी इसमें शामिल किया जाता है? राजस्थानी क्या है? राजस्थानी के कवियों, साहित्यकारों की रचनाओं का अध्ययन हम हिंदी साहित्य में भी करते हैं। जैसे- पृथ्वीराज रासो की भाषा डिंगल है जिसमें राजस्थानी और मुख्य रूप से मारवाड़ी के शब्दों की प्रचुरता है। तो क्या डिंगल को भी हम हिंदी भाषा मानें? अगर डिंगल राजस्थानी और मारवाड़ी को हिंदी में मानें तो फिर राजस्थानी क्यों अलग से है? ये कई सारे प्रश्न विद्यार्थी के मन में आते हैं हिंदी है क्या? इसके बारे में हम यहाँ चर्चा करेंगे कि हिंदी शब्द और हिंदी भाषा का अर्थ क्या है?

आज हिंदी शब्द का तीन अर्थों में प्रयोग होता है। इसे समझना बहुत जरूरी है। कई प्रसंगों में राजस्थानी को हिंदी में सम्मिलित कर लिया जाता है जबकि कई जगह राजस्थानी को अलग माना जाता है। जब हम आदिकाल और मध्यकाल की बात करते हैं तो मीरा की रचनायें तो हिंदी साहित्य में हैं लेकिन विजयदान देवा और ताशप्रकाश जोशी की मारवाड़ी या राजस्थानी की रचनाएँ हिंदी साहित्य से बाहर मानी जाती हैं। तो कई ऐसे प्रश्न हैं जिसकी चर्चा करेंगे।

हिंदी के तीन अर्थ कौन-कौन से हैं। सबसे पहले हिंदी का अर्थ व्यावहारिक है। ये सबसे सामान्य और विस्तृत अर्थ है। ये अर्थ हिंदी साहित्य के इतिहास के अनुसार निर्धारित किया गया है। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा और बाबू श्यामसुन्दरदास ने माना है कि हिंदी प्रदेश में बोली जानेवाली पांच उपभाषाओं की १८ बोलियों एवं उर्दू और दखिनी भाषा का समाहार भी हिंदी में है। यह हिंदी का सबसे व्यापक अर्थ है। क्योंकि इसमें दखिनी के साथ-साथ हिंदी को भी और उर्दू को भी शामिल कर लिया गया। दूसरा अर्थ भाषाविज्ञान में 'पश्चिमी हिंदी' और 'पूर्वी हिंदी' को ही हिंदी मानते हैं। डॉ. श्यामसुन्दरदास और धीरेन्द्र वर्मा ने कहा है कि उत्तर प्रदेश के दस राज्य हैं जिन्हें हिंदी प्रदेश कहा जाता है उन दस राज्यों में बोली जानेवाली १७ बोलियों को हिंदी में शामिल किया जाना चाहिए। इस प्रकार गियर्सन ने राजस्थानी, पहाड़ी और बिहारी भाषाओं को भी हिंदी से अलग माना। उनका मानना था कि पश्चिमी हिंदी की पांच बोलियाँ- खड़ीबोली, ब्रज, हरियाणी, बुन्देली, कनौजी और पूर्वी हिंदी की तीन बोलियाँ- अवधी, बधेली, छत्तीसगढ़ी कुल मिलाकर आठ बोलियों को भी हिंदी में शामिल किया जाना चाहिए।

तीसरा अर्थ है खड़ीबोली साहित्यिक हिंदी या परिनिष्ठित हिंदी वर्तमान में सबसे अधिक प्रचलित है। जब हम मानक या परिनिष्ठित हिंदी की बात करते हैं तो उस हिंदी में हम न तो ब्रज और अवधी को शामिल करते हैं न ही उसमें कनौजी, बुन्देली आदि भाषाओं को शामिल करते हैं। व्याकरणसम्मत- परिनिष्ठित शुद्ध रूप जो वर्तमान में हिंदी प्रदेशों की सरकारी भाषा, भारत की राजभाषा तथा देश के ४२% व्यक्तियों की मातृभाषा है एवं अन्य ३०% व्यक्ति इसका व्यावहारिक ज्ञान रखते हैं। यही देश की मानक/परिनिष्ठित/राष्ट्रभाषा एवं सम्पर्क भाषा के रूप में प्रतिष्ठित है।

इस क्षेत्र की खड़ीबोली को आधार बनाकर उसका एक व्याकरण बनाया गया। उसे बनाकर शुद्ध किया गया, उसके नियम बनाये गये। इन नियमों में बंधी हुई भाषा हिंदी कहलायी। जो हिंदुस्तान के १० राज्यों में सरकारी भाषा के रूप में प्रचलित है। वह भाषा जो भारत की राजभाषा है। शिक्षा, साहित्य और समाचारपत्रों की भाषा है वही भाषा हिंदी है। वर्तमान में हिंदी के लिए खड़ीबोली का प्रयोग किया जा रहा है। इसे ही मानक या परिनिष्ठित हिंदी कहते हैं।

हिंदी क्षेत्र- हिंदी साहित्य के इतिहास के अनुसार-हिंदी उस विस्तृत भू-भाग की भाषा है जो पश्चिम में जेसलमेर, उत्तर-प्रदेश में शिमला से लेकर नेपाल के पूर्वी छोर के पहाड़ी प्रदेश में भागलपुर, द.पू.में रायपुर तथा द.प्र.में खंडवा के बीच में फैला हुआ है। इस भू-भाग में ५ विभाषाएँ, १८ बोलियाँ एवं उनकी उपबोलियाँ बोली जाती हैं।

हिंदी के ये तीनों अर्थ अलग-अलग आधारों पर निर्धारित किये गये हैं। वर्तमान में राजभाषा के रूप में हम खड़ीबोली के व्याकरण सम्मत रूप को लेते हैं लेकिन हिंदी साहित्य के इतिहास के अनुसार देखें तो हिंदी में राजस्थानी, पहाड़ी, बिहारी भी शामिल है, लेकिन व्यावहारिकता को देखें तो आज के परिदृश्य में खड़ीबोली के व्याकरणसम्मत रूप को भी हिंदी भाषा के रूप में प्रयोग करते हैं।

❖ बोध प्रश्न

- सही/गलत बताइए।
- (1) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के दो रूप हैं।
- (2) पंजाबी ब्राचड अपभ्रंश से विकसित हुई है।
- (3) उड़िया मागधी अपभ्रंश से विकसित हुई है।
- (4) पश्चिमी हिंदी की चार बोलियाँ हैं।
- (5) मराठी महाशष्टी अपभ्रंश से विकसित हुई है।

1.5 हिंदी भाषा का कालक्रमिक विकास-

वैदिक काल से हिंदी का इतिहास आरम्भ होता है। उससे पहले आर्यभाषा का स्वरूप क्या था, वह कल्पना का विषय है। भारत में आर्यों के आने के बाद भारतीय

आर्यभाषा का इतिहास शुरू होता है। भारतीय आर्यभाषा की इस लम्बी आयु को तीन कालों में बाँटा जाता है-

- (1) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा
- (2) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा
- (3) आधुनिक भारतीय आर्यभाषा

(1) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा-

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा का समय 1500 ई.पू. से लेकर 500 ई.पू. तक का है। इसमें दो रूप मिलते हैं- (1) वैदिक संस्कृत (2) लौकिक संस्कृत

(1) वैदिक संस्कृत- वैदिक संस्कृत को प्राचीन संस्कृत, छन्दस, आदि नामों से पुकारा गया है। संस्कृत का यह रूप वैदिक संहिताओं, आरण्यकों तथा प्राचीन उपनिषदों में मिलता है। संहिताओं की रचना विभिन्न कालों एवं स्थानों में उनके ऋषियों द्वारा हुई है और बहुत दिनों की मौखिक परम्परा रही है। वैदिक संस्कृत की कुछ सामान्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- मूल भारोपीय भाषा की अपेक्षा इसमें स्वर कम हो गये हैं।
- वैदिक संस्कृत में समास से समस्त पद प्रायः दो शब्दों के ही मिलते हैं।
- इसमें स्वरघात के तीन नियम निश्चित कर दिये गये हैं- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित
- वैदिक संस्कृत में भाषा के तीन रूप मिलते हैं- उत्तरी, मध्यदेशीय और पूर्वी।

(2) लौकिक संस्कृत- लौकिक संस्कृत को क्लेसिकल संस्कृत भी कहते हैं। भाषा के अर्थ में संस्कृत शब्द का प्रथम प्रयोग वाल्मीकि रामायण में मिलता है। लौकिक संस्कृत का मूल आधार उत्तरी बोली थी, क्योंकि वही प्रामाणिक मानी जाती है। लौकिक संस्कृत साहित्यिक भाषा है। प्रसिद्ध व्याकरणशास्त्री आचार्य 'पाणिनि' ने पाँचवीं-छठी सदी के पूर्व में उसके आदर्श रूप के आधार पर साहित्यिक संस्कृत के व्याकरण 'अष्टाध्यायी' की रचना की। लौकिक संस्कृत की कुछ सामान्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- लौकिक संस्कृत भाषा बहुत दिनों तक साहित्य, दर्शन तथा धर्म की भाषा बनी रही।
- लौकिक संस्कृत भाषा के तीन रूप थे- उदीच्य, मध्यदेशीय एवं प्राच्य
- इसमें शब्द रूपों की बहुलता में बहुत कुछ एकरूपता आ गयी है।
- लौकिक संस्कृत में समास के नियमों का प्रायः कठोरता से पालन होता है।

(2) मध्यकालीन आर्यभाषाएँ- मध्यकालीन आर्यभाषाओं का समय 500 ई.पू. से 1000 ई.पू. तक माना गया है। मध्यकालीन आर्यभाषा का विकास तीन उत्थानों में हुआ है-

- (1) प्रथम उत्थान- पालियुग
- (2) द्वितीय उत्थान- प्राकृत युग

(3) तृतीय उत्थान- अपभ्रंश युग

(1) प्रथम उत्थान- पालियुग-पालि युग का समय 500 ई.पू.से 1ई.पू. तक माना गया है। इस युग में भी बोलियों का भेद पाया जाता है। इस सम्बन्ध में महाशज अशोक की धर्म लिपियों से पूर्व का हमें कोई निश्चयात्मक प्रमाण नहीं मिलता। इस धर्म लिपियों की भाषा देखने से ज्ञात होता है कि उस समय उत्तर भारत की भाषा में कम-से-कम तीन भिन्न-भिन्न रूप अवश्य थे- (1) पूर्वी (2) पश्चिमी और (3) पश्चिमोत्तरी

कोई दक्षिणी रूप भी था या नहीं इस सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। इस काल की साहित्यिक भाषा 'पालि' कदाचित् शौरसेनी की किसी प्राचीन बोली के आधार पर बनी थी।

(2) द्वितीय उत्थान- प्राकृत युग- प्राकृत युग का समय 1 ई.से 500 ई. तक का माना गया है। त्रेगों की बोली में समय के अनुसार बराबर परिवर्तन होता रहा और अशोक की धर्म लिपियों की भाषाएँ ही बाद में 'प्राकृत' के नाम से प्रसिद्ध हुईं। मध्यकाल में संस्कृत के साथ-साथ इन प्राकृतों का भी व्यवहार होने लगा। संस्कृत नाटकों में भी इन्हें स्वतंत्रता-पूर्वक बराबर पदवी मिलने लगी।

साहित्यिक प्राकृत भाषाओं में मुख्य पांच प्रधान हैं-

- (1) शौरसेनी प्राकृत
- (2) मागधी प्राकृत
- (3) अर्ध मागधी प्राकृत
- (4) पैशाची प्राकृत
- (5) महाशष्टी प्राकृत

(3) तृतीय उत्थान- अपभ्रंश युग- अपभ्रंश युग का समय 500 ई.से 1000 ई. तक माना गया है। मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा का अंतिम रूप 'अपभ्रंश' के रूप में दिखाई पड़ता है। अपभ्रंश का विकास प्राकृतकालीन बोलचाल की भाषा से हुआ है, और इस रूप में उसे प्राकृत और आधुनिक आर्यभाषाओं के बीच की कड़ी कहा जाता है। अपभ्रंश अर्थात् बिगड़ी हुई भाषा। अपभ्रंश शब्द का प्राचीनतम प्रयोग अबतक की जानकारी के आधार पर निम्नलिखित ग्रन्थों में मिलता है-

- (1) पतंजलि का 'महाभाष्य'
- (2) भरतमुनि का 'नाट्यशास्त्र'
- (3) कालिदास का 'विक्रमोर्वशीयम्'
- (3) आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ-

(1) सिन्धी- 'सिन्धी' शब्द का सम्बन्ध संस्कृत शब्द 'सिन्धु' से है। सिन्धु नदी के दोनों किनारों पर सिन्धी भाषा बोली जाती है। यह आज पाकिस्तान के सिंध प्रदेश की भाषा है। सिन्धी की मुख्यतः ५ बोलियाँ- विचोली, सिराइकी, थरेली, लासी, लाड़ी हैं। सिन्धी

की अपनी लिपि का नाम 'लंडा' है, किन्तु यह गुरुमुखी तथा फारसी-लिपि में भी लिखी जाती है। 'साहजी रिसालों' प्रसिद्ध ग्रन्थ है जो गुरुमुखी लिपि में लिखा गया है।

(2) लहँदा- यह पंजाबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है- सूर्यास्त की दिशा अर्थात् पश्चिम। पश्चिम पंजाब इसका क्षेत्र है जो आज पाकिस्तानी प्रदेश है। लहँदा और पंजाबी भाषा की सीमाएं ऐसी मिली हुई हैं कि दोनों में भेद करना कठिन है। लहँदा की भी सिन्धी की भाँति अपनी लिपि 'लंडा' है, जो कश्मीर में प्रचलित शाश्दा-लिपि की ही एक उपशाखा है। 'मुल्तानी' लहँदा की बोली है।

(3) पंजाबी- पंजाबी शब्द फारसी का है जिसका अर्थ है-पाँच नदियों का समूह। मुख्यतः पंजाब में बोली जाने के कारण इसका नाम पंजाबी है। इस भाषा से आधुनिक लेखक मोहनसिंह और लेखिका अमृता प्रीतम हैं। पंजाबी की प्रमुख लिपि 'गुरुमुखी' है।

(4) गुजराती- गुजराती गुजरात प्रदेश की भाषा है। 'गुजरात' शब्द का सम्बन्ध 'गुर्जर' जाति के लोगों से है। 'नागर' अपभ्रंश से इनका विकास हुआ। यह गुजरात से निकटवर्ती अन्य देशी राज्यों में बोली जाती है। पाश्चिमीयों के द्वारा अपनायी जाने के कारण गुजराती पश्चिम भारत में व्यवसाय की भाषा हो गई है। इस भाषा के प्रमुख साहित्यकार नरसिंह महेता, पन्नालाल पटेल, उमाशंकर जोशी, रघुवीर चौधरी, प्रेमानंद आदि हैं।

(5) राजस्थानी- राजस्थानी राजस्थान प्रदेश की भाषा है। राजस्थानी का प्राचीन साहित्य माझवाड़ी में है। राजस्थान के क्षेत्र में रचना का मुख्य माध्यम हिंदी है। इसकी मुख्य बोलियों में मेवाती, मालवी, जयपुरी और माझवाड़ी हैं।

(6) पश्चिमी हिंदी- पश्चिमी हिंदी का क्षेत्र मध्यप्रदेश है। इसकी मुख्य बोलियाँ खड़ीबोली, ब्रज, हरियाणी, बुन्देली, कन्नोजी, निमाड़ी हैं।

(7) पूर्वी हिंदी- पूर्वी हिंदी का क्षेत्र पश्चिमी हिंदी और बिहारी के बीच में पड़ता है। यह कुछ बातों में पश्चिमी हिंदी से मिलती है और कुछ में बिहारी हिंदी भाषा से। इसकी मुख्य बोलियाँ अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी हैं।

(8) बिहारी- बिहारी बिहार प्रान्त की भाषा है। बिहारी का उद्भव मागधी अपभ्रंश से हुआ है। मागधी अपभ्रंश के बोले जाने वाले भूमिभाग में ही आज कल बिहारी बोली जाती है। इसकी मुख्य बोलियाँ भोजपुरी, मगही, मैथिली हैं। बिहार प्रान्त में शिक्षा का माध्यम साहित्यिक हिंदी ही है। बिहारी में 'भोजपुरी' बोली बहुत प्रचलित है।

(9) उड़िया- उड़िया उड़ीसा (ओड़िसा) प्रदेश की भाषा है। इस युग के शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों के आधार पर ज्ञात होता है कि १३ वीं सदी तक उड़िया बोली भाषा का रूप धारण कर चुकी थी। उड़िया साहित्य विशेषतः कृष्ण सम्बन्धी है। इसकी प्रमुख बोली गंजामी, संभलपुरी, भत्री आदि हैं।

(10) बंगाली- बंगाली बंगाल प्रदेश की भाषा है। बंगाली भाषा गंगा के उत्तर के मैदानों में बोली जाती है। साहित्यिक बंगाली का विकास पश्चिमी बंगाल से हुआ है। बंगाल

साहित्य आधुनिक भाषाओं में सबसे अधिक है। बंगला प्राचीन देवनागरी से विकसित बंगला लिपि में लिखी जाती है।

(11) मराठी- मराठी की उत्पत्ति महाराष्ट्री अपभ्रंश से हुई है। इसका क्षेत्र बंबई एवं बराक का प्रदेश तथा पूना और नागपूर के आसपास का भू-भाग है। मराठी की साहित्यिक परम्परा काफी पुरानी है। संत नामदेव और तुकाराम इसके प्रसिद्ध कवि हैं।

(12) असमी- असमी असम प्रदेश की भाषा है। यह उड़िया की भाँति बंगला के समीप होते हुए अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखती है। इसमें कृष्ण संबंधित उत्तम रचनाएँ हैं।

❖ बोध प्रश्न –

- रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए।

- (1) लौकिक संस्कृत कोसंस्कृत कहते हैं। (क्लेसिकल/ प्राचीन संस्कृत)
- (2) महाभाष्य के रचयिताहैं। (कालिदास/ पतंजलि)
- (3) उमाशंकर जोशी..... भाषा के साहित्यकार हैं। (हिंदी/ गुजराती)
- (4) अवधी..... हिंदी की बोली है। (पूर्वी/ पश्चिमी)
- (5) मराठीअपभ्रंश से विकसित हुई। (शौरशेनी/ महाराष्ट्री)

1.6 हिंदी के विविध रूप

(1) बोलचाल की भाषा- जिस भाषा का प्रयोग दैनिक जन-जीवन के कार्य-कलापों और गतिविधियों के लिए होता है, उसे बोलचाल की भाषा कहते हैं। यह भाषा व्यक्ति अपने सामान्य जीवन के परिवेश से सीख लेता है। इसके लिए विशेष- सीखने और अभ्यास की आवश्यकता नहीं होती। यह व्यक्तिकी प्रथम भाषा अथवा मातृभाषा होती है इसे दूसरे रूप में सामान्य भाषा भी कह सकते हैं। “ जिस देश में अनेक बोलियाँ और भाषाएँ हो, वहाँ एक सामान्य भाषा सब को जोड़ने का काम करती है। हिंदी बनी-बनायीं संसंग भाषा है और भारतीय संघ की सम्पर्क भाषा है। राष्ट्रीय भाषाएँ अनेक हैं, सर्व सुलभ भाषा हिंदी ही है। ”

(2) मानक भाषा अथवा परिनिष्ठित भाषा- “ भाषा का ऐसा रूप जिसका प्रयोग उसके अपने प्रयोक्तों के अतिरिक्त अन्य भाषा-भाषी भी एक आदर्श मानकर करें, मानक भाषा कहलाता है। ” भाषा के मानक रूप का किसी भी सरकारी पत्र-व्यवहार, शिक्षा कामकाज तथा सामाजिक आदान-प्रदान में समान स्तर पर किए गए प्रयोगों में देखा जा सकता है। मानक भाषा व्याकरण सम्मत, परिनिष्ठित, शुद्ध तथा परिमार्जित होती है।

मानक भाषा का उद्देश्य यह होता है कि किसी एक भाषा को लिखने-बोलने वाले लोग उस भाषा को एक ही तरीके से लिखें, बोलें तथा जिससे एक-सी भाषा का प्रचार-प्रसार हो। जैसे- ‘उसको’ या ‘उसे’ दोनों शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ बोध के लिए

होता है, 'उसे पढ़ना है' या उसको पढ़ना है' भाषा की एकता के लिए प्रयोग के स्तर पर इनमें से एक को माना जाए तभी भाषा का मानक रूप बन सकता है।

आचार्य श्यामसुन्दरदास ने इसे 'टकशाली' भाषा कहा है- "कई विभाषाओं में व्यवहृत होने वाली एक शिष्ट-परिगृहीत विभाषा ही भाषा 'या टकशाली' भाषा' कहलाती है"

(3) संपर्क भाषा- जो भाषा जनसमूह के बीच सम्पर्क करने का काम करती है उसे संपर्क भाषा कहते हैं। भारत बहुभाषी देश है इसलिए सम्पर्क भाषा विभिन्न भाषा-भाषी समूहों के बीच संप्रेषण के सेतु का कार्य करती है। डॉ.रमेश तरुण ने लिखा है- "बहुभाषा-भाषी देशों में अनेक भाषाओं की उपस्थिति के कारण जिस सुविधाजनक विशिष्ट भाषा के माध्यम से व्यक्ति-व्यक्ति, राज्य-राज्य, राज्य-केंद्र तथा देश-विदेश के बीच संपर्क स्थापित किया जा सकता है, उसे संपर्क भाषा (contact or link language) की संज्ञा दी जा सकती है."

भारत की सम्पर्क भाषा हिंदी है। हिंदी पूरे देश की संपर्क भाषा है। वह भिन्न भाषा-भाषियों के बीच संप्रेषण का काम करती है

(4) राजभाषा- राजभाषा का अर्थ है- राजकाज चलाने की भाषा। इसके प्रयोग के मुख्य 4 क्षेत्र हैं- शासन, विधान, न्यायपालिका और कार्यपालिका। राजभाषा स्टेट लैंग्वेज का अनुवाद है। बाद में इसे ओफिसियल लैंग्वेज कहा गया। अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी को स्वीकार किया गया। हिंदी को राजभाषा बनाने के लिए 15 वर्ष की अवधि का प्रस्ताव था पर इसे असीमित रूप से निरंतर करने के कारण अभी भी अंग्रेजी के साथ चल रही है। जिसके कारण नियम के अनुसार हिंदी राजभाषा और अंग्रेजी सहभाषा है पर वास्तविकता में अंग्रेजी अभी तक राजभाषा बनी हुई है।

संविधान के अनुच्छेद 342, 343 से 351 तक राजभाषा सम्बन्धी प्रावधान है। हिंदी के विकास हेतु 1955 ई. में राजभाषा आयोग की स्थापना की। केन्द्रीय हिंदी निदेशालय को ज्ञानविज्ञान की शब्दावलियाँ तैयार करने का काम सौंपा गया। 1963 में संसद में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया। जिसमें अंग्रेजी को हिंदी की बराबरी का दर्जा दिया। 1960 में राष्ट्रपति के आदेश अनुसार 45 साल से कम आयुवाले कर्मचारी के लिए हिंदी सीखना अनिवार्य किया गया लेकिन परिणाम नहीं मिला।

राजभाषा विभाग ने हिंदी को बढ़ावा देने हेतु हिंदी तथा हिंदीतर राज्य में प्रचार-प्रसार के तीन स्तर किये-

- (1) 'क' क्षेत्र
- (2) 'ख' क्षेत्र
- (3) 'ग' क्षेत्र

- (1) 'क' क्षेत्र में हिंदी भाषी राज्यों को रखा गया. उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली.
- (2) 'ख' क्षेत्र में पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, चंडीगढ़ और अंडमान-निकोबार.
- (3) 'ग' क्षेत्र में शेष राज्य आते हैं. यहाँ कार्यालयी कार्य अंग्रेजी में होता है.

भारत सरकार की एक राजभाषा नीति है जिसके अनुसार संघ की राजभाषा की हिंदी और लिपि देवनागरी होगी. हिंदी के साथ आज भी अंग्रेजी का प्रयोग चल रहा है. इससे राजभाषा हिंदी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा है. राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश को एकसूत्र में बांधने का कार्य कर सकता है. आवश्यकता इस बात की है राजभाषा के रूप में अब पूरी तरह हिंदी का ही प्रयोग हो.

(5) राष्ट्रभाषा-‘राष्ट्रभाषा’ को अंग्रेजी में ‘National Language’ कहा जाता है. राष्ट्रभाषा देश में सर्वाधिक प्रचलित तथा देश की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है. यह अलग-अलग धर्म, प्रदेश और परम्पराओं को साथ जोड़कर रखती है. नंददुलारे बाजपेयी के शब्दों में-“ उसी भाषा का गौरव सबसे अधिक हो सकता है और वही राष्ट्रभाषा कहला सकती है जिसको सब जनता समझती हो और जिसका अस्तित्व सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूरक हो.”

काका कालेलकर के अनुसार- “राष्ट्रभाषा को हम और भी कई नाम देंगे. उसको सबकी बोली कहेंगे, ‘कौमी जवान’ कहेंगे, ‘हृदय की भाषा’ कहेंगे, ‘स्नेह-भाषा’ या ‘एक्य भाषा’ कहेंगे और सबसे बढ़कर ‘स्वराज भाषा’ कहेंगे.

राष्ट्रभाषा राष्ट्रीय एकता की कड़ी, राष्ट्रीय चेतना और गौरव का प्रतिक है. निसंदेह यह कहा जा सकता है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा होनी चाहिए.

1.7 सारबिंदु

- हिंदी भाषा की उत्पत्ति का सफर संस्कृत से होते हुए वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और अपभ्रंश से आज की खड़ीबोली हिंदी तक का है.
- हिंदी का विस्तृत अर्थ जो हिंदी साहित्य के इतिहास के अनुसार निर्धारित किया गया है वही हिंदी का व्यापक अर्थ है जिसमें हिंदी प्रदेश में बोली जानेवाली पांच उपभाषाओं के अतिरिक्त १८ बोलियाँ एवं उर्दू और दखिनी हिंदी को स्वीकार किया गया है.
- आज हिंदी राजभाषा के रूप में प्रशासन की भाषा और भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों के बीच सांस्कृतिक सेतु की सम्पर्क भाषा के रूप में काम करती है.
- शिक्षा, साहित्य और समाचारपत्रों की भाषा हिंदी है. आज के परिदृश्य में खड़ीबोली के व्याकरणसम्मत रूप को भी हिंदी भाषा के रूप में प्रयोग करते हैं.

❖ बोध प्रश्न

- मानक भाषा व्याकरण सम्मत, परिनिष्ठित, शुद्ध तथा परिमार्जित होती है।
- जो भाषा जनसमूह के बीच सम्पर्क करने का काम करती है उसे सम्पर्क भाषा कहते हैं।
- भारत की सम्पर्क भाषा गुजराती है।
- संविधान के अनुच्छेद 342, 343 से 351 तक राजभाषा सम्बन्धी प्रावधान हैं।
- राष्ट्रभाषा को अंग्रेजी में 'National Language' कहा जाता है।

(1) हिंदी भाषा का स्वरूप स्पष्ट कीजिए.

(2) हिंदी भाषा की अवधारणा की चर्चा कीजिए.

(3) हिंदी भाषा के कालक्रमिक विकास की चर्चा कीजिए.

- टिपण्णी लिखिए.

(1) हिंदी के विविध रूप

(2) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा

(3) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा

(4) आधुनिक भारतीय आर्यभाषा

- सही / गलत बताइए.

(1) पश्चिमी हिंदी का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ.

(2) उड़िया पूर्वी हिंदी की बोली है.

(3) मध्यकालीन आर्यभाषा में पालि, पाकृत, अपभ्रंश का समावेश होता है.

(4) अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी पूर्वी हिंदी की बोलिया हैं.

(5) पंजाबी शब्द फारसी का है.

(6) राष्ट्रभाषा को स्टेट लैंग्वेज कहा जाता है.

- रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए.

(1) बिहारी..... अपभ्रंश से विकसित हुई भाषा है. (पैशाची / मागधी)

(2) के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी को स्वीकार किया गया है. (अनुच्छेद-343 / अनुच्छेद-344)

(3) खड़ीबोली की भाषा है. (पूर्वी हिंदी / पश्चिमी हिंदी)

(4) पाणिनि का ग्रन्थ है. (महाभाष्य / अष्टाध्यायी)

- जोड़े मिलाइए.

अ	ब
(1) स्टेट लैंग्वेज	(क) पंजाबी

- | | | |
|-----|----------------|-------------------------------|
| (2) | नॅशनल लैंग्वेज | (ख) माइवाड़ी |
| (3) | राजस्थानी | (ग) राजभाषा |
| (4) | अमृता प्रितम | (घ) बिहारी |
| (5) | लौकिक संस्कृत | (च) राष्ट्रभाषा |
| (6) | मैथिली | (छ) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा |
-

1.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

- (1) हिन्दी उद्भव और विकास, डॉ.हरदेव बाहरी
- (2) प्रयोजनमूलक हिंदी, डॉ.रमेश तरुण
- (3) भाषा विज्ञान, भोलानाथ तिवारी
- (4) भाषा विज्ञान की भूमिका, देवेन्द्रनाथ शर्मा

इकाई २ : हिन्दी की वर्ण व्यवस्था- स्वर और व्यंजन

रूपरेखा

- 2.1 उद्देश्य
- 2.2 प्रस्तावना
- 2.3 वर्ण की परिभाषा
- 2.4 हिन्दी की मानक वर्णमाला
- 2.5 हिन्दी वर्णों का वर्गीकरण
 - 2.5.1 स्वर वर्ण
 - 2.5.2 व्यंजन वर्ण
- 2.6 वर्ण लिखने की शीति
- 2.7 वर्ण विच्छेद
- 2.8 सार बिंदु
- 2.9 परिक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी
- 2.10 उपयोगी पाठ्य सामग्री

2.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रों! आप बी.ए. के द्वितीय वर्ष के पंचम प्रश्नपत्र की इकाई-०२ हिन्दी की वर्ण व्यवस्था- स्वर और व्यंजन पढ़ने जा रहे हैं। इस इकाई में हिन्दी की वर्ण व्यवस्था के बारे में बताया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- हिन्दी की वर्ण व्यवस्था के बारे में जान पायेंगे.
- हिन्दी की मानवीकृत वर्णमाला को जान पायेंगे.
- स्वर एवं व्यंजन वर्णों को लिखने की विधि के बारे में जान पायेंगे.
- स्वर तथा व्यंजन के उच्चारण में होने वाले प्रयत्न के बारे में जान पायेंगे.

2.2 प्रस्तावना

इस इकाई को पढ़ने से पहले आप हिन्दी भाषा के विकास की जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। इस इकाई में हम हिन्दी की वर्ण- व्यवस्था के अंतर्गत स्वर एवं व्यंजन वर्णों के विभिन्न पहलुओं से आपको परिचित कराने जा रहे हैं। आप परिचित हैं कि मनुष्य जिसके द्वारा अपने मन के विचारों को व्यक्त करता है उसे भाषा कहा जाता है। अपने विचारों और भाव का आदान-प्रदान जब हम बोल के करते हैं तो वह मौखिक भाषा कहलाती है, लेकिन अपने विचारों और भावों को लिखकर प्रकट किया जाए तो वह लिखित भाषा कहलाती है। मनुष्य के मुख की वाणी को लम्बे समय तक सुरक्षित रखने के लिए भाषा के लिखित रूप का उपयोग अनिवार्य प्रतीत होता है। भाषा ध्वनि संकेतों की व्यवस्था के रूप में जानी जाती है। इन्हीं ध्वनि संकेतों के लिए मनुष्य वर्णों का सहारा लेता है, तो आइये! इस इकाई में हम वर्णों का अभ्यास शुरू करें।

2.3 वर्ण की परिभाषा

- (1) डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद- “वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं जिसका खंड न हो.”
- (2) डॉ. उमेशचन्द्र शुक्ल- “ वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं, जिसके टुकड़े या खंड नहीं किए जा सकते .”

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि भाषा की वह ध्वनि जिसके टुकड़े नहीं किये जाते उसे वर्ण कहा जाता है। जैसे- अ,आ, इ, उ इत्यादि।

‘भारती’ शब्द में तीन अक्षर और पाँच ध्वनियाँ- भ+आ+र+त+ई. इसके बाद पाँच ध्वनियों के टुकड़े नहीं किये जा सकते। इसीलिए ये ध्वनियाँ या वर्ण हैं।

2.4 हिन्दी की मानक वर्ण माला

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सन् 2019 ई. में प्रकाशित की गयी ई-पुस्तक ‘देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण’ में हिंदी की मानक वर्णमाला इस प्रकार है:

स्वर- हिंदी की मानक वर्णमाला में कुल 11 स्वर हैं:

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ.

व्यंजन- हिंदी की मानक वर्णमाला में कुल ३५ व्यंजन हैं:

क ख ग घ ङ
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण ङ ढ
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल य
श ष स ह

इस प्रकार हिंदी की मानक वर्णमाला में अब कुल ४६ वर्ण हैं 11 स्वर + 35 व्यंजन.

'इ' और 'द' जो हिंदी की मान्य ध्वनियाँ हैं, पाश्चात्य वर्णमाला में नहीं थीं. जबकि 'क्ष', 'त्र' और 'ज्ञ' जो पाश्चात्य वर्णमाला में शामिल किये जाते थे, संयुक्तव्यंजन होने के कारण मानक वर्णमाला में अलग से शामिल नहीं किये गये हैं.

❖ बोध प्रश्न

रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए.

- (1) हिंदी की मानक वर्णमाला में कुल.....स्वर हैं. (11/12)
- (2) हिंदी की मानक वर्णमाला में कुल.....व्यंजन हैं. (36/35)
- (3) हिंदी की मानक वर्णमाला में अब कुल..... वर्ण हैं. (46/45)
- (4) अ,आ,इ, ईहैं. (स्वर/ व्यंजन)
- (5) त, थ, द, ध, नध्वनियाँ हैं. (स्वर/ व्यंजन)

2.5 हिन्दी वर्णों का वर्गीकरण

वर्ण के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहा जाता है. ऐसे वर्णों की संख्या हिन्दी में 52 है. इन वर्णों के दो भेद हैं- (1) स्वर वर्ण (2) व्यंजन वर्ण

2.5.1 स्वर वर्ण- परिभाषा

- (1) डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद- “ स्वर उन वर्णों को कहते हैं, जिनका उच्चारण बिना अवरोध अथवा विघ्नबाधा के होता है. ”
- (2) डॉ. भोलानाथ तिवारी- “ स्वर वह ध्वनि है, जिनके उच्चारण में हवा अबाध गति से मुख-विवर से निकल जाती है. ”

इनके उच्चारण में किसी दूसरे की वर्ण की सहायता नहीं ली जाती बल्कि ये व्यंजन वर्णों के उच्चारण में सहायक होते हैं.

हिन्दी में स्वर वर्णों की संख्या 11 है.

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ.

हिन्दी स्वरों का वर्गीकरण-

(1) मात्रा के आधार पर- मात्रा के आधार पर स्वर दो प्रकार के होते हैं-

(1) ह्रस्व स्वर

(2) दीर्घ स्वर

(1) ह्रस्व स्वर- ह्रस्व स्वर उन्हें कहते हैं जिनके उच्चारण में कम समय लगता हो।

अ, इ, उ, ऋ ह्रस्व स्वर हैं।

(2) दीर्घ स्वर- दीर्घ स्वर उन्हें कहते हैं जिनके उच्चारण में अत्यधिक समय और जोर लगे उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं।

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ दीर्घ स्वर हैं।

(2) जीभ की स्थिति के अनुसार

जीभ की स्थिति के अनुसार हिन्दी स्वरों का भाषा विज्ञानियों के इस रेखाचित्र के द्वारा प्रकट किया है-

उपर्युक्तस्वरों के वर्गीकरण के मुख्य दो आधार हैं-

(क) जीभ का कौन-सा भाग उठता है-

(1) अग्र- इ, ई, ए, ऐ

(2) मध्य- अ

(3) पश्य- उ, ऊ, ओ, औ, आ

(ख) वह कितना उठता है-

(1) संवृत- इ, ई, उ, ऊ

(2) अर्ध संवृत- ए, ओ

(3) अर्ध विवृत- ऐ, अ, औ

(4) विवृत- आ

(3) ओष्ठों की स्थिति के आधार पर-

कुछ स्वरों के उच्चारण में ओष्ठ वृतमुखी या गोलाकार होते हैं। इसी आधार पर दो भेद होते हैं।

(1) वृतमुखी- उ, ऊ, ओ, औ

(2) अवृतमुखी- अ, आ, ए, ऐ, इ, ई

(4) हवा के नाक (अनुनासिक) और मुँह (मौखिक) के रास्ते निकलने के आधार पर-

(1) मौखिक- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ

(2) अनुनासिक- अँ, आँ, इँ, ईँ, उँ, ऊँ

2.5.2 व्यंजन वर्ण

हिन्दी व्यंजनों का वर्गीकरण-

व्यंजन वर्ण- परिभाषा-

- (1) डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद- “ व्यंजन वर्ण वे हैं, जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है.”
- (2) डॉ. भोलानाथ तिवारी- “ व्यंजन वह ध्वनि है, जिनके उच्चारण में हवा अबाध गति से नहीं, निकल पाती.”

प्रत्येक व्यंजन के उच्चारण में ‘अ’ की ध्वनि छिपी रहती है। जैसे- क+अ=क, ख+अ=ख। व्यंजन वर्ण स्वर है। इसके अतिरिक्त ड,ढ,क,ख,ग,ज,फ,व ध्वनियाँ भी हैं। इनको निम्नलिखित रूपों में विभाजित कर सकते हैं।

- (1) स्पर्श व्यंजन- ये कंठ,तालु, मूर्धा, दन्त और ओष्ठ स्थानों के स्पर्श व्यंजन अथवा वर्गीय व्यंजन कहते हैं। इसमें पाँच व्यंजनों के पाँच वर्ग बना लिये गये हैं।

जैसे- (1) क वर्ग- क, ख, ग, घ, ङ (कंठ से)

(2) च वर्ग- च, छ, ज, झ, ञ (तालु से)

(3) ट वर्ग- ट, ठ, ड, ढ, ण (मुर्दवा से)

(4) त वर्ग- त, थ, द, ध, न (दन्त से)

(5) प वर्ग- प, फ, ब, भ, म (ओष्ठ से)

- (2) अंतःस्थ व्यंजन- ये जीभ, तालु, दान्त और होठों परस्पर सटाने से होता है, किन्तु कहीं भी पूर्ण स्पर्श नहीं होता। अतः ये चारों अन्तःस्थ व्यंजन अर्द्धस्वर भी कहलाते हैं। ये चार हैं- य, र, ल, व।

- (3) उष्म व्यंजन- उष्म व्यंजनों का उच्चारण एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न उष्म वायु से होता है। ये चार हैं- श, ष, स, ह।

- प्राणत्व के आधार पर व्यंजनों के प्रकार-

प्राणत्व के आधार पर व्यंजनों के दो प्रकार होते हैं- (1) अल्पप्राण (2) महाप्राण

- (1) अल्प प्राण- प्राण का अर्थ है वायु और अल्प का थोड़ा, अर्थात् जिनके उच्चारण में थोड़ा परिश्रम करना पड़ता है। मतलब जिन व्यंजनों के उच्चारण में कम प्राण शक्तिया वायु का उपयोग हो, उसे अल्प प्राण व्यंजन कहते हैं।

स्पर्श व्यंजन के प्रत्येक वर्ण का पहला, तीसरा, पाँचवाँ वर्ण अल्प प्राण व्यंजन कहलाता है। जैसे- क, ग, ड, च, ज, ञ, ड, त, द, न, प, ब, म अंतःस्थ व्यंजन भी इसी कोटि में आते हैं।

- (2) महा प्राण- अल्प का विरोधी महा, अर्थात् इनके उच्चारण में प्राण वायु का उपयोग अधिक श्रमपूर्वक करना पड़ता है। मतलब जिन व्यंजनों के उच्चारण में ज्यादा प्राणशक्तिया वायु का उपयोग हो, उसे महाप्राण व्यंजन कहते हैं।

स्पर्श व्यंजन के प्रत्येक वर्ण का दूसरा और चौथा वर्ण एवं संपूर्ण उष्म व्यंजन इसी श्रेणी में आते हैं। जैसे- ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ एवं श, ष, ह। प्राण (हवा) के लिए अंग्रेजी में 'ल' ध्वनि का प्रयोग होता है। इसी महा प्राण के कारण उसी वर्ण के आगे के शब्द के साथ 'ल' जोड़ देने से वह महा प्राण बन जाता है। जैसे- 'क' अल्प प्राण है जब कि 'ख' महाप्राण। क-च और ख-चल, ग-, घ-ल।

❖ बोध प्रश्न

- सही/गलत बताइए।

- (1) वर्णों के दो भेद हैं।
- (2) मात्रा के आधार पर स्वर के चार प्रकार हैं।
- (3) उ, ऊ, ओ, औ अवृत्तमुखी वर्ण हैं।
- (4) व्यंजन वर्ण वे हैं, जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है।
- (5) श, ष, स, ह उष्म व्यंजन हैं।
- (6) प्राणत्व के आधार पर व्यंजनों के दो प्रकार हैं।
- (7) त, थ, द, ध, न ध्वनियों का उच्चारण दन्त से होता है।

2.6 वर्ण लिखने की रीति

नागरी या देवनागरी लिपि में हिंदी लिपि लिखी जाती है। जब स्वर और व्यंजन साथ मिलाकर लिखे जाते हैं तब उनका वह रूप नहीं रह जाता जो वर्णमाला में पाया जाता है। स्वर के प्रतिनिधि के तौर पर कुछ चिह्न रहते हैं। इन्हें मात्रा कहा जाता है। शब्द सृजन में मात्राओं की

भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अ की कोई मात्रा नहीं होती है। इसलिए किसी व्यंजन में अ न होने का उल्लेख करना हो तो उसके नीचे हलन्त (.) चिह्न का प्रयोग करना होता है। अन्य स्वरों की मात्राएँ निम्नलिखित रूप में प्रयुक्त होती हैं। आ का, इ कि, ई की उ कुऊ कू ए के ऐ के ओ को औ कौ यदि व्यंजन का व्यंजन से योग होता है तो व्यंजन युक्त या संयुक्त व्यंजन कहलाता है। क्ष. त्र. ज्ञ आदि के बारे में चर्चा की जा चुकी है। ये व्यंजन संयुक्त कहलाते हैं। हिंदी में ज्ञ का उच्चारण ग्यँ किया जाता है। कहीं-कहीं ग्य भी उच्चरित होता है।

कुछ शब्दों में अक्षर ऊ पर नीचे लिखे जाते हैं। ये अक्षर क. ट, ठ, ड और ङ हैं। जैसे, अक्कर, पट्टा अड्डा, गद्दा, गड्डा। इन्हें इस रूप में भी लिखा जाता है जैसे अक्कर, पट्टा, अड्डा गड्डा।

कुछ शब्दों में अक्षर आगे पीछे लिखे जाते हैं और अगले अक्षर की सीधी पाई हटाकर मिलाए जाते हैं। ये अक्षर हैं ख, घ. त, थ. प. ब. भ. म. य. ल. व. श ष और स. ये अक्षर

जब एक दूसरे से मिलते हैं तब पहले आनेवाले अक्षरों की खड़ी पाई हटा दी जाती है। उदाहरण ख्याल, पत्थर, म्यान, शल्य, शिष्य पुरस्कार आदि।

इसी तरह ड और ज किसी व्यंजन से मिलते हैं या अपने ही वर्ग के व्यंजन से मिलते हैं तो उसके ऊपर लिखे जाते थे। जैसे पङ्कज अञ्जन आदि। इधर पंकज, अजन आदि मान्य तथा मानक हैं। लेकिन त और ण दुबारा आएँ तो त और ण हो जाते हैं। जैसे पत्ता और विशेषण।

इ के साथ जब उ और ऊ की मात्रा लगे तो उसे 'रु' और 'रू' के रूप में लिखा जाता है। जैसे, रुपये, रूपवान आदि।

किसी अक्षर के पहले इ आता है तब उसका रूप निम्नलिखित रूप में लिखा जाता है। उदाहरण के रूप में धर्म कर्म निर्जन, निर्धन। किसी अक्षर के बाद इ आए तो उसे अधोलिखित रूप में लिखा जाता है। जैसे, प्रिय, चक्र बज आदि।

जब क के साथ त या इ जुड़ता है तब दोनों के रूप ऐसे होते हैं क, क्र। क, टू, इ और द के साथ य जुड़े तो उनके रूप क्य, ट्य, ज्य आदि। क के साथ व मिलता है तो क्रहो जाता है। ष का योग ट, ठयाय से होता है तब निम्नलिखित रूप होते हैं - छ छ ष्य। ह के साथ ण न म य इ ल और व का योग होने हैं उन्हें इस प्रकार लिखा जाता है हण, हु, ह्य, ह्य, ह, हल्ल।

जब क के साथ त या इ जुड़ता है तब दोनों के रूप ऐसे होते हैं क, क्र। क, टू, इ और द के साथ य जुड़े तो उनके रूप क्य, ट्य, ज्य आदि। क के साथ व मिलता है तो क्रहो जाता है। ष का योग ट, ठ या य से होता है तब निम्नलिखित रूप होते हैं - छ छ ष्य। ह के साथ ण न म य इ ल और व का योग होने हैं उन्हें इस प्रकार लिखा जाता है हण, हु, ह्य, ह्य, ह, हल्ल।

2.7 वर्ण- विच्छेद

जब किसी शब्द में प्रयुक्त वर्णों को अलग-अलग किया जाता है तो उसे वर्ण-विच्छेद कहा जाता है। शब्दों का वर्ण-विच्छेद करते समय व्यंजनों को स्वर रहित रूप में और स्वर को अलग करके लिखा जाता है। जैसे-

विजय- व् + इ + ज् + अ + य् + अ अ + इ + अ + द + ए + व् + अ ह् +

हरदेव- ह् + अ + ' + अ + द् + ए + व् + अ

उद्यम- उ + द + य् + अ + म् + अ

महाजन- म् + अ + ह् + आ + ज् + अ + न् + अ

प्रथम- प् + ' + अ + थ् + म् + अ

कार्य- क् + आ + य् + ' + अ

रहीम - ' + अ + ह् + ई + म् + अ

धर्म- ध् + अ + ' + म् + अ

सूर्योदय- स् + अ + ' + य् + ओ + + अ + य् + अ
ऐतिहासिक - ए + त् + इ + ह + आ + स् + इ + क् + अ

2.8 सारबिंदु

आपने हिन्दी की वर्ण व्यवस्था- स्वर और व्यंजन का अध्ययन इस इकाई में किया है। आशा है, अब आप हिन्दी की वर्ण व्यवस्था से अच्छी तरह परिचित हो गये होंगे। आइये! इकाई में आयी सभी प्रमुख बातों को एक बार फिर से दोहरा लें:-

- हिंदी की मानक वर्णमाला 'देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' नामक पुस्तिका में केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित है।
- वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं जिसका खंड न हो।
- वर्णों के दो भेद हैं- (1) स्वर वर्ण (2) व्यंजन वर्ण
- स्वर उन वर्णों को कहते हैं, जिनका उच्चारण बिना अवरोध अथवा विघ्नबाधा के होता है।
- व्यंजन वर्ण वे हैं, जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है।
- हिंदी की मानक वर्णमाला में 11 स्वर 35 व्यंजन 4 संयुक्ताक्षर मिलकर कुल 50 वर्ण हैं।

2.9 परिक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी

- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग ८०० शब्दों में दीजिये।
 1. हिन्दी वर्णों का वर्गीकरण स्पष्ट कीजिए।
 2. वर्ण की परिभाषा देते हुए स्वर वर्ण को समझाइए।
 3. वर्ण की परिभाषा देते हुए व्यंजन वर्ण को समझाइए।
- टिपण्णी लिखिए।
 1. हिन्दी की मानक वर्णमाला
 2. वर्ण लिखने की शीति
- रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए。
 - (1) हिंदी की मानक वर्णमाला में कुल.....स्वर हैं। (11/12)
 - (2) हिंदी की मानक वर्णमाला में कुल.....व्यंजन है। (36/35)
 - (3) हिंदी की मानक वर्णमाला में अब कुल..... वर्ण हैं। (46/45)
 - (4) अ,आ,इ, ईहैं। (स्वर/ व्यंजन)
 - (5) त, थ, द, ध, नध्वनियाँ हैं। (स्वर/ व्यंजन)

- सही/गलत बताइए.

- (1) वर्णों के दो भेद हैं.
- (2) मात्रा के आधार पर स्वर के चार प्रकार हैं.
- (3) उ, ऊ, ओ, औ अवृत्तमुखी वर्ण हैं.
- (4) व्यंजन वर्ण वे हैं, जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है.
- (5) श, ष, स, ह उष्म व्यंजन हैं.
- (6) प्राणत्व के आधार पर व्यंजनों के दो प्रकार हैं.
- (7) त, थ, द, ध, न ध्वनियों का उच्चारण दन्त से होता है.

2.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

- (1) व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, हरदेव बाहरी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.
- (2) देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली.
- (3) देवनागरी लिपि लेखन अभ्यास पुस्तक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली. (अंतिम दो पुस्तके निदेशालय की वेबसाइट -<http://www.chdpublication.mhrd.gov.in/> से निःशुल्क डाउनलोड की जा सकती हैं. और अभ्यास के लिए सर्वोत्तम हैं.)

इकाई 3 : हिन्दी की वर्तनी

रूपरेखा

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 हिन्दी की वर्तनी

3.3.1 ह्रस्व- दीर्घ मात्राएँ

3.3.2 ह्रस्व- दीर्घ मात्राओं संबंधी कुछ सामान्य नियम

3.4 हिन्दी के संयुक्तक्षरों का अभ्यास

3.5 हिन्दी के विशिष्ट शब्दों का अभ्यास

3.6 आगत शब्दों की वर्तनी

3.7 दो वर्तनी वाले शब्द

3.8 सारबिंदु

3.9 परिक्षोपयोगी प्रश्नावली

3.10 उपयोगी पाठ्य सामग्री

3.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रों! आप बी.ए. द्वितीय वर्ष के पंचम् प्रश्नपत्र के खंड-1 में इकाई-03 हिन्दी की वर्तनी' का अध्ययन करने जा रहे हैं। इस इकाई में हम हिन्दी वर्तनी का अभ्यास करेंगे, जिससे हिन्दी लिखने में होने वाली छोटी छोटी भूलों की ओर ध्यान जाय और आप उन्हें दूर कर शुद्ध हिन्दी लिखने में सक्षम हो सकें। प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से आप-

- हिन्दी की शुद्ध वर्तनी की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे..
- हिन्दी की ह्रस्व-दीर्घ मात्राओं से परिचित हो सकेंगे.
- हिन्दी संयुक्तक्षरों को सही तरह से लिखने का तरीका जान पायेंगे.

- हिंदी के विशिष्ट शब्दों को लिखना सीख पायेंगे.

3.2 प्रस्तावना

विद्यार्थी मित्रों! जैसा कि आप जानते हैं भाषा में वर्तनी की शुद्धता बहुत आवश्यक होती है. अशुद्ध वर्तनी के प्रयोग से अर्थ का अनर्थ हो जाने की संभावना रहती है. वेद में एक कथा आती है कि देवताओं के राजा इंद्र और देवताओं के शत्रु वृत्रासुर का युद्ध होने वाला था. वृत्रासुर जानता था कि इंद्र का हथियार वज्र बहुत शक्तिशाली है और ऋषिगण इंद्र की जीत के लिए यज्ञ भी करने वाले हैं. उसने ऋषियों को पकड़ लिया और उनको धमकाया कि यदि उन्होंने वृत्र की जीत के लिए यज्ञ नहीं किया तो वह सबको मार डालेगा. ऋषि उसके लिए यज्ञ करने के लिए मजबूर हो गये. पर उन्होंने चालाकी से उस मंत्र में, जिसके द्वारा मारने की शक्ति वृत्र को मिलनी थी, एक स्वर जानबूझ कर गलत लगाया इस एक गलत स्वर के कारण मंत्र का अर्थ बदल गया और मारने की शक्ति इंद्र को मिल गयी और युद्ध में इंद्र ने वृत्र को मार दिया, तो देखा आपने स्वर की, ध्वनि की, वर्ण की, शब्द की शक्तिकितनी प्रभावी होती है और उनके शुद्ध प्रयोग की कितनी महत्ता है। हिंदी में भी कई बार मात्रा के ह्रस्व - दीर्घ के फेर से, अनुस्वार अनुनासिक के फेर से, सश के फेर से शब्द दूसरे अर्थ देने लगते हैं. उदाहरण के लिए-

दिन- दिवस	दीन- दरिद्र
वर- दूल्हा	वार- प्रहार
वारि- पान	वारिस- उत्तराधिकारी
पंक- कीचड़	पंख- पर
सुर- देवता	सूर- सूर्य
वसन- कपड़ा	व्यसन- आदत
सदेह- सशरीर	संदेह- शंका

उपर्युक्त शब्द युग्मों में रेखांकित वर्णों की तुलना करें, आप देखेंगे कि स्वरों के फर्क से अर्थ में कितना परिवर्तन आ गया है. इसलिए आवश्यक है कि हम शब्दों की सही वर्तनी को जाने और उनका अभ्यास करें.

3.3 हिन्दी की वर्तनी

लिखने की शीति को 'वर्तनी' कहते हैं. उर्दू में उसे 'हिज्जे' तो अंग्रेजी में 'स्पेलिंग' कहते हैं. किसी भी भाषा के लिए उसके उच्चारण और लेखन में शुद्धता का होना आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य रहता है, प्रायः मातृभाषा या बोली जाने वाली भाषा में, कभी बेपर्वाह होने के कारण तो कभी व्याकरण सम्बन्धी समुचित ज्ञान के अभाव के कारण वर्तनी की अशुद्धियाँ आ जाती हैं. देवनागरी लिपि में लिखी जाने

वाली हिंदी भाषा की कुछ अपनी विशेषताएँ, निजी व्याकरण है। शिरोरेखा का प्रयोग इसकी एक प्रमुख पहचान है। कुछ शब्द ऐसे भी हैं, जिन पर शिरोरेखा पूर्ण रूप से नहीं आती। जैसे थ, थ, भ, क्ष, श्र आदि वर्णों के मुड़े हुए भाग पर - शिरोरेखा नहीं आती। हिंदी में 'ख', 'घ', 'ध', 'भ', 'म' आदि वर्ण लिखने में सावधानी रखनी चाहिए, क्योंकि सही ढंग से न लिखा जाये तो 'ख' के स्थान पर 'ख' (इ च) पढ़ा जा सकता है, उसी तरह 'घ' या 'भ-म' का भ्रम होने की संभावना भी रहती है।

भाषा में मात्राओं को यथास्थान रखना अनिवार्य है। कोई मात्रा यथास्थान न प्रयुक्त हुई हो तो अर्थ परिवर्तन हो जाता है। जैसे गुजराती भाषा में 'बहार' का अर्थ किसी स्थान, सीमा से बाहर होने का बोध कराता है, लेकिन हिंदी में 'बहार' अर्थात् 'वसंत ऋतु', जबकि सीमा से बाहर, अलग होने का भाव सूचित करने के लिए 'बाहर' (जैसे, कॉलेज के बाहर) शब्द का प्रयोग होता है।

3.3.1 ह्रस्व-दीर्घ मात्राएँ -

विद्यार्थी मित्रो, आप जानते हैं कि शब्द स्वर और व्यंजनों से मिलकर बनते हैं। साथ ही आप यह भी जानते हैं कि शब्दों में स्वर अपने मूल स्वरूप में नहीं लिखे जाते, बल्कि व्यंजनों पर उन स्वरों की मात्राएँ लगती है। ये मात्राएँ यो प्रकार की हैं ह्रस्व और दीर्घ।

अ, इ (ि), उ, ऋ - ये चार स्वर और उनकी मात्राएँ ह्रस्व हैं। इनके अलावा बाकी सब स्वर और उनकी मात्राएँ - आ (1), ई (ी), ऊ (ू), ए), ऐ), ओ (1), औ (1) दीर्घ हैं।

इनके अलावा कुछ और ध्वनि चिह्न भी लेखन में प्रयोग में आते हैं

अनुस्वार- ' . ' सामान्यतया पंचम वर्ण (ड, ज, ण, न, म) के स्थान पर प्रयुक्त उदाहरण संग, चंचल, घंटा, संत, चंबल इत्यादि।

अनुनासिक - (ँ) एक स्वर ध्वनि जिसमें वायु नासिका से भी निकलती है। उदाहरण साँस, हँस, जाँच इत्यादि।

अर्धविवृत ओ - सामान्यतया अंग्रेजी से आए शब्दों में प्रयुक्त उदाहरण - कॉपी, डॉक्टर, टॉपिक इत्यादि।

इन सभी मात्राओं और चिह्नों का सही प्रयोग आना अच्छी हिंदी लिखने के लिए बहुत जरूरी है और सही प्रयोग आए, इसके लिए अभ्यास बहुत जरूरी है। तो आइये, हम ह्रस्व दीर्घ मात्राओं का कुछ अभ्यास कर लें!

नीचे ह्रस्व 'इ' की मात्रा वाले कुछ शब्दों की सूची है, जिन्हें अक्सर दीर्घ मात्रा के साथ अशुद्ध रूप से लिखा जाता है।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अती	अति	नायीका	नायिका
नायिका	अतिथि	नीकट	निकट
कालीदास	कालिदास	दैहीक	दैहिक
कीनाश	किनाश	पड़िणती	पड़िणति
कीस	किस	पड़िस्थिती	पड़िस्थिति
कोशीश	कोशीश	वनीता	वनिता
गती	गति	नासिका	नासिका
गीरना	गिरना	पती	पति
गोपी	गोपि	फीर	फिर
जाती	जाति	विजय	विजय
ईमारत	इमारत	शशी	शशि
समिती	समिति	शीव	शिव
मैथिली	मैथिली	दलीया	दलिया

अब ह्रस्व 'उ' के स्थान पर अशुद्ध 'ऊ' के प्रयोग कुछ उदाहरण देखिये-

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अद्भुत	अद्भुत	पूष्य	पुष्य
अनूपम	अनुपम	मार्धूर्य	माधुर्य
आहूति	आहुति	पुरुष	पुरुष
गूजरात	गुजरात	बहूत	बहुत
ठाकूर	ठाकुर	मूनी	मुनि
धेनू	धेनु	वस्तू	वस्तु
दयालू	दयालु	शत्रू	शत्रु
गूप्त	गुप्त	मूहवश	मुहावश
समूदाय	समुदाय	साधू	साधु
सूख	सुख	सूबह	सुबह
हेतू	हेतु	गुरू	गुरु

इसी तरह दीर्घ 'ई' के स्थान पर ह्रस्व 'इ' की मात्रा का अशुद्ध प्रयोग भी देखने को मिलता है:

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अधिन	अधीन	अंजनि	अंजनी
अनुयाइ	अनुयायी	अभिप्सा	अभिप्सा
इतिहासिक		ऐतिहासिक	इश्वर

बुराई	बुराई	बिमाइ	बीमाइ
कड़	कई	भाय	भाई
महिना	महीना	इतिकाल	रीतिकाल
वकिल	वकील	सति	सति
शताब्दि	शताब्दी	भाय	भाई
तरिका	तरीका	सजातिय	सजातीय
दिवार	दीवार	सरकारि	सरकारी
नारि	नारी	निचे	नीचे
स्त्रि	स्त्री	निश्व	नीश्व
हाथि	हाथी	पत्नि	पत्नी
हिंदि	हिन्दी	परिक्षा	परीक्षा
प्रतिक्षा	प्रतिक्षा	सजातिय	सजातीय

ठीक इसी तरह दीर्घ 'ऊ' के स्थान पर हस्य 'उ' का अशुद्ध प्रयोग भी वर्तनी की अशुद्धि पैदा करता है:

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनुकुल	अनुकूल	आंसु	आँसू
पुजनीय	पूजनीय	उंघ	ऊँघ
बहु	बहू	उंचाई	ऊँचाई
बहुमूल्य	बहुमूल्य	उपर	ऊपर
बुढा	बुढ़ा	उहापोह	ऊहापोह
भुख	भूख	भुल	भूल
महसुस	महसूस	कानुन	कानून
मालुम	मालूम	जरुरत	जरूरत
पुजा	पूजा	मुख	मूख
दुध	दूध	सिंदुर	सिंदूर
नुपुर	नूपुर	सुर्य	सूर्य

आशा है अब आपने ह्रस्व 'इ', 'उ' और दीर्घ 'ई', 'ऊ' मात्राओं का अभ्यास अच्छी वा तरह कर लिया होगा. ध्यान रखियेगा कि उपर दी गयीं सूचियाँ कुछ उदहारण मात्र हैं. अभ्यास तो आपको लगातार करना पड़ेगा. आप पाठ पढ़ते समय मात्राओं पर ध्यान दीजिये, लिखते समय ध्यान से मात्राएँ लगाइए और जरा भी संदेह होने पर शब्दकोश या मूल पाठ से वर्तनी मिलाइए. तब आप सही मात्राओं के साथ शुद्ध वर्तनी लिख पाएँगे.

❖ बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए।

कठीन पूराना सूविधा
आतूर आधुनीक वीकसित
वीकट तूम क्षूधा
वीषम शांती बूराई

2. दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए :

1.लड़के खेल रहे हैं. (सभि / सभी)
2. शामनाथ को अपनी..... का एहसास हुआ. (गलती / गलति)
3. पूर्व दिशा में..... उदित हुआ. (सूर्य / सूर्य)
4. 'बड़े भाईसाहब' प्रेमचंद जी की..... है. (कहानी / कहानि)
5.आज क्या कर रहा है? (तु / तू)
6. कुछ लोग..... होते हैं. मायावी / मायावि)
7. तीन..... ठंड रहती है. (महीने / महिने)
8. कल्पना भारत की..... है. (बेटी / बेटि)
9. उसके चहरे पर..... झलक रही है. (खुशी / खूशी)
10. नियम के..... बैठना चाहिए. (अनूसार / अनुसार)
11.के पेड़ ऊँचे होते हैं. (खजूर / खजुर)
12. समय..... हैं. (अमूल्य / अमूल्य)

3.3.2 ह्रस्व-दीर्घ मात्राओं संबंधी कुछ सामान्य नियम-

यहाँ ह्रस्व-दीर्घ मात्राओं के कुछ प्रमुख नियम बताये गए हैं, जिन्हें याद रखने से वर्तनी सम्बन्धी कई अशुद्धियों से बचा जा सकता है.

(अ) ईकाशान्त स्त्रीलिंग शब्दों का बहुवचन किया जाये तब दीर्घ 'ई' बहुधा ह्रस्व 'इ' में परिवर्तित होता है, जैसे -

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
गली	गलियाँ	सदी	सदियाँ	डाली	डालियाँ
बीमाड़ी	बीमारियाँ	नाड़ी	नारियाँ	दासी	दासियाँ
नदी	नदियाँ	सखी	सखियाँ	आदि.	

(आ) 'इक' प्रत्यय में बहुधा ह्रस्व 'इ' का प्रयोग होता है, जैसे-

अनुनासिक, अनैतिक, अलौकिक, आंगिक, आधुनिक, दैनिक, नागरिक, नाविक, नास्तिक, नैतिक, पाक्षिक, मासिक, मानसिक, यौगिक, वार्षिक, वैश्विक, शास्त्रीय, सांसाध्यिक, सामाजिक, लौकिक, आदि.

(इ) 'ईन' प्रत्यय में सामान्यतया दीर्घ 'ई' का प्रयोग होता है, जैसे- आधीन, आसीन, कुलीन, गमगीन, नवीन, नमकीन, पशुधीन, प्राचीन, रंगीन, लक्ष्यहीन, शक्तिहीन, शीकीन, स्वाधीन इत्यादि,

(ई) 'ईय' प्रत्यय में 'ई' दीर्घ मात्रा होती है, जैसे - आदर्शनीय, जनपदीय, जातीय, दर्शनीय, देशीय नाइकीय, परकीय, प्रांतीय, पठनीय, भारतीय, माननीय, श्रमणीय, राजकीय, राष्ट्रीय, विचारणीय, शासकीय, स्वकीय, स्मरणीय आदि.

(उ) शब्द में यदि 'श' तथा 'व' दोनों का साथ-साथ प्रयोग हो तो पहले 'श' और फिर बाद में 'व' का प्रयोग होता है, जैसे- अवशेष, निःशेष, विशेष, विशेषण, विश्लेषण, वेशभूषा, शीर्षक, शेष, शोषण, संश्लेषण आदि.

उसी तरह अगर शब्द में 'श', 'य' के साथ-साथ 'स' भी आया हो तो यहाँ भी पहले 'श' का प्रयोग होता है, जैसे- नृशंस, प्रशंसा, शासक, शासन आदि. (अपवाद रूप 'संश्लेषण' आदि कुछ शब्दों में 'स' पहले रहता है.)

(क) अंग्रेजी शब्दों को देवनागरी लिपि में लिखते समय शब्दांत में दीर्घ 'ई' का ही प्रयोग किया जाना चाहिए, जैसे- कॉफी, डाल्टी, गिल्टी, जर्नी, टाई, डाई, डैडी, पाई, फ्लाई, बैटरी, सिटी आदि आइये! अब जाँचे कि आपने कितना सीखा!

निम्नलिखित वाक्यों में अशुद्ध शब्दों से अशुद्धियाँ दूर कर उन्हें शुद्ध रूप में लिखें:

- 1) मनुष्य समाजीक प्राणी है.
- 2) भारत बहुभाषिय देश है.
- 3) सांसायीक जीवन कष्टप्रद है.
- 4) बारिश आते ही पेड़ों की डालीयाँ हरी हो गई.
- 5) फैक्ट्री में मजदूर हड़ताल पर हैं.
- 6) माता-पिता आदर्शनिय होते हैं.
- 7) नदीयों का पानी प्रदूषित हो गया है.
- 8) कल कॉलेज का वार्षिक सम्मेलन है.
- 9) सत्ता मिलते ही सासक की नियत बदल जाती है.
- 10) आधुनिक विश्व तकनीकी प्रधान है.
- 11) आपका प्रश्न विचारनिय है.
- 12) 15 अगस्त, 1947 के दिन भारत स्वाधिन हुआ.

3.4 हिंदी के संयुक्तक्षरों का अभ्यास

हिंदी वर्णमाला में 'क्ष', 'ज्ञ', 'त्र' संयुक्तव्यंजन के रूप में स्वीकारे गये हैं. उच्चारण शुद्ध न होने पर 'कक्षा' को 'कक्क्षा' लिखे जाने की संभावना बनी रहती है तो 'ज्ञानी' को 'ग्यानी' के रूप में. इसके अतिरिक्त किसी शब्द में जब व्यंजन स्वरविहीन रूप में

आते हैं, तब भी हमें संयुक्तवर्ण का प्रयोग करना पड़ता है। संयुक्तवर्णों के प्रयोग के दौरान अक्सर वर्तनी की अशुद्धियाँ देखने मिलती हैं।

‘इ’ का संयुक्तवर्ण के रूप में प्रयोग तीन तरह से होता है -

- 1) जब ‘इ’ स्वयं स्वरविहीन हो तब वह अपने आगे वाले व्यंजन के ऊपर चढ़ जाता है, जैसे -मार्ग, कर्म, धर्म, अर्चना, बर्फ आदि।
- 2) जब ‘इ’ के बाद वाला व्यंजन स्वरविहीन हो तो ‘इ’ का प्रयोग एक तिरछी रेखा के रूप में उस व्यंजन के नीचे की तरफ होता है, जैसे- अग्र, प्रकार, स्रोत, हास, क्रम, आदि।
- 3) उपर्युक्तस्थिति में ही कुछ वर्णों के साथ ‘इ’ का रूप इस प्रकार हो जाता है। द्राम, ड्रामा, राष्ट्र आदि यहाँ एक और बात का स्पष्टीकरण करना आवश्यक है कि बहुधा कृष्ण, गृह, पूष, मृग आदि शब्दों में आए को भी ‘इ’ का ही रूप समझ लिया जाता है, जबकि यह ‘’ स्वर की मात्रा है, न कि ‘’ का रूप इस बात को अच्छी तरह समझ कर हमेशा याद रखिये

ङ, छ, ट, ठ, ड, ढ, व और ह यदि स्वरविहीन हो तो उन्हें हल् (' ' ') के साथ लिखना चाहिए। जैसे-

वाङ्मय, उच्छ्वास, लूङ्ग, पाठ्य, बुङ्गा, धनाढ्य, गद्दा, चिह्न किंतु युभ्य पारंपरिक ‘घ’ और ऋष पारंपरिक ‘द’ के रूप में ही लिखा जायेगा। इन संयुक्तक्षरों को लिखते समय ध्यान रखिये -

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
विध्या	विद्या	द्वार्केश	द्वारकेश
सिद्धि	सिद्धि	गद्यात्मक	गद्यात्मक

विद्यार्थी मित्रो! यहाँ संयुक्तक्षरों की वर्तनी की कतिपय अशुद्धियाँ उदाहरण के लिए दी गई हैं। उनका अभ्यास करते हुए विशेष सावधानी रखी जाये तो शुद्ध रूप में संयुक्तक्षरों का प्रयोग सरलता से किया जा सकता है:

किया जा सकता है:

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
अनभिग्य	अनभीज्ञ	अनिष्ट	अनिष्ट
अनिष्ट	निमित्त	निर्पशध	निर्पशध
अन्ताक्षती	अन्त्याक्षरी	नैपथ्य	नेपथ्य
नैसर्गीक	नैसर्गिक	अभ्यस्त	अभ्यस्त
न्यौछावर	न्योछावर	अमावश्या	अमावस्या
अर्वाचिन	अर्वाचीन	पशपश	पशस्पश
आछादित	आच्छादित	पुनरविवाह	पुनर्विवाह
आशिर्वाद	आशीर्वाद	प्रतयक्ष	प्रत्यक्ष
इर्षा	ईर्षा	प्रतीक्सा	प्रतीक्षा
उज्ज्वल	उज्ज्वल	प्रमाणीक	प्रमाणि
क्रिशक	कृषक	श्रिमति	श्रीमती
व्यंग	व्यंग्य	कुत्रिम	कृत्रिम
विध्वान	विद्वान	क्रति	कृति
कनिष्ट	कनिष्ठ	यग्न	यज्ञ
उलंघन	उल्लंगन	स्रष्टि	सृष्टि
उस्का	उसका	मुस्कान	मुसकान
उपशेक्त	उपर्युक्त	पुष्ट	पुष्ट
चर्मोत्कर्ष	चर्मोत्कर्ष	जाग्रित	जागृत
सन्मान	सम्मान	सन्मिलित	सम्मिलित
त्रिषा	तृषा	संख्या	संख्या
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	समिक्सा	समीक्षा

❖ बोध प्रश्न

- निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध करके लिखिए-

1. श्रोत 2. आशिर्वचन 3. साक्सी 4. अभ्यस्थ 5. प्रशिष्ट 6. प्रत्यक्स 7. संप्रेशन
8. विश्रु

3.5 हिन्दी के विशिष्ट शब्दों का अभ्यास

प्रिय विद्यार्थी मित्र, गुजराती भाषा और हिंदी भाषा में कुछ शब्द समान रूप से प्रयुक्त होते हैं, तो कुछ शब्दों में केवल मात्रा-स्थान भिन्न होता है। जैसे गुजराती में 'मेहमान' लिखा- बोला जाता है, जबकि हिंदी में 'ए' की मात्रा 'म' पर होती है, न कि 'ह' पर। अतः हिंदी में इस शब्द की सही वर्तनी होती है, 'मेहमान' ठीक उसी तरह गुजराती में 'मेहता' होता है, जबकि हिंदी में 'मेहता' लिखा- बोला जाता है। कुछ ऐसे समान से दिखनेवाले शब्द भी हैं, जिनकी केवल मात्रा भिन्न होती हैं। यहाँ उदाहरण के

लिए कुछ ऐसे विशिष्ट शब्द दिए गए हैं, जिनकी मात्रा परिवर्तित हो जाने से पूरा अर्थ बदल जाता है। जैसे-

कुल- सब, पूरा, वंश	कूल- तट, किनारा
चल- अस्थिर	चाल- गति, चालाकी
शकल- टुकड़ा	सकल- सम्पूर्ण
सुत- पुत्र	सूत- डोरा, सारथि
गृह- घर	ग्रह- सूर्य, चन्द्र आदि ग्रह
प्रथा- रीति	पृथा- कुंती
परिणाम- फल	परिमाण- नाप, मात्रा
लक्ष- लाख	लक्ष्य- ध्येय, उद्देश्य
विष- जहर	बीस- एक संख्या
छत- छाजन	क्षत- घायल, घाव
स्त्रोत- प्रवाह	स्तोत्र- प्रार्थना
प्रासाद- भवन, महल	प्रसाद- अनुग्रह, भगवान को अर्पित भोग
शम- शांति	सम- अभिन्न, बराबर
शुक्ल- श्वेत	शुल्क- कीमत, फीस

❖ बोध प्रश्न

नीचे लिखे वाक्यों में रिक्तस्थान की पूर्ति सही विकल्प का चयन करते हुए करें :

1. महाभारत के युद्ध में कृष्ण ने अर्जुन का..... होना स्वीकार किया था.
(सूत / सुत)
2. परीक्षा के लिए जाते हुए बालक को माँ ने भगवान का..... दिया.
(प्रासाद / प्रसाद)
3. वृंदावन में श्रीकृष्ण रमणीय यमुना..... पर शस इचाया करते थे.
(कूल / कुल)
4. आज नयी बहू का..... प्रवेश है. (ग्रह / गृह)
5. कवि मयूर ने कुछ रोग से मुक्तिके लिए सूर्य..... का पाठ किया था.
(स्रोत / स्तोत्र)

3.6 आगत शब्दों की वर्तनी

हिंदी में अन्य भाषा के शब्दों का सहज स्वीकार किया गया है। अरबी, फारसी, तुर्की, पुर्तगाली, अंग्रेजी समेत कई विदेशी भाषाओं के शब्दों को अपनाकर अपनी शब्द-संपदा समृद्ध की है। विदेशी भाषा के शब्दों के कारण हिंदी में विशेष ध्वनियाँ विकसित हुई हैं। जैसे फारसी प्रभावित ध्वनियाँ 'क', 'ख', 'ग', 'ज', 'फ', जिन्हें मूलतः नुक्ते के साथ लिखा जाता है, कुल, खबर, गैर, जमी, फकीर आदि इसके

उदाहरण हैं। किंतु हिंदी में स्वीकार लिए जाने के बाद अब इस तरह के लगभग सभी शब्दों को नुक्तेके बिना ही लिखा जाता है। नुक्ता लगाने की आवश्यकता कुछ ऐसे शब्दों में पड़ती है, जहाँ बगैर नुक्तेके समान वर्तनी का दूसरा शब्द भी दूसरे अर्थ में प्रचलित हो, जैसे 'राज' राज-काज की बातें राजमहल; राजनीति यहाँ 'राज' शब्द - संस्कृत मूल का नुक्तेके बगैर शब्द है, जो राजा से संबंधित अर्थ देता है। वहीं 'राज' - राज की बात (रहस्य की बात); राजदार (रहस्य जानने वाला); राजफाश (रहस्योद्घाटन) - यहाँ 'राज' नुक्तेके साथ है और 'रहस्य' अर्थ में प्रयुक्त है, यद्यपि इन उदाहरणों में यदि नुक्तेके बिना 'ज' का भी इस्तेमाल करें तो भी अर्थ बिना बाधा के संप्रेषित होता है। किंतु ऐसे स्थलों में किसी भी तरह के संशय या गलतफहमी से बचने के लिए नुक्तेके साथ 'ज' का प्रयोग करना ही उचित होगा।

आइये! अब केंद्रीय हिंदी निदेशालय, उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय , भारत सरकार द्वारा हिंदी में स्वीकृत अरबी, फारसी, तुर्की आदि के शब्दों की मानक वर्तनी को देखें :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
इंकार	इनकार	पर्वाह	परवाह
कर्वट	करवट	पर्वाना	परवाना
इंक्लाब	इनक्लाब	फिल्हाल	फिल्हाल
नुक्सान	नुकसान	इंसान	इनसान
फर्मान	फरमान	तनखाह	तनखाह
तन्हाई	तनहाई	अस्ल	असल
बर्बाद	बरबाद	सर्कार	सरकार
फुर्सत	फुरसत	मंजर	मनजर
इंतहा	इनतहा	तन्हा	तनहा
तिल्स्म	तिल्स्म	पुखता	पुखा
गलत	गलत	नक्ल	नकल
दफ्तर	दफतर	सर्कस	सरकस
वर्ना	वरना	शर्बत	शरबत
फुरती	फुर्ती	रुखसत	रुखसत
बिल्कुल	बिलकुल	अक्सर	अकसर
अशरफी	अशर्फी	इमतहान	इम्तहान
श्फ्तार	श्फतार	शर्म	शरम
शकल	शकल	सखत	सखत

अंग्रेजी भाषा से आगत शब्दों में 'ऑ' नई ध्वनि है। निम्नोक्तशब्दों में इस ध्वनि का प्रयोग किया जाना चाहिए जैसे-

ऑक्सीजन, ऑफिस, ऑर्डर, कॉल, कॉलेज, टॉकीज, डॉक्टर, पॉलिश, बॉय, बॉल, मॉल, डॉल आदि।

❖ बोध प्रश्न

नीचे लिखे वाक्यों में वर्तनी की अशुद्धियाँ दूर कीजिए

1. इंतहा हो गयी इन्तजार की।
2. यदि वर्षा समय पर नहीं हुई तो फसल बर्बाद हो जायेगी और किसानों का बहुत नुक्सान होगा।
3. इमतहान में नकल करना गलत बात है।
4. इत्तफाक से कालेज में छुट्टी थी।
5. मेरी आपसे इल्तजा है कि आप यह शर्बत जरूर पियें।

3.7 दो वर्तनी वाले शब्द

हिंदी में कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके लिए दो तरह की वर्तनियाँ प्रचलित हैं और दोनों समान रूप से मान्य हैं। ऐसे कुछ शब्द हैं:

अंजलि- अंजली	गरमी- गर्मी	भरती- भर्ती
सरदी- सर्दी	दुबारा- दोबारा	दुकान- दूकान
केशर- केसर	बरतन- बर्तन	पिंजरा- पिंजड़ा
फुरसत- फुर्सत	कोश- कोष	हलवा- हलुआ
तलवा- तलुआ	बिल्कुल- बिल्कुल	बरफ- बर्फ
उषा- ऊषा	पपिहा- पपीहा	गरदन- गर्दन

3.8 साठ बिंदु

आपने हिंदी वर्तनी का अध्ययन इस इकाई में किया है। आशा है, अब आप हिंदी शब्दों की सही वर्तनी से अच्छी तरह परिचित हो गये होंगे और शुद्ध हिंदी लिखने में सक्षम हो गये होंगे, आइये। इकाई में आयी सभी प्रमुख बातों को एक बार फिर से दोहरा लें।

- शब्दों को लिखने की शीति को वर्तनी कहते हैं।
 - वर्तनी की अशुद्धि से अर्थ का अनर्थ हो जाने की पूर्ण संभावना रहती है, अतः वर्तनी की शुद्धता का सदैव ध्यान रखना चाहिए, विशेषकर लिखने में।
 - हिंदी की लिपि देवनागरी लिपि की एक विशेषता वर्णों पर शिरोरेखा है। लिखने के शिरोरेखा का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।
 - ह्रस्व और दीर्घ मात्रा का समुचित प्रयोग किया जाना चाहिए।
 - संयुक्तक्षरों को लिखते समय विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- आगत शब्दों की वर्तनी को मानक के अनुसार ही प्रयुक्त करने का अभ्यास करना चाहिए।

3.9 परीक्षोपयोगी पश्चावली

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें

1. हिंदी वर्तनी की विशेषताओं को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए. :
2. सही वर्तनी का प्रयोग न करने से क्या अनर्थ हो सकता है, इस पर क्या के माध्यम से प्रकाश डालिए.

● निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :

1. वर्तनी के लिए ह्रस्व और दीर्घ मात्राओं के सामान्य नियम
2. हिंदी के आगत शब्दों की वर्तनी
3. संयुक्तक्षरों को लिखने के नियम
4. गुजराती और हिंदी भाषाओं की चर्तनी भिन्नता के कुछ उदाहरण

● निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर निर्देशानुसार दीजिए :

1. निम्नलिखित शब्दों की अशुद्धियाँ दूर कर उनके स्थान पर शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करें.

(1) आशीर्वाद (2) समाजीक (3) श्रीमति (4) उच्छरण (5) कुत्रिम (6) सन्मान (7) क्षमावान (8) निरधन (9) प्राकृतिक (10) पति (11) विशुदेव (12) शध्या

2. निम्नलिखित वाक्यों की वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ दूर कर शुद्ध वर्तनी के साथ वाक्य पुनः लिखिए:

- (1) हम बजार जा रहे हैं.
- (2) कल से हमारी परीक्षा है.
- (3) माला के घर अतिथी आये हुए हैं.
- (4) अधीक लोभ नहीं करना चाहिए.
- (5) मंच पर नेपथ्य से अवाज आ रही हैं,
- (6) सोशल मीडिया युवाओं को आकृष्ट कर रहा है.
- (7) नेहा के अवशर सुन्दर हैं.
- (8) लोकसभा के प्रतिनिधी को एम. पी. कहते हैं,
- (9) मनुश्य विचारशील प्राणी है,
- (10) बड़ों को सन्मान देना चाहिए.

3. निम्नलिखित अनुच्छेद में वर्तनी की अशुद्धता दूर कीजिए:

माँ तुम मुझे धोका देकर यूँ चली जाओगी ? मेरा बनता काम बिगाड़ोगी ? जानती नहि, साहब खुश होगा, तो मुझे तब मिलेगी माँ चूप हो गई. फीर बटे के मुंह की ओर देखती हुई- बोलतीं - क्या तेरी तश्किलहोगी ? क्या साहब तेरी तश्किलकर देगा ? क्या उसने कुछ कहा है ?

3.10 उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली
2. मानक हिन्दी व्याकरण, डॉ. लक्ष्मी कान्त पाण्डेय,
3. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, वासुदेवनन्दन प्रसाद
4. [https://hi.m.wikipedia.org/wiki/मानक हिंदी वर्तनी](https://hi.m.wikipedia.org/wiki/मानक_हिंदी_वर्तनी)
5. [m.bharatdiscovery.org/india/हिन्दी के अशुद्ध शब्द](http://m.bharatdiscovery.org/india/हिन्दी_के_अशुद्ध_शब्द)

इकाई 4 : हिन्दी में विशम चिह्न

रूपरेखा

- 4.1 उद्देश्य
- 4.2 प्रस्तावना
- 4.3 विशम चिह्नों की परिभाषा
- 4.4 विशम चिह्नों की आवश्यकता
- 4.5 विशम चिह्नों के प्रकार
- 4.6 सार-बिंदु
- 4.7 परिक्षोपयोगी प्रश्नावली
- 4.8 उपयोगी पाठ्य सामग्री

4.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो! पिछली तीन इकाइयों से हम हिंदी व्याकरण संबंधी कुछ जरूरी मुद्दों पर ध्यान देते हुए शुद्ध हिंदी लिखने का अभ्यास किया है। इस इकाई में हम लिपि के एक बेहद जरूरी अंग - विशम चिह्नों को समझने और उनका अभ्यास करने जा रहे हैं। विशम चिह्नों के सही उपयोग के बिना कई बार लिखित भाषा अपना सही अर्थ संप्रेषित करने में सर्वथा असमर्थ हो जाती है। अतः विशम चिह्नों को अच्छी तरह जानना और उनका सही उपयोग करना सीखना बहुत जरूरी है। इस इकाई के माध्यम से हमने इसी आवश्यकता की पूर्ति करने की कोशिश की है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- विशम चिह्नों का तात्पर्य जान पाएँगे.
- लिखित भाषा में विशम चिह्नों की अनिवार्यता को समझा सकेंगे.
- विविध विशम चिह्नों से परिचित हो सकेंगे.
- वाक्यों में विविध विशम चिह्नों का उचित उपयोग सीख सकेंगे.

4.2 प्रस्तावना

विद्यार्थी मित्रो ! आपने पिछले दिनों कहानी-कविता या उपन्यास कब पढ़ा था ? शायद हफ्ते भर पहले पढ़ा होगा या एक-दो महीने पहले! पढ़ते समय क्या आपका

ध्यान विश्राम चिह्नो पर गया था? हो सकता है कि न गया हो! लेकिन आपके अनजाने ही उन विश्राम चिह्नों के मुताबिक आपके मन में भाव-अर्थ जरूर स्पष्ट हुए होंगे, क्या ऐसा नहीं है? चलिए एक प्रयोग कर देखते हैं!

नीचे लिखे अनुच्छेद को पढ़िए :

क्या नाम है तुम्हारा याणी में कोमलता माधुर्य भी भावपूर्ण मुखमंडल पर सख्त तरल बेह और आँखों में अपनापन के चमकीले भावों का अद्भुत संगम सिर झुकाए चौखट के पार खड़ी वह पूछ रही है मेश नाम तो चेखुरा है अपना परिचय दीजिए उसने किंचित संकोच किंतु सम्मान भाव से स्वागती मुद्रा में भीतर आने का आग्रह से भरा संकेत दिया मैं प्रयाग से आ रही हूँ जयशंकर प्रसाद से मिलना है है कि नहीं अरे हाँ तुमने जो पूछा यह तो बताऊँ नाम मेश महादेवी है

क्या आपको उपर्युक्त गद्यांश पढ़ने और उसका अर्थबोध होने में कोई कठिनाई आई? जरूर आई होगी क्योंकि उपर्युक्त गद्यांश में एक भी विश्राम चिह्न नहीं है। आइए, अब इसी गद्यांश को विश्राम चिह्नों के साथ पढ़ते हैं -

"क्या नाम है तुम्हारा?" वाणी में कोमलता, माधुर्य भी. भावपूर्ण मुखमंडल पर सरल तरल खेह और आँखों में अपनापन के चमकीले भावों का अद्भुत संगम. सिर झुकाए चौखट के पार खड़ी यह पूछ रही हैं. "मेश नाम तो चेखुरा है, अपना परिचय दीजिए." उसने किंचित संकोच किंतु सम्मान भाव से स्वागती मुद्रा में भीतर आने का आग्रह से भरा संकेत दिया. "मैं प्रयाग से आ रही हूँ, जयशंकर प्रसाद से मिलना है, है कि नहीं?..... अरे हाँ, तुमने जो पूछा, यह तो बताऊँ - नाम मेश महादेवी है."

अब जरूर पढ़ने में सुविधा लगी होगी और अर्थ भी एक बार में ही स्पष्ट हो गया होगा, साथ ही यह भी समझ में आ गया होगा कि विश्राम चिह्न क्यों जरूरी है!

4.3 विश्राम चिह्न की परिभाषा

‘विश्राम’ का अर्थ है - ‘रुकना’ या ‘ठहरना’ लिखित भाषा में इस ठहराव को दिखाने के लिए जिन विशेष प्रकार के चिह्नों का प्रयोग किया जाता है. उन्हें ही विश्राम चिह्न कहते हैं. दूसरे शब्दों में भावों और विचारों को स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग वाक्य के बीच या अंत में किया जाता है, उन्हें विश्राम चिह्न कहते हैं.

विश्राम चिह्न भाषा को स्पष्ट, सुगम और सुबोध बनाने में सहायक होते हैं. वह पाठक के भाव बोध को सरल और सुबोध बनाते हैं. जैसे -

बोलो मत चुप रहो.

बोलो, मत चुप रहो.

बोलो मत, चुप रहो.

उपर्युक्त उदाहरण में पहले वाक्य में अर्थ स्पष्ट नहीं होता। जबकि दूसरे और तीसरे वाक्य में अर्थ स्पष्ट हो जाता है लेकिन एक-दूसरे का उल्टा अर्थ मिलता है, जबकि तीनों वाक्यों में वही शब्द है।

4.4 विश्राम चिह्नों की आवश्यकता

संस्कृत भाषा का स्वरूप और व्याकरण ही कुछ ऐसा था कि उसमें विशेष विश्राम चिह्नों की आवश्यकता नहीं होती थी। किन्तु हिन्दी भाषा का स्वरूप और गठन संस्कृत से भिन्न है अतः उसमें विश्राम चिह्नों का प्रयोग आवश्यक है। कुछ लोग आज भी मानते हैं कि संस्कृत की तरह ही हिन्दी में विश्राम चिह्नों की कोई आवश्यकता नहीं है, पर विचारपूर्वक देखा जाए तो हिन्दी में विश्राम चिह्नों की बहुत आवश्यकता है। बहुत से ऐसे स्थल होते हैं जिसमें विश्राम चिह्नों का उचित उपयोग न होने से अर्थ संबंधों में अनेक प्रकार के भ्रम उत्पन्न होते हैं। जैसे एक अखबार की शीर्ष पंक्ति में समाचार प्रकाशित हुआ था कि-

"अंबाजी में एक दुर्घटना घटित हो गई कि एक स्कूल की छत गिर गई लेकिन कोई मर नहीं।"

उपर्युक्त उदाहरण में कहीं अल्प विश्राम का प्रयोग नहीं किया गया है, इससे ऐसा लगता है कि यहाँ छत गिरी वह दुर्घटना नहीं है बल्कि किसी का न मरना ही दुर्घटना है।

कहने की जरूरत नहीं कि भाषा में विश्राम चिह्नों की अति आवश्यकता होती है। जिन विचारों को मौखिक रूप में व्यक्त करना आसान होता है, उतना आसान उन विचारों को लिखित रूप में व्यक्त करना नहीं होता। यदि इन चिह्नों का प्रयोग न किया जाय तो भाव अथवा विचार की स्पष्टता में बाधा पड़ेगी और पाठक अर्थ का अनर्थ कर लेगा। वाक्यों के सुंदर गठन और भावभिव्यक्ति की स्पष्टता के लिए विश्राम चिह्नों की आवश्यकता और उपयोगिता स्वयं सिद्ध है।

❖ बोध प्रश्न

● नीचे लिखे वाक्यों के सही या गलत होने की पहचान कीजिए :

1. लिखित भाषा में ठहराव को दिखाने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग होता है उन्हें विश्राम चिह्न कहते हैं।
2. विश्राम चिह्न भाषायी लेखन कौशल के अनिवार्य घटक नहीं हैं।
3. विश्राम चिह्नों का उपयोग लिखित भाषा में भावों एवं विचारों को स्पष्टतापूर्वक द्योतित करने के लिए होता है।
4. हिन्दी भाषा की प्रकृति, गठन एवं स्वरूप ऐसा है कि विश्राम चिह्न का प्रयोग बह आवश्यक नहीं होता है।
5. विश्राम चिह्नों का उचित स्थान पर प्रयोग न होने पर अर्थ सम्बन्धी भ्रम उत्पन्न होता है।

4.5 विशाम चिह्नों के प्रकार

हिन्दी में प्रचलित प्रमुख विशाम चिह्न निम्नलिखित हैं -

1. पूर्ण विशाम (फुल स्टॉप) । या
2. अल्प विशाम (क्लामा) ,
3. अर्थविशाम (सेमीकोलन) ;
4. उपविशाम (कोलन) :
5. प्रश्नवाचक चिह्न (क्वेश्चन मार्क) ?
6. विस्मयादिबोधक (एक्स्क्लामेशन मार्क) !
7. निर्देशक चिह्न (डैश) -
8. योजक चिह्न (हाइफन) -
9. विवरण चिह्न (कोलन डैश) :-
10. उद्धरण चिह्न (इनवर्टेड कॉमाज) “ ”
11. अवतरण चिह्न (सिंगल इनवर्टेड ” कॉमाज) ` ’
12. कोष्ठक (ब्रेकेट) [{}]
13. संक्षेपसूचक चिह्न (अब्जेक्टिवेशन साइन) .या ’
14. लोप चिह्न (एलिमिनेशन साइन)
15. ऊर्ध्व अल्प विशाम (एपॉस्ट्रॉफी) ’

मानक हिषी में इन्ही १५ विशाम चिह्नों का प्रयोग होता है। यदि आप इनका सही इस्तेमाल अपने लेखन में करें तो आपकी बात अच्छी तरह से, बिना किसी संदेह के पाठको तक संप्रेषित हो जायेगी। तो आइये। अब इन विशाम चिह्नों के स्वरूप और प्रयोग के विषय में जानते हैं।

4.5.1 पूर्ण विशाम- । या .

पूर्ण विशाम का अर्थ है पूरी तरह रुकना या ठहरना, लिखित पाक्य पूरा हो जाये, बात अंतिम रूप ले ले, वहाँ पूर्ण विशाम का प्रयोग होता है। पूर्ण विशाम का चिह्न है 'खड़ी पाई' - '।'। यह एकमात्र विशाम चिह्न है, जिसे हिंदी ने मूलतः संस्कृत से ग्रहण किया है। अन्य सभी 14 विशाम चिह्न अंग्रेजी के अनुकरण पर आये हैं। संस्कृत और आधुनिक काल से पहले की हिंदी की मूल हस्तलिखित पोचियों में एकमात्र इसी विशाम चिह्न का प्रयोग मिलता है। इनमें से जिन पोधियों का संपादन और प्रकाशन आधुनिक काल में हुआ है, उनमें कुछ अन्य विशाम चिह्न, जैसे अल्प विशाम, विस्मयादिबोधक चिह्न आदि भी दिखाई पड़ते हैं। ये चिह्न वस्तुतः प्राचीन ग्रंथों के आधुनिक संपादकों द्वारा डाले गये हैं। मूल ग्रंथों में तो खड़ी पाई ही दो तरह से इस्तेमाल होती थी। श्लोक या दोहा का आधा भाग समाप्त होने पर एक खड़ी पाई और पूरा श्लोक या दोहा समाप्त होने पर दो खड़ी पाई। जैसे -

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये।

जगतः पितरौ बन्दे पार्वतीपद्मेश्वरी ॥

- गुरु गोबिंद बोज खड़े काके लागू पाया बलिहारी गुरु आपनो गोविंद दियो बताय ॥
और यह केवल पद्य के लिए नहीं था, अपितु गद्य में भी कोई दूसरा विशम चिह्न प्रयुक्त नहीं होता था क्योंकि तब उसकी आवश्यकता भी नहीं थी। जरा आप सोचियेगा कि पुराने समय में विशम चिह्न की आवश्यकता क्यों नहीं थी?

हिंदी में विशम चिह्न आधुनिक गद्य में अंग्रेजी के प्रभाव से आये। अतः ये चिह्न उसी तरह अंकित किये जाते हैं जैसे अंग्रेजी में। लेकिन पूर्ण विशम के लिए चूंकि खड़ी पाई पहले से मौजूद थी अतः वही इस्तेमाल में चलती रही। बाद में टाइप की असुविधा और खासकर हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में कम स्थान में ज्यादा से ज्यादा लेखन समाहित करने की जुगत ने खड़ी पाई को बिंदु से विस्थापित कर दिया। आज पूर्णविशम के लिए 'खड़ी पाई।' और 'बिंदु-दोनों का इस्तेमाल समान रूप से होता है।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा यद्यपि पूर्ण विशम के लिए 'खड़ी पाई।' के प्रयोग की सलाह दी गयी है, फिर भी व्यवहार में दोनों ही रूप प्रचलित हैं।

हस्तलेख में सामान्यतया 'खड़ी पाई।' ही प्रयुक्त की जाती है, जबकि कंप्यूटर टाइपिंग में सुविधानुसार 'खड़ी पाई -।' या 'बिंदु' का इस्तेमाल कर लिया जाता है। मित्रो! यहाँ यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि पूर्णविशम के पहले स्पेस नहीं आती, यानी वाक्य के अंतिम अक्षर और पूर्णविशम के बीच कोई स्पेस नहीं होती। जबकि पूर्णविशम के बाद अवश्य आती है, यानी पूर्णविशम के बाद स्पेस छोड़कर नया वाक्य शुरू करना चाहिए।

पूर्ण विशम का प्रयोग निम्नलिखित स्थलों पर होता है –

- वाक्य के अंत में –

> इमजान के पूरे तीस शेजों के बाद ईव आई है।

➤ वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है।

- अप्रत्यक्ष प्रश्न के अंत में –

> अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते।

कृपया सूचित कीजिए कि आप यहाँ कब आ रहे हैं।

4.5.2 अल्प विशम- ,

लिखित वाक्य में जहाँ थोड़ा रुकना या ठहरना हो यहाँ 'अल्प विशम' का चिह्न प्रयुक्त होता है। अल्प का अर्थ है 'थोड़ा' या 'कम', अतः अल्प विशम का अर्थ हुआ थोड़ा ठहराव या थोड़ा विश्राम।

अल्प विशम का प्रयोग निम्नलिखित स्थान, अवसर एवं संदर्भ में होता है –

- वाक्य अथवा वाक्यांश में समानधर्मा तीन या उससे अधिक शब्दों को अलग करने के लिए
 - > महमूद, मोहसिन, नूर और सम्मी हामिद के दोस्त थे.
 - एक ही प्रकार के पदबंधों, उपवाक्यों को अलग करने के लिए
 - > कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है.
 - वाक्य के मध्य में किसी क्षिप्त वाक्यांश / उपवाक्य को अलग दिखाने के लिए
 - गणित का पाठ्यक्रम बदल जाने से, मैं समझता हूँ, इस वर्ष हायर सेकेंडरी का परीक्षाफल प्रभावित होगा.
 - वाक्यांश में 'हाँ' या 'नहीं' के बाद
 - > हाँ, यह बात सच है.
 - > नहीं, ऐसा तो नहीं है.
 - ★ बस, सचमुच, अच्छा, वास्तव में, खैर आदि से प्रारंभ होने वाले वाक्यों में इन शब्दों के बाद
 - > बस, देख लिया तुम्हें,
 - > सचमुच, यहाँ बहुत शांति है.
 - अच्छा, तो यह नाटक था.
 - > वास्तव में, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है.
 - > खैर, इतने से भी काम चल जाएगा.
- उद्धरण से पूर्व
- दुकानदार ने कहा, "यह तुम्हारे काम का नहीं है जी."
- ★ किंतु, लेकिन, क्योंकि, पर, परन्तु, अतः आदि समुच्चयबोधक उपवाक्यों से पहले
 - > माँ घर में रहती है, अतः वह बच्चे की देखभाल कर लेती हैं.
- संबोधन के बाद
 - > हामिद, जल्दी से कपड़े बदल लो.
- भावातिरेक व्यक्त करने के लिए शब्द / शब्द समूह पर चल देने के लिए उनकी पुनरावृत्ति के बीच
 - > भागो, भागो, शेर बाड़ फांद कर बाहर आ गया है.
- शोक की अभिव्यक्तिविस्मयादिबोधक शब्दों के बाद
 - > हाय, मैं तो लुट गया.
 - > धिक्कर है, तुमने ऐसा ओछा काम किया.
- कुछ अवसरों पर संयोजक शब्दों, जैसे, 'तब', 'वह', 'तो', 'कि' आदि के स्थान पर

- > जब स्टेशन पर पहुँचे, पानी तेज हो गया. (तब के स्थान पर)
- > जो पत्र कल आया था, कहाँ है? ('यह' के स्थान पर)
- > जब हमें देर हो गयी, हम उसके घर पर ही रुक गये. ('तो' के स्थान पर)
- > क्या आप जानते हैं, पृथ्वी अपने जन्म के समय आग का गोला थी. ('कि' के स्थान पर)

● दिनांक लिखते समय माह के नाम के बाद

> ०५ फरवरी, २०२०

मित्रो! ध्यान रखियेगा कि टाइप में अल्प विशम के पहले कभी स्पेस नहीं दी जाती, जबकि बाद में अवश्य दी जाती है.

अभ्यास - 1

नीचे दिये गये अनुच्छेद में आवश्यकतानुसार उचित जगहों पर पूर्ण विशम और अल्प विशम का प्रयोग कीजिए

अर्चना रेनू और ऋचा बचपन की सहेलियाँ हैं तीनों एक साथ एक ही कक्षा में एक ही विद्यालय में पढ़ती थी विद्यालय से उत्तीर्ण होने के बाद शायद आगे की पढ़ाई के लिए या फिर किसी और कारण से यह मुझे ठीक से नहीं मालूम वे अलग अलग जगहों पर चली गयीं और बहुत वर्षों तक उनका मिलना न हो पाया हों पत्र व्यवहार जरूर होता रहा और वे संपर्क में बनी रहीं आप सोच नहीं सकते कितने वर्षों तक वे नहीं मिली तीस वर्षों तक! वास्तव में यह दोस्ती की मिसाल है एक दिन उन्होंने तय किया बस बहुत हो चुका अब मिलना ही है अर्चना विदेश में रहती थी अतः उसका आना ही सबसे मुश्किल था तीनों की एक वर्चुअल मीटिंग हुई ऋचा ने अर्चना से कहा "अर्चना तुम जब भी भारत आने की योजना बनाओ हमें तुरंत खबर करो हम तुम्हारी यात्रा योजना के अनुसार मिलने का स्थान और दिन तय कर लेंगे" रेनू ने कहा "तुम कह तो रही हो पर बाद में मुकर मत जाना क्योंकि सबसे ज्यादा व्यस्त तो तुम ही रहती हो. ऋचा ने प्रतिवाद किया "देखो देखो यह इल्जाम है व्यस्त तो हम सभी रहते हैं लेकिन जब वो सखियाँ मिल रही हो तो क्या तीसरी नहीं आयेगी हाय मुझ पर इतना भी विश्वास नहीं" "अरे नहीं नहीं हमें पूरा विश्वास है तुम जरूर आओगी" अर्चना बोल पड़ी संयोगवश कुछ समय बाद ही अर्चना का भारत आने का कार्यक्रम बन गया और अंततः 16 मई 2022 को तीनों सहेलियाँ. लगभग तीस वर्षों बाद पुनः एक दूसरे की बाहों में बाहे डाले मस्ती करती नजर आई

4.5.3 अर्थ विशम -;

लिखित या उच्चरित चाक्य में जहाँ अल्प विशम से थोड़ा अधिक ठहरे तथा पूर्ण विशम से कुछ कम उहरे हैं, उसे अर्थ विशम कहते हैं. अर्थ विशम के लिए चिह्न है:- ' ; '

अर्थ विशम का प्रयोग निम्नलिखित रूपों में होता है-

● एक दूसरे से जुड़े छोटे छोटे वाक्यों के बीच

> विद्या विनय देती है; विनय पात्रता; पात्रता धन, धन से धर्म होता है और तब सुख प्राप्त होता है.

> जो चाहे, करो, बस, हमे तंग मत करो.

> यह सब तो ठीक है; परंतु सोचिए, तब निर्णय कीजिए

> भारत में स्वतंत्रता का निर्णायक शंख महात्मा गाँधी ने फूँका; अहिंसा और असहयोग के अस्य उन्होंने थिये.

● अंकीय विवरण देने में ➤ छात्र 600; छात्राएँ 565; अध्यापक 70, अध्यापिकाएँ 110.

> दूरभाष 0271338227; 05422277518

मित्रो! अर्थविशम के साथ भी पहले स्पेस नहीं आती, बाद में जरूर आती है.

4.5.4 उपविशम - :

● सूची देने में

> महत्वकांक्षी के तीन शत्रु हैं आलस्य, हीनभावना और पशुश्रय.

● नाटक में संवाद देने में

> राम हा सीते, कहाँ हो तुम!

● सूचना देने में

> स्थान बैठक कक्ष.

> समय सुबह १०:३० बजे

● समय बताने के लिए

> दोपहर २:०० बजे

● जब किसी कथन को अलग दिखाना हो

नाशी मुक्तिहकीकत या सपना

उपविशम के आगे पीछे स्पेस आती है. केवल समय संबंधी अंको के बीच स्पेस नहीं आती.

अभ्यास -2-

नीचे लिखे वाक्यों में उचित स्थलों पर अर्थविशम और उपविशम का प्रयोग कीजिए।

1. आपने उसकी निंदा की अतएव यह आपका दुश्मन ही बनेगा.

2. स्वाभिमान मनुष्य को सहाय देता है फिर भी कितने हैं जो इसको अपनाते हैं.

3. सूर्य पृथ्वी से बहुत दूर है यह पृथ्वी से काफी बड़ा है.

4. 8:10:32 'आठ बजकर दस मिनट बत्तीस सेकेंड

5. पृथ्वी पर तीन प्रकार के जीव मिलते हैं स्थलचर, जलचर और उमबचर

4.5.5 प्रश्नवाचक चिह्न

लिखित या उच्चरित वाक्य में प्रकाश करने या पूछने का भाव व्यक्त होता हो उस चिह्न को प्रश्नवाचक चिह्न कहते हैं प्रश्नवाचक का चिह्न है- '?'

प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित अवस्थाओं में होता है

- प्रश्नसूचक वाक्यों के अंत में

> आपका नाम क्या है?

- यदि एक वाक्य में कई प्रश्नवाचक उपवाक्य हो तो पूरे वाक्य के समाप्त होने पर

> तुम रोज कहाँ जाते हो, किसके साथ जाते हो, क्या करते हो, बताते क्यों नहीं?

- जब कई प्रश्न एक साथ पूछे जाएँ, तो प्रत्येक प्रश्न के बाद

> वंगे हो गये? कहाँ? कब? कैसे?

प्रश्न चिह्न के पहले स्पेस नहीं आती, बाद में आती है।

4.5.6 विस्मयादिबोधक चिह्न - !

लिखित वाक्य में तीव्र मनोमायों की अभिव्यक्तिके लिए जो चिह्न प्रयुक्त होता है, उसे विस्मयादिबोधक चिह्न कहते हैं। यह चिह्न है।

विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग निम्न स्थितियों में किया जा सकता है।

- विस्मय, हर्ष, विषद, घृणा, आश्चर्य आदि प्रकट करने वाले शब्दों, उपवाक्यों अथवा वाक्य के अंत में -

> कितना सुहावना है यह स्थान!

➤ हाय! बेचारा मारा गया।

> इतनी लंबी दीवार!

> ईश्वर न करे!

> चिरंजीवी हो!.

- तीव्र मनोविकार व्यक्त करने के लिए

> गधा कहीं का!

> निपट गँवार!

- प्रश्नवाचक वाक्य में भी यदि तीव्र मनोविकार व्यक्त हो तो

> बोलते क्यों नहीं, क्या गूंगे हो।

- भावावेग की उत्तरोत्तर वृद्धि दर्शाने के लिए क्रमशः एक, दो, तीन चिह्नों का प्रयोग किया जा सकता है

> वाह! क्या बात है!! बहुत अच्छे!!!

- संबोधन के लिए

> बोलो मोहन! क्या कह रहे थे?

> शधा! जरा यहाँ तो आना.

> मित्रो! आज हमे अतिरिक्तरूप से सजग हो जाने की आवश्यकता है।

● स्वीकृति / अस्वीकृति प्रकट करने के लिए

> अच्छा! मैं तुम्हारे साथ घूमने चलूँगी।

> ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं है।

अविश्वासनीयता प्रकट करने के लिए

● हैं। ऐसा भी हो सकता है क्या?

विस्मयादिबोधक चिह्न के पहले स्पेस नहीं आती, बाद में आती है।

अभ्यास -3

नीचे लिखे वाक्यों में उचित जगहों पर प्रश्नवाचक और विस्मयादिबोधक चिह्न आवश्यकतानुसार लगाइए

1. तुम्हारा नाम क्या है

2. मैं क्या करता हूँ मैं कहाँ कहाँ जाता हूँ कहाँ क्या खाता हूँ यह सब जानने के आप इच्छुक क्यों हैं।

3. कौन कब कहाँ कैसे परिवर्तन लायेगा

4. फिल्में कैसे बनती हैं जानना चाहोगे

5. पेड़ पर मछली को चढ़ते देखा है कभी

6. हे भगवान बहुत बुरा हुआ

7. धत ऐसी गंदी बात नहीं करते

8. हाँ में कल तेरे घर जरूर आऊँगा

9. क्या ऐसा हुआ इसके साथ

10. ए जी सुनते हो

11. बाह बहुत मजा आया

12. ओह मैं तो सचमुच डर गया था

13. जीते रहो पुत्र तुम सफल बनोगे

14. अवश्य हम आपकी बात से सहमत है

15. काश आज मेरे पिता जिंदा होते

4.5.7 निर्देशक चिह्न -

निर्देशक चिह्न के लिए हिंदी में भी 'डैश' शब्द ही अधिक प्रचलन में है। यह शब्दों के बीच दोनों तरफ स्पेस के साथ बड़ी पाई '-' के रूप में लिखा जाता है। निम्नलिखित स्थितियों में इसका प्रयोग होता है:

● किसी व्यक्तिके वाक्य को उद्धृत करने से पूर्व

> अध्यापक - भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे?

● कहना, लिखना, बोलना, बताना आदि क्रियाओं के बाव

> कमला ने कहा- मैं कल चली जाऊँगी।

विवरण / व्याख्या देते समय

> प्रतियोगिता के लिए चयनित छात्राओं के नाम हैं रमा, अलका, मीरा और दीपा.

> परिश्रम से सब कुछ प्राप्त हो सकता है यश, मान, संपत्ति और सुख.

> आप जाना चाहते हैं? जाइये- बड़े शौक से,

> सभी ने - अध्यापकों, कर्मचारियों, छात्रों ने निर्णय का स्वागत सहर्ष किया. (यहाँ हैश के स्थान पर कोष्ठक का भी प्रयोग हो सकता है.)

● उद्धरण के बाद लेखक / यत्ता के नाम से पूर्व

> उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाय. विवेकानंद

● मुख्य वाक्य के बीच में आने वाले क्षिप्त वाक्यांश के आगे और पीछे

> लिखना - मौलिक रचना करते रहना मेरा काम है. (यद्यपि यहाँ डैश की जगह अल्पविशम का भी प्रयोग किया जा सकता है.)

● 'अमुक' से 'अमुक' तक को व्यक्त करने के लिए संख्याओं, शब्दों के बीच

> पृष्ठ 4-6 (पृष्ठ संख्या 4 से पृष्ठ संख्या 6 तक)

> सन् 1960 - 70 (सन् 1960 से सन् 1970 तक)

> अहमदाबाद - वाराणसी (अहमदाबाद से वाराणसी तक)

● जब शब्द या वाक्यांश का संबंध एकाधिक दूसरे शब्दों या वाक्यांशों से जुड़ रहा हो

> शब्दकोश में प्रयोग

● कर्ता

● धर्मा

● शाला

(उपर्युक्तका अर्थ हुआ कि मूल शब्द 'प्रयोग' के साथ नीचे लिखे प्रत्येक शब्द मिलकर विविध यौगिक शब्द बनते हैं- प्रयोगकर्ता; प्रयोगधर्मा; प्रयोगशाला)

> भारतीय दर्शन के अनुसार ब्रह्मा

- एक है,

- निराकार है.

- निर्गुण है.

- सर्वव्यापी है.

(उपर्युक्त मुख्य वाक्यांश नीचे लिखे प्रत्येक वाक्य खंड के साथ मिलकर पूर्ण वाक्य बनायेगा.) सामान्यतया डैश के पहले और बाद में भी स्पेस दी जाती है.

4.5.8 योजक चिह्न --

'योजक' शब्द का अर्थ है- 'जोड़ने वाला' जहाँ शब्द जोड़े में प्रयोग किये जाते हैं, यहाँ उन दो शब्दों की अलग अलग पहचान के लिए उनके बीच योजक चिह्न (हाइफन) का प्रयोग किया जाता है. यह डैश जैसा ही, पर लंबाई में उससे छोटा होता है-- '.

योजक चिह्न लगाने की आवश्यकता इसलिए है, क्योंकि यह शब्द के उच्चारण, वर्तनी एवं अर्थ को स्पष्ट करता है। योजक चिह्न के प्रयोग में ठीक-ठीक ध्यान न रखा जाए तो अर्थ और उसके उच्चारण से सम्बन्धित अनेक प्रकार के भ्रम हो सकते हैं, इस सम्बन्ध में रामचन्द्र वर्माजी ने अपनी पुस्तक 'अच्छी हिन्दी' में भ्रम के कुछ उदाहरण इस प्रकार दिए हैं

- 'उपमाता' का अर्थ उपमा देनेवाला भी है और सौतेली माँ भी। यदि दूसरा अर्थ अमीष्ट है तो उप और माता के बीच योजक चिह्न लगाना आवश्यक है। नहीं तो अर्थ स्पष्ट नहीं होगा।

- 'कुशासन' का अर्थ बुरा शासन भी होता है और कुश से बना हुआ आसन भी। यदि पहला कार्य अमीष्ट है तो 'कु' के बाद योजक चिह्न लगाना आवश्यक है।

योजक चिह्न का प्रयोग इन स्थितियों में किया जा सकता है –

- द्वन्द्व समास के दो पदों के बीच

> माता-पिता; भाई-बहन; नर-मादा; राम-लक्ष्मण आदि

- तत्पुरुष समास में जब समस्त पद दो अर्थों को देने लगे तो जिन दो पदों के बीच समास हुआ है, उनके बीच

> भू-तत्त्व (बिना हाइफन के लिखने पर इसे 'भूत त्व' भी पढ़ा और समझा जा सकता है)

- दो समानार्थी शब्दों की पुनरुक्ति होने पर

> शोम-शोम; घर-घर; दूर-दूर आदि

- दो परस्पर विलोम शब्दों के बीच

> शत-दिन; उठाना-बैठना; आई-गई; अच्छा-बुरा; ठंडा-गरम आदि।

साम्यसूचक सा, सी, से के पहले

> छोटा-सा; बड़ी-सी, सुंदर-से आदि

- समान अर्थ वाले शब्द युग्म के बीच

> मान-मर्यादा, सेठ-साहूकार, हंसी-खुशी, कूड़ा-कचरा आदि

- जब दो शब्दों में एक सार्थक और दूसरा निरर्थक हो तब

> शोटी-शोटी, पानी-बानी, उल्टा-पुल्टा।

- योजक चिह्न के पहले और बाद में स्पेस नहीं दी जाती

अभ्यास -4

निम्नलिखित अनुच्छेद में उचित स्थानों पर डैश या हाइफन का प्रयोग कीजिए: बाबा "कहानी सुनोगे?" "हाँ!" सभी बच्चे एक स्वर में खुशी से चिल्ला उठे। "परियों की कहानियाँ" लड़कियाँ चहकी। "नहीं, पीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियों" लड़के चिल्लाये। सोनू बोला "बाबा, आज बड़ीसी कहानी सुनाइये, जिसमें हमारे जैसे खूब सारे

बच्चे हो! जो हमारी ही तरह स्कूल जाते हो, जिन्हें होमवर्क करना पड़ता हो और जो हमारी ही तरह मस्ती भी करते हो. राजाशानी; परियोंवरियों की कहानी हमें नहीं सुननी."

4.5.9 विवरण चिह्न

आगे सूची या कोई अन्य विवरण देना हो तो मुख्य वाक्य के बाद विवरण चिह्न (-) का प्रयोग किया जा सकता है. यह कोलन और डैश का मिलाजुला रूप है और अक्सर केवल कोलन (:) या केवल डैश (-) से भी काम चल लिया जाता है, सर्वनाम के तीन भेद है -

(1) उत्तम पुरुष (2) मध्यमपुरुष (3) अन्य पुरुष

विवरण चिह्न के पहले और बाद में भी स्पेस आती है.

4.5.10 उद्धरण चिह्न - " "

किसी के कहे हुए को ज्यों का त्यों लेखन में रखने पर कथन के दोनों ओर उद्धरण चिह्न ("") का प्रयोग किया जाता है.

> अलोपीदीन ने कहा "नहीं भाई साहब, ऐसा न कहिए."

● किसी सिद्धांत वाक्य या लोकोक्तिको उद्धृत करते समय भी उद्धरण चिह्न प्रयुक्त होता है.

> श्री कृष्ण ने कहा है, "कर्म करो, फल की आशा मत रखो"
"मन चंगा तो कठौती में गंगा".

> उद्धरण चिह्न जिस वाक्य या शब्द पर लगाया जाता है, उसके और उद्धरण चिह्न के बीच स्पेस नहीं आती.

4.5.11 अवतरण चिह्न - "

वाक्य में जब किसी शब्द को विशिष्ट रूप से बताना चाहते हैं तो अवतरण चिह्न (") का प्रयोग करते हैं.

● अवतरण चिह्न सामान्यतया नामों के साथ प्रयुक्त होता है

> 'धर्मयुग' एक समय में हिंदी की बहुप्रतिष्ठित पत्रिका थी.

> 'कामायनी' हिंदी का प्रसिद्ध महाकाव्य है.

► 'फूल की अभिलाषा' कविता का भावार्थ लिखिए.

● वाक्य में किसी शब्द को अलग से उभारने के लिए ► 'शम ने पुष्ट शवण को तीर से मारा.' इस वाक्य में 'शम' कर्ता है, 'शवण' कर्म, 'पुष्ट' विशेषण, 'तीर' कर्ण और 'गारा' क्रिया.

● किसी शब्द या वाक्यांश की व्याख्या बताने के लिए

> 'अलज' का अर्थ है, 'जल में पैवा होने वाला'. इस व्याख्या के अनुसार जल में पैवा होने वाली किसी भी चीज को जलज कहा जा सकता है, पर व्यवहार में यह शब्द 'कमल' के लिए सढ़ हो चुका है.

> "मणिकर्णिका घाट जाने वाली गली में मुड़ा, तो सामने मुर्वा जा रहा था।" यहाँ 'मुर्वा जा रहा था' पर आपको हैरत हुई होगी और संभव है कि भय से सिहरन भी हुई हो। पर, यह बनारस है। यहाँ 'शवयात्रा' को बताने का यही तरीका है।

अवतरण चिह्न जिस शब्द या वाक्यांश पर लगाया जाता है, उसके और अवतरण चिह्न के बीच स्पेस नहीं आती।

अभ्यास - 5

नीचे लिखे अनुच्छेद में आवश्यकतानुसार विवरण चिह्न, उद्धरण चिह्न और अवतरण चिह्न का प्रयोग कीजिए।

मेरे यहाँ चोरी हो गयी है, साहब! एक आदमी हड़बड़ाते हुए थाने में घुस आया। अच्छा? कुर्सी पर बैठे दशोगा ने कान खुजाते हुए इत्मिनान से जवाब दिया। क्या क्या चीज गयी? सूची दे दो। एफ आई आर कर दो। देख लेंगे। दशोगा अभी भी इत्मिनान में ही था। आदमी दाहिनी ओर बैठे बाबू की ओर मुड़ गया। एफ आई आर लिख लीजिये बाबू। उसने चिड़ैरी की। चलो बताओ, क्या क्या गया। बाबू तैयार हो गया, आदमी ने चोरी गये सामानों की सूची दी -

एक पीतल की बाल्टी; सौ फुट लंबी कुँए से पानी खींचने की रस्सी; एक बकरी और एक कुआँ।

क्या कहा? कुआँ? बाबू का मुँह खुला का खुला रह गया। दशोगा अपनी कुर्सी पर सीधा हो गया। क्या बकते हो बे! एक कुआँ कैसे चोरी हो सकता है? दशोगा गुर्गिया। आदमी ने अपनी पोटली में से एक कागज निकाल कर टेबल पर सामने फैला दिया, देखिये, यहाँ साफ लिखा है कि हमने अपनी जमीन पर कुआँ बनवाया है लोन लेकर सरकारी कागज कभी झूठ थोड़े बोलेगा। और आप खुदे चल कर देख लें, हमारी जमीन पर अब कुआँ है ही नहीं। चोरी हो गया साहब! पक्कचोरी हो गया - आदमी रुआँसा हो आया।

4.5.12. कोष्ठक - [{}]

जब वाक्य में कुछ ऐसे शब्द, वाक्यांश या वाक्य डालने हों, जो संबंधित होने पर भी मुख्य वाक्य का हिस्सा न हो, तो कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है। ये तीन प्रकार के होते हैं - प्राथमिक (); मध्यम ध २ और बड़ा [] कोष्ठक, सामान्यतया प्राथमिक कोष्ठक ही प्रयोग में आता है, लेकिन जब दो कोष्ठकों का एक साथ इस्तेमाल करने की आवश्यकता पड़ती है, तो प्राथमिक के साथ माध्यम या कभी कभी बड़े कोष्ठक का प्रयोग होता है। और जब किसी परिस्थिति में तीन कोष्ठक बनाने हो तो प्राथमिक () को सबसे अंदर की तरफ, मध्यम ध २ को बीच में और बड़े [] को सबसे बाहरी तरफ रखा जाता है।

> राष्ट्रपति तीनों सेनाओं (थल, जल, वायु) के प्रमुख होते हैं।

> मेश बचत खाता बैंक ऑफ बड़ौवा (आई एफ एस सी BARBODBBOPA

(पाँचचों अक्षर शून्य है) में

➤ शब्दों के लिंग उनके अर्थों के प्राकृतिक लिंग से अलग भी हो सकते हैं [व्याकरण की पुस्तक ध व्यावहारिक हिंदी व्याकरण तथा रचना (हरदेव बाहरी) } देखनी चाहिये]. कोष्ठक और उसके अंदर रखे गए शब्दों के बीच स्पेस नहीं होती.

कोष्ठक का प्रयोग कुछ अन्य स्थलों पर भी होता है

● क्रमसूचक अंकों या अक्षरों के साथ

(1) (2) (3).....

(क) (ख) (ग).

● धनराशि को स्पष्टीकरण के लिए शब्दों और अंकों दोनों में लिखते समय ➤ ऋ.

५००.०० (पाँच सौ रुपये) ➤ रु. एक हजार बारह (ऋ. १,०१२.००)

लेखक या ग्रंथ का नाम सूचित करते समय ➤ 'गोदान' (प्रेमचंद)

> यशपाल (झूठा सच)

> "जीवन एक खेल है." (रंगभूमि)

. संदर्भ या निर्देश देते समय

➤ 'त्यागपत्र' एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है. (विशेष जानकारी के लिए देखिये :
अध्याय 13)

● नाटक में रंगमंचीय निर्देशों के लिए

सेवक (चिल्लाकर) - पान खाइए, महाराज!

राजा (अफीम की पिनक में हड़बड़ा कर) सूपनखा आई? कहाँ आई?

(चेले नाचते गाते हुए आते हैं)

● भाषण आदि वाचनीय सामग्री के लेखन में यदि कोई निर्देश देना हो तो

"हमारी गैर जिम्मेदारी हस्तियों की वजह से धरती की सेहत लगातार गिरती जा रही है." (गहरा निःश्वास)

● किसी भी लिखित सामग्री के अंत में दी गयी टिप्पणी को कोष्ठक में रखा जाता है

आवश्यकता है प्राइमरी कक्षाओं के लिए प्रशिक्षित अनुभवी अध्यापकों की. इच्छुक अभ्यर्थी अपनी परिचयी के साथ आगामी सोमवार को विद्यालय के सभाकक्ष में पधारे. (नोट: कृपया केवल स्थानीय नागरिक ही आवेदन करें)

कोष्ठकों के अंदर की ओर स्पेस नहीं आती, बाहर आती है.

4.5.13 संक्षेपसूचक चिह्न- या०

पूरे शब्द के स्थान पर उसके संक्षिप्त रूप पहले अक्षर मात्र को लिखने पर संक्षेपसूचक चिह्न 'चिषु' - '' या शून्य - '' का प्रयोग किया जाता है. इस चिह्न के पहले स्पेस नहीं आती ➤ पं. जवाहरलाल नेहरू; डॉ० अबुलकलाम आजाद

- बी.ए., एम०ए०
- कि.मी.; ली०
- क.प.उ.; दे०

4.5.14 लोप चिह्न

लिखते समय यदि किसी कथन को अधूरा छोड़ दिया जाता है या उद्धरण देते समय कुछ अंश छोड़कर उसके पहले और बाद का अंश लिया जाता है, तो छोड़े गए अंश के स्थान पर लोप चिह्न (...) का प्रयोग किया जाता है, जो इस बात का द्योतक होता है कि यहाँ पर कुछ लुप्त है। यदि केवल एक शब्द का लोप दिखाने के लिए सामान्यतया तीन बिंदु लगाए जाते हैं। पूरा वाक्य या एकाधिक वाक्यों का लोप तीन-तीन बिंदु कई बार लगाकर प्रदर्शित किया जाता है।

- "तुम बिल्कुल ... हो! कोई काम ढंग से नहीं कर सकते."
- "यदि हम इन परिस्थितियों में न मिले होते तो क्या तुम मुझसे
- प्रेमचंद हिंदी में सिर्फ एक व्यक्ति का नाम नहीं है, बल्कि यह एक पूरे युग का अभिधान हो गया है. भारतीय पुनर्जागरण के ये वाक्-वाहक थे.

किसी गद्य या पद्य रचना को उद्धृत करते हुए यदि उसके अप्रासंगिक अंशों को उल्लिखित - करना हो तो भी लोप चिह्न का प्रयोग किया जाता है.

निस्संदेह कहानी कहना एक कला है, लेकिन सिनेमा की कहानी कहना उससे भी ज्यादा परिष्कृत कला है।

चूँकि सिनेमा एक बड़े कौशल और लगन से सीखा जानेवाला माध्यम है, इसे लिखने लिए आपको व्यापक अध्ययन और समझ की जरूरत होती है।

तुझमे मुझमें, मुझमे तुझमे अंतर कैसा

सोना और सोने के कंगन में

जल और तरंग में भेद कैसा

••••• ••••• ••••• •••••••••

अरे! हैदास को कोई समझावे,

कि सब समझस है

सब जन एक है.

लोप चिह्न के पहले और बाद में दोनों ओर स्पेस आती है.

4.5.15 ऊर्ध्व अल्प विशम - '

अन्य विराम चिह्नों की ही तरह अंग्रेजी का एपॉस्ट्रॉफी (1) भी हिंदी में अर्थ अल्प विराम के रूप में आया है, परंतु हिंदी में उसका कार्य बदल गया है। अंग्रेजी में एपॉस्ट्रॉफी (') सामान्यतया संबंध काश्क बताने के लिए प्रयुक्त होता है Raghav's

mother = शयन ही माँ. girls' school = लड़कियों की पाठशाला, परंतु हिंदी में यह कभी भी इस अर्थ में प्रयुक्त नहीं होता.

हिंदी में ऊर्ध्व अल्प विशम का प्रयोग सामान्यतया तारीख में संवत् के पहले वो अंकों के लोप और कभी कभी कुछ अंग्रेजी के शब्दों को देवनागरी लिपि में लिखते हुए उनके साइलेट चणों के द्योतन के लिए होता है. ➤ ०४ जून' २२ = ०४ जून, २०२२ संविधान बनने में सन् ४७ से सन् ५० तक का समय लग गया. ➤ मै'म = Madam ऊर्ध्व अल्पविशम के आगे पीछे स्पेस नहीं आती,

अभ्यास -6

निम्नलिखित अनुच्छेद में उचित स्थानों पर कोष्ठक, संक्षेप सूचक चिह्न, लोप चिह्न और ऊर्ध्व अल्प विशम का प्रयोग करे गत दिनांक 10 मई 22 को पं शिवकुमार शर्मा जी नहीं रहे. दिल डूब-सा गया. पं शिवकुमार जी न केवल महान संतूरवादक थे, जिन्होंने कश्मीरी लोकवाद्य संतूर को शास्त्रीय वाद्य की प्रतिष्ठा दिलायी, बल्कि एक उच्चकोटि के संगीतकार भी थे. प्रसिद्ध बाँसुरीवादक पं हरिप्रसाद चौरसिया जी के साथ मिलकर उन्होंने शिव-हरि के नाम से हिंदी सिनेमा सिलसिला 1980, फासले 1985, चाँदनी 1989, लम्हे 1991, डर 1993 को यादगार संगीत का तोहफा दिया है. उनका जन्म 13 जनवरी 38 को जम्मू में गायक पं उमादत्त शर्मा के घर हुआ था. उनका जीवन परिचय उनको बहुत सारे राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों और सम्मानों संगीत नाटक अकादमी सम्मान "सन् 86, पद्मश्री "सन् 91; पद्म विभूषण सन् 2001 - राष्ट्रीय पुरस्कार बाल्टीमोर, संयुक्तराज्य की मानद नागरिकता "सन् 85 - अंतर्राष्ट्रीय सम्मान से नवाजा जा चुका है.

विद्यार्थी मित्रो! अब आपने हिंदी लेखन में प्रयुक्त होने वाले सभी विशम चिह्नों के विषय में जान लिया है और उनके प्रयोग का कुछ अभ्यास भी कर लिया है. यहाँ पर हम बताना चाहेंगे कि हिंदी में विशम चिह्नों के प्रयोग को लेकर यद्यपि सिद्धांत बन चुके हैं, केंद्रीय हिंदी निदेशालय की मानक गाइडलाइन भी उपलब्ध है, पर व्यवहार में अभी भी स्थिति बहुत सुनिश्चित नहीं है और प्रत्येक लेखक विशम चिह्नों का प्रयोग अपने तरीके से करते हैं, या नहीं करते हैं. अतः यदि आपको पढ़ते समय कहीं विशम चिह्नों का सही प्रयोग न दिखाई पड़े, तो न तो आश्चर्य होना चाहिए और न ही विग्नमित ही. आपको अपने लेखन में सदैव मानक के अनुसार विशम चिह्नों के प्रयोग का अभ्यास बनाये रखना चाहिए. आइये! चलते चलते एक अभ्यास और कर देखें!

अपनी भाषा में लिखें:

छात्र मित्रो! आप अपनी भाषा में कम से कम सौ से दो सौ शब्दों में अपने मन-पसंद के विषय पर कुछ लिखिए. लिखते वक्त ध्यान रहे कि आप को अधिकांश विशम चिह्नों का प्रयोग करना है. लिखने के पश्चात प्रयुक्त विशम चिह्नों की एक सूची बनाइए और देखिये कि आपने कुल कितने विशम चिह्नों का प्रयोग किया. पाठ की

सहायता से निर्णय कीजिये कि क्या उन विशम चिह्नों का उचित प्रयोग हो पाया है? साथ ही, क्या किसी और भी विशम चिह्न का प्रयोग हो सकता था?

4.6 सारबिंदु

आपने हिंदी लेखन में प्रयुक्त होने वाले विशम चिह्नों का अध्ययन इस इकाई में किया है। आशा है, अब आप विशम चिह्नों के उपयोग से अच्छी तरह परिचित हो गये होंगे। इकाई के बीच-बीच में दिये गये अभ्यास को आप अच्छी तरह पूरी ईमानदारी से कीजिये और अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से मिलाइये। यदि गलतियाँ निकले तो उनपर फिर से अच्छी तरह विचार कीजिए। इस तरह आप विशम चिह्नों के सही प्रयोग पूरी तरह सीख पायेंगे और अपने लेखन को अधिक संप्रेषणीय, अधिक प्रभावी बना सकेंगे। आइये! इकाई में आयी सभी प्रमुख बातों को एक बार फिर से दोहरा ले-

- लिखित भाषा में याचिक ठहराव को दिखाने के लिए प्रयोग किये जाने वाले चिह्न 'विशम चिह्न' कहलाते हैं।
- विशम चिह्नों के बिना या गलत जगहों पर लगाये गये विशम चिह्नों के कारण वाक्य या अनुच्छेद अक्सर अवांछित अर्थ देने लगते हैं, अतः विशम चिह्नों का सही इस्तेमाल जानना बहुत आवश्यक है।
- हिंदी में मुख्य रूप से कुल १५ विशम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।
- कुछेक विशम चिह्नों को छोड़कर लगभग सभी विशम चिह्नों के पहले स्पेस नहीं दी जाती, जबकि बाद में दी जाती है।

4.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

1. विशम चिह्न क्या है? लिखित भाषा के लिए उनके महत्व को बताइए।
2. हिंदी में कुल कितने विशम चिह्नों का प्रयोग होता है? प्रत्येक के विषय में संक्षेप में बताइए।
3. हिंदी में सर्वाधिक प्रयुक्त किये जाने वाले ५ विशम चिह्नों का सविस्तार सोदाहरण परिचय दीजिए।

- निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :

1. विशम चिह्न की परिभाषा
2. विशम चिह्नों की आवश्यकता
3. पूर्ण विशम
4. अल्प विशम
5. निर्देशक चिह्न और योजक चिह्न में अंतर

6. संक्षेप सूचक चिह्न और लोप चिह्न में अंतर

- निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर निर्देशानुसार दीजिए:

पाठ के आधार पर उचित शब्दों द्वारा रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए - 1

- (क) लिखित या उच्चरित भाषा में ठहराव को दिखाने के लिए प्रयोग किया जाता है.
- (ख) विशम चिह्नों का प्रयोग भाव एवं विचार को होता है. बताने के लिए
- (ग) उपविशम का चिह्न
- (घ) द्वंद्व समास के पदों के बीच..... है. चिह्न लगाया जाता है.
- (च) एक ही शब्द को दो या तीन बार दोहराया जाता हो तब का प्रयोग होता है. चिह्न
- (२) स्थान, समय की सूचना के लिए है. विशम चिह्न का प्रयोग होता
- (ज) लिखित वाक्य के कुछ अंश को छोड़कर आगे कुछ लिखना हो तो चिह्न लगता है.
- (झ) हिन्दी ने अल्प विशम के बाद सबसे अधिक प्रयोग का होता है.

4.8 उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली
2. व्यावहारिक हिंदी व्याकरण तथा रचना, हरदेव बाहरी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.
3. हिंदी व्याकरण, कामता प्रसाद गुरु, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी.

इकाई 5 : संज्ञा और सर्वनाम: परिभाषा और प्रकार

रूपरेखा

- 5.1 उद्देश्य
- 5.2 प्रस्तावना
- 5.3 संज्ञा की परिभाषा
- 5.4 संज्ञा के प्रकार
- 5.5 सर्वनाम की परिभाषा
- 5.6 सर्वनाम के प्रकार
- 5.7 सारबिंदु
- 5.8 पढ़ी क्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी
- 5.8 उपयोगी पाठ्य सामग्री

5.1 उद्देश्य

आप द्वितीय वर्ष बी.ए. के पंचम् प्रश्नपत्र के खंड- 2 की पाँचवीं इकाई पढ़ने जा रहे हैं। इस इकाई में संज्ञा और सर्वनाम: परिभाषा और प्रकार के बारे में बताया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- संज्ञा और सर्वनाम से परिचित हो सकेंगे.
- संज्ञा और सर्वनाम की परिभाषा से परिचित हो सकेंगे.
- संज्ञा और सर्वनाम के प्रकार जान सकेंगे.
- व्याकरण में संज्ञा और सर्वनाम के महत्त्व को जान सकेंगे.

5.2 प्रस्तावना

द्वितीय वर्ष बी.ए. के पंचम् प्रश्नपत्र संबंधित खंड-2 की यह पाँचवीं इकाई है। इस इकाई में आप संज्ञा और सर्वनाम की परिभाषा और प्रकार का अध्ययन करेंगे। मनुष्य व्यवहार या प्रयोग से ही भाषा के अंगों के विभिन्न रूपों का निर्माण करता है। जब उनका शुद्ध रूप बन जाता है तब उसके लिए या उसे स्थायित्व देने के लिए नियमों का भी निर्माण करता है। हिंदी व्याकरण हिंदी भाषा को शुद्ध रूप में लिखने और

बोलने सम्बन्धी नियमों का बोध कशनेवाला शास्त्र है। यह हिंदी भाषा के अध्ययन का महत्वपूर्ण अंग है। व्याकरण के अनुसार शब्द दो प्रकार के होते हैं - विकारी और अविकारी। विकारी शब्दों को चार भागों संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया में बाँटा गया है।

5.3 संज्ञा की परिभाषा

- (1) डॉ. उमेश चन्द्र शुक्ल- “ किसी वस्तु, व्यक्ति, प्राणी या पदार्थ अथवा इनके गुणक्रियादिक धर्मों को सूचित करने वाले विकारी शब्दों को संज्ञा कहते हैं। ”
- (2) कामताप्रसाद गुरू- “ संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं जिससे प्रकृति किंवा कल्पित सृष्टि की किसी वस्तु का नाम सूचित हो। ”
- (3) कैलाशचन्द्र भाटिया- “ संज्ञा वे शब्द हैं जो किसी प्राणी, व्यक्ति, स्थान अथवा भाव के नाम के रूप में प्रयुक्त होते हैं। ”
- (4) आचार्य जयेंद्र त्रिवेदी- “ जिस शब्द से किसी नाम का बोध होता है, उसे संज्ञा कहते हैं। ”
- (5) डॉ. रामगोपाल सिंह- “ जिस विकारी शब्द से वास्तविक या काल्पनिक जीव, स्थान, गुण, भाव, कर्म आदि का नाम सूचित होता है, उसे संज्ञा कहते हैं। ”
- (६) वासुदेवनन्दन प्रसाद- “ संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं, जिससे किसी विशेष वस्तु अथवा व्यक्तिके नाम का बोध हो। ”

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कह सकते हैं कि नाम का बोध कशने वाले शब्द को संज्ञा कहते हैं।

5.4 संज्ञा के प्रकार

हिंदी व्याकरण में सभी तरह की संज्ञाओं को दो भागों में विभाजित किया जाता है।

- (1) वस्तु की दृष्टि से
- (2) धर्म की दृष्टि से
- (1) वस्तु की दृष्टि से-
 - (1) व्यक्तिवाचक
 - (2) जातिवाचक
 - (3) समूह वाचक
 - (4) द्रव्य वाचक
- (2) धर्म की दृष्टि से- भाववाचक
- (1) व्यक्तिवाचक संज्ञा- जिस शब्द से किसी एक वस्तु या व्यक्ति का बोध हो, उसे ‘व्यक्तिवाचक संज्ञा’ कहते हैं।
जैसे- सुनील, हिमालय, अयोध्या

सुनील कहने से किसी एक व्यक्तिका, हिमालय कहने से किसी एक पर्वत का, अयोध्या कहने से किसी एक नगरी का बोध होता है। इसलिए ये सभी व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं।

हिंदी व्याकरण की रूपरेखा में दिग्दर्शक (रूस के व्याकरण) ने व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को निम्नलिखित रूप माने हैं।

- (1) व्यक्तियों के नाम- सोहेब, कुलदीपसिंह, अयान, पिन्टू.
- (2) दिशाओं के नाम- पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण.
- (3) देशों के नाम- भारत, नेपाल, जापान
- (4) दिनों, महीनों के नाम- मंगलवार, फरवरी, अगस्त
- (5) नदियों के नाम- यमुना, गोदावरी.
- (6) नगरों, सड़कों के नाम- अयोध्या, काशी, सरदार पटेल मार्ग
- (7) पर्वतों के नाम- हिमालय, गिरनाइ, आबू
- (8) पुस्तकों, समाचारपत्रों के नाम- शमचरितमानस, राजस्थान पत्रिका
- (9) समुद्रों के नाम- हिन्द महासागर, प्रशांत महासागर
- (10) त्योहारों, उत्सवों के नाम- दीपावली, नवरात्री, रक्षाबंधन

(2) जातिवाचक संज्ञा- जिस शब्द से एक ही प्रकार की वस्तुओं अथवा व्यक्तियों का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे- नारी, शहर, नदी, पहाड़.

नारी कहने से नारी जाति का, शहर कहने से सभी तरह के शहरों का, नदी कहने से सभी प्रकार की नदियों का और पहाड़ कहने से संसार के सभी पहाड़ों का बोध होता है। इसीलिए ये सभी जातिवाचक संज्ञाएँ हैं।

जातिवाचक संज्ञाएँ निम्नलिखित स्थितियों में होती हैं।

- (1) वस्तुओं के नाम- पुस्तक, घड़ी, बेग
- (2) पदों, व्यवसायों, सम्बन्धियों के नाम- अध्यापक, बुनकर, भाई-बहन
- (3) प्राकृतिक तत्त्वों के नाम- वर्षा, तूफान, बिजली
- (4) पशु-पक्षियों के नाम- पपीहा, मयूर, गाय
- (3) समूहवाचक संज्ञा- जिस शब्द से वस्तु अथवा व्यक्ति के समूह का बोध हो उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।

समूहवाचक संज्ञाएँ निम्नलिखित रूपों में मिलती हैं।

- (1) व्यक्तियों का समूह- मेला, सभा, संघ, भीड़, कक्षा
- (2) वस्तुओं का समूह- लताकुंज, गुच्छ
- (4) द्रव्य वाचक संज्ञा- जिस शब्द से नाप-तौलवाली अथवा ढेर शक्ति के रूप में पाई जानेवाली वस्तुओं का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा है।

जैसे- हीरा कीमती धातु है।

पानी सर्वत्र नहीं मिलता।

गुजरात में धान होता है।

ऊ पर के वाक्यों में हीरा, पानी, धान ऐसी वस्तुएं हैं जो केवल शशि या ढेर के रूप में पाई जाती हैं।

(5) भाववाचक संज्ञा- जिस शब्द से व्यक्ति या वस्तु के गुण, धर्म या दशा अथवा व्यापार का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे- चतुर्शई, मिठास, बुढ़ापा इत्यादि।

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सर्वनाम और अव्यय में प्रत्यय लगाकर होता है।

प्रत्ययों से — ई, ता, पा, त्व, पन, वट, हट, आप

ई- कठिन- कठिनाई

भल्ल- भल्लाई

सच- सचाई

ता- पवित्र- पवित्रता

मित्र- मित्रता

कठोर- कठोरता

पा- बुढ़ा- बुढ़ापा

मोटा- मोटापा

त्व-मम- ममत्व

देव- देवत्व

अपना- अपनत्व

पन- पागल- पागलपन

भोल्ल- भोल्लपन

पुशना- पुशनापन

वट- रुकना- रुकावट

कसना- कसावट

थकना- थकावट

हट- चिकना- चिकनाहट

जगमगाना- जगमगाहट

घबशना- घबशाहट

आव- बचना- बचाव

बहना- बहाव

चुनना- चुनाव

आवा- बुल्लना- बुल्लावा

पहनना- पहनावा

देखना- दिखावा
क्रियाओं से- पीटना- पिटाई
काटना- कटाई
पीसना- पिसाई
विशेषण से- लाल- लालिमा
सभ्य- सभ्यता
मर्द- मर्दानगी

भाववाचक संज्ञा के विषय में कुछ महत्वपूर्ण बातें-

- व्यक्तिवाचक संज्ञा की तरह भाववाचक संज्ञा से भी किसी एक ही भाव का बोध होता है.
- इस संज्ञा का अनुभव हमारी इंद्रियों से होता है. प्रायः इसका बहुवचन नहीं होता.
- भाववाचक संज्ञाओं का अपना कोई महत्व नहीं होता. ये किसी पदार्थ या व्यक्ति में पाए जाने वाले गुण अथवा धर्म का नाम होता है.

❖ बोध प्रश्न

- सही/गलत बताइए.
- (1) संज्ञाओं को दो भागों में विभाजित किया जाता है.
 - (2) नाप-तौलवाली अथवा ढेर-शशि के रूप में पाई जानेवाली वस्तुएँ द्रव्यवाचक संज्ञा हैं.
 - (3) 'मेल' जातिवाचक संज्ञा का उदाहरण है.
 - (4) नाम का बोध करनेवाले शब्द को भाववाचक कहते हैं.

5.5 सर्वनाम की परिभाषा

- (1) वासुदेवनंदन प्रसाद- "संज्ञाओं के बदले जो शब्द आते हैं उन्हें सर्वनाम कहते हैं."
- (2) कामताप्रसाद गुरु- "सर्वनाम उस विकाशी शब्द को कहते हैं जो पूर्वापर सम्बन्ध से किसी भी संज्ञा के बदले में आता है."
- (3) कैलाशचन्द्र भाटिया- "सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ है-सर्व(-सब) का नाम. व्याकरण में सर्वनाम ऐसे शब्दों को कहते हैं, जिनका प्रयोग सब प्रकार के नामों (संज्ञाओं) के लिए अथवा उनके स्थान पर हो सके".
- (4) आचार्य जयेंद्र त्रिवेदी- "वाक्य में जिस शब्द का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर होता है, उसे सर्वनाम कहते हैं."
- (5) डॉ.शमशोपाल सिंह- "वाक्य में जो विकाशी शब्द पहले या बाद के सम्बन्ध के आधार पर संबंधित संज्ञा को सूचित करने के लिए आता है, उसे सर्वनाम कहते हैं."

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कह सकते हैं कि संज्ञाओं के स्थान पर जो शब्द प्रयुक्त होते हो उसे सर्वनाम कहते हैं.

❖ बोध प्रश्न

- रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए.

1. संज्ञाओं के बदले जो शब्द आते हैं उन्हें कहते हैं. (विशेषण/ सर्वनाम)
2. सर्वनाम शब्द हैं. (विकारी/ अविकारी)
3. 'वाक्य में जिस शब्द का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर होता है, उसे सर्वनाम कहते हैं.' यह परिभाषा ने दी है. (कामताप्रसाद गुरु/ आचार्य जयेंद्र त्रिवेदी)

5.6 सर्वनाम के प्रकार/ भेद

हिंदी में 11 सर्वनाम हैं-

- | | |
|---------|-----------|
| (1) मैं | (7) सो |
| (2) तू | (8) कोई |
| (3) आप | (9) कुछ |
| (4) यह | (10) कौन |
| (5) वह | (11) क्या |
| (6) जो | |

प्रयोग के आधार पर सर्वनाम के 6 भेद हैं जो इस प्रकार हैं:-

- (1) पुरुषवाचक सर्वनाम (मैं, तू, आप)
- (2) निजवाचक सर्वनाम (आप)
- (3) निश्चयवाचक सर्वनाम (यह, वह, सो)
- (4) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (कोई, कुछ)
- (5) सम्बन्धवाचक सर्वनाम (जो)
- (6) प्रश्नवाचक सर्वनाम (कौन, क्या)

- (1) पुरुषवाचक सर्वनाम- पुरुषवाचक सर्वनाम पुरुषों (स्त्री/पुरुष) के नाम के बदले आता है.

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं.

- (1) उत्तम पुरुष- उत्तम पुरुष में लेखक या वक्ता आता है. जैसे- मैं, हम
- (2) मध्यम पुरुष- मध्यम पुरुष में पाठक या श्रोता आते हैं जैसे- तू, तुम, आप
- (3) अन्य पुरुष- अन्य पुरुष में लेखक और श्रोता व वक्ता, पाठक को छोड़कर अन्य पुरुष आते हैं.

जैसे- वह, वे, यह, ये

- (2) निजवाचक सर्वनाम- जो सर्वनाम किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम के बदले आकर उसके सत्त्व(निजत्व) का बोध कराए, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं.

निजवाचक सर्वनाम का रूप 'आप' स्वयं है.

उदा.- आप किसी को भेजिए नहीं, मैं आप आ जाऊंगा.

इसका प्रयोग निम्नलिखित रूपों में होता है.

(1) दूसरे व्यक्तिके निराकरण के लिए-

उदा.- वह औरों को नहीं, अपने को सुधार रहा है.

(2) सर्व साधारण अर्थ के लिए-

उदा.- आप भला तो जग भला.

(3) अवधारण(निश्चय) के लिए-

उदा.- मैं यह काम आप ही कर लूँगा.

घास आप ही उगती है.

(3) निश्चयवाचक सर्वनाम- जिस सर्वनाम से वस्तु के पास या दूर की किसी वस्तु के निश्चय का बोध हो, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं.

यह दो रूपों में प्रयुक्त होता है. जैसे- 'यह'

उदा.- यह मेरी पुस्तक है.

दूर की वस्तु के लिए- जैसे- 'वह'

उदा.- वह उसकी कलम है.

(4) अनिश्चयवाचक सर्वनाम- जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं.

इसके दो रूप हैं- 'कोई' 'कुछ'

उदा.- ऐसा न हो कि कोई आ जाए.

कोई दिल में है.

कुछ-कुछ होता है.

(5) सम्बन्धवाचक सर्वनाम- जिस सर्वनाम से किसी दूसरे सर्वनाम से सम्बन्ध स्थापित किया जाए, उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं.

इसके दो रूप हैं- 'जो' 'सो'

उदा.- जो चाहो सो ले लो.

जो आया है सो जाएगा.

जो बोले सो निहाल सोनिये.

(6) प्रश्नवाचक सर्वनाम- प्रश्न करने के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं.

इसके दो रूप हैं- 'कौन' 'क्या'

उदा. दरवाजे पर कौन खड़ा है?

उसके हाथों में क्या है?

कौन का प्रयोग चेतन जीवों के लिए होता है जबकि क्या का प्रयोग जड़- पदार्थों के लिए होता है.

❖ बोध प्रश्न

सही/ गलत बताइए.

1. हिन्दी में १२ सर्वनाम हैं।
2. प्रयोग के आधार पर सर्वनाम के 06 भेद हैं।
3. जिस सर्वनाम से वस्तु के पास या दूर की किसी वस्तु के निश्चय का बोध हो, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
4. निजवाचक सर्वनाम का रूप 'आप' है।
5. जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

5.7 सारबिंदु

- भाषा में व्याकरणिक इकाइयाँ भाषा के विश्लेषण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग हैं।
- नाम का बोध कशये उसे संज्ञा कहते हैं। संज्ञा के व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, समूहवाचक, द्रव्यवाचक और भाववाचक प्रकार हैं।
- संज्ञाओं के बदले जो शब्द आते हैं उन्हें सर्वनाम कहते हैं।
- सर्वनाम 11 है- मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या।
- प्रयोग के अनुसार सर्वनाम के पुरुषवाचक, निजवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक, प्रश्नवाचक आदि भेद हैं।

5.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी

- (1) संज्ञा की परिभाषा देते हुए उसके प्रकारों पर प्रकाश डालिए।
- (2) सर्वनाम की परिभाषा देते हुए उसके प्रकारों पर प्रकाश डालिए।
 - टिपण्णी लिखिए।
- (1) संज्ञा के प्रकार
- (2) सर्वनाम के प्रकार
 - सही/गलत बताइए।
- (1) वस्तु का नाम सूचित करनेवाले शब्द को व्याकरण में संज्ञा कहते हैं।
- (2) संज्ञा के सात भेद हैं।
- (3) संज्ञाओं के बदले जो शब्द आते हैं उसे विशेषण कहते हैं।
- (4) जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
- (5) हिंदी में 11 सर्वनाम हैं।
 - रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए।
- (1) संज्ञा.....शब्द है। (विकाशी/ अविकाशी)
- (2) संज्ञाओं के बदले जो शब्द आते हैं उसे.....कहते हैं। (सर्वनाम/ विशेषण)
- (3) प्रश्न करने के लिए.....सर्वनाम का प्रयोग होता है। (कोई/ कौन)

(4) जिन संज्ञाओं से एक ही प्रकार की वस्तुओं अथवा व्यक्तियों का बोध हो, उसेसंज्ञा कहते हैं। (समूहवाचक/ जातिवाचक)

(५) प्रयोग के अनुसार सर्वनाम के..... भेद हैं। (11/ 6)

• जोड़े मिलाइए।

अ	ब
(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा	(क) आप
(2) निजवाचक सर्वनाम	(ख) सोना
(3) सम्बन्धवाचक सर्वनाम	(ग) कृष्ण
(4) द्रव्यवाचक संज्ञा	(घ) कौन, क्या
(5) प्रश्नवाचक सर्वनाम	(च) जो-सो

5.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

- (1) हिंदी व्याकरण इस-छंद-अलंकार सहित-डॉ. उमेशचन्द्र शुक्ल
- (2) हिंदी व्याकरण, कामताप्रसाद गुरू
- (3) मानक हिंदी व्याकरण और रचना- कैलाशचंद भाटिया
- (4) हिंदी रूप रचना- सं.-आचार्य जयेन्द्र त्रिवेदी
- (5) आधुनिक हिंदी व्याकरण- डॉ. रामगोपाल सिंह
- (6) आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना- वासुदेवनंदन प्रसाद

इकाई 6 : विशेषण और अव्यय : परिभाषा और प्रकार

रूपरेखा

- 6.1 उद्देश्य
- 6.2 प्रस्तावना
- 6.3 विशेषण की परिभाषा
- 6.4 विशेषण के प्रकार
- 6.5 अव्यय की परिभाषा
- 6.6 अव्यय के प्रकार
- 6.7 सारबिंदु
- 6.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी
- 6.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

6.1 उद्देश्य

आप द्वितीय वर्ष बी.ए. के पंचम् प्रश्नपत्र के खंड- २ की छठी इकाई पढ़ने जा रहे हैं। इस इकाई में विशेषण और अव्यय: परिभाषा और प्रकार के बारे में बताया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- विशेषण और अव्यय से परिचित हो सकेंगे.
- विशेषण और अव्यय की परिभाषा से परिचित हो सकेंगे.
- विशेषण और अव्यय के प्रकार जान सकेंगे.
- व्याकरण में विशेषण और अव्यय के महत्व को जान सकेंगे.

6.2 प्रस्तावना

द्वितीय वर्ष बी.ए. के पंचम् प्रश्नपत्र सम्बन्धित खंड- २ की यह छठी इकाई है। इस इकाई में आप विशेषण और अव्यय की परिभाषा और प्रकार का अध्ययन करेंगे। मनुष्य व्यवहार या प्रयोग से ही भाषा के अंगों के विभिन्न रूपों का निर्माण करता है।

जब उनका शुद्ध रूप बन जाता है तब उसके लिए या उसे स्थायित्व देने के लिए नियमों का भी निर्माण करता है। हिंदी व्याकरण हिंदी भाषा को शुद्ध रूप में लिखने और बोलने सम्बन्धी नियमों का बोध करनेवाला शास्त्र है। यह हिंदी भाषा के अध्ययन का महत्वपूर्ण अंग है। व्याकरण के अनुसार शब्द दो प्रकार के होते हैं- विकारी और अविकारी। विकारी शब्दों को चार भागों संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया में बाँटा गया है।

6.3 विशेषण की परिभाषा

(1) डॉ.वासुदेवनंदन प्रसाद- “ जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताएं उसे विशेषण कहते हैं. ”

(2) कामताप्रसाद गुरू- “जिस विकारी शब्द से संज्ञा की व्याप्ति मर्यादित होती है, उसे विशेषण कहते हैं. ”

(3) उमेशचन्द्र शुक्ल- “ संज्ञा का गुण बताकर उसकी व्याप्ति मर्यादित करनेवाले शब्द को विशेषण कहते हैं. ”

(4) आचार्य जयेंद्र त्रिवेदी- “जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताये, उसे विशेषण कहते हैं. ”

(5) डॉ.शमशोपाल सिंह- “ उस विकारी शब्द को विशेषण कहते हैं जिससे किसी की विशेषता का अर्थबोध होता है और जिस किसी की विशेषता का अर्थबोध होता है, उसे विशेष्य कहते हैं. ”

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कह सकते हैं कि संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

जैसे- लाल कपड़ा, मोटा लड़का, ऊँचा मकान, काला घोड़ा।

कपड़े में लाल शब्द कपड़े की एक विशेषता लाल रंग बताता है, मोटा लड़का मोटा शब्द लड़के की एक विशेषता मुट्ठा बताता है और ऊँचा मकान में ऊँचा शब्द मकान की एक विशेषता ऊँचाई बताता है। व्याकरण में इन लाल, मोटा, ऊँचा, काला आदि शब्दों को विशेषण कहा जाता है।

विशेष्य- जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताई जाती है उन्हें विशेष्य कहते हैं।

जैसे- ईमानदार नेता

यहाँ ईमानदार विशेषण है और नेता विशेष्य है।

6.4 विशेषण के प्रकार

विशेषण के चार प्रकार हैं-

- (1) गुणवाचक विशेषण
- (2) परिमाणवाचक विशेषण
- (3) संख्यावाचक विशेषण
- (4) सार्वनामिक विशेषण
- (1) गुणवाचक विशेषण

जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के गुण, दशा, रूप, रंग, स्वभाव आदि का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे- बाग में सुन्दर फूल हैं।

इस वाक्य में 'सुन्दर' गुणवाचक विशेषण है।

विशेषणों में इनकी संख्या सबसे अधिक है। इनके मुख्य रूप इस प्रकार हैं।

- (1) कालवाचक- पुराना विचार, नया पोशाक
- (2) स्थानवाचक- स्थानीय लोग, गुजराती मिठाई
- (3) आकारवाचक- गोल घड़ी, चौड़ा मैदान
- (4) दशावाचक- बीमार लड़का, गरम पानी
- (5) गुणवाचक- सुन्दर फूल, भला आदमी
- (6) वर्णनवाचक- नीला कपड़ा, लाल फूल
- (2) परिमाणवाचक विशेषण-

नाप या तौल सम्बन्धी विशेषता स्पष्ट करनेवाले विशेषण को परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे- मुझे दो मीटर कपड़ा चाहिए।

इस वाक्य में 'दो मीटर' परिमाणवाचक विशेषण है। परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद हैं।

- (1) निश्चित परिमाण बोधक
- (2) अनिश्चित परिमाण बोधक
- (1) निश्चित परिमाण बोधक- निश्चित परिमाण बोधक विशेषण नाप तौल वाले विशेषण को कहते हैं।

जैसे- सेर भर दूध

- (2) अनिश्चित परिमाण बोधक- निश्चित नाप-तौल जिसमें न हो ऐसे विशेषण को अनिश्चित परिमाण बोधक कहते हैं।

जैसे- बहुत पानी

बहुत धन

(3) संख्यावाचक विशेषण- जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या या गिनती का बोध होता है उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे- मेज पर चार पुस्तकें रखी हैं।

यहाँ चार संख्यावाचक विशेषण हैं।

संख्यावाचक विशेषण के भेद-

(1) निश्चित संख्यावाचक विशेषण

(2) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

(3) विभाग बोधक

(1) निश्चित संख्यावाचक विशेषण- निश्चित संख्यावाचक विशेषण से वस्तु की निश्चित संख्या का बोध होता है। इस विशेषण के निम्नलिखित रूप हैं।

(1) पूर्णांकबोधक- एक, दो, हजार, लाख

(2) अपूर्णांक बोधक- आधा, पौना, सवा, डेढ़

(3) क्रमवाचक- पहला, तीसरा, पाँचवाँ

(4) आवृत्तिवाचक - दुगुना, तिगुना, चौगुना

(5) समूहवाचक -दोनों, चारों, सातों

(6) प्रत्येक बोधक-प्रति, प्रत्येक, एक-एक, हर एक आदि।

(2) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण-

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण में वस्तु की संख्या अनिश्चित रहती है।

जैसे- कुछ लोग

सब लोग

यहाँ कुछ और सब दोनों शब्द अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं।

(4) सार्वनामिक विशेषण- वे सर्वनाम शब्द जो संज्ञा से पहले जुड़कर उसकी विशेषता बताते हैं वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

जैसे - यह लड़का मेरा पड़ोसी है।

इस वाक्य में 'यह' शब्द सार्वनामिक विशेषण है।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से सार्वनामिक विशेषण दो प्रकार के होते हैं-

(1) मूल सार्वनामिक विशेषण

(2) यौगिक सार्वनामिक विशेषण

(1) मूल सार्वनामिक विशेषण- जो सर्वनाम बिना किसी रूपान्तर के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है उसे मूल सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

जैसे- वह लड़का मंदिर जा रहा है।

ये कमरे खाली हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'वह' 'ये' शब्द मूल सार्वनामिक विशेषण हैं।

(2) यौगिक सार्वनामिक विशेषण- जो सर्वनाम मूल सर्वनाम में प्रत्यय लगाने से विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, यौगिक सार्वनामिक विशेषण कहलाता है।

जैसे- तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है?

कितने रुपये ले जाओगे?

उपर्युक्त वाक्यों में 'कैसा', 'कितने' यौगिक सार्वनामिक विशेषण हैं।

❖ बोध प्रश्न-

सही/ गलत बताइए।

- (1) जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताएँ उसे विशेषण कहते हैं।
- (2) विशेषण के पाँच प्रकार हैं।
- (3) बहुत पानी निश्चित परिमाण बोधक का उदाहरण है।
- (4) व्युत्पत्ति की दृष्टि से सार्वनामिक विशेषण दो प्रकार के होते हैं।
- (5) जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताई जाती है उन्हें विशेष्य कहते हैं।

6.5 अव्यय की परिभाषा

(1) डॉ. उमेशचन्द्र शुक्ल- " जिन शब्दों के रूप नहीं बदलते वे अव्यय कहलाते हैं। "

जैसे- वहाँ, निकट, नीचे, ऊपर आदि।

(2) डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद- " अव्यय ऐसे शब्द को कहते हैं जिसके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, कारक इत्यादि के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता। "

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कह सकते हैं कि अव्यय वे शब्द हैं जिनमें लिंग-वचन-पुरुष-काल आदि की दृष्टि से कोई रूप परिवर्तन नहीं होता है।

6.6 अव्यय के प्रकार

(1) क्रियाविशेषण अव्यय

(2) सम्बन्धसूचक अव्यय

(3) समुच्चय बोधक अव्यय

(4) विस्मयादि बोधक अव्यय

(1) क्रियाविशेषण अव्यय- क्रिया की विशेषता बताने वाले पद को क्रिया विशेषण अव्यय कहते हैं।

जैसे- लल्ला धीरे-धीरे दौड़ रहा है।

इस वाक्य में दौड़ ने की विशेषता 'धीरे-धीरे' के द्वारा प्रकट हो रही है। इसीलिए 'धीरे-धीरे' क्रियाविशेषण है।

क्रियाविशेषण के प्रमुख भेद-

(1) स्थानवाचक

(2) कालवाचक

(3) शीति वाचक

(4) परिमाणवाचक

(1) स्थानवाचक क्रिया विशेषण- जिससे स्थान का बोध हो.

जैसे- यहाँ

वहाँ

(2) कालवाचक क्रिया विशेषण- जिससे समय का बोध हो.

जैसे- आज

कल

पड़सों

इसके निम्नलिखित रूप हैं.

(क) समयवाचक- आज-कल, अभी, पहले

(ख) अवधिवाचक- सदैव, नित्य, हमेशा, लगातार

(ग) पुनःवाचक- बार-बार, प्रतिदिन.

(३) शीतिवाचक क्रिया विशेषण- जिससे शीति अथवा ढंग का बोध हो.

जैसे- ऐसे, वैसे, इसलिए इत्यादि.

इसके निम्नलिखित उपभेद हैं.

(क) प्रकार बोधक- ऐसे, वैसे, योंही, पैदल

(ख) निश्चय बोधक- सचमुच, यथार्थ, बेशक

(ग) अनिश्चयबोधक- शायद, संभवतः, कदाचित

(घ) स्वीकार बोधक- जी, हाँ, ठीक इत्यादि

(ङ) कारणबोधक- क्यों, अतः, अतएव

(च) निषेध वाचक- नहीं, न, मत इत्यादि

(४) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण- जिससे क्रिया के परिमाण का बोध हो.

जैसे- इतना, अत्यन्त, बहुत आदि.

इसके निम्नलिखित उपभेद हैं.

(क) अधिकताबोधक- बड़ा, ज्यादा, बहुत

(ख) न्यूनताबोधक- कुछ, जरा, थोड़ा

(ग) पर्याप्तबोधक- यथेष्ट, पर्याप्त, काफी

(घ) तुलनाबोधक- अधिक, उतना, इतना, बढ़कर

(ङ) क्रमवाचक- बाड़ी-बाड़ी से, एक-एक करके, यथाक्रम इत्यादि

(2) सम्बन्ध सूचक अव्यय- जो अव्यय किसी संज्ञा के बाद आकर उस संज्ञा का सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्द से दिखाता है, उसे सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं.

जैसे- कुत्ते को भागाओ.

घोड़े पर चढो.

इस वाक्य में 'को' और 'पर' सम्बन्धसूचक अव्यय हैं। क्योंकि ये 'कुत्ते' और 'घोड़े' संज्ञाओं के बाद आते हैं और 'भागो' तथा 'चढो' क्रियाओं से उनके सम्बन्ध सूचित करते हैं-

(1) प्रयोग की दृष्टि से सम्बन्धबोधक अव्यय के दो भेद हैं-

(क) सम्बद्ध सम्बन्धसूचक

(ख) अनुबद्ध सम्बद्ध सूचक

(क) सम्बद्ध संबंधसूचक- इनका प्रयोग संज्ञा की विभक्तियों के पश्चात् होता है।

जैसे- मीरा के सिवा ('क' के बाद)

धन के बिना ('क' के बाद)

(ख) अनुबद्ध सम्बन्धसूचक- इनका प्रयोग संज्ञा के परिवर्तित रूप के पश्चात् होता है।

जैसे- किनारे तक- किनारे (किनारा का परिवर्तित रूप)

शिष्यों सहित- शिष्यों (शिष्य का परिवर्तित रूप)

(2) व्युत्पत्ति की दृष्टि से- दो भेद -

(क) मूल सम्बन्धसूचक- पर्यंत, पूर्वक, बिना

(ख) यौगिक सम्बन्धसूचक- वास्ते, हमारे, पीछे

(3) अर्थ की दृष्टि से-

(क) कालवाचक- पश्चात्, उपरान्त, पीछे

(ख) स्थानवाचक- नजदीक, दूर, समीप

(ग) दिशावाचक- ओर, तरफ इत्यादि

(घ) साधनवाचक- जरिये, द्वारा, सहारे इत्यादि

(ङ) हेतुवाचक- निमित्त, वास्ते, लिए इत्यादि।

(3) समुच्चयबोधक अव्यय- वाक्यों या वाक्यांशों को जोड़नेवाले अव्ययों को समुच्चयबोधक अव्यय कहा जाता है।

जैसे- हवा चली और बादल-तितर-बितर हो गए।

इस वाक्य में 'हवा चली' तथा 'बादल तितर-बितर हो गए' इन वाक्यों को जोड़ने का कार्य 'और' द्वारा किया गया है। इसलिए 'और' समुच्चयबोधक अव्यय है।

प्रकार- समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय

व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय

(क) समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय के भेद-

(1) संयोजक

(2) वियोजक

(3) विशेष दर्शक

(4) परिमाण दर्शक

(ख) व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय के भेद-

- (1) कारणसूचक
- (2) उद्देश्य सूचक
- (3) संकेत सूचक
- (4) स्वरूप दर्शक

(क) समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय- मुख्य वाक्यों को जोड़नेवाले अव्ययों को समानाधिकार बोधक कहते हैं।

उदा. मैं आया और शम चला गया.

भेद-

(क) संयोजक- जिनके दो वाक्यों या वाक्यांशों में संयोजन होता है।

उदा.- शवण और शम की लड़ाई हुई.

पांच एवं पांच दस होते हैं.

(ख) वियोजक- जिनके द्वारा दो वाक्यों या वाक्यांशों में अलगाव उत्पन्न हो.

जैसे- सागर या शधा में से कोई प्रथम आएगा.

प्रमुख वियोजक दर्शक वा, या, अथवा, चाहे आदि हैं.

(ग) विशेष दर्शक- इसके द्वारा दो वाक्यों या वाक्यांशों में विशेष दिखाकर किसी एक का स्वीकार या विशेष बताया जाता है.

प्रमुख विशेष दर्शक शब्द हैं- पर, परन्तु, बल्कि, मगर, लेकिन

उदा.- इसी जल गई मगर ऐठन न गई.

(घ) परिणामदर्शक- इसके द्वारा परिमाण सूचित किया जाता है.

प्रमुख परिणामदर्शक हैं- अतः, अतःएव, वास्ते, सो

उदा.- पिक्कर जाना है अत छुट्टी ले रखी है.

(ख) व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय-जिन समुच्चयबोधक अव्ययों के मूल वाक्य में एक या एक से अधिक आश्रित वाक्य जोड़े जाते हैं उन्हें व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहा जाता है.

उदा.- आज पानी बरसेगा इसलिए छाता लेकर विद्यालय जा रहा हूँ.

भेद-

(अ) उद्देश्य वाचक- इसके द्वारा पहले वाक्य का उद्देश्य दूसरे अर्थात् बाद में आने वाले वाक्य द्वारा सूचित किया जाता है.

प्रमुख उद्देश्य वाचक अव्यय हैं- जो, कि, ताकि, इसलिए, कि इत्यादि.

उदा.- मैं बहुत पढ़ रहा हूँ ताकि प्रथम श्रेणी प्राप्त कर सकूँ.

(आ) संकेत वाचक- इसके द्वारा जुड़े हुए वाक्यों में एक का संकेत दूसरे में प्रकट किया जाता है.

प्रमुख संकेत दर्शक हैं- यदि, तो, जो-तो, चाहे, लेकिन इत्यादि.

उदा.- यदि ऊ पर ही चलोगे तो निश्चय ही कहीं न कहीं गिरेगो.

(इ) स्वरूपवाचक- इसके द्वारा जुड़े हुए वाक्यों में पहले का स्वरूप दूसरे में स्पष्ट किया जाता है.

प्रमुख स्वरूप दर्शक- यानि, कि, अर्थात्, जैसे, मानो.

उदा.- वह जड़ अर्थात् मूर्ख है.

(ई) कारण दर्शक- इसके पहले वाक्य के अर्थ का कारण दूसरे वाक्य के अर्थ से दिखाया जाता है.

उदा.- मैं पढ़ नहीं सकता क्योंकि मेरी आँख में दर्द है.

(4) विस्मयादिबोधक अव्यय- मन के विस्मय, शोक, हर्ष, आदि भावों को प्रकट करनेवाले अव्ययों को विस्मयादि बोधक अव्यय कहा जाता है.

उदा.- वाह! तुमने तो कमाल ही कर दिया.

विस्मयादिबोधक अव्यय के सम्बन्ध में कुछ महत्त्वपूर्ण बातें-

-इनके प्रत्यय नहीं होते.

-इनका कोई वस्तुपद अर्थ नहीं होता.

-ये वाक्य के अंग नहीं होते.

प्रमुख विस्मयादिबोधक अव्यय के भेद-

(1) आश्चर्यबोधक- ओ हो!, क्या!, वाह!, अरे!

(2) प्रशंसा बोधक- वाह-वाह!, बहुत अच्छा!, शाबास!

(3) भयबोधक- आह!, बाप रे!, दुहाई!

(4) शोकबोधक- हाय!, अफसोस!, ओह!

(5) घृणाबोधक- उफ, छिः, धिका

(6) स्वीकृतिबोधक- अच्छा, जरूर, हाँ

(7) संबोधनबोधक- अजी, इ, ओ इत्यादि.

6.7 साश्बिन्दु

- भाषा में व्याकरणिक इकाईयां भाषा के विश्लेषण का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग हैं.
- विशेषण उसे कहते हैं जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है.
- विशेषण के सार्वनामिक, गुणवाचक, परिमाणबोधक, संख्यावाचक प्रकार हैं.
- अव्यय उसे कहते हैं जिसके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, कारक इत्यादि के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता.
- अव्यय के क्रियाविशेषण अव्यय, सम्बन्धसूचक अव्यय, समुच्चयबोधक अव्यय, विस्मयादि बोधक अव्यय इत्यादि प्रकार हैं.

6.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- (1) विशेषण की परिभाषा देते हुए उसके प्रकारों पर प्रकाश डालिए.
 - (2) अव्यय की परिभाषा देते हुए उसके प्रकारों पर प्रकाश डालिए.
 - टिपण्णी लिखिए.
 - (1) विशेषण के प्रकार
 - (2) अव्यय के प्रकार
 - सही/गलत बताइए.
 - (1) जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताये उसे विशेषण कहते हैं.
 - (2) विशेषण के पांच प्रकार हैं.
 - (3) अव्यय अविकारी है.
 - (4) अव्यय के चार प्रकार हैं.
 - (5) विस्मय, शोक, हर्ष आदि भावों को प्रकट करनेवाले अव्ययों को विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं.
 - रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए.
 - (1) विशेषण.....शब्द है. (विकारी/ अविकारी)
 - (2) अव्यय.....शब्द है. (अविकारी/ विकारी)
 - (3) जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के गुण, दशा, रूप, रंग, स्वभाव आदि का बोध, उसेविशेषण कहते हैं. (परिमाण वाचक/ गुणवाचक)
 - (4) परिमाणवाचक विशेषण के.....भेद हैं. (तीन/दो)
 - (5) अव्यय के.....प्रकार हैं. (चार/तीन)
 - जोड़ मिलाइए.
- | अ | ब |
|-------------------------|---------------------------|
| (1) विस्मयादिबोधक अव्यय | (क) निश्चित परिमाण बोधक |
| (2) सुन्दर फूल | (ख) वाह! |
| (3) सेर भर दूध | (ग) गुणवाचक विशेषण |
| (4) अव्यय | (घ) चार |
| (5) विशेषण के भेद | (च) अविकारी शब्द |
- सही/गलत- जवाब-
- (1) सही (2) गलत (3) सही (4) सही (5) सही
- रिक्तस्थानों की पूर्ति
- जवाब- (1) विकारी (2) अविकारी (3) गुणवाचक (4) दो (5) चार
- जोड़ मिलाइए.

जवाब- (1) वाह! (2) गुणवाचक विशेषण (3) निश्चित परिमाण बोधक (4) अविकारी शब्द (५) चार

6.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

- (1) आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना, डॉ.वासुदेवनंदन प्रसाद
- (2) हिंदी व्याकरण, कामताप्रसाद गुरु
- (3) हिंदी व्याकरण इस-छंद-अलंकार सहित, उमेशचन्द्र शुक्ल
- (4) हिंदी रूप रचना, सं.आचार्य जयेंद्र त्रिवेदी
- (5) आधुनिक हिंदी व्याकरण, डॉ.शमशोपाल सिंह

इकाई 7 : क्रिया : परिभाषा और प्रकार

रूपरेखा

- 7.1 उद्देश्य
- 7.2 प्रस्तावना
- 7.3 हिंदी में क्रिया की अवधारणा
- 7.4 क्रिया का विभिन्न आधारों पर वर्गीकरण
 - 7.4.1 काल के आधार पर क्रिया के भेद
 - 7.4.2 रचना के आधार पर क्रिया के भेद
- 7.5 वाच्य
 - 7.5.1 वाच्य के प्रयोग
 - 7.5.2 वाच्य के भेद
- 7.6 क्रिया के पक्ष (रूप)
- 7.7 क्रिया का पद परिचय
- 7.8 सारबिंदु
- 7.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली
- 7.10 संदर्भ सूची

7.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो ! बी.ए. द्वितीय वर्ष में हिंदी मुख्य विषय के पहले खंड में आपने हिंदी भाषा का गहन परिचय प्राप्त किया है और वर्णों के स्तर पर, वर्तनी के स्तर पर अनुस्वार और अनुनासिक के सही प्रयोग समझते हुए तथा विशम चिह्नों के सही प्रयोग समझते हुए शुद्ध हिंदी लिखने का अभ्यास किया है। इस दूसरे खंड में हम

हिंदी के व्याकरण संबंधी कुछ जरूरी बिंदुओं पर विचार करेंगे, जिससे हमारा लेखन यथासंभव त्रुटिहीन हो सके। पिछली इकाई में हमने विशेषण और अव्यय की व्यवस्था समझी थी, इस इकाई में हम हिंदी में क्रियाओं के प्रयोग संबंधी कुछ आवश्यक बातें समझने जा रहे हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- हिंदी में क्रिया की अवधारणा को समझ पाएंगे।
- क्रियाओं का वर्गीकरण कर पाएंगे।
- क्रियाओं की कालगत व्यवस्था को समझ सकेंगे।
- वाक्यों में क्रियाओं के उचित प्रयोग में सक्षम हो सकेंगे।

7.2 प्रस्तावना

विद्यार्थी मित्रो ! भाषा सीखने के क्रमबद्ध चार स्तर होते हैं - (1) सुनना, (2) बोलना, (3) पढ़ना और (4) लिखना अंतिम चरम स्तर - लेखन के लिए उस भाषा की व्याकरणिक व्यवस्था और विशिष्टता को विशेष रूप से जानने की आवश्यकता पड़ती है। बोले हुए शब्द हवा में विलीन हो जाते हैं, अतः बोली गयी भाषा में यदि कुछ व्याकरणिक भूलें हों, तो उनका कोई खास असर नहीं पड़ता। साथ ही बोलने वाले के सामने ही सुनने वाला भी होता है, अतः यदि सुनने वाले को कोई वाक्य व्याकरण की भूल के कारण स्पष्ट नहीं होता तो वह तुरंत बोलने वाले को टोक-पूछ कर अपनी शंका-अस्पष्टता को दूर कर सकता है। (हालाँकि यह बात भाषण देते समय या जनसंचार माध्यमों के लिए बोलते समय लागू नहीं होती क्योंकि उसमें भी बोलने वाले को टोकने की गुंजाइश नहीं होती और बोली गयी बात भविष्य के लिए रिकॉर्ड हो जाती है, जिसे वक्त की अनुपस्थिति में भी सुना जा सकता है। अतः उसकी प्रकृति भी लिखे हुए के समान हो जाती है।) लेकिन लिखी गयी भाषा के लिए अधिक सावधानी बरतने की जरूरत होती है, क्योंकि उसे भविष्य में कब कौन पढ़ेगा, यह पता नहीं होता। और यदि भाषा में व्याकरणिक भूलें हुईं तो हो सकता है कि पाठक उस अर्थ को ठीक से न समझ पाये, जिसे लेखक पाठक तक पहुँचाना चाहता है, या फिर कभी अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है। अतः अच्छी भाषा के लिए हमें व्याकरण का आधारभूत ज्ञान होना जरूरी है।

‘क्रिया’ की वाक्य में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। खासकर हिंदी की क्रियाएँ और भी विशिष्ट हैं क्योंकि हिंदी में वाक्य के अन्य अवयवों, जैसे कर्ता के लिंग और वचन का ‘क्रियाओं’ पर निर्णायक प्रभाव पड़ता है। तो आइये! हम अपने लेखन में भूल न करें, इसके लिए हिंदी में क्रियाओं की व्यवस्था को गहराई से समझते हैं।

7.3 हिंदी में क्रियाकी अवधारणा

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाय, उसे ‘क्रिया’ कहते हैं। जैसे पढ़ना, खाना, पीना, जाना, होना इत्यादि। ‘ना’ से अंत होने वाले ये और इस

तर्ह के दूसरे तमाम शब्द क्रिया का सामान्य रूप हैं, जो वाक्य में आमतौर पर ज्यों के त्यों प्रयुक्त नहीं होते। 'क्रिया' शब्द विकारी (बदलने वाला) शब्द हैं जिनके रूप वाक्य में प्रयुक्त होने पर प्रकार, काल, वाच्य, लिंग, वचन और पुरुष धर्हिंदी में तीन पुरुष होते हैं प्रथम पुरुष (वह), मध्यम पुरुष (तुम) और उत्तम पुरुष (मैं) के अनुसार बदल जाते हैं। जैसे, 'आना' क्रिया को लें। निश्चयार्थक प्रकार के भूतकाल के कर्तृ वाच्य में लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार इसके भिन्न भिन्न रूप इस प्रकार बनेंगे :

	स्त्रीलिंग		पुल्लिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वह आयी	वे आयीं	वह आया	वे आये
मध्यम पुरुष	तुम आयी	तुम सब आयीं	तुम आये	तुम सब आये
उत्तम पुरुष	मैं आयी	हम आयीं	मैं आया	हम आये

यह हिंदी की अपनी विशेषता है।

'क्रिया' शब्द के सामान्य रूप से 'ना' निकाल देने पर जो अंश बचता है, वह 'धातु' कहलाता है। वस्तुतः यही क्रिया का मूलरूप है, जिसमें अलग अलग प्रत्यय लगाने से अलग रूप बनते हैं। जैसे कि उपर्युक्त उदाहरण में -

'आना' - क्रिया का सामान्य रूप

'आ' - क्रिया का मूलरूप - 'धातु'

'आयी', 'आयीं', 'आया', 'आये' आदि - क्रिया का वाक्य में प्रयुक्त होने योग्य रूप आइये, कुछ और उदाहरण देखें :

क्रिया का सामान्य रूप	क्रिया का मूलरूप 'धातु'	क्रिया का वाक्य में प्रयुक्त होने योग्य रूप
पढ़ना	पढ़	'पढ़ी', 'पढ़', 'पढ़ा', 'पढ़े', 'पढ़ो' आदि
लिखना	लिख	'लिखी', 'लिखीं', 'लिखा', 'लिखे', 'लिखो' आदि
खेलना	खेल	'खेली', 'खेलीं', 'खेला', 'खेले' आदि
खाना	खा	'खायी', 'खाया', 'खाये' आदि
सोना	सो	'सोयी', 'सोया', 'सोये' आदि

आशा है, अब आपके सामने क्रिया की अवधारणा बिल्कुल स्पष्ट हो गयी होगी। किसी भी वाक्य में 'क्रिया' सबसे महत्वपूर्ण अवयव होती है। कोई भी पूरा वाक्य क्रिया के बिना नहीं हो सकता, भले ही वह कितना ही छोटा क्यों न हो। (इसका अपवाद केवल वे वाक्य हो सकते हैं, जिनमें मात्र एक शब्द 'हाँ' या 'नहीं' होता है।)

❖ बोध प्रश्न

निम्नलिखित वाक्यों में रिक्तस्थानों की पूर्ति करें :

1. जिस शब्द से किसी काम का..... समझा जाय, उसे 'क्रिया' कहते हैं।
2. 'क्रिया' शब्द शब्द हैं।
3. 'पढ़ना', 'सीखना', 'बोलना' आदि क्रिया के रूप कहलाते हैं।
4. 'क्रिया' शब्द के सामान्य रूप से 'ना' निकाल देने पर जो अंश बचता है, वह कहलाता है।
5. 'क्रिया' के अलग अलग रूप धातु में लगाने से बनते हैं।

7.4 क्रियाओं का वर्गीकरण

विद्यार्थी मित्रो! क्रिया की अवधारणा जितनी सरल दिखाई पड़ती है, उसका वर्गीकरण उतना ही जटिल है। हिंदी की क्रियाओं का वर्गीकरण कई दृष्टियों से किया जाता है और उनमें से सारे भेद प्रभेद हैं। उन सबको एकसाथ यहाँ एक इकाई में एकत्रित करना युक्तियुक्त नहीं होगा। इसलिए आपकी सरलता के लिए हम यहाँ सामान्य रूप से लेखन के लिए जरूरी कुछ प्रमुख भेदों को ही इस इकाई में रख रहे हैं। फिर जैसे-जैसे आपका अध्ययन गहन होता जाएगा, और आप हिंदी क्रियाओं का अधिक गंभीर शास्त्रीय अध्ययन करना चाहेंगे, तब आपकी सहायता / के लिए उपयोगी पुस्तकों की एक सूची इकाई के अंत में उपलब्ध होगी।

आइये, अभी क्रियाओं का सामान्य वर्गीकरण समझते हैं।

7.4.1. काल के आधार पर क्रिया के भेद

कार्य-व्यापार का समय और उसकी पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था के आधार पर क्रियाओं के तीन भेद हो सकते हैं -

(1) वर्तमानकालिक क्रिया (2) भूतकालिक क्रिया (3) भविष्यकालिक क्रिया

7.4.1.1 वर्तमानकालिक क्रिया

वर्तमानकालिक क्रियाएँ वे हैं, जिनके कार्य व्यापार की निरन्तरता हो। इसमें क्रिया का आरंभ हो चुका होता है, पर समाप्ति का बोध नहीं होता। जैसे - वह खाता है। यहाँ 'खाने' के कार्यव्यापार की निरन्तरता प्रकट हो रही है, अतः यह वर्तमानकालिक क्रिया है। इसी तरह वर्तमान में चल रही क्रिया, संभावित क्रिया या संदिग्ध क्रिया के लिए भी वर्तमानकालिक क्रिया के विभिन्न रूपों का प्रयोग होता है। जैसे-

मैं पढ़ रही हूँ।

तुम गा रहे हो।

पापा आ रहे होंगे।

खेल चल रहा होगा।

संभवतः फिल्म दिखाई जा रही हो।

शायद बरसात हो रही हो।

शाश्वत सत्य को व्यक्त करने के लिए भी वर्तमानकालिक क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे

सूर्य पूर्व में उदित होता है। कौवे काले होते हैं।
गंगा हिमाचल से निकलती है। चंद्रमा पृथ्वी का उपग्रह है।

7.4.1.2 भूतकालिक क्रिया

जिससे क्रिया से कार्य की समाप्ति का बोध हो या पूर्वकालिकता का बोध हो, उसे भूतकालिक क्रिया कहते हैं। जैसे

लड़का आया था।	वह खा चुका था।
मैंने गाया।	मोहन आया।
मैंने आम खा लिया।	मुख्य अतिथि कार्यक्रम स्थल के लिए चल चुके।
ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार करने आई थी।	खाड़ी युद्ध के समय तेल के दाम बढ़ गये थे।
सुरेश गीत गा रहा था।	गीता सो रही थी।
तुमने अस्पताल में उन्हें देखा होगा।	उसने परीक्षा में उत्तर ठीक से लिखे होंगे।
मैं वहाँ होती तो शायद वे बच जाते।	कहती तो वह रुक जाता।

7.4.1.3 भविष्यकालिक क्रिया

भविष्य में होनेवाली क्रिया को भविष्यकाल की क्रिया कहते हैं। जैसे –

वह कल घर जाएगा।	मैं पढ़ूँगा।
बरसात अच्छी होगी तो फसल भी अच्छी होगी।	वह कमायेगा तो खायेगा।
शायद चाँद थोड़ी देर से निकले।	अगले वर्ष कोई आपदा नहीं आयेगी।
आशा है, काल के आधार पर क्रिया के भेदों को आपने समझ लिया होगा। आइये! जाँचे आपने क्या सीखा।	

● निम्नलिखित वाक्यों को सही क्रियारूपों से पूरा कीजिए :

1. कोयल काली (हो रही हैं / होती हैं):
2. वह मेरे यहाँ रोज (आता है / आना है)।
3. संध्या थोड़ी देर बाद (आयेगी / आयी थी)।
4. मैंने पाँच वर्ष पहले परीक्षा (पास की है / पास की थी)।
5. वह मेरी मदद कर (देता है / बैठता है)।

7.4.2 रचना के आधार पर क्रिया के भेद

इसके पहले हमने काल के आधार पर क्रिया के तीन मुख्य भेद देखे, अब हम वाक्य रचना में उनके प्रयोग और स्थिति के अनुसार क्रियाओं के भेद देखेंगे।

7.4.2.1 सकर्मक क्रिया

‘सकर्मक क्रिया’ उसे कहते हैं, जिसका कर्म हो या जिसके साथ कर्म की सम्भावना हो, अर्थात् जिस क्रिया के व्यापार का संचालन तो कर्ता से हो, पर जिसका फल या प्रभाव किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु, अर्थात् कर्म पर पड़े। उदाहरणार्थ – श्याम आम

खाता है। इस वाक्य में 'श्याम' 'खाता' क्रिया का कर्ता है। प्रश्न होता है, 'क्या खाता है' उत्तर है, 'आम'। इस तरह 'आम' का सीधा संबंध 'खाने' से बनता है। अतः यहाँ 'आम' कर्म है। यहाँ श्याम के खाने का फल 'आम' पर अर्थात् कर्म पर पड़ता है। इसलिए 'खाना' क्रिया सकर्मक है। कभी-कभी सकर्मक क्रिया का कर्म छिपा रहता है; जैसे - वह गाता है, पढ़ता है। यहाँ 'गीत' और 'पुस्तक' जैसे कर्म छिपे हैं।

7.4.2.2 अकर्मक क्रिया

जिन क्रियाओं का व्यापार और फल कर्ता पर हो, वे 'अकर्मक' कहलाती हैं। अकर्मक क्रियाओं का 'कर्म' नहीं होता, क्रिया का व्यापार और फल दूसरे पर न पड़कर कर्ता पर पड़ता है। उदाहरण के लिए - श्याम सोता है। इसमें 'सोना' क्रिया अकर्मक है। 'श्याम' कर्ता है, सोने की क्रिया उसी के द्वारा पूरी होती है। अतः सोने का फल भी उसी पर पड़ता है। इसलिए 'सोना' क्रिया अकर्मक है।

सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान

सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान 'क्या', 'कैसे' या 'किसको' आदि प्रश्न करने से होती है। यदि कुछ उत्तर मिले, तो समझना चाहिए कि क्रिया सकर्मक है और यदि न मिले तो अकर्मक होगी। उदाहरणार्थ, मारना, पढ़ना, खाना - इन क्रियाओं में 'क्या' 'कैसे' लगाकर प्रश्न किए जाएँ तो इनके उत्तर इस प्रकार होंगे-

प्रश्न - किसे मारा ?

उत्तर - किशोर को मारा।

प्रश्न - क्या खाया ?

इन सब उदाहरणों में क्रियाएँ सकर्मक हैं।

उत्तर - खाना खाया।

प्रश्न - क्या पढ़ता है।

उत्तर - किताब पढ़ता है।

ये उदाहरण देखिये

रमा सोयी है।

वह सुबह उठा था।

इन उदाहरणों में क्रियाएँ अकर्मक हैं।

बच्चा रो रहा है।

उपर्युक्त उदाहरणों के लिए 'क्या', 'कैसे' या 'किसको' प्रश्नवाचक शब्दों के साथ प्रश्न नहीं पूछे जा सकते। आप इन शब्दों के साथ पूछने की कोशिश कीजिए - 'रमा किसे सोयी है?'; 'वह सुबह किसको उठा था?'; 'बच्चा क्या रो रहा है?' स्पष्ट है कि ये वाक्य व्याकरणसम्मत ही नहीं हैं। इस तरह के प्रश्न नहीं होते। अतः इन वाक्यों में 'कर्म' नहीं हो सकते। इस प्रकार 'सोयी है'; 'उठा था'; 'रो रहा है' क्रियाएँ 'अकर्मक' हैं।

7.4.2.3 उभयविध क्रिया

कुछ क्रियाएँ अकर्मक और सकर्मक दोनों होती हैं और प्रसंग अथवा अर्थ के अनुसार इनके भेद का निर्णय किया जाता है; जैसे -

अकर्मक

सकर्मक

उसका सिर खुजलाता है.

वह अपना सिर खुजलाता है।

बूँद-बूँद से घड़ा भरता है.

मैं घड़ा भरता हूँ.

तुम्हारा जी ललचाता है.

आमरस मुझे ललचाता है.

जिन क्रियाओं का प्रयोग अकर्मक और सकर्मक दोनों रूपों में होता है, उन्हें उभयविध क्रियाएँ कहते हैं.

आशा है, अब आप सकर्मक, अकर्मक और उभयविध क्रियाओं का भेद अच्छी तरह समझ गये होंगे. आइये! अब अपने आपको जाँचें.

नीचे लिखे वाक्यों में अकर्मक और सकर्मक क्रियाएँ पहचान कर बताएँ :

1. वह सोता है.
2. अजय आम खाता है.
3. राघव पढ़ रहा है.
4. श्रीकृष्ण आये.
5. दुर्वासा ने क्षमा माँगी.

7.4.2.4 द्विकर्मक क्रिया

कभी कभी सकर्मक क्रियाओं के साथ एकसाथ दो कर्म भी प्रयुक्त होते हैं. जैसे 'मैं लड़के को वेद पढ़ाता हूँ' में दो कर्म हैं - 'लड़के को' और 'वेद'.

'माँ बच्चे को दूध पिलाती है' में दो कर्म हैं - 'बच्चे को' और 'दूध'.

ऐसी क्रियाओं को जिनके साथ दो कर्म आएँ, 'द्विकर्मक क्रियाएँ' कहते हैं.

7.4.2.5 प्रेरणार्थक क्रिया

जिन क्रियाओं से इस बात का बोध हो कि कर्ता स्वयं कार्य न कर कसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, वे 'प्रेरणार्थक क्रियाएँ' कहलाती हैं. जैसे, 'मोहन मुझसे किताब लिखवाता है' - इस वाक्य में मोहन (कर्ता) स्वयं किताब न लिखकर 'मुझसे' - दूसरे व्यक्तिको लिखने की प्रेरणा देता है.

प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाओं से बन सकती हैं, बननेवाली प्रेरणार्थक क्रिया हर स्थिति में सकर्मक ही रहती है. उदाहरण के लिए 'हँसना' एक अकर्मक क्रिया है. अब वाक्य में इसके प्रयोग देखें -

'मैं हँसी' - इस वाक्य में 'हँसी' अकर्मक क्रिया के रूप में प्रयुक्त हुई है, क्योंकि 'हँसने' क्रिया का फल कर्ता पर ही पड़ रहा है.

‘मैंने तुमको हँसाया’ – यहाँ ‘हँसाया’ प्रेरणार्थक क्रिया है और यह सकर्मक हो गयी है, क्योंकि कर्म ‘तुमको’ उसके साथ जुड़ा हुआ है।

इसी क्रिया का एक और तरह से भी प्रयोग हो सकता है –

‘मैंने कॉमेडियन से तुमको हँसवाया’ – इस वाक्य में ‘हँसवाया’ द्वितीय श्रेणी की प्रेरणार्थक क्रिया है।

इस प्रकार हिंदी में प्रेरणार्थक क्रियाओं के दो रूप चलते हैं। प्रथम में ‘ना’ का और द्वितीय में ‘वाना’ का प्रयोग होता है

मूल क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया	द्वितीय श्रेणी प्रेरणार्थक क्रिया
हँसना	हँसाना	हँसवाना
गिरना	गिराना	गिरवाना
चलना	चलाना	चलवाना
लिखना	लिखाना	लिखवाना
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
खाना	खिलाना	खिलवाना
सोना	सुलाना	सुलवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना
धोना	धुलाना	धुलवाना
करना	कराना	करवाना

आप इस सूची को अपनी जानी हुई सारी क्रियाओं के साथ जितना चाहें उतना लंबा कर सकते हैं। आप इन सभी क्रियाओं के साथ वाक्य भी बनाने की कोशिश कीजिये, तब आप इनका उपयोग अधिक अच्छी तरह से समझ सकेंगे।

❖ बोध प्रश्न

• नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध कर के लिखें :

1. मैंने नौकर से धोती धुलवाई।
2. उसने एक पेड़ कटाया।
3. शोहन ने शम को हँसा।
4. पिता ने पुत्र को शिक्षक से भूगोल पढ़ाया।
5. उसने मजदूरों से पेड़ गिराया।

7.4.2.6 सहायक क्रिया

मुख्य क्रिया के अर्थ को पूरा करने के लिए लगाई जाने वाली क्रियाएँ ‘सहायक क्रियाएँ’ कहलाती हैं। वाक्य में कभी एक क्रिया और कभी एक से अधिक क्रियाएँ सहायक होती हैं। कुछ उदाहरण देखिये –

वह खाता है।

मैंने पढ़ा था।

तुम जगे हुए थे।

वे सुन रहे थे।

इनमें खाना, पढ़ना, जगना और सुनना मुख्य क्रियाएँ हैं, क्योंकि वाक्य में इन्हीं क्रियाओं के अर्थ की प्रधानता है। शेष क्रियाएँ – है, था, हुए थे, रहे थे – सहायक क्रियाएँ हैं। ये मुख्य के अर्थ को स्पष्ट और पूरा करती हैं।

हिंदी में सहायक क्रियाओं का व्यापक प्रयोग होता है। इनके हेर-फेर से वाक्य का अर्थ बदल सकता है।

ध्यान दीजिए: 'है', 'था' आदि क्रियाएँ सदा सहायक क्रियाओं के रूप में आएँ, ऐसा जरूरी नहीं है। वे मुख्य क्रिया के रूप में भी आ सकती हैं। जैसे नीचे के वाक्यों में मैं खुश हूँ। तुम कहाँ हो ?

वह घर में था।

लड़की अच्छी है।

7.4.2.7 संयुक्तक्रिया

मुख्य और सहायक क्रियाओं के मेल से संयुक्तक्रियाएँ बनती हैं और किसी विशेष अर्थ को प्रकट करती हैं। सामान्यतया संयुक्त क्रियाएँ 'होना', 'आना', 'जाना', 'लगना', 'करना', 'भेजना', 'चाहना', इत्यादि क्रियाओं के योग से बनती हैं। संयुक्तक्रियाओं में दो या दो से अधिक क्रियाएँ हो सकती हैं। जैसे –

वह पढ़ने लगा।

पानी बरसने लगा।

राम खेलने लगा।

बच्चा हँसने लगा।

वह खा चुका।

मैं पढ़ चुकी हूँ।

ट्रेन जा चुकी है।

मछलियाँ मर चुकी थीं।

वह मुश्किल से सोने पाया।

मैं जाने ना पाया।

खेल न हो पाया।

डूबते जहाज से किसी को बचा नहीं पाये।

मुझे जाने दो।

उसे आराम करने दीजिए।

विद्यार्थियों को बोलने दीजिए।

लड़कियों को उड़ने दो।

हवा चलती रही।

बच्चे खेलते रहे।

तुम गाते रहे।

वर्षा शत भर होती रही।

संयुक्तक्रिया की एक विशेषता यह है कि उसकी पहली क्रिया प्रायः प्रधान होती है और दूसरी उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न करती है। जैसे- मैं पढ़ सकता हूँ। इसमें 'सकता' क्रिया 'पढ़ना' क्रिया के अर्थ में विशेषता उत्पन्न करती है।

7.4.2.8 पूर्वकालिक क्रिया

जब कर्ता एक क्रिया समाप्त कर उसी क्षण दूसरी क्रिया में प्रवृत्त होता है तब पहली क्रिया 'पूर्वकालिक' कहलाती है। जैसे – उसने नहाकर भोजन किया। इसमें 'नहाकर'

पूर्वकालिक क्रिया है, क्योंकि इससे 'नहाने' क्रिया की समाप्ति के बाद 'भोजन करना' क्रिया का बोध होता है।

❖ बोध प्रश्न

नीचे स्तंभ 'क' और स्तंभ 'ख' के शब्दों को मिलाकर सार्थक वाक्य बनायें

1. आप कुछ घबराये अ. पढ़ी नहीं जाती.
2. पुलिस आ आ. खरीद ली.
3. वह पढ़कर इ. चुकी थी.
4. शम से पुस्तक ई. खायेगा.
5. मैंने अपने लिए एक किताब उ. हुए थे.

7.5 वाच्य

क्रिया के उस परिवर्तन को 'वाच्य' कहते हैं, जिसके द्वारा इस बात का बोध होता है कि वाक्य के अन्तर्गत कर्ता, कर्म अथवा भाव - इनमें से किसकी प्रधानता है; इनमें किसके अनुसार क्रिया के पुरुष, वचन चाहे तो कर्ता के अनुसार होंगे अथवा कर्म के अनुसार अथवा भाव के अनुसार।

7.5.1 वाच्य के प्रयोग

वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष का अध्ययन 'प्रयोग' कहलाता है। ऐसा देखा जाता है कि वाक्य की क्रिया का लिंग, वचन एवं पुरुष के अनुसार होता है, तो कभी कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार, लेकिन कभी-कभी वाक्य की क्रिया कर्ता तथा कर्म के अनुसार न होकर एकवचन, पुल्लिङ्ग तथा अन्यपुरुष होती है; ये ही प्रयोग हैं। अतः 'प्रयोग' तीन प्रकार के होते हैं - (क) कर्तृप्रयोग, (ख) कर्मणि प्रयोग, और (ग) भावे प्रयोग।

(क) कर्तृप्रयोग

जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और अनुसार हों तब कर्तृप्रयोग होता है; जैसे - मोहन अच्छी पुस्तकें पढ़ता है।

(ख) कर्मणि प्रयोग

जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हों तब कर्मणि प्रयोग होता है; जैसे - सीता ने पत्र लिखा।

(ग) भावे प्रयोग

जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार न होकर एकवचन, पुल्लिङ्ग तथा अन्य पुरुष हों तब भावे प्रयोग होता है। जैसे - मुझसे चला नहीं जाता।

7.5.2 वाच्य के भेद

उपर्युक्त प्रयोगों के अनुसार वाच्य के तीन भेद होते हैं - (1) कर्तृवाच्य, (2) कर्मवाच्य, और (3) भाववाच्य.

7.5.2.1 कर्तृवाच्य

वाक्य में कर्ता के विषय में विधान करने वाले क्रिया के रूपांतर को कर्तृवाच्य कहते हैं अर्थात् क्रिया के उस रूपान्तर को कर्तृवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो; जैसे - लड़का खाता है. मैंने पुस्तक पढ़ी. मोहन जाता है. सोहन ने पुस्तक पढ़ी. शहूल ने दोस्तों को बुलाया. उसने नहाया, आदि.

7.5.2.2 कर्मवाच्य

वाक्य में कर्म के विषय में विधान करने वाले क्रिया के रूपांतर को कर्मवाच्य कहते हैं अर्थात् क्रिया के उस रूपान्तर को कर्मवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध हो; जैसे - पुस्तक पढ़ी जाती है. आम खाया जाता है. (शम से) गीत गाया जाता है. (सोहन से) पुस्तक पढ़ी गई, आदि.

यहाँ क्रियाएँ कर्ता के अनुसार रूपान्तरित न होकर कर्म के अनुसार परिवर्तित हुई हैं. यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि अंग्रेजी की तरह हिंदी में कर्ता के रहते हुए कर्मवाच्य का प्रयोग नहीं होता; जैसे - 'मैं पानी पीता हूँ' के स्थान पर 'मुझसे पानी पीया जाता है' लिखना गलत होगा. हाँ, निषेध के अर्थ में यह लिखा जा सकता है - मुझसे पत्र लिखा नहीं जाता; उससे पढ़ा नहीं जाता.

7.5.2.3 भाववाच्य

वाक्य में कर्ता और कर्म को छोड़कर केवल भाव के विषय में विधान करने वाले क्रिया के रूपांतर को भाववाच्य कहते हैं अर्थात् क्रिया के उस रूपान्तर को भाववाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में क्रिया अथवा भाव की प्रधानता का बोध हो; जैसे -

शम से टहला भी नहीं जाता. मुझसे बैठा नहीं जाता. धूप में चला नहीं जाता.

इन वाक्यों में कर्ता और कर्म के स्थान पर क्रियाएँ ही अधिक प्रधान हो गयी हैं.

टिप्पणी - यहाँ यह द्रष्टव्य है कि कर्तृवाच्य में क्रिया सकर्मक और अकर्मक दोनों हो सकती है,

किंतु कर्मवाच्य में केवल सकर्मक और भाववाच्य में अकर्मक होती है.

❖ बोध प्रश्न

● नीचे लिखे वाक्यों में से शुद्ध और अशुद्ध की पहचान करे और अशुद्ध को शुद्ध कर के लिखें:

1. लड़कियाँ खेलती हैं.

2. घोड़ा घास चरती है.

3. सीता ने भात खाया.
4. उसने एक पुस्तक पढ़े.
5. शमा से चला नहीं जाता. 8460789706

7.6 क्रिया के पक्ष (रूप)

सभी कालों और वाच्यों में क्रिया के विविध और व्यापक रूप हैं. यहाँ उनका विस्तार अपेक्षित नहीं है किंतु नमूने के तौर पर नीचे 'देखना' क्रिया से कर्मवाच्य के कुछ रूप तीनों कालों में दिए जा रहे हैं. विद्यार्थी इसी के आधार पर शेष रूप बनाने का अभ्यास करें -

एकवचन					
	पुरुष	लिंग	सामान्य वर्तमान	सामान्य भूत	सामान्य भविष्य
1.	उत्तम मैं	पुं. स्त्री.	देखा जाता हूँ देखी जाती हूँ	देखा गया देखी गयी	देखा जाऊँगा देखी जाऊँगी
2.	मध्यम तुम	पुं. स्त्री.	देखे जाते हो देखी जाती हो	देखे गये देखी गयी	देखे जाओगे देखी जाओगी
3.	अन्य वह	पुं. स्त्री.	देखा जाता है देखी जाती है	देखा गया देखी गयी	देखा जायेगा देखी जायेगी
बहुवचन					
1.	उत्तम हम	पुं. स्त्री.	देखे जाते हैं देखी जाती हैं	देखे गये देखी गयीं	देखे जायेंगे देखी जायेंगी
2.	मध्यम तुम सब	पुं. स्त्री.	देखे जाते हो देखी जाती हो	देखे गये देखी गयीं	देखे जाओगे देखी जाओगी
3.	अन्य वे	पुं. स्त्री.	देखे जाते हैं देखी जाती हैं	देखे गये देखी गयीं	देखे जायेंगे देखी जायेंगी

7.7 क्रिया का पद परिचय

क्रिया के पद-परिचय में क्रिया का प्रकार, वाच्य, पुरुष, लिंग, वचन, काल और वह शब्द जिससे क्रिया का संबंध है, इतनी बातें बतानी चाहिए..

उदाहरण - मैं जाता हूँ.

इसमें 'जाता हूँ' क्रिया है. इसका पद परिचय होगा -

'जाता हूँ' - अकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य, सामान्य वर्तमान, उत्तमपुरुष, पुल्लिंग, एकवचन.

इस क्रिया का कर्ता 'मैं'.

7.8 सारबिंदु

विद्यार्थी मित्रो ! इस इकाई में आपने हिंदी में क्रिया की अवधारणा, काल के आधार पर क्रिया के भेद, रचना के आधार पर क्रियाओं का वर्गीकरण, वाच्य, क्रिया के पक्ष, क्रिया का पद परिचय विषयक जानकारी प्राप्त की जो कि एक स्नातक स्तर के विद्यार्थी के लिए जरूरी है. आइये! इस इकाई की मुख्य मुख्य बातों को हम बिंदुओं के रूप में दुहरा लें—

- जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाय, उसे 'क्रिया' कहते हैं.
- क्रिया शब्द 'विकारी शब्द' यानी 'बदलने वाले शब्द' होते हैं. वाक्य में प्रयोग करते समय वाच्य, काल, लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार उनका रूप बदल जाता है.
- क्रिया का मूल 'धातु' है. 'धातु' क्रियापद के उस अंश को कहते हैं जो किसी क्रिया के प्रायः सभी रूपों में पाया जाता है. तात्पर्य यह कि जिन मूल अक्षरों से क्रियाएँ बनती हैं, उन्हें 'धातु' कहते हैं.
- क्रिया के उस रूपान्तर को 'काल' कहते हैं, जिससे उसके कार्य - व्यापार का समय और उसकी पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध हो.
- क्रियाओं के व्यापार की निरन्तरता को 'वर्तमानकाल' कहते हैं. इसमें क्रिया का आरंभ हो चुका होता है.
- जिससे क्रिया से कार्य की समाप्ति का बोध हो, उसे भूतकाल की क्रिया कहते हैं.
- भविष्य में होनेवाली क्रिया को भविष्यकाल की क्रिया कहते हैं.
- 'सकर्मक क्रिया' उसे कहते हैं, जिसका कर्म हो या जिसके साथ कर्म की सम्भावना हो, अर्थात् जिस क्रिया के व्यापार का संचालन तो कर्ता द्वारा हो, पर जिसका फल या प्रभाव किसी दूसरे व्यक्तिय वस्तु, अर्थात् कर्म पर पड़े.
- जिन क्रियाओं का व्यापार और फल कर्ता पर हो, वे 'अकर्मक' कहलाती हैं. अकर्मक क्रियाओं का 'कर्म' नहीं होता, क्रिया का व्यापार और फल दूसरे पर न पड़कर कर्ता पर पड़ता है.
- जिन क्रियाओं से इस बात का बोध हो कि कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, वे 'प्रेरणार्थक क्रियाएँ' कहलाती हैं.
- मुख्य क्रिया के अर्थ को पूरा करने के लिए लगाई जाने वाली क्रियाएँ 'सहायक क्रियाएँ' कहलाती हैं. कभी कभी ये मुख्य क्रिया के रूप में भी आती हैं. हिंदी में इन क्रियाओं का व्यापक प्रयोग होता है. इनके हेर-फेर से क्रिया का काल बदल जाता है.

- मुख्य और सहायक क्रियाओं के मेल से संयुक्तक्रियाएँ बनती हैं और किसी विशेष अर्थ को प्रकट करती हैं।
- जब कर्ता एक क्रिया समाप्त कर उसी क्षण दूसरी क्रिया में प्रवृत्त होता है तब पहली क्रिया 'पूर्वकालिक' कहलाती है।
- क्रिया के उस परिवर्तन को 'वाच्य' कहते हैं, जिसके द्वारा इस बात का बोध होता है कि इनमें से किसकी प्रधानता है और जिसकी प्रधानता होती है, क्रिया उसी के लिंग, पुरुष, वचन के अनुसार होती है।
- क्रिया का नियमन करने वाले सभी कारकों वाच्य, काल, लिंग, वचन और पुरुष का किसी क्रिया पद के संदर्भ में परिचय देना, साथ ही क्रिया का प्रकाश बताना और वाक्य में जिस शब्द के साथ क्रिया का सीधा संबंध है, उसे इंगित करना, पद परिचय कहलाता है।

7.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 800 शब्दों में लिखिए।
 1. हिंदी की क्रिया व्यवस्था पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
 2. काल के आधार पर क्रिया के भेदों पर प्रकाश डालिए।
 3. वाच्य के भेदों पर प्रकाश डालिए।
 4. क्रियाओं के वर्गीकरण पर प्रकाश डालिए।
- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 400 शब्दों में लिखिए।
 1. सकर्मक, अकर्मक, उभयविध और द्विकर्मक क्रियाओं के सोदाहरण स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
 2. प्रेरणार्थक क्रियाओं का सोदाहरण विस्तृत वर्णन कीजिए।
 3. संयुक्तक्रिया का स्वरूप उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।
 4. सहायक क्रिया और संयुक्तक्रिया का अंतर स्पष्ट कीजिए।
 5. पूर्वकालिक क्रिया किसको कहेंगे? उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।
 6. क्रिया के पद परिचय में क्या क्या बताना चाहिए? कम से कम पाँच अलग अलग उदाहरणों के माध्यम से समझाइए।
 7. वाक्य में क्रिया को प्रभावित करने वाले कारक कौन कौन से हैं, उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें।
 8. "क्रिया शब्द विकारी शब्द होते हैं।" इस कथन की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

● निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए.

1. हिंदी में क्रिया की अवधारणा
2. क्रिया का कालगत भेद
3. सकर्मक क्रिया
4. अकर्मक क्रिया
5. द्विकर्मक क्रिया
6. संयुक्तक्रिया
7. प्रेरणार्थक क्रिया
8. सहायक क्रिया
9. संयुक्तक्रिया
10. पूर्वकालिक क्रिया
11. वाच्य
12. भाववाच्य
13. कर्तृवाच्य
14. कर्मवाच्य
15. क्रिया का पद परिचय

● निम्नलिखित का निर्देशानुसार उत्तर दें.

1. निम्नलिखित वाक्यों से क्रियाएँ चुनें और उनका काल बताएँ.
(क) बच्चे गेंद खेल रहे थे.
(ख) मार्ग में गड्ढा न होता, तो उसे चोट न लगती.
(ग) सुनीता रो रही है.
(घ) लड़कों ने चोरों को रंगे हाथों पकड़ा.
(ङ) मैंने पत्र लिखा है.
(च) यदि वह परिश्रम करता, तो सफल हो जाता.
(छ) भोला घर शीघ्र लौटेगा.
(ज) तुम वहाँ अवश्य गए होंगे.
(झ) मैं भी शायद लौटूँ.
(ञ) रमेश आ रहा होगा.
(ट) वह सेना में भरती हो गया.
(ठ) मैंने खाना खा लिया है.
(ड) आपके लिए यह कलंक की बात होगी.
(ढ) बालक को उसके पिता ने अपनी ओर खींच लिया.
(ण) पेड़ों पर अजब हरियाली छाई है.

2. कोष्ठक से सही क्रिया - शब्द चुनकर रिक्तस्थानों की पूर्ति करें -

- (क) उपज (घटा/घटी)
(ख) लालच- (आया/आई)
(ग) मार- --- (पड़ा / पड़ी)
(घ) खोज - (हुआ / हुई)
(ङ) फेर- - (लगा/लगी)

3. निम्नलिखित वाक्यों में अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं की पहचान कीजिए.

- (क) बाल्टी पानी से भरती है.
(ख) शेखर ने मोहन को पुस्तक दी.
(ग) सवेरा हुआ.
(घ) बालक राम को देखता है.
(ङ) घड़े से पानी गिरा.
(च) तू मुझे अपनी बातों से भी घबरवाता है.
(छ) सीता नहा रही है.
(ज) आप मेरे मित्र ठहरे.
(झ) माताजी शेटी पकाती हैं.
(ञ) महात्मा बुद्ध रुक गये.

4. निम्नलिखित क्रियाओं के प्रेरणात्मक रूपों में से सही और गलत रूपों को चिह्नित कीजिए.

- | | |
|--------------------|---------------------|
| 1. खेलना - खिलवाना | 2. बोलना - बुलाना |
| 3. बोना - बुनाना | 4. तैरना - तैराना |
| 5. घूमना - घुमाना | 6. जानना - जनवाना |
| 7. जागना - गाना | 8. दौड़ना - दौड़ाना |

5. निम्नांकित वाक्यों के रिक्त स्थानों में प्रेरणार्थक क्रियाओं के उचित रूप भरिए-

- (क) माँ बच्चे को नौकरानी द्वारा है. (सोना)
(ख) कृष्ण अर्जुन से शत्रु को है. (मरना)
(ग) गोविंद ने उसे दिया. (जागना)
(घ) श्याम ने प्रेम से पत्र (पढ़ना)
(ङ) मोहन राम द्वारा अजय को भोजन है. (खिलाना)

6. निम्नलिखित वाक्यों में वर्तमान काल की क्रियाओं भरें-

- (क) मैं पत्र (लिखना).
(ख) गाड़ी धीरे-धीरे (चलना).
(ग) गाय दूध (देना).

(घ) गाय दूध (देना).

7. निम्नलिखित वाक्यों में भूतकाल की क्रियाएँ भरें –

(अ) वह पत्र..... (लिखना).

(ब) नौकर चिट्ठी (लाना).

(स) सेना लड़ाई पर (भेजना).

8. निम्नलिखित वाक्यों में भूतकाल की क्रियाएँ पहचानिये.

(क) ये लोग इनको कितना तंग कर रहे हैं.

(ख) तू आता, तो मैं चल पड़ता.

(ग) बरत में दो हज़ार लोग आये होंगे.

(घ) रामू इस समय घूम रहा होगा.

(ङ) उसने कहानी सुनी थी.

9. निम्नलिखित वाक्यों में वाच्य पहचान कर बताइए.

(क) चोरों को पीटा गया.

(ख) रमेश से कहानी सुनायी गयी.

(ग) तुम सुनते हो.

(घ) मैंने गाना गाया.

(ङ) वे आयी होंगी.

10. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित क्रियाओं का भेदनाम बताइए.

1) वह घर पहुँच गया.

(क) प्रेरणार्थक क्रिया

(ख) द्विकर्मक क्रिया,

(ग) संयुक्तक्रिया

(घ) पूर्वकालिक क्रिया

2) पंडित जी पूजा करके यहाँ आएँगे.

(क) प्रेरणार्थक क्रिया

(ख) द्विकर्मक क्रिया,

(ग) संयुक्तक्रिया

(घ) पूर्वकालिक क्रिया

3) ठाकुर साहब अपने नौकरों से जमकर काम करवाते.

(क) प्रेरणार्थक क्रिया

(ग) सहायक क्रिया

(ग) संयुक्तक्रिया

(घ) मुख्य क्रिया

4) राघव एक अच्छा लड़का है.

(क) पूर्वकालिक क्रिया

(ख) सहायक क्रिया

(ग) संयुक्तक्रिया

(घ) मुख्य क्रिया

- 5) मैंने यह उपन्यास बहुत पहले पढ़ा था.
(क) पूर्वकालिक क्रिया (ख) सहायक क्रिया
(ग) प्रेरणार्थक क्रिया (घ) मुख्य क्रिया

7.10 संदर्भ सूची

1. हिंदी व्याकरण और रचना, डॉ. राम गोपाल सिंह, 2009, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद
2. आधुनिक हिंदी व्याकरण, डॉ. राम गोपाल सिंह, 1999, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
3. व्यावहारिक हिंदी व्याकरण तथा रचना, डॉ. हरदेव बाहरी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. आधुनिक हिंदी का शोधपरक व्याकरण, डॉ. राम गोपाल सिंह, 2011, शांति प्रकाशन, अहमदाबाद
5. हिंदी भाषा की संरचना, डॉ. भोलानाथ तिवारी (सं), साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली
6. <https://www.gkkitab.com/kriya-in-hindi/>

इकाई 8 : कारक और विभक्ति परिभाषा और प्रकार

रूपरेखा

- 8.1 उद्देश्य
- 8.2 प्रस्तावना
- 8.3 कारक और विभक्तिका परिचय
- 8.4 कारक के भेद
- 8.5 विभक्तिलिखने के मानक नियम
- 8.6 सारबिंदु
- 8.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली
- 8.8 उपयोगी पाठ्य सामग्री

8.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो! बी.ए. प्रथम वर्ष में हिंदी अनिवार्य विषय के अंतर्गत हम हिंदी भाषा को सरलता से शुद्ध रूप से लिखने के लिए कुछ जरूरी व्याकरणिक नुक्ते सीख रहे हैं। इसी क्रम में हम अब हिंदी के कारकों और विभक्तिचिह्नों का अध्ययन करेंगे। हिंदी के सही वाक्य बनाने के लिए कारकों और विभक्तिचिह्नों को जानना बहुत जरूरी है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- हिंदी में कारकों और विभक्तिकी अवधारणा को समझ पाएंगे।
- कारकों के भेद जान पायेंगे।
- विभक्तिचिह्नों से परिचित हो सकेंगे।
- वाक्यों में कारकों और विभक्तिके उचित प्रयोग में सक्षम हो सकेंगे।

8.2 प्रस्तावना

हिंदी में वाक्य रचना के लिहाज से सबसे महत्वपूर्ण और आधारभूत व्याकरणिक कोटि कारक और विभक्ति है। आप यूँ समझिए कि संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि शब्द बिखरे हुए फूल हैं और उन्हें आपस में बाँधकर एक

सुगठित वाक्यरूपी माला का रूप देने का काम कारक और विभक्तिकरते हैं। कारक और विभक्तिका सही परिचय न होने से सही वाक्य निर्माण में कठिनाई होती है और अशुद्ध प्रयोग हो जाते हैं, जिससे लेखन की भाषा का सौंदर्य जाता रहता है। अतः अच्छी भाषा लिखने के लिए कारक और विभक्तिको ठीक से जानना जरूरी है।

8.3 कारक और विभक्तिका परिचय

विद्यार्थी मित्रो! आपको मालूम है कि केवल शब्दों को एकत्र कर एक साथ लिख देने से वाक्य नहीं बनता। वाक्य बनाने के लिए उन शब्दों का आपस में संबंध स्थापित होना चाहिए। एक उदाहरण देखिये -

“राम पिता श्याम एक पुस्तक बाजार खरीदी।”

इस वाक्य में पाँच संज्ञा शब्द, एक विशेषण शब्द और एक क्रिया शब्द एक पंक्ति में लिखे हुए हैं। पर क्या आप इसे वाक्य कहेंगे? क्या वाक्य के रूप में इसका कोई अर्थ निकल रहा है? बेशक नहीं। अब जरा इस वाक्य को देखिये-

“राम के पिता ने श्याम के लिए एक पुस्तक बाजार से खरीदी।”

अब यह एक सार्थक वाक्य बन गया, क्योंकि इसके प्रत्येक शब्द का दूसरे शब्दों के साथ संबंध स्थापित हो गया। पहले वाक्य में ‘राम’, ‘पिता’, ‘श्याम’ आदि केवल संज्ञा शब्द मात्र थे, पर दूसरे वाक्य में ‘राम के’ कहने से ‘पिता’ के साथ उसका संबंध बन गया। ‘के’ जुड़ने से संज्ञा शब्द ‘राम’ कारक की भूमिका में आ गया और ‘के’ उस कारक का चिह्न यानी ‘विभक्ति’ हुआ। यही बात दूसरे संज्ञा शब्दों के लिए भी सही है।

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उनका (संज्ञा या सर्वनाम का) संबंध सूचित हो उसे (उस रूप को) कारक कहते हैं।

एक परिभाषा यह भी दी जाती है कि “संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया का संबंध सूचित हो उस रूप को कारक कहा जाता है”। किंतु यह परिभाषा संस्कृत कारकों के लिए तो उपयुक्त है, पर हिंदी कारकों के लिए नहीं। हिंदी में वाक्य में शब्दों के आपसी संबंध को बताने वाले रूप को कारक कहा जाता है और यह केवल क्रिया मात्र तक ही सीमित नहीं है। इसीलिए हिंदी में ‘संबंध’ और ‘संबोधन’ भी कारक हैं, जो संस्कृत में कारकों की श्रेणी में नहीं आते।

कारकों की पहचान के लिए संज्ञा या सर्वनाम के आगे जो शब्द लगाए जाते हैं। उन्हें ही ‘विभक्ति’, ‘विभक्तिचिह्न’, ‘कारक चिह्न’ या ‘परसर्ग’ भी कहते हैं।

साधारण शब्दों में समझें तो “संज्ञा या सर्वनाम के आगे जब ‘ने’ ‘को’ ‘से’ आदि विभक्तियाँ लगती हैं तब जो नया रूप बनता है उसे ‘कारक’ कहा जाता है।”

उदाहरण - रामचंद्रजी ने समुद्र पर बंदरों से पुल बंधवाया।

इस उदाहरण में ‘रामचंद्र जी ने’, ‘समुद्र पर’, ‘बंदरों से’ और ‘पुल’ ये सारे शब्द मूल संज्ञा शब्दों, क्रमशः ‘रामचंद्र जी’, ‘समुद्र’, ‘बंदर’ और ‘पुल’ के रूपान्तर हैं, जो

इनमें विभक्तिचिह्न, क्रमशः 'ने', 'पर', 'से' और 'को' लगाकर बने हैं। यहाँ 'पुल' के साथ लगाने वाला 'को' दिखाई नहीं पड़ रहा, पर वह है अवश्य।

इस तरह आपने जाना कि संज्ञा और सर्वनाम शब्द बिना विभक्तिलगे वाक्य में प्रयुक्त नहीं हो सकते, भले ही विभक्तिअलग से दिखाई पड़े या न पड़े। और विभक्तिकौन सी लगनी है यह तय इस बात से होता है कि संज्ञा और सर्वनाम शब्द वाक्य में किस कारक की भूमिका में है। विभक्तिलग जाने के बाद मूल शब्द 'पद' बन जाता है और वाक्य में पदों का ही प्रयोग होता है, मूल शब्दों का नहीं।

आइये! अब अपनी अब तक की जानकारी जाँचें।

➤ नीचे लिखे वाक्यों में रिक्तस्थानों की पूर्ति करें :

1. सार्थक वाक्य बनाने के लिए उसमें प्रयुक्त शब्दों के बीच स्थापित होना चाहिए।
2. 'शम शवण तीर नाभि मार।' - यह एक सार्थक वाक्य
3. मम्मी मीश..... दूध लाने बाजार भेजा।
4. वाक्य में शब्दों के बीच संबंध बताने वाले रूप को कहते हैं।
5. वाक्य में शब्द के कारक रूप की पहचान जिससे होती है, उसे कहते हैं।
6. विभक्तिलगने के बाद शब्द कहलाते हैं और वाक्य में प्रयुक्त हो सकने योग्य हो जाते हैं।

8.4 कारक के भेद

हिंदी में मान्य कारक आठ हैं, जबकि संस्कृत में छह कारक ही माने गये हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि संस्कृत में उन्हें ही कारक माना जाता है, जो वाक्य में क्रिया से जुड़ते हैं। जबकि हिंदी में वाक्य में दो शब्दों के बीच संबंध बताने वाले रूप को कारक मान लिया गया है, भले ही उन दो शब्दों में से एक 'क्रिया' हो या न हो। इस परिभाषा के तहत हिंदी में 'संबंध' और 'संबोधन' भी कारक गिने जाते हैं, जो संस्कृत में नहीं गिने जाते।

प्रत्येक कारक की कुछ लगभग निश्चित विभक्ति याँ होती हैं, जिनसे उन कारकों की पहचान होती है। आइये! कारकों के आठ भेद और उनके चिह्नों को निम्न तालिका के माध्यम से समझते हैं :

	कारक	विभक्ति
1.	कर्ता	ने
2.	कर्म	को
3.	करण	से, के द्वारा
4.	संप्रदान	के लिए
5.	अपादान	से
6.	संबंध	का, की, के
7.	अधिकरण	में, पर
8.	संबोधन	हे, अरे, अजी, अहो इत्यादि

आइये! अब इनमें से प्रत्येक को अलग अलग समझते हैं।

8.4.1 कर्ता कारक और उसकी विभक्ति 'ने'

वाक्य में काम करनेवाले का अर्थ बोध करने वाले शब्द को कर्ता कहते हैं। उदाहरण - गीता गीत गा रही है। इसमें गाने का काम करनेवाली गीता है, अतः 'गीता' कर्ता कारक या कर्ता है। दूसरा उदाहरण - 'उसने कहा था' में कहनेवाला 'उसने' (वह) है। अतः 'उसने' कर्ता है।

आपने देखा कि पहले उदाहरण में कर्ता 'गीता' के साथ विभक्तिचिह्न 'ने' नहीं लगा है, जबकि दूसरे उदाहरण में 'उस' के साथ 'ने' का प्रयोग है। यानी कर्ता कारक के साथ उसका विभक्तिचिह्न 'ने' कभी लगता है, तो कभी नहीं। वस्तुतः 'ने' के लगाने, न लगाने का संबंध कर्ता से नहीं, बल्कि क्रिया से है। कहाँ 'ने' लगेगा और कहाँ नहीं इसका पूर्ण बोध तो लगाता अभ्यास से ही हो सकता है, पर यहाँ हम इस संबंध में कुछ प्रमुख नियमों को देख लेते हैं।

कहाँ 'ने' का प्रयोग नहीं होता

1. अकर्मक क्रियाओं के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता। उदाहरण -

श्वि कल सुबह आणंद जाएगा।

वह दो दिन पहले ही घूमकर लौटा है।

बूढ़ी चलते चलते अचानक गिर पड़ी।

2. वर्तमान और भविष्यकाल की क्रियाओं के होने पर भी 'ने' का प्रयोग नहीं होता है। जैसे-

सुनील अखबार पढ़ रहा है।

मौसम विभाग का अनुमान है कि कल भारी बारिश होगी।

मैं अगले सप्ताह दिल्ली जाऊँगी।

तुम खाना बना रही हो।

3. कर्तृवाच्य में 'ने' का प्रयोग नहीं होता. जैसे -

बच्चा आम खाता है.

गाय दूध देती है.

वह फूल चुन रही थी.

वे लोग क्या कर रहे हैं?

कहाँ 'ने' का प्रयोग होता है -

1. साधारणतया सकर्मक क्रिया होने पर 'ने' लगता है. उदाहरण -

मुकेश ने पुस्तक पढ़ी.

दर्जी ने कपड़े सिल लिए हैं.

उसने फिल्म देखी थी.

तुमने गृहकार्य पूरा कर लिया होगा.

हमने बड़ों की बात सुनी होती तो मुसीबत से बच जाते.

2. कर्मवाच्य में 'ने' का प्रयोग होता है. जैसे -

सीता ने भात खाया.

तुमने आज एक किताब पढ़ ली.

उसने अब तक कितने खिलौने बेचे ?

करण ने काम पूरा कर लिया है.

जो मैंने कहा, तुमने समझा ?

आशा है, आपने कर्ता कारक और उसके साथ 'ने' के प्रयोग को अच्छी तरह समझ लिया होगा.

❖ बोध प्रश्न

- नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करके लिखें :

1. मैं नहाया हूँ.
2. 'तुम क्या खाये हो ?
3. मैंने कल नहीं पढ़ूँगा.
4. मोहन क्यों छींका और खाँसा?
5. आप यह किताब कब लिया ?

8.4.2 कर्म कारक और उसकी विभक्ति 'को'

वाक्य में क्रिया का फल जिस शब्द पर पड़ता है उसे कर्म कहते हैं. जिस वस्तु पर कर्ता के व्यापार का फल पड़े, उसके लिए प्रयुक्तसंज्ञा या सर्वनाम को कर्म कहते हैं. इसकी विभक्ति है 'को'. उदाहरण - "मंगल ने सीता को बुलाया." वाक्य में 'मंगल' कर्ता है, उसके व्यापार (बुलाने) का फल 'सीता' पर पड़ता है, इसलिए 'सीता' कर्म है. यहाँ 'सीता' के साथ 'को' विभक्तिका प्रयोग हुआ है, लेकिन सभी कर्मों के साथ 'को'

विभक्ति का प्रयोग नहीं होता. प्रायः सजीव कर्म के साथ 'को' विभक्ति लगती है, पर अचेतन पदार्थों के साथ नहीं. जैसे, रमेश ने शोटी खाई. इस वाक्य में 'शोटी' कर्म अचेतन पदार्थ है जिसके साथ विभक्ति 'को' चिह्न नहीं लगता.

यदि निर्जीव कर्म से पहले 'इस', 'इन', 'उस', 'उन' आदि शब्द लगे हों तो कभी-कभी 'देखना', 'करना', 'बनाना' क्रियाओं के होने पर निर्जीव कर्म के साथ भी. 'को' विभक्तिका प्रयोग होता है. उदाहरण -

जिस समय हमने इस झंडे को बनाया था.....

तब कभी तुम उस काम को नहीं करो.

आशा है, अब आपके सामने स्पष्ट हो गया होगा कि कर्म कारक में कहाँ 'को' विभक्ति का प्रयोग करना है, और कहाँ नहीं. आइये! अपने आपको जाँचें.

नीचे लिखे वाक्यों में से शुद्ध-अशुद्ध की पहचान करें और अशुद्ध को शुद्ध करके लिखें

1. सेठ ने गाँव के बाहर तालाब को खुदवाया.
2. माँ पुत्र देखकर प्रसन्न हुई.
3. राम ने पेस्ट्री खायी.
4. मेरे को अभी नहीं सोना है.
5. सभी मजदूरों ने अपने अपने औजार उठा लिए.

8.4.3 करण कारक

करण का अर्थ है - साधन. वाक्य में जिस शब्द से क्रिया के होने में सहायता देने वाले साधन का बोध हो, उसे करण कारक कहते हैं. करण कारक के मुख्य विभक्तिचिह्न 'से' और 'के द्वारा' हैं. इनके अलावा 'के ज़रिए', 'के साथ', 'के बिना' आदि भी प्रचलित हैं.

उदाहरण :

वह आशी से लकड़ी चीरता है. (आशी से - साधन)

मुझे अपनी कमाई से खाना मिलता है. (कमाई से - साधन)

साधुओं के संग से बुद्धि सुधरती है. (संग से - साधन)

'से' के अतिरिक्त अन्य विभक्तिचिह्नों के साथ करण कारक -

गुड़िया घर का उद्घाटन किसी महिला के द्वारा करवाना अच्छा रहेगा.

हमारे यहाँ से डाक द्वारा पुस्तकें भेजी जाती हैं.

बच्चे के ज़रिये पान मसाला आदि मँगवाना ठीक नहीं है.

दही के साथ खिचड़ी खायी जाती है...

माचिस के बिना आग कैसे जलायी जायेगी ?

यदि करण कारक बहुवचन में है, तो कभी कभी विभक्तिचिह्न नहीं भी दिखायी देता.

जैसे-

अब आप घटनास्थल का आँखों देखा हाल सुनिए.

यह काम मैं आपने हाथों करना चाहती हूँ.
आइये! अब कुछ अभ्यास करें.

● निम्नलिखित वाक्यों को सही विभक्तिचिह्न का प्रयोग करते हुए पूरा करें :

1. शिक्षक छात्रों पेड़ लगावाते हैं.
2. हवाई जहाज हम शीघ्रतापूर्वक गंतव्य पर पहुँच सकते हैं.
3. वैक्सीन कोरोना से बचाव हो सकता है.
4. खेल बच्चे आसानी से सीख सकते हैं.
5. आपका कोई भी काम मैं प्रसन्नता करूँगी.
6. नाव नदी पार करना मुश्किल होगा.

8.4.4 संप्रदान कारक

जिसके लिए कुछ क्रिया की जाय उसका बोध कराने वाले शब्द रूप को संप्रदान कारक कहते हैं. क्रिया जिसके लिए की जाती है या जिसको कोई वस्तु दी जाती है उसका बोध जिस शब्द से हो उसे संप्रदान कारक कहते हैं. इसकी विभक्ति है — 'के लिए'. कभी कभी 'के लिए' के स्थान पर 'को' विभक्ति का भी प्रयोग होता है.

उदाहरण -

माँ ने बच्चे के लिए खिलौने खरीदे.

राजा ने भिखारी को दान दिया.

इन दोनों उदाहरण में 'बच्चे' तथा 'भिखारी' संप्रदान कारक हैं, क्योंकि क्रमशः 'खरीदे' और 'दिया' क्रिया इन्हीं दोनों के लिए हो रही है.

आपको ध्यान होगा कि कर्म कारक की विभक्ति भी 'को' है. तब कैसे पहचानेंगे कि 'को' विभक्ति के साथ लगा कारक 'कर्म' है कि 'संप्रदान'? यह पता करना बहुत ही आसान है. आप वाक्य में 'को' की जगह 'के लिए' रखकर देखिये. यदि तब भी वाक्य सुसंगत लगता है और उसके अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं दिखाई पड़ता, तो इसका अर्थ है कि वहाँ 'संप्रदान' कारक है. और यदि वाक्य बिगड़ जाता है, अर्थहीन लगाने लगता है तो वहाँ निश्चय ही 'कर्म' कारक होगा. जैसे

हरि मोहन को रुपये देता है.

उसने लड़के को खिलौने दिये.

इन उदाहरणों में 'को' की जगह 'के लिए' रखकर देखिये -

हरि मोहन के लिए रुपये देता है.

उसने लड़के के लिए खिलौने दिये.

वाक्य अभी भी सुसंगत और सार्थक हैं. उनके अर्थ में भी परिवर्तन नहीं आया है. अतः स्पष्ट है कि 'मोहन' और 'लड़के' संप्रदान कारक हैं.

अब दो और उदाहरण देखिए -

माँ ने बच्चे को खेलते देखा.

उसने लड़के को बुलाया.

अब इन वाक्यों में 'को' के स्थान पर 'के लिए' रखकर देखते हैं -

माँ ने बच्चे के लिए खेलते देखा. उसने लड़के के लिए बुलाया.
वाक्य सुसंगत नहीं रह गये. उनका अर्थ भी स्पष्ट नहीं हो रहा है. इसलिए साफ हो जाता है कि यहाँ 'को' विभक्ति 'संप्रदान' की नहीं, अपितु 'कर्म' कारक की है.
कहीं-कहीं पर संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' छिपी भी रह सकती है. जैसे -
आज लड़कीवाले देखने आ रहे हैं. हम दुश्मनों का समूल सफाया करने जाएँगे...
इन वाक्यों में 'देखने' और 'करने' के बाद 'के लिए' होना चाहिए, परंतु चूँकि उसके बिना भी अर्थ स्पष्ट ही है, अतः 'के लिए' को कहा नहीं जाता.
आशा है, अब आप 'संप्रदान' कारक और उसकी विभक्ति अच्छी तरह समझ गये होंगे.

❖ बोध प्रश्न

● नीचे लिखे वाक्यों में कर्म कारक और संप्रदान कारक पहचान कर लिखिए:

1. माँ ने वधू को रेशमी वस्त्र दिये.
2. वह पढ़ने को गुरुकुल जाएगा.
3. अभिजीत गाने को तैयार है.
4. गरीबों को सोने को टाट भी नसीब नहीं.
5. पेंसिल को छील छील कर छोटा मत कर दो.

8.4.5 अपादान कारक

वाक्य में जब क्रिया कहीं से अलग होने का, बिछड़ने का अर्थ देती हो, तो जिससे अलग होना बताया जाय, वह अपादान कारक कहलाता है. इसकी विभक्ति 'से' है.
उदाहरण -

छत से लड़का कूद रहा है.

हिमालय से गंगा निकलती है.

उपर्युक्त दोनों उदाहरण में लड़के का 'छत से' और गंगा का 'हिमालय से' अलग होने का भाव स्पष्ट है. अतः यहाँ 'छत' और 'हिमालय' अपादान कारक हैं.

यहाँ ध्यान देने की बात है कि हम 'से' को कर्ण कारक के चिह्न के रूप में भी जान आये हैं. तब 'से' लगा होने पर आप कैसे तय करेंगे कि कौन सा कारक है?

'से' कहाँ कर्ण कारक के चिह्न के रूप में प्रयुक्त है और कहाँ अपादान कारक के चिह्न के रूप में, इसे जानने का सरल उपाय यह है कि यदि वह 'किससे' प्रश्न के उत्तर के रूप में आता है तो कर्ण कारक का चिह्न है और यदि 'कहाँ से' प्रश्न के उत्तर के रूप में आता है तो अपादान कारक है.

जैसे -

छात्र कलम से लिखते हैं. किससे लिखते हैं ? कलम से - अतः यहाँ 'से' कर्ण कारक 'कलम' के चिह्न के रूप में प्रयुक्त है.

गंगा हिमालय से निकलती है. कहाँ से निकलती है ? हिमालय से - अतः यहाँ 'से' अपादान कारक 'हिमालय' के चिह्न के रूप में प्रयुक्त है.

❖ बोध प्रश्न

निम्नलिखित वाक्यों में अपादान कारक और करण कारक पहचान कर लिखें :

1. पेड़ से फल गिरा.
2. पेड़ की लकड़ी से फर्नीचर बनते हैं.
3. कोयला खान से निकलता है.
4. कोयले से चूल्हा जलता है.
5. रेलगाड़ी स्टेशन से जा चुकी है.

8.4.6 संबंध कारक

किसी एक संज्ञा या सर्वनाम का संबंध किसी दूसरी संज्ञा या सर्वनाम से बताया जाय तो संबंध कारक होता है. इसका विभक्तिचिह्न, जिस शब्द के साथ संबंध बताया जाय, और लिंग के अनुसार 'का', 'की', 'के' होता है. जैसे -

राम की किताब	भारतेन्दु के नाटक	चांदी का चम्मच
सौ मील की दूरी	इंद्रधनुष के रंग	सोने का गहना

इन उदाहरणों में राम, भारतेन्दु, चांदी, सौ मील, इंद्रधनुष और सोने संबंध कारक हैं, जिनका संबंध, की, के, का विभक्तियाँ के माध्यम से क्रमशः किताब, नाटक, चम्मच, दूरी, रंग और गहना से जुड़ता है.

सर्वनामों के संबंध कारक होने पर उनका रूप बदल जाता है और कुछ में 'का', 'की', 'के' जुड़ता है और कुछ में परिवर्तित रूप में ही विभक्तिप्रत्यय शामिल रहते हैं. जैसे -

उसका बेटा	मेरा भाई	तुम्हारा स्कूल
उसकी चोटी	मेरी बहन	तुम्हारी गाय
उसके बच्चे	मेरे कपड़े	तुम्हारे खिलौने

❖ बोध प्रश्न

निम्नलिखित वाक्यों में विभक्ति सहित संबंध कारक के सही रूपों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

1. (वह) घर सुंदर है.
2. विजय बहन कॉलेज में पढ़ती है.
3. (तुम) कुत्ते प्रशिक्षित हैं.
4. (मैं) माँ प्राध्यापिका हैं.
5. दार्जिलिंग चाय दुनिया भर में मशहूर है.

8.4.7. अधिकरण कारक

अधिकरण का अर्थ है आधार. जो शब्द यह बतलाता है कि क्रिया कहाँ हो रही है, वह अधिकरण कारक कहलाता है. इसकी विभक्ति है - 'में', 'पर'. उदाहरण -
कमरे में दीपक जल रहा है. टेबल पर घड़ी रखी है.
बरामदे में अतिथि बैठे हैं. बच्चा सोफे पर ही सो गया है.
इन उदाहरणों में 'कमरा', 'टेबल', 'बरामदे', 'सोफे' अधिकरण कारक हैं. 'में', 'पर' विभक्तियों के जुड़े होने से वे आसानी से पहचाने जा सकते हैं.
कभी कभी अधिकरण कारक की विभक्तिका लोप भी हो जाता है. उदाहरण -
वह द्वार-द्वार भीख माँगता चलता है.
जिस समय वह आया था, उस समय मैं नहीं था.
इन उदाहरणों में से पहले में 'पर' विभक्तिका लोप है और दूसरे में 'में' विभक्तिका.
किनारे, आसरे आदि शब्द स्वयं सप्रत्यय अधिकरण कारक हैं, अतः इन पदों के साथ अधिकरण कारक की विभक्ति नहीं लगती. उदाहरण -
नदी के किनारे बड़ा सा मंदिर था.
मैं तुम्हारे आसरे ही यहाँ आया हूँ.

❖ बोध प्रश्न

● निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखें :

1. घर में किसी की नजर है.
2. घी कटोरी में गिरे या थाली पर, क्या फर्क पड़ता है !
3. बहुत दिनों में तुमको देखा.
4. इस गाँव पर बाढ़ आ जायेगी.
5. पैदल चलने वालों को सड़क के किनारे में चलना चाहिए.

8.4.8 संबोधन कारक

संज्ञा के जिस रूप से किसी के पुकारने या संकेत करने का भाव पाया जाता है, उसे संबोधन कारक कहते हैं. इसका कोई विभक्तिचिह्न नहीं है. परंतु कुछ संज्ञाओं के रूप में परिवर्तन आ जाता है और कभी-कभी संबोधन कारक के पहले 'हे', 'अरे', 'अजी', 'ऐ', 'ऐ' आदि शब्दों का प्रयोग होता है. साथ ही संबोधन के बाद लगभग निश्चित रूप से विस्मयादिबोधक चिह्न (!) का प्रयोग होता है. हालाँकि कभी कभी अल्पविशम (,) के चिह्न का भी प्रयोग देखा जाता है.

उदाहरण —

हे ईश्वर ! मेरी रक्षा कीजिये.

हे राम ! देखो ये कैसी मुसीबत आन पड़ी है.

अरे छोकरो ! यहाँ शोर मत मचाओ.

अजी भाई साहब ! आप ही को बुलाया जा रहा है.

रे लड़की! कहाँ भागी जा रही है ?

ऐ लड़के! चुपचाप अपना काम करो.

अनवर, मेरे साथ ही रहना.

यहाँ विशेष ध्यान रखने वाली बात यह है कि संबोधन कारक में बहुवचन के प्रयोगों में अनुस्वार नहीं लगता, जो कि दूसरे कारकों में लगता है. जैसे -

मित्रों ने दावत की अच्छी तैयारी की है. (कर्ता कारक)

मैंने अपने मित्रों को आज खाने पर बुलाया है. (कर्म कारक)

मित्रों से सफाई करवा ली जायेगी. (कर्ण कारक)

मित्रों के लिए मिठाई मँगवा लो. (संप्रदान कारक)

मित्रों से बिछड़ कर किसे अच्छा लग सकता है ? (अपादान कारक)

ये सारे सामान मेरे मित्रों के हैं. (संबंध कारक)

मित्रों में एक दूसरे की बात समझने की अद्भुत शक्ति होती है (अधिकरण कारक)

मित्रो! आज आप सब मेरे यहाँ खाने पर आइये. (संबोधन कारक)

तो विद्यार्थी मित्रो! आपको इस बात का ध्यान रखना है कि संबोधन के लिए प्रयुक्त बहुवचन के शब्दों में अनुस्वार का प्रयोग नहीं करना है, जबकि संबोधन के आलावा अन्य सभी स्थलों पर बहुवचन में अनुस्वार का प्रयोग निश्चित रूप से होगा.

❖ बोध प्रश्न

● निम्नलिखित वाक्यों को संबोधन कारक का प्रयोग करते हुए पुनः लिखें:

1. महाराज खाना खाने मेरे घर पधारे.
2. जूही क्यों रो रही हो?
3. बच्चों खाने के बाद मेज साफ कर देना.
4. उर्मिला क्या आज व्रत है?
5. लड़कों खेलने जाओ.

8.5 विभक्तिलिखने के मानक नियम

हिंदी लेखन में कारक और विभक्तियाँ को जोड़कर एक शिरोरेखा के नीचे लिखा जाय या अलग अलग शब्दों के रूप में लिखा जाय इस बात को लेकर आरंभ में स्पष्टता नहीं थी. गुजराती भाषा, जिसकी लिपि भी देवनागरी ही है, में विभक्तियाँ कारक के साथ मिलाकर ही लिखी जाती हैं. हिंदी में भी बहुत से लेखक संस्कृत की तर्ज पर उन्हें मिलाकर एक शिरोरेखा के नीचे ही लिखते थे. पुरानी पुस्तकों में आप बहुतायत में ऐसे प्रयोग देख पायेंगे. अन्य लेखक उन्हें अलग से लिखना पसंद करते थे.

अब दुविधा की यह स्थिति समाप्त हो गयी है। भारत सरकार के उपक्रम - केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने 'देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' नामक पुस्तिका में इस संबंध में स्पष्ट नियम दे दिए हैं :

- हिंदी की विभक्तियाँ, जिन्हें विभक्तिचिह्न, कारक चिह्न, परसर्ग नामों से भी कहते हैं, संज्ञा शब्दों से अलग ही लिखे जाने चाहिए। जैसे - बालक ने, स्त्री को, चाकू से, मानवता के लिए, नगर से, गाँव का, रास्ते में आदि।
- सर्वनाम के साथ विभक्तियाँ सटाकर लिखी जाती हैं और कुछ सर्वनामों के रूप में भी परिवर्तन दिखाई पड़ता है। जैसे - मैंने, मुझको, मेरे लिए, मेरा, तुमको, तुम्हारा, उससे, हमारे, उनका, उनसे आदि। (मेरेको, तेरेसे आदि प्रयोग व्याकरणसम्मत नहीं हैं।)
- सर्वनामों के साथ दो विभक्तिचिह्नों का प्रयोग होना हो तो पहला सर्वनाम से सटाकर और दूसरा अलग लिखा जाना चाहिए। जैसे - उसके लिए, इनमें से आदि।
- सर्वनाम और विभक्तिचिह्न के बीच यदि कोई और शब्द आ रहा हो तो तीनों को अलग अलग लिखा जाना चाहिए। जैसे - आप ही को, मुझ तक से आदि।

❖ बोध प्रश्न

नीचे लिखे वाक्यों को सही तरीके से लिखें

1. जैनब ने अपनी छतरी बच्चा लिए हुए स्त्रीको दे दी।
2. तुम ने अपनेलिए क्या खरीदा ?
3. सुनील को मुझ से कुछ भी कहने में हिचकिचाहट नहीं होती।
4. माँ के लिए उस से योग्य दुनिया में और कोई नहीं था।
5. घर में चोर घुस आएँ, तो तुम को सबसे पहले क्या करना चाहिए?

8.6 सारबिंदु

विद्यार्थी मित्रो! इस इकाई में आपने हिंदी में कारक और विभक्ति की अवधारणा और उनके प्रयोग के संबंध में आधारभूत जानकारी प्राप्त की। हिंदी की वाक्य संरचना को समझने का यह पहला चरण है। आशा है, इस इकाई के अध्ययन के बाद आप अपने लेखन में अपेक्षित सावधानी बरतते हुए वाक्य रचना में होने वाली छोटी छोटी भूलों को दूर कर सकेंगे। लेकिन यह ध्यान रखियेगा कि यह जानकारी बेसिक है। अच्छा लिखने के लिए तो आप जितना अधिक अच्छा पढ़ेंगे, श्रेष्ठ लेखकों की रचनाएँ पढ़ेंगे, उतनी कुशलता अर्जित कर सकेंगे। आइये! अब इस इकाई की मुख्य-मुख्य बातों को हम बिंदुओं के रूप में दुहरा लें

- शब्दों को एक सार्थक वाक्य में बाँधने के लिए उनके 'क्रिया' के साथ या दूसरे शब्द के साथ संबंध को बताने वाले रूप को 'कारक' कहते हैं।

- 'कारक' बनने पर बहुत बार शब्द का रूप कुछ बदल जाता है और अक्सर उसके बाद एक विशेष शब्द लगता है, जिससे कारक की पहचान होती है। इसे 'विभक्ति', 'विभक्तिचिह्न', 'कारक चिह्न', 'विभक्तिप्रत्यय' या 'परसर्ग' भी कहते हैं।
- हिंदी में आठ कारक माने गये हैं।
- कारकों और उनके विभक्तिचिह्नों को लिखने के मानक नियम हैं - संज्ञा शब्दों के कारक होने पर उनके विभक्तिचिह्न सामान्यतया अलग शिरोरेखा अंतर्गत स्वतंत्र रूप से लिखे जाते हैं।
- सर्वनाम शब्दों के कारक होने पर उनके विभक्तिचिह्न कारक के साथ ही एक शिरोरेखा के अंतर्गत लिखे जाते हैं।

8.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 800 शब्दों में लिखिए।
 1. कारक की परिभाषा देकर उसके भेदों पर प्रकाश डालिए।
 2. विभक्तियाँ क्या हैं? वाक्य में विभक्तिके उपयोग की जानकारी दीजिए।
- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 400 शब्दों में लिखिए।
 1. कारक और विभक्तियों के अभिन्न संबंध पर प्रकाश डालते हुए उनको लिखने के नियम बताइए।
 2. कर्म और सम्प्रदान कारक का अंतर स्पष्ट कीजिए।
 3. करण और अपादान कारक का अंतर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
 4. संबंध और संबोधन कारकों को स्पष्ट कीजिए।
- निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए।
 1. कर्ता कारक
 2. अधिकरण कारक
 3. संबोधन
 4. परसर्ग
 5. संबंध कारक
 6. कारक के साथ विभक्तिलिखने के मानक नियम
- निम्नलिखित का निर्देशानुसार उत्तर दें।
निम्नांकित कथनों के उत्तर 'हा' या 'ना' में दीजिए :
 1. 'को' विभक्तिकर्ता कारक की है।
 2. 'ने' विभक्तिकर्म कारक की है।
 3. 'से' विभक्तिकरण कारक की है।
 4. 'के लिए' विभक्तिअपादान कारक की है।
 5. 'पर' विभक्तिअधिकरण कारक की है।

● निम्नांकित वाक्यों की पूर्ति सही विभक्तिद्वारा कीजिए :

1. श्री लालबहादुर शास्त्री भारत प्रधानमंत्री थे.
2. राजा ने ब्राह्मण धन दिया.
3. जमीन तारे टूट पड़े.
4. मोहन ने शत्रु सिर काट लिया.
5. पिता बाहर जाओ.

● निम्नांकित में रेखांकित शब्दों के कारक बतायें :

1. गणेश ने मुझको पढ़ाया.
2. हे प्रभु, आप कहाँ हो ?
3. रमेश किशोर को मारता है.
4. सोहन अपनी पत्नी के लिए कंगन लाया.
5. वृक्ष की शाख पर पत्ते नहीं हैं.

● नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध कर पुनः

1. श्याम को दो घोड़े हैं.
2. मेरा लड़का का मित्र बहुत अच्छा है.
3. इस कमरा की खिड़की छोटी है.
4. मैं आज बाजार में नहीं जाऊँगा.
5. नागरिकों! समाज की सेवा करो.

8.8 उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. हिंदी व्याकरण, कामता प्रसाद गुरु, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी.
2. हिंदी व्याकरण, आशा प्रकाशन गृह, नई दिल्ली.
3. प्रयोजनमूलक हिंदी व्याकरण, डॉ. द्विजशम यादव, साहित्य श्लाकर, कानपुर.
4. शुद्ध हिंदी कैसे लिखें, डॉ. राजेंद्रप्रसाद सिंह, भारती भवन, पटना.
5. <https://www.successkhan.com>

रूपरेखा

- 9.1 उद्देश्य
- 9.2 प्रस्तावना
- 9.3 उपसर्ग की परिभाषा एवं अर्थ
- 9.4 उपसर्गों के प्रकार
 - 9.4.1 संस्कृत के उपसर्ग
 - 9.4.2 हिंदी के उपसर्ग
 - 9.4.3 अरबी फारसी के उपसर्ग
- 9.5 प्रत्यय
- 9.6 प्रत्ययों के प्रकार
 - 9.6.1 कृत् प्रत्यय
 - 9.6.2 तद्धित प्रत्यय
- 9.7 सारबिंदु
- 9.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली
- 9.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

9.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो ! बी.ए. द्वितीय वर्ष के इस हिंदी मुख्य पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा को अच्छी तरह से सही सही लिखने का जो अभ्यास हमने खंड-१ की इकाई २ से शुरू किया था, वो अब खंड-३ में आने वाली इस इकाई ०९ में एक मुकाम पर पहुँच रहा है. यह इकाई हिंदी के उपसर्ग और प्रत्यय पर आधारित है. उपसर्ग और प्रत्यय मूल शब्दों के साथ जुड़कर उनका अर्थविस्तार कर देते हैं, या अर्थ में विशिष्टता ला देते हैं, या कई बार उनका अर्थ पूरी तरह बदल ही देते हैं. अपनी अभिव्यक्तिको प्रस्तुत करने

के लिए भाषा पर प्रभुत्व होना बेहद जरूरी है। वक्त वक्त का प्रभाव श्रोता पर तभी पड़ता है जब वक्त कम शब्दों में सटीक भावों का संप्रेषण कर पाने में सफल हो। इस कार्य में उपसर्ग और प्रत्यय बहुत सहायक हो सकते हैं। यहाँ हिंदी शब्द भंडार में उपसर्ग और प्रत्यय के योगदान को समझाया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

- उपसर्ग और प्रत्यय का अर्थ समझ सकेंगे।
- उपसर्ग और प्रत्यय की परिभाषाओं से परिचित हो सकेंगे।
- उपसर्ग और प्रत्ययों के प्रकार जान सकेंगे।
- हिंदी भाषा में उपसर्ग और प्रत्यय की भूमिका का ज्ञान अर्जित कर सकेंगे।
- उपसर्ग और प्रत्यय के प्रयोग को समझ कर अपनी शब्द-संपदा बढ़ा सकेंगे।

9.2 प्रस्तावना

विद्यार्थी मित्रो! जरा विचार तो कीजिये कि किसी भाषा में जो हजारों शब्दों की संपदा होती है, वह कहाँ से आती है? विभिन्न विचारों को व्यक्त करने के लिए जो हम अलग अलग शब्द इस्तेमाल करते हैं, वे सब क्या हमेशा से हमारी भाषा में थे? क्या शब्द बनाये या गढ़े जा सकते हैं? हिंदी के इतने सारे शब्द कहाँ से आये?

यदि हम शब्दों का विश्लेषण करें, तो हम पायेंगे कि कुछ शब्द उस भाषा के अपने हैं, संपर्क में आने वाली दूसरी भाषाओं से ले लिए गए हैं, कुछ दो शब्दों को जोड़ कर बना लिए गए हैं और कुछ के आगे पीछे दो एक अक्षर जोड़ देने से अलग शब्द बन गए हैं। भाषाओं की शब्दसंपदा ऐसे ही बढ़ती है। प्रत्येक भाषा में चार तरह के शब्द तो मिलते ही हैं – कुछ उस भाषा के अपने मूल शब्द, कुछ दूसरी भाषाओं से लिए हुए आहर्षित शब्द, कुछ शब्दों को जोड़- तोड़ कर बनाये यौगिक शब्द और कुछ शब्दों के आगे-पीछे दो एक अक्षरों के मेल से बने हुए व्युत्पन्न शब्द।

अब जरा हम हिंदी की शब्दसंपदा को टटोलें। हिंदी की शब्दसंपदा का एक बड़ा हिस्सा संस्कृत के शब्दभंडार से आता है, क्योंकि आप सब जानते ही हैं कि संस्कृत हिंदी की जननी है। हिंदी में संस्कृत के जिन शब्दों को ज्यों का त्यों प्रयोग किया जाता है, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं, जैसे प्रातः, सूर्य, चंद्र, स्वर्ण और न जाने ऐसे ही कितने ही शब्द 'तत्सम शब्द' कहलाते हैं। जो संस्कृत शब्द घिस कर थोड़े बदले हुए रूप में आते हैं, वे त.व शब्द कहलाते हैं, जैसे सूर्य सूरज; चंद्र चंदा; स्वर्ण सोना आदि कुछ शब्द ऐसे भी हैं, जिनका स्रोत यानी कि वे कहाँ से आए हैं, यह पता नहीं चलता। ऐसे शब्दों को देशज शब्द कहा जाता है, जैसे – लोटा, डिबिया, चिड़िया, तेंदुआ आदि। फिर हिंदी ने संपर्क में आने वाली सभी भाषाओं – फारसी, अरबी, तुर्की, पुर्तगाली, फ्रेंच, अंग्रेजी आदि से खूब सारे शब्द आहर्षित किये हैं। आशम (फारसी), किताब (अरबी), अलमारी (पुर्तगाली), रेस्त्रां (फ्रेंच), रेल (अंग्रेजी) आदि ऐसे कुछ उदाहरण हैं। फिर हिंदी में यौगिक शब्द हैं – डाकघर, देशवासी, रेलगाड़ी आदि। इसके

बाद हिंदी में एक बड़ी संख्या ऐसे शब्दों की है जो मूल शब्दों के आगे या पीछे या दोनों तरफ कुछ अक्षर जोड़कर बनाये जाते हैं - दैनिक, प्रहार, अम्लीय, प्राध्यापक, अनपढ़ आदि. ये जुड़ने वाले वर्ण 'उपसर्ग' और 'प्रत्यय' कहलाते हैं. आइये! इस इकाई में हम इन्हीं उपसर्ग और प्रत्ययों के विषय में कुछ विस्तार से अध्ययन करते हैं.

9.3 उपसर्ग की परिभाषा एवं अर्थ

उपसर्ग उस भाषिक इकाई को कहते हैं जिसका भाषा विशेष में स्वतंत्र प्रयोग न होता हो, बल्कि किसी शब्द के आरंभ में उसके जुड़ने से एक नया शब्द बन जाए और उसका मूल शब्द से अलग एक विशेष अर्थ प्रकट होने लगे.

उपसर्ग दो शब्दों के योग से बनता है - उप+सर्ग. 'उप' का अर्थ होता है 'समीप', 'निकट' या 'पास' में. 'सर्ग' का अर्थ होता है सृष्टि करना. इस तरह उपसर्ग का अर्थ है पास में बैठकर दूसरा नया अर्थवाला शब्द बनाना. जैसे 'हार' शब्द से पहले प्र - उपसर्ग लगाने से प्रहार, आ लगाने से आहार, सम् - लगाने से संहार, वि - लगाने से विहार और परि - लगाने से परिहार हो जाता है. इस तरह प्रहार, आहार, संहार, विहार और परिहार शब्द बन जाते हैं. जो अर्थ की दृष्टि से परस्पर सर्वथा अलग हैं. उपसर्ग के प्रयोग से शब्दों के अर्थ में एक नई विशेषता आती है, जो मूल शब्द के अर्थ से बिल्कुल अलग हो सकती है.

यहाँ 'उपसर्ग' और 'शब्द' का अंतर समझ लेना चाहिए. 'शब्द' भी अक्षरों का एक होता है और 'उपसर्ग' भी. लेकिन 'उपसर्ग' अक्षरों का समूह होते हुए भी 'शब्द' के समान स्वतंत्र नहीं है और न स्वतंत्ररूप से उसका प्रयोग ही होता है. यद्यपि उपसर्गों का भी अपना एक अर्थ होता है, तथापि वह अर्थ तभी प्रकट होता है जब किसी शब्द के साथ उसकी संगति बैठती है.

आशा है, आपने 'उपसर्ग' की अवधारणा को अच्छी तरह से समझ लिया होगा. आइये ! अब अपनी अब तक की जानकारी जाँचें.

❖ बोध प्रश्न

नीचे लिखे वाक्यों में रिक्तस्थानों की पूर्ति करें :

1. उपसर्ग उस भाषिक इकाई को कहते हैं जिसका भाषा विशेष में स्वतंत्र प्रयोग हो.
2. उपसर्ग शब्दों के योग से बनता है.
3. 'उप' का अर्थ होता है
4. 'सर्ग' का अर्थ होता है
5. जब तक किसी शब्द के साथ उपसर्ग की संगति नहीं बैठती, तब तक उपसर्ग नहीं होता.

9.4 उपसर्गों के प्रकार

हिंदी भाषा में उपसर्गों के योग से प्रभूत मात्रा में शब्दों का निर्माण हुआ है। हिंदी में प्रयुक्त उपसर्ग व्यवस्था को भाषा के आधार पर तीन भागों में विभाजित करके समझा जा सकता है।

9.4.1 संस्कृत के उपसर्ग

जैसा कि हम जानते ही हैं कि हिंदी भाषा संस्कृत से निकली है और अपने शब्दभंडार का एक बड़ा हिस्सा उसने संस्कृत से ही पाया है। अतः स्वाभाविक ही है कि संस्कृत के उपसर्गों से बने शब्द हिंदी में बहुतायत मिलते हैं। सामान्य रूप से तो ये उपसर्ग 'तत्सम' शब्दों में लगते हैं, लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो तद्भव और देशज शब्दों के साथ भी मिल जाते हैं। आइये! हम हिंदी में प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के कुछ प्रमुख उपसर्गों को उनके अर्थों और उनसे बने कुछ शब्दों के साथ जानें। संस्कृत व्याकरण के अनुसार उपसर्ग कुल २२ हैं- प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, नि, दुस्, दु, वि, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि तथा उप।

लेकिन संस्कृत भाषा कुछ उन अव्ययों का भी उपसर्ग की ही तरह प्रयोग करती है, जिनका उल्लेख 'उपसर्ग सूची' में नहीं है। नीचे दी गयी सूची में हमने उन शब्दों को भी ले लिया है, जो उपसर्ग जैसे वर्णसमूह को जोड़कर बने हैं और हिंदी में उपसर्गों से युक्त शब्दों के रूप में जाने जाते हैं।

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरणार्थ कुछ शब्द
अंत	अंदर	अंतःकरण, अंतःस्थ, अंतर्दशा, अंतर्धान,
अंतर्भाव, अंतर्वेदी.		
अ, अ-	अभाव, निषेध	अज्ञान, अदृश्य, अगम, अधर्म, अनीति, अहित, अलौकिक, अव्यय, अनंतर, अनिष्ट, अनाचार, अनादि, अनायास, अनेक, अछूत, अजान, अटल, अथाह, अलग
अति	अधिक, उस पर, ऊपर	अतिशय, अत्यंत, अतिकल्पना, अतिमानव, अतिप्रिय अतिरिक्त, अतिकाल, अत्याचार
अधस्	नीचे	अधोगति, अधोमुख, अधोभाग, अधःपतन, अधस्तल
अधि	ऊपर, स्थान में, श्रेष्ठ	अधिपति, अधिकार, अधिपाठक, अधिकरण, अधिराज, अधिष्ठाता, अध्यात्म, अध्यक्ष, अध्याशेष
अनु	पीछे, समान	अनुकरण, अनुक्रम, अनुचर, अनुशासन, अनुस्वार, अनुज, अनुरूप, अनुताप, अनुग्रह

अप	बुझ, हीन, विरुद्ध, अभाव	अपशब्द, अपकीर्ति, अपमान, अपकर्ष, अपभ्रंश, अपव्यय, अपहरण, अपकार, अपशुक्न
अभि	ओर, सामने, पास	अभिलाषा, अभिप्राय, अभिमुख, अभिसार, अभिवादन, अभिमान, अभिभाषण, अभ्यागत, अभ्यास, अभ्युदय
अव	नीचे, हीन, अभाव	अवगत, अवगुण, अवतार, अवसान, अवचेतन, अवलोकन, अवनति, अवनत
आ (आइ)	तक, ओर, समेत, विपरीत	आजीवन, आगमन, आक्रमण, आबालवृद्ध,
आजन्म, आयात, आकर्षण		
आवि, आविस्	प्रकट, बाहर	आविर्भाव, आविष्कार
इति	ऐसी, यह	इतिवृत्त, इतिहास, इतिकर्तव्य
उत्, उद्	ऊपर, ऊँचा, श्रेष्ठ	उत्थान, उत्कर्ष, उत्तम, उद्देश्य, उत्पन्न, उत्कंठा, उद्यम, उन्नति, उल्लेख, उद्घाटन
उप	निकट, गौण, सदृश	उपमंत्री, उपकथा, उपवन, उपवचन, उपवेद, उपमान, उपसर्ग, उपदेश, उपनाम, उपस्थिति, उपकार, उपनेत्र, उपभेद, उपयोग
कु,		
का,		
कट	बुरा	कुमार्ग, कुकर्म, कुरूप, कुचाल, कुडौल, कुठौर, कुढंगा, कापुरुष, कदाचार
चिर	बहुत	चिरकाल, चिरंजीवी, चिरायु
तिरस्	तुच्छ	तिरस्कार, तिरोहित
दु,		
दुस्	बुरा, कठिन, दुष्ट	दुर्दशा, दुर्गुण, दुर्गम, दुर्दिन, दुर्बल, दुर्जन, दुर्लभ, दुश्चारा, दुरूह, दुष्काल, दुश्चरित्र, दुष्कर्म, दुस्तर, दुष्प्राप्य, दुस्सह
न	अभाव	नग, नपुंसक, नास्तिक
नाना	बहुत	नानारूप, नानाजाति
नि	बाहर, भीतर, नीचे	निदान, निपात, निदर्शन, निबंध, नियुक्त, निकृष्ट, निरूपण, निरोध, निष्ठा, निरोगी, निडर

निर्, निस्	निषेध, बाहर	निःपशध, निर्दोष, निर्वाह, निर्मल, निःशकारण, निःशदर, निर्मम, निर्भय, निःशंक, निर्धन, निर्बल
पश	पीछे, उल्टा	पशसर्ग, पश्वर्ती, पश्वरी, पश्वेशी, पश्वदा, पशजय, पशक्रम, पशभव, पशमर्श, पशवर्तन, पशङ्मुख
परि	आसपास, चारों ओर, पूर्ण	परिक्रमा, परिवर्तन, परिपूर्ण, परिणाम, परिश्रम, परिवार, परिजन, परिधि, परिमाण, परिणय, पर्याप्त
पुन	फिर	पुनर्जन्म, पुनर्विवाह, पुनरुक्त
पुश्स्	सामने, आगे	पुश्स्कार, पुश्श्चरण, पुश्शेहित
पुश	पहले	पुशतत्व, पुशतन, पुशवृत्त
प्र	आगे, ऊपर, अधिक	प्रपौत्र, प्रकाश, प्रचार, प्रस्थान, प्रगति, प्रभु, प्रलय, प्राचार्य, प्रभाग, प्रख्यात, प्रयोग, प्रसार, प्रसिद्ध, प्रेरणा
प्रति	विरुद्ध, सामने, एक-एक	प्रतिकूल, प्रत्यक्ष, प्रतिक्षण, प्रतिपल, प्रतिविम्ब, प्रतिवादी, प्रतिध्वनि, प्रतिरूप, प्रतिकार, प्रतिनिधि, प्रत्येक
प्राक्	पहले का	प्राङ्मन, प्राङ्मर्, प्राक्तन प्रादुर्भाव
प्रादु	प्रकट	प्रादुर्भाव
बहिर्, बहिस्	बाहर	वहिर्मुखी, वहिर्द्वार, वहिष्कार
वि	अभाव, विशेष, भिन्न	विशेष, विवाद, विज्ञान, विभाग, वियोग, विस्मरण, विदेश, विपक्ष, विख्यात, विधवा
स	सहित	सपरिवार, सजीव, सफल, सगुण, सगोत्र, सजातीय, सरस, सावधान, सफल, सचेत, सजग, सार्ध
सत्	अच्छ	सज्जन, सत्कर्म, सत्पात्र, सद्गुरु, सदाचार

उपसर्गों की उपर्युक्त सूची में हमने संस्कृत के उपसर्ग और संस्कृत मूल के शब्द जो हिंदी में उपसर्गों की तरह प्रयुक्त होते हैं, सभी को लेने का प्रयत्न किया है, फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि या सूची संपूर्ण है और इसके अलावा संस्कृत मूल के और उपसर्ग हैं ही नहीं। जैसे जैसे आपका अध्ययन विस्तृत होता जायेगा, आपके ध्यान में नये नये उपसर्ग आते जायेंगे। तब आप इस सूची को बढ़ाते जा सकते हैं। अभी के लिए आप

उपर्युक्त उपसर्गों और उनके योग से बनने वाले शब्दों को ध्यान में रखें और अपने वाक्यों में उनका ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें।

आइये! अब कुछ अभ्यास करें :

❖ बोध प्रश्न

● निम्नलिखित शब्दों से उपसर्गों को अलग कीजिए :

- | | |
|----------------|--------------|
| 1. अनुपस्थित | 6. पशजय |
| 2. सदाचार | 7. प्रत्यक्ष |
| 3. सुव्यवस्थित | 8. समादर |
| 4. दुश्चरण | 9. निश्क्षर |
| 5. अत्यधिक | 10. साक्षर |

9.4.2 हिंदी के उपसर्ग

हिंदी के अपने उपसर्ग बहुत थोड़े से हैं। कुछ उपसर्ग, जो संस्कृत उपसर्गों से साम्य रखते हैं, लेकिन तत्सम शब्दों की जगह तद्भव शब्दों में लगते हैं, उपर संस्कृत उपसर्गों के अंतर्गत ही दे दिये गये हैं। यहाँ नीचे सूची में हम कुछ उन उपसर्गों को देखेंगे जो संस्कृत उपसर्गों से अलग हैं और तद्भव और देशज शब्दों में लगते हैं।

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरणार्थ कुछ शब्द
अध	आधा	अधखिला, अधकच्चा, अधपका, अधमरा, अधकचरा
अन	अभाव, निषेध	अनदेखा, अनपढ़, अनबन, अनगिनत, अनसुनी, अनभल, अनहित, अनमोल
उन	एक कम	उन्नीस, उनतीस, उनतालीस, उनचास. उनसठ, उनहत्तर, उन्नासी
औ	हीन, निषेध	औगुन, औघट, औदसा, औढर, औसर, औघड़
दु	बुरा तथा हीन	दुबला, दुकाल,
नि	रहित	निकम्मा, निडर, निशेगी, निधड़क, निहत्था
बिन	निषेध,	
अभाव	बिनब्याहे, बिनबोया, बिनजाने	

9.4.3 अरबी फारसी के उपसर्ग

अरबी फारसी के उपसर्ग हिंदी में इन भाषाओं के शब्दों के साथ ही आये हैं और दो एक अपवादों को छोड़कर, जब वे किसी हिंदी के शब्द के आगे लगे हुए मिलते हैं,

केवल उन्हीं शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं, जिनके साथ वे आये थे. अरबी फारसी के उपसर्गों और उनसे युक्त शब्दों की एक सूची नीचे दी जा रही है.

उपसर्ग	अर्थ	शब्दरूप
अल	निश्चित	अलबत्ता, अलगाइज
ऐन	पूरा, ठीक	ऐनवक्त, ऐनजवानी
कम	हीन, थोड़ा	कमजोर, कमबख्त, कमउम्र, कमकीमत, कमसिन, कमहिम्मत, कमदाम, कमसमझ
खुश	अच्छा	खुशबू, खुशदिल, खुशहाल
गैर	भिन्न, विरुद्ध	गैरहाजिर, गैरसरकारी, गैरजरूरी, गैरमुल्क, गैरवाजिब
दर	में	दरअसल, दरकार, दरखास्त, दरहकीकत
ना	अभाव	नादान, नापसंद, नाशज, नाउम्मीद, नालायक
फी	में, पर	फिलहाल, फीआदमी
ब		बनाम, बईजलास, बदस्तूर, बदौलत
बद	बुरा के अर्थ में	बदनाम, बदमाश, बदबू
बर	ऊपर, अलग के अर्थ में	बरतरफ, बरदास्त, बराबर, बरखास्त.
बा	सहित के अर्थ में	बाकायदा, बाइज्जत, बातमीज
बिला	बिना के अर्थ में	बिलाकसूर, बिलावजह, बिलाशर्त.
बिल	साथ के अर्थ में	बिलकुल
बे	बिना रहित के अर्थ में	बेईमान, बेचारा, बेवकूफ, बेरहम, बेचैन, बेघर
ला	बिना/अभाव के अर्थ में	लाचार, लावारिस, लाजवाब, लापता, लापरवाह.
सर	मुख्य के अर्थ में	सरकार, सरदार, सरहद, सरताज, सरपंच
हम	साथ, समान के अर्थ में	हमउम्र, हमराह, हमदर्द.
हर	प्रत्येक के अर्थ में	हररोज, हरदिन, हरसाल, हर एक, हरतरफ, हरआदमी.

आइये! अब कुछ अभ्यास करें.

❖ बोध प्रश्न

● निम्नलिखित कथनों को उपसर्ग युक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए दूसरी तरह से लिखिए:

1. आधे खिले हुए गुलाब मुझे ज्यादा सुंदर लगते हैं.
2. आपने जिस लड़के को काम पर रखा है, वह कोई काम नहीं कर सकता.

3. सबूतों के आभाव में अभियुक्तको इज्जत के साथ बरी किया जाता है.
4. मेरे सभी मित्रों की उम्र मेरे बराबर ही है.
5. उसमें जश भी ईमान नहीं है.

9.5 प्रत्यय

वह अक्षर या अक्षरसमूह जो किसी क्रिया शब्द या संज्ञा आदि शब्दों के अंत में लगाकर उसके अर्थ में कुछ विशेषता या परिवर्तन ला देता है, उसे प्रत्यय कहते हैं. जैसे – लड़ (क्रिया) + आई (प्रत्यय) 'लड़ाई'; शंका (संज्ञा) + लु (प्रत्यय) शंकालु

प्रत्यय क्रिया शब्द के पीछे लगे या संज्ञा, विशेषण आदि शब्दों के पीछे, प्रत्यय लगाने के बाद बने शब्द सामान्यतः क्रिया नहीं होते.

'उपसर्ग' शब्द के पहले लगते हैं, जबकि प्रत्यय शब्द के बाद. उपसर्ग किसी अर्थ विशेष से संबंधित होते हैं, जबकि प्रत्ययों का अपना कोई अर्थ नहीं होता.

9.6 प्रत्ययों के प्रकार

मूलतः प्रत्यय के दो प्रकार हैं – (क) कृत प्रत्यय (ख) तद्धित प्रत्यय
क्रिया या धातु के अंत में प्रयुक्त होने वाले प्रत्ययों को कृत प्रत्यय कहते हैं और उनके मेल से बने शब्द को कृदन्त. ये प्रत्यय क्रिया या धातु को नया रूप देते हैं और उन्हें संज्ञा या विशेषण बना देते हैं.

संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अन्त में लगाने वाले प्रत्यय को तद्धित कहा जाता है और उनको मेल से बने शब्द को तद्धितांत कहा जाता है.

'प्रत्यय' की अवधारणा मूलतः संस्कृत की है. संस्कृत व्याकरण में प्रत्यय प्रकरण काफी बड़ा है और उसके प्रकार भी बहुत हैं. संस्कृत में तो वस्तुतः वाक्य में प्रयोग किया जाने वाला प्रत्येक पद (शब्द) 'प्रत्यय' के योग से ही बनता है. किंतु संस्कृत की प्रत्यय व्यवस्था समझाना इस इकाई का उद्देश्य नहीं है. हिंदी ने संस्कृत से जो विशाल शब्द भंडार ग्रहण किया है, उसमें तमाम शब्द प्रत्यय के साथ ही ग्रहण किये गये हैं और अब उन्हें उनके प्रत्ययों से अलग कर देखा ही नहीं जाता. जैसे 'चोर' शब्द 'च' धातु + 'अ' प्रत्यय से बना है, परंतु हिंदी में 'चोर' एक पूरा स्वतंत्र शब्द है, जो संज्ञा है. अतः यहाँ भी हम संस्कृत के कुछ उन्हीं प्रत्ययों को लेंगे जो हिंदी में प्रचलित शब्दों के पीछे लगते हैं. साथ ही, हम यहाँ प्रत्ययों का भाषावार विभाजन भी नहीं कर रहे हैं, बल्कि उन्हें 'कृत', यानी क्रिया में लगाने वाले और 'तद्धित', यानी संज्ञा, विशेषण आदि में लगाने वाले प्रत्ययों के रूप में ही विभाजित करेंगे.

9.6.1 कृत् प्रत्यय (क्रिया में लगने वाले प्रत्यय)

आप जानते हैं कि हिंदी के क्रिया शब्द 'ना' से अंत होते हैं। जैसे पढ़ना, लिखना, चलना, बढ़ना, जलना आदि। जब इस 'ना' को हटा दिया जाता है तो जो अंश बचता है, वह धातु कहलाता है। जैसे – 'पढ़ना' क्रिया शब्द है और इसकी धातु है 'पढ़'। इसी तरह 'लिखना' की 'लिख' आदि। प्रत्यय इसी धातु में लगते हैं।

प्रत्यय	प्रत्यय युक्तशब्द
अंत	गढ़+अंतर्गिदंत, रट+अंत - रटंत, लड़+अंतर्लिड़ंत
अक	लिख + अक लिखक, कर+अक कर्कर
अक्कड़	भूल+अक्कड़ भुलक्कड़, बूझ+अक्कड़ बुझक्कड़
अन	चल+अनर्चलन, जल+अन् जलन
आ	फेर+आ फेरि, जोड़ + आ जोड़ा, घेर + आ घेरि
आई	लड़+आईर्लिड़ाई, पढ़+आईर्पढ़ाई
आऊ	खा+आऊ खाऊ, लड़ + आऊ लिड़ाऊ, टिक + आऊ टिकाऊ, बिक+आऊ बिकाऊ
आन	उड़+आनर्उड़ान, लग+आनर्लगान
आप	मिल + आप मिलाप
आवट	सज+आवटर्सजावट, मिल+आवटर्मिलावट
आवना	सुहा+आवना सुहावना, डर + आवना डरवना
आवा	छल+आवा छलवा, बुल+आवा बुलवा
आस	पी+आस प्यास
आहट	चिल्ला+आहटर्चिल्लाहट, घबरा+आहटर्घबराहट
इयल	मर+इयलर्मरियल, बढ़+इयलर्बढ़ियल
इया	बढ़+इयार्बढ़िया, घट+इयार्घटिया
ई	बोल + ईर्बोली, हँस + ईर्हँसी
एश	बस+एशर्बसेश, लूट+एशर्लुटेश
ऐत	लड़+ऐतर्लिड़ैत, चढ़ +ऐतर्चढ़ैत
ओड़ा / ओश	भाग+ ओड़ार्भगोड़ा, चाट+ओशर्चटोश
औता	समझा+औतार्समझौता
क	बैठ+कर्बैठक, मार+कर्मारक
त	रंग+तर्रंगत, बच+तर्बचत, ठंड+कर्ठंडक, धम+कर्धमक, कस+कर्कसक
ता	मर+तार्मरता, चल+तार्चलता, पी+तार्पीता
नी	कर+नीर्करनी, भर+नीर्भरनी, कट+नीर्कटनी
वैया	गा+वैयार्गवैया, खा+वैयार्खवैया, खे+वैयार्खेवैया

उपर्युक्त सूची मात्र उदाहरणस्वरूप है। इसमें दिये गये प्रत्ययों और धातुओं के अलावा भी कितने ही प्रत्ययों और धातुओं के मेल से बने शब्द प्रयोग में मिलते हैं। आप हिंदी में कुछ भी पढ़ते वक्त उन्हें खोजने की कोशिश कीजिये और इस सूची को बड़ा करते जाइये।

आइये, अब अभ्यास करते हैं।

नीचे के प्रश्नों में कुछ क्रिया शब्द और उनके आगे प्रत्यय दिये गये हैं, उन क्रिया शब्दों में वे प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाइये :

क्र.सं.	क्रिया शब्द	प्रत्यय
1.	बूझना, कूदना, पीना	अक्कड़
2.	झगड़ना, छापना, रगड़ना	आ
3.	समाना, चढ़ना, दिखना	आई
4.	छुड़ाना, भुलाना, चढ़ाना	आवा
5.	सड़ना, अड़ना	इयल

तद्धित प्रत्यय

क्रिया के अलावा दूसरे तरह के शब्दों में लगाने वाले प्रत्ययों को 'तद्धित' प्रत्यय कहते हैं। हिंदी में प्रचलित कुछ प्रमुख प्रत्ययों और उनसे बनने वाले कुछ शब्दों की सूची नीचे दी जा रही है।

प्रत्यय	प्रत्यय युक्तशब्द
अंदाज	तीर+अंदाज = तीरंदाज, गोल+अंदाज = गोलंदाज, दस्त+अंदाज = दस्तंदाज
अ	कुशल+अ = कौशल, युवा+अ = यौवन, शिशु+अ = शैशव
अक	मीमांसा+अक = मीमांसक
अनीय	आदर+अनीय = आदरणीय, सम्मान+अनीय = सम्मानीय, पूजा+अनीय = पूजनीय
आ	चूर+आ = चूरा, झोंक+आ = झोका, बोझ+आ = बोझा, खटक+आ = टका खटका
आइन	चौबे+आइन = चौधराइन, पंडित+आइन = पंडितानी, चौधरी+आइन = चौधराइन
आई	भल+आई = भलाई, बुरा+आई = बुराई, साफ+आई = सफाई, चिकना+आई = चिकनाई, ढीला+आई = ढिलाई
आऊ	पंडित + आऊ = पंडिताऊ, आगे+आऊ = अगाऊ
आना	रोज + आना = रोजाना, साल+आना = सालाना

आनी	जिस्म + आनी = जिस्मानी, रूह + आनी = रूहानी, जेठ+आनी = जेठानी, देवर+आनी = देवशानी, नौकर+आनी = नौकरशानी, सेट+आनी = सेठानी
आपा	बूढ़ा + आपा = बुढ़ापा, रंड + आपा = रंडापा
आर	सोना+आर = सुनार, लोहा +आर = लुहार, चाम+आर = चमार, गाँव+आर = गँवार
आरी	पूजा+आरी = पुजारी, भीख+आरी = भिखारी
आलु	दया+आलु = दयालु, कृपा+आलु = कुपालु
आलू	झगड़ा+आलू = झगड़ालू, शर्म +आलू = शर्मालू
आवना	लोभ+आवना = लुभावना, शोभा + आवना = सुहावना
आस	खट्टा+आस = खटास, मीठा+आस = मिठास, नींद +आस = निंदास
आहट	चिकना + आहट = चिकनाहट, गरम+आहट = गरमाहट, कडुआ+आहट = कडुआहट
ई	धन+ई = धनी, क्रोध + ई = क्रोधी, पक्ष + ई = पक्षी
इक	धर्म+इक = धार्मिक, दिन+इक = दैनिक, पुराण+इक = इतिहास+इक = ऐतिहासिक
इत	हर्ष+इत = हर्षित, आनंद+इत = आनंदित, फल+इत = फलित, दुख+इत = दुखित, खंड+इत = खंडित, तरंग +इत = तरंगित
इन	बाघ + इन = बाघिन, अहीर+इन = अहीरिन, चमार+इन = चमारिन, धोबी+इन = धोबिन
इम	अंत+इम = अंतिम, अग्र+इम = अग्रिम
इमा	महत् + इमा = महिमा, गुरु + इमा = गरिमा, नील+ इमा = नीलिमा
इय	राष्ट्र + इय = राष्ट्रीय, क्षेत्र + इय = क्षेत्रिय, भारत+इय = भारतीय
इयत	इंसान+इयत = इंसानियत, कैफ +इयत = कैफियत
इया	कुत्ता+इया = कुतिया, चूहा+इया = चुहिया, बछड़ा+इया = बछिया, बूढ़ा+इया = बुढ़िया
इष्ट	बल+इष्ट = बलिष्ठ, स्वाद + इष्ट = स्वादिष्ट, गुरु+इष्ट = गरिष्ठ, पाप+इष्ट = पापिष्ठ
ई	चतुर + ई = चातुरी, गृहस्थ + ई = गृहस्थी, नेक + ई = नेकी, गरीब+ई = गरीबी, ऊन+ई = ऊनी, सूत+ई = सूती, सरकार+ई = सरकारी, चोर+ई = चोरी, किसान+ई =

	किसानी, गुंडा+ई = गुंडई, काका+ई = काकी, घोड़ा+ई = घोड़ी, बकरा+ई = बकरी
ईन	ग्राम+ईन = ग्रामीण, कुल+ईन = कुलीन, प्राची+ईन = प्राचीन, शौक+ईन = शौकीन, रंग +ईन = रंगीन
ईय	स्व+ई = स्वकीय, पड़ + ईय = पड़कीय, राज + ईय = राजकीय
ईल	रंग+ईल = रंगील, रस+ईल = रसील, जहर+ईल = जहरील, छवि + ईल = छबील
ऊ	गड़ज+ऊ = गड़जू, बाजार+ऊ = बाजारू
एश	साँप+एश = सँपेश, लूट+एश = लुटेश, चाचा+एश = चचेरा, बहुत+एश = बहुतेरा
एल	एक+एल = अकेल, सौत+एल = सौतेल
ऐत	डाका+ऐत = डकैत, लड़ +ऐत = लठैत
ऐल	खप्पड़+ऐल = खपड़ैल, दाँत +ऐल = दँतैल
ओल	खाट+ओल = खटोल, साँप + ओल = सँपोल
क	ठंड+क = ठंडक, धम+क = धमक, कस+क = कसक
कर	विशेष+कर = विशेषकर, खास + कर = खासकर
काइ	जान+काइ = जानकाइ, पच्ची+काइ = पच्चीकाइ
खाना	डाक+खाना = डाकखाना, दवा+खाना = दवाखाना
खोर	सूद+खोर = सूदखोर, चुगल+खोर = चुगलखोर
गाइ	याद+गाइ = यादगाइ, मदद+गाइ = मददगाइ
गीइ	शह + गीइ = शहगीइ, दस्त+ गीइ = दस्तगीइ, जहाँ+गीइ = जहाँगीइ
ज़	मर्म + ज़ = मर्मज़, सर्व+ज़ = सर्वज़
तः	प्रथम+तः = प्रथमतः, अंश+तः = अंशतः
तया	विशेष+तया = विशेषतया, साधारण+तया = साधारणतया
तइ	कठिन+तइ = कठिनतइ, दृढ़+तइ = दृढ़तइ, मृदु+तइ = मृदुतइ
तम	कठिन+तम = कठिनतम, दृढ़+तम = दृढ़तम, मृदु+तम = मृदुतम, गुरु+तम गिरुतम
तालनदर	मधुर+ता = मधुरता, सुंदर+ता = सुन्दरता, आवश्यक+ता = आवश्यकता, मूर्ख+तार् मूर्खता
त्व	गुरु+त्व गिरुत्व, पुरुष +त्व = पुरुषत्व, बंधु +त्व = बंधुत्व
दान/दानी	पान+दान = पानदान, पाँव+दान = पाँवदान, पीक+दान = पीकदान, चाय+दानी = चायदानी, कलम+दानी =

	कलमदानी, मच्छर+दानी = मच्छरदानी
दाइ	दूकान+दाइ = दूकानदाइ, जमींदार = जमींदाइ, फौज + दाइ = फौजदाइ, चमक+दाइ = चमकदाइ, थाना+दाइ = थानेदाइ, माल+दाइ = मालदाइ, लेन+दाइ = लेनदाइ, देन+दाइ = देनदाइ, समझदाइ = समझदाइ, फल+दाइ = फलदाइ, नाता+दाइ = नातेदाइ
नाक	दर्द+नाक = दर्दनाक, खौफ +नाक = खौफनाक
नी	ऊँट + नी = ऊँटनी, शीछ+नी = शीछनी, शेइ+नी = शेइनी, मोइ+नी = मोइनी
पन	काला+पन = कालापन, गंवाइ+पन = गंवाइपन, बाल+पन = बालपन, लड़क+पन = लड़कपन
पूर्वक	विधि+पूर्वक = विधिपूर्वक, न्याय+पूर्वक = न्यायपूर्वक, दया+पूर्वक = दयापूर्वक
बंद	कमइ+बंद = कमइबंद, हथियाइ+बंद = हथियाइबंद, बिस्तर+बंद = बिस्तरबंद
बाज	शतरंज+बाज = शतरंजबाज, नशा+बाज = नशेबाज, धोखा+बाज = धोखेबाज
मंद	अक्ल+मंद = अक्लमंद, दौलत +मंद = दौलतमंद
म	मध्य+म = मध्यम, आदि+म = आदिम
मय	जल+मय = जलमय, शांति + मय = शांतिमय, दया + मय = दयामय
मात्र	क्षण+मात्र = क्षणमात्र, लेश+ मात्र = लेशमात्र
मान	बुद्धि+मान = बुद्धिमान, श्री+मान = श्रीमान, शक्ति+मान = शक्तिमान
य	पंडित+य = पांडित्य, धीइ+य = धैर्य, मधुइ+य = माधुर्य, ओष्ठ+य = ओष्ठ्य, दंत+य = दंत्य, स्वस्थ+य = स्वास्थ्य
ल	वत्स+ल = वत्सल, शीत+ल = शीतल
वंत	दया+वंत = दयावंत, गुण+वंत = गुणवंत
वत	पुत्र+वत = पुत्रवत, विधि+वत = विधिवत, आत्म+वत = आत्मवत, पितृ+वत = पितृवत
वइ	हिम्मत+वइ = हिम्मतवइ, ताकत+वइ = ताकतवइ
वान	गुण+वान = गुणवान, धन+वान = धनवान, विद्या+वान = विद्यावान
वाइ	उम्मीद+वाइ = उम्मीदवाइ, तारीख +वाइ = तारीखवाइ,

	भाषा+वाङ् = भाषावाङ्
शः	क्रम+शः = क्रमशः, शब्द+शः = शब्दशः, बहु+शः = बहुशः, कोटि+शः = कोटिशः, शत+शः = शतशः

यह सूची भी कृदंतों की सूची के समान ही अपूर्ण है। उपर्युक्ततद्धित प्रत्ययों के अलावा और भी तद्धित प्रत्यय मिलते हैं और उदाहरण भी उपर दिये गये उदाहरणों से कहीं ज्यादा मिल जायेंगे। जैसे-जैसे आप अपना अध्ययन विस्तृत करते जायेंगे, ध्यान देने पर आपको तद्धित प्रत्यय उदाहरण समेत मिलते जायेंगे।

आइये! कुछ अभ्यास कर लें।

❖ बोध प्रश्न

निम्नलिखित में मूल शब्दों और तद्धित प्रत्ययों को अलग कीजिये :

1. महनीय, वांछनीय, पठनीय, विचारणीय, श्लाघनीय
2. शघव, कौरव, शैव, मानव, वैयाकरण
3. आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शारीरिक, मानसिक
4. पंडिताई, ठकुराई, बनियाई, मिठाई, ठंडाई
5. कसेश, चितेश, घनेश, ममेश, मौसेश

9.7 सारबिंदु

विद्यार्थी मित्रो! इस इकाई में आपने हिंदी में उपसर्ग और प्रत्यय की अवधारणा और उनके प्रयोग के संबंध में आधारभूत जानकारी प्राप्त की। आइये! अब इस इकाई की मुख्य-मुख्य बातों को हम बिंदुओं के रूप में दुहरा लें –

- उपसर्ग और प्रत्यय भाषा की अनिवार्य इकाइयाँ हैं। भाषा का उपयोग करते हुए हम जाने-अनजाने ढेरों उपसर्ग और प्रत्ययों का प्रयोग करते जाते हैं।
- उपसर्ग वह भाषिक इकाई है, जिसका स्वतंत्र प्रयोग लगभग नहीं होता है, बल्कि वह किसी शब्द के अंत में लगाकर उसके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देता है।
- हिंदी में अधिकतर उपसर्ग संस्कृत से आये हैं, कुछ अरबी-फारसी से और कुछ हिंदी के अपने हैं।
- प्रत्यय भी उपसर्गों की ही तरह स्वतंत्र रूप से प्रयोग में नहीं आते बल्कि शब्दों के अंत में जुड़कर उनके अर्थों में विशेषता ला देते हैं।
- उपसर्ग और प्रत्यय भाषा के वे साधन हैं, जिससे भाषा को अपना शब्दभंडार बढ़ा करने में बहुत सहायता मिलती है।

9.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

● निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 800 शब्दों में लिखिए.

1. उपसर्ग की परिभाषा देते हुए उसके प्रकारों का सोदाहरण विवेचन कीजिये.
2. प्रत्यय को समझाते हुए उसके प्रकारों का सोदाहरण विवेचन कीजिये.

● निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 400 शब्दों में लिखिए.

1. उपसर्ग और प्रत्यय में क्या अंतर है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिये.
2. कृदंत किसको कहते हैं? उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिये.
3. तद्धितांत क्या हैं ? सोदाहरण समझाइये.
4. कृदंत और तद्धितांत शब्दों में क्या अंतर है? दोनों के पाँच-पाँच उदाहरण दीजिये.

● निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए.

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. हिंदी के उपसर्ग
3. अरबी-फारसी के उपसर्ग
4. कृत् प्रत्यय
5. तद्धित प्रत्यय
6. उपसर्ग और प्रत्यय में अंतर

● निम्नलिखित का निर्देशानुसार उत्तर दें.

● निम्नांकित कथनों के उत्तर 'हाँ' या 'ना' में दीजिए :

1. 'अभि' उपसर्ग 'ओर' के अर्थ में प्रयुक्त होता है.
2. 'अन' का अर्थ है 'अभाव' या 'निषेध'.
3. 'अध' उपसर्ग संस्कृत का है.
4. 'कृत् प्रत्यय' किसी भी शब्द में लगाए जा सकते हैं.
5. 'तद्धित प्रत्यय' केवल क्रिया शब्दों में ही लगते हैं.

● निम्नांकित वाक्यों की पूर्ति कोष्ठक में दिये गये उपसर्ग युक्तशब्द द्वारा कीजिए :

6. ६. हर माँ को उसकी संतान (अति) होती है.
7. छोटा भाई बड़े भाई का (अनु) है.
8. बिल्ली रास्ता काट जाय तो यह (अप) माना जाता है.
9. वह हमेशा मेरी बात (अन) कर देता है ।
10. (बद) से नौकरी उसको नहीं मिली.

● निम्नांकित वाक्यों में प्रत्यय युक्तशब्द पहचान कर मूल शब्द और प्रत्यय को अलग अलग करें:

11. वैष्णव जन अहिंसा व्रत का पालन करते हैं।
12. क्रिकेट में आज भारत पाकिस्तान की भिड़ंत है।
13. वह एक नंबर का पियक्कड़ है।
14. मुँहदिखाऊ बातें करना उसकी आदत है।
15. हाथियों को रखने की जगह 'फील्डखाना' कहलाती थी।

नीचे लिखे शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय जोड़कर वाक्य में प्रयुक्त कीजिये :

16. जन्म 17. डर 18. पसंद 19. लिखना 20. चौधरी

9.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. हिंदी व्याकरण, कामता प्रसाद गुरु, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी.
2. हिन्दी व्याकरण, डॉ. रामगोपाल सिंह
3. हिन्दी - गुजराती शब्दों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन - डॉ. गेलजी भाटिया
4. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद
5. व्यावहारिक हिंदी व्याकरण तथा रचना, हरदेव बाहरी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.
6. <https://leverageedu.com/blog/hi/उपसर्ग-और-प्रत्यय>

इकाई 10 : संधि और समास

रूपरेखा

- 10.1 उद्देश्य
- 10.2 प्रस्तावना
- 10.3 संधि की परिभाषा
- 10.4 संधि के प्रकार
- 10.5 समास की परिभाषा
- 10.6 समास के प्रकार
- 10.7 सारबिंदु
- 10.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली
- 10.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

10.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रों! आप बी.ए. द्वितीय वर्ष के पंचम् प्रश्नपत्र के खंड-३ की दसवीं इकाई पढ़ने जा रहे हैं। इस इकाई में संधि और समास के बारे में बताया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- संधि किसे कहते हैं उसे समझ सकेंगे.
- संधि की परिभाषा और उसके प्रकार को जान सकेंगे.
- समास किसे कहते हैं उसे समझ सकेंगे.
- समास की परिभाषा और उसके प्रकार को जान सकेंगे.
- संधि और समास के उचित प्रयोग में सक्षम हो सकेंगे.

10.2 प्रस्तावना

संधि और समास व्याकरण का महत्वपूर्ण हिस्सा है। संधि शब्द संस्कृत का शब्द है इसे संस्कृत में पुल्लिङ्ग व हिंदी में स्त्रीलिङ्ग माना गया है। संधि शब्द का अर्थ दो वर्णों के बीच मेल या समझौता होता है। समासों का प्रयोग हिंदी में बहुत अधिक होता

हैं। उर्दू के साथ समास की दृष्टि से हिंदी की तुलना करें तो समासों की रचना-विधि तथा इनकी लम्बाई हिंदी की अपनी विशेषता मानी जाएगी। लम्बे-लम्बे और मिश्रित ढंग के समास मुख्य रूप से कविता में प्रयोग होते हैं, किन्तु सामान्य बातचीत और गद्य में भी छोटे-छोटे सामासिक शब्दों की कमी नहीं है। कविता को समझने के लिए समासों की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

10.3 संधि की परिभाषा

संधि शब्द सन्+धा धातु से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है मेल या मिलाप। यह प्रायः दो तत्त्वों या घटकों के बीच होता है। किन्हीं कारणों से वे तत्व बिल्कुल पास-पास आ चुके हैं और पास-पास न रहे ऐसा कोई विकल्प नहीं है। व्याकरण में भी संधि का बिल्कुल ऐसा ही अर्थ है। शब्द रचना और पद रचना में ऐसी स्थितियाँ सदैव आती हैं जब दो शब्द (समास रचना में) या शब्द-शब्दांश (उपसर्ग-प्रत्यय शब्द रचना में या रूप रचना में) बिल्कुल पास आते हैं और वे मिलकर एक स्वतंत्र भाषिक इकाई जैसे- 'शब्द' या 'पद' बनाते हैं। उदाहरण के रूप में समास रचना को ले। हिम+आलय में दो शब्द हैं और मिलकर एक समस्त शब्द हिमालय बना रहा है, और इस कारण हिम के अंतिम अंश (लिखित रूप में प्राप्त ह्रस्व अ) और आलय के आरंभिक अंश (दीर्घ आ) दोनों इतने पास-पास आ गए हैं कि मेल अर्थात् संधि की अनिवार्य स्थिति आ खड़ी हुई है। यह संधि का ही परिणाम है कि अंतिम ह्रस्व अ और आरंभिक दीर्घ आ मिलकर आ बन गया है और इस प्रकार समस्त शब्द हिमालय बना।

(1) डॉ. उमेशचन्द्र शुक्ल- “दो वर्णों के आपस में मिलने से जो रूपांतर होता है, उसे संधि कहते हैं।”

(2) आ. जयेन्द्र त्रिवेदी- “जब एक शब्द दूसरे शब्द के साथ जुड़ता है, तब पहले शब्द के अंतिम वर्ण और दूसरे शब्द के पहले वर्ण में जो मेल होता है उसे संधि कहा जाता है।”

(3) कामताप्रसाद गुरु- “दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास-पास आने के कारण उसके मेल से जो विकार होता है, उसे संधि कहते हैं।”

(4) डॉ. रामगोपाल सिंह- “दो वर्णों के समीप आने से उनमें मेल होने से जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं, अर्थात् दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को व्याकरण में संधि कहा जाता है।”

(5) हिंदी शब्द सागर- “व्याकरण में वह विकार जो दो अक्षरों के पास-पास आने के कारण उनके मेल से होता है, संधि है।”

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कह सकते हैं कि दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहा जाता है।

जैसे- शम+अवतार शमावतार

10.4 संधि के प्रकार

संधि के तीन भेद हैं- (1) स्वर संधि

(2) व्यंजन संधि

(3) विसर्ग संधि

(1) स्वर संधि- जहाँ एक स्वर का दूसरे स्वर के मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं।

जैसे- राम+ईश्वर ईश्वर

राम् +अ+ईश्वर

स्वर संधि पाँच प्रकार की है-

(1) दीर्घ संधि

(2) गुण संधि

(3) वृद्धि संधि

(4) यण् संधि

(5) अयादि संधि

(1) दीर्घ संधि- जहाँ बड़ी मात्रा आये वहाँ दीर्घ संधि होती है।

जैसे- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ

परम+अर्थी परमार्थ

हिम+आलया हिमालय

सत् +ईश ईशतिश

विद्या+अभ्यास विद्याभ्यास

- 'अ' अथवा 'आ' की जगह यदि 'अ' अथवा 'आ' आए तो दोनों की जगह 'आ' हो जाता है।

दैत्य+अरि=दैत्यारि अ+अ=आ

भोजन+आलय= भोजनालय अ+आ=आ

यथा+अर्थ= यथार्थ आ+अ=आ

महा+आत्मा= महात्मा आ+आ=आ

अभि+इष्ट=अभीष्ट इ+इ=ई

गिरि+ईश= गिरीश इ+ई=ई

मही+ इन्द्रा=महीन्द्र ई+इ=ई

इजनी+ईश= इजनीश ई+ई=ई

सु+उक्ति=सूक्ति उ+उ=ऊ

अम्बु+ऊरु=अम्बूमी उ+ऊ=ऊ

वधू+उत्सव= वधूत्सव ऊ+उ=ऊ

भू+उर्जा= भूर्जा ऊ+ऊ=ऊ

(2) गुण संधि- अ और आ के आगे इ या ई, उ या ऊ, ऋ स्वर आते हैं, तो दोनों के मिलने से ए, ओं और अ हो जाते हैं। दूसरे रूप में कह सकते हैं कि जहाँ पर बीच में ए मात्रा दिखे, ओं मात्रा दिखे और लास्ट में अर मात्रा दिखे वहाँ गुण संधि होती है।

देव+इंद्र=देवेन्द्र अ+इ=ए
 नर+ईश=नरेश अ+ई=ए
 यथा+इष्ट= यथेष्ट आ+इ=ए
 इमा+ ईश= इमेश आ+ई=ए
 वीर+उचित=वीरोचित अ+उ=ओ
 जल+उर्मि= जलोर्मी अ+ऊ=ओ
 महा+उत्सव=महोत्सव आ+उ=ओ
 गंगा+उम=गंगोर्मी आ+ऊ=ओ

राज+ऋषि= राजर्षि अ+ऋ=अ
 महा+ ऋषि=महर्षि आ+ ऋ=अ

(2) वृद्धि संधि- ह्रस्व 'अ' या दीर्घ 'आ' से परे ए या ऐ हो तो दोनों मिलकर ऐ और 'ओ' हो तो औ हो जाता है। यानी जहाँ किसी शब्द पर दो मात्रा दिखे वहाँ वृद्धि संधि होती है।

जैसे- मत+ऐक्य= मतेक्य
 सदा+एक= सदैव अ/आ/ए/ऐ= ऐ
 महा+एश्वर्य=महेश्वर्य
 वन+ओषधि=वनौषधि
 परम+औदर्य=परमौदार्य
 महा+ओजस्वी=महौजस्वी अ/आ/ओ/औ=औ

(4) यण् संधि- यदि इ,ई,उ,ऊ और ऋ के बाद भिन्न स्वर आए तो इ/ई का य, उ/ऊ का व और ऋ का र हो जाता है।

यानी शब्द के बीच में कोई अधूरा शब्द(य,व,र) हो तो वहाँ यण् संधि होती है।

जैसे- अति+अधिक= अत्यधिक इ+अ=य
 इति+आदिर्इत्यादि इ+आ=या
 नदी+आगम= नद् यागम ई+आ=या
 उपरि+युक्त= उपर्युक्त इ+उ=यु
 वि+ऊह= व्यूह इ+ऊ=यू
 प्रति+एक= प्रत्येक इ+ए=ये
 देवी+एश्वर्य=देव्यैश्वर्य ई+ऐ= ये
 सु+अच्छ= स्वच्छ उ+अ=व

सु+आगत= स्वागत उ+आ= वा

अनु+एषण=अन्वेषण उ+ए= वे

अनु+इति=अन्विति उ+इ= वि

पितृ+आज्ञा= पित्राज्ञा ऋ+आ= श

(5) अयादि संधि- ए, ऐ, ओ या औ के बाद कोई दूसरा स्वर हो तो उनके स्थान पर अद्, आव्, अव्, या आव् हो जाता है।

जैसे- ने+अनर्नियन (ए+अ=अय)

गै+अनर्गियन (ऐ+अ=आव)

नौ+एकर्निक (औ+इ=आवि)

(2) व्यंजन संधि-

व्यंजन वर्ण के साथ स्वर वर्ण या व्यंजन वर्ण अथवा स्वर वर्ण के साथ व्यंजन वर्ण के मेल से जो विकार उत्पन्न हो, उसे 'व्यंजन संधि' कहते हैं।

(1) वर्ण के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन (क्, च्, ट्, त्, प् का परिवर्तन- ग, ज्, झ्, द्, ब्)

दिक्+गज= दिग्गज

वाक्+ईश्= वागीश

सत्+गति= सद्गति

सत्+वाणी= सद् वाणी

ऋक्+वेद= ऋग्वेद

(2) वर्ण के पहले वर्ण का पाँचवे वर्ण में परिवर्तन (क्, च्, ट्, त्, प्- ज, ण, न्)

वाक्+मय= वाडमय

षट्+मास= षणमास

जगत्+नाथ= जगन्नाथ

सत्+मार्ग= सन्मार्ग

(3) "त" या "द" के बाद यदि ल हो तो त्+द् "ल" में बदल जाता है।

जैसे- उत्+लेख= उल्लेख

उत्+लास= उल्लास

-त् या द् के बाद यदि ज/झ हो तो त्+द् "ज" में बदल जाता है।

जैसे- सत्+जन= सज्जन

उद्+झटिका= उज्झटिका

- त् या द् के बाद यदि ट/ड हो तो त्+द् ट्+ड् में बदल जाता है।

जैसे- तत्+टीका= तट्टीका

उत्+डयन= उड्डयन

- त् या द् के बाद यदि श् हो तो त् / द् का च् और श् का छ् हो जाता है।

जैसे- उत्+श्वाश=उच्छ्वास

उत्+शिष्ट=उच्छिष्ट

सत्+शास्त्र=सच्छात्र

- त् या द् के बाद यदि च्/छ् हो तो त्/द् का च् हो जाता है।

उत्+चारण=उच्चारण

सत्+चरित्र+ सच्चरित्र

- त्/द् के बाद यदि ह हो तो त्/द् के स्थान पर द और ह के स्थान पर घ् हो जाता है।

जैसे-तत्+हित=तद्धित

-जब पहले पद के अंत में स्वर हो और आगे के पद का पहला वर्ण “छ” हो तो छ के स्थान पर च्छ हो जाता है।

जैसे-अनु+छेद=अनुच्छेद

छत्र+छाया=छत्रछाया

-जब पहले पद के अंतिम वर्ण “म” के आगे दूसरे पद का प्रथम वर्ण अन्तस्थ (य,र,ल,व) या उष्म (श,ष,स,ह) या अन्य स्पर्श व्यंजन हो तो म के स्थान पर पंचम् वर्ण हो जाता है।

जैसे- सम्+वाद=संवाद

सम्+योग=संयोग

सम्+गम=संगम

अहम्+कार=अहंकार

सम्+हार=संहार

सम्+तोष=संतोष

सम्+बंध=संबंध

- ऋ, ॠ, ष से परे न् का ण् हो जाता है।

जैसे- पठि+नाम=पठिणाम

शम+अयन=शमायण

प्र+मान=प्रणाम

स् का ष्

स् के पहले अ, आ, से भिन्न स्वर हो तो स का ष हो जाता है।

वि+षम=विषम

सु+सुप्ति=सुषुप्ति

अभि+सेक=अभिषेक

(3) विसर्ग संधि-

विसर्ग के बाद किसी स्वर अथवा व्यंजन के आने से विसर्ग में जो परिवर्तन होता है उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

-विसर्ग का आ- विसर्ग के पूर्व यदि “अ” और बाद में “अ” अथवा तीसरे चौथे पांचवे वर्ण अथवा य,र,ल,व हो तो ओ हो जाता है।

जैसे- मनः+अनुकूल=मनोनुकूल

अधः+गति=अधोगति

मनः+बल=मनोबल

वयः+वृद्ध=वयोवृद्ध

-विसर्ग के पूर्व अ आ को छोड़कर कोई स्वर हो और परे कोई स्वर हो, वर्ण के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण या य,र,ल,व में से कोई हो तो विसर्ग का र+ हो तो जाता है।

जैसे- निः+आहार=निराहार

निः+धन=निर्धन

दुः+जन=दुर्जन

आशी+वाद=आशीर्वाद

-विसर्ग के पूर्व कोई स्वर हो और बाद में च,छ या श हो तो विसर्ग का श हो जाता है।

जैसे- निः+चल=निश्चल

दुः+शासन=दुःशासन

-विसर्ग के बाद यदि त या स हो तो विसर्ग का स् हो जाता है।

जैसे- नमः+ते=नमस्ते

निः+संतान=निस्संतान

दुः+सासन=दुःसाहस

-विसर्ग के पूर्व इ/उ और बाद में क,ख,ट,ठ,प,फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का ष हो जाता है।

जैसे- निः+फल=निष्फल

निः+कलंक=निष्कलंक

चतुः+पाद=चतुष्पाद

-विसर्ग के बाद में र हो तो विसर्ग लुप्त हो जाता है और स्वर दीर्घ हो जाता है।

जैसे- निः+शोग=निशोग

निः+रस=नीरस

-विसर्ग में कोई परिवर्तन न हो।

दुः+शासन=दुःशासन

निः+संकोच=निःसंकोच

निः+संदेह=निःसंदेह

❖ बोध प्रश्न

- सही/गलत बताइए.

- (1) दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहा जाता है.
- (2) संधि के चार भेद हैं.
- (3) स्वर संधि के पाँच प्रकार हैं.
- (4) व्यंजन संधि से परे स्वर या व्यंजन आने से व्यंजन में जो विकार आ जाता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं.
- (5) विसर्ग के बाद किसी स्वर अथवा व्यंजन के आने से विसर्ग में जो परिवर्तन होता है उसे विसर्ग संधि कहते हैं.

10.5 समास की परिभाषा

समास का अर्थ है-संक्षिप्त करना. दो या दो से अधिक शब्दों के संयोग को समास कहते हैं. इस संयोग में विभक्तिचिह्नों का लोप हो जाता है. संक्षिप्तता भाषा में बहुत ही आवश्यक होती है और समास इसमें सहायक होते हैं. कम से कम शब्दों द्वारा बड़ी से बड़ी बात समास द्वारा कही जाती है. समास के बारे में संस्कृत में एक सूक्तिप्रसिद्ध है-

“द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मद्देहे नित्यमव्ययीभावः।

तत् पुरुष कर्म धारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः५”

समास की परिभाषा-

- (1) डॉ.उमेशचन्द्र शुक्ल- “दो या दो से अधिक शब्दों के संयोग को समास कहते हैं.”
- (2) आचार्य जयेंद्र त्रिवेदी- “दो या अधिक शब्दों का अर्थ की दृष्टि से जब योग होता है और इस योग से एक स्वतंत्र शब्द बनता है तब उस शब्द को सामासिक या समस्त शब्द और दो या अधिक शब्दों के उस योग को समास कहा जाता है.”
- (3) कामताप्रसाद गुरु- “जब दो या अधिक शब्द अपने सम्बन्धी शब्दों को छोड़कर एक साथ मिल जाते हैं, तब उनके मेल को समास कहते हैं.”
- (4) डॉ.शमशोपाल सिंह- “दो या दो से अधिक परस्पर सम्बन्धित शब्दों के मिलने से बने स्वतंत्र सार्थक शब्द सामासिक पद कहलाते हैं. शब्दों में हुए इस तरह के योग को समास कहते हैं.”

उपर्युक्तपरिभाषाओं के आधार पर कह सकते हैं कि- दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं,

जैसे- सीतापति/सीता का पति

10.6 समास के भेद

समास के ६ भेद हैं।

- (1) अव्ययीभाव समास
- (2) तत्पुरुष समास
- (3) बहुब्रीहि समास
- (4) कर्मधारय समास
- (5) द्विगु समास
- (6) द्वन्द्व समास

(1) अव्ययीभाव समास- अव्ययीभाव समास में पहला पद प्रधान होता है और समूचा शब्द क्रिया विशेषण अव्यय होता है।

जैसे- प्रतिदिन= प्रति+दिन

भरपेट= भर+पेट

यथाविधि= यथा+विधि

प्रत्यक्ष= प्रति+अक्ष

(२)तत्पुरुष समास- तत्पुरुष समास में पहला पद दूसरे प्रधान पद के साथ किसी विभक्तिद्वारा जुड़ा रहता है।

जैसे- राज पुरुष=राजा का पुरुष

इसमें राजा और पुरुष दोनों शब्द 'का' विभक्तिसे जुड़े हुए हैं। विभक्तिका संबंध कारक से है इसीलिए कारक के अनुसार तत्पुरुष समास के छह भेद हैं।

(क) कर्म तत्पुरुष- इसमें पहला पद कर्मकारक होता है।

जैसे- विदेशगत (विदेश को गया हुआ)

गगनचुंबी (गगन को चूमने वाला)

स्वर्गप्राप्ति (स्वर्ग को प्राप्त)

(ख) करण तत्पुरुष- इसमें पहला पद, दूसरे पद के साथ तृतीया विभक्ति से जुड़ा रहता है।

जैसे- दयाहीन- (दया से हीन)

गुण संपन्न- (गुण से संपन्न)

प्रेमातुर- (प्रेम से आतुर)

नीतियुक्त (नीति से युक्त)

प्रेमाकुल- (प्रेम से आकुल)

दुःखपीडित- (दुःख से पीड़ित)

(ग) संप्रदान तत्पुरुष- इसमें पहला पद दूसरे पद के साथ चतुर्थी विभक्ति से जुड़ा रहता है।

जैसे- गोशाला- (गो के लिए शाला)

स्नानगृह- (स्नान के लिए गृह)

सभा भवन- (सभा के लिए भवन)

देश भक्ति- (देश के लिए भक्ति)

(घ) अपादान तत्पुरुष- इसमें अपादान का चिन्ह (से) छिपा रहता है।

जैसे- स्थान भ्रष्ट- (स्थान से भ्रष्ट)

भयभीत- (भय से भीत)

बलहीन- (बल से हीन)

जन्मांध- (जन्म से अंध)

कामचोर- (काम से चोर)

जातिविमुख- (जाति से विमुख)

(ङ) सम्बन्ध तत्पुरुष- इसमें पहला पद षष्ठी विभक्तिसे जुड़ा रहता है।

जैसे- सेना पति (सेना का पति)

देवालय (देव का आलय)

पशुधीन (पशु के अधीन)

गणपति (गण का पति)

वनमाली (वन का माली)

(च) अधिकरण तत्पुरुष- इसमें अधिकरण का चिन्ह में पर, पै छिपा रहता है।

जैसे- पुरुषोत्तम (पुरुषों में उत्तम)

दानवीर (दान में वीर)

घुड़सवार (घोड़े पर सवार)

संगीत कुशल (संगीत में कुशल)

(3) बहुब्रीहि समास- बहुब्रीहि समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता और दोनों पद मिलकर किसी दूसरे अन्य पद की विशेषता बताते हैं।

जैसे- लम्बोदर- लम्बा है उदर जिसका वह (गणेश)

पीताम्बर- पिला है अम्बर जिसका वह (कृष्ण)

दशमुख- दस है मुख जिसके वह (शिव)

जितेन्द्रिय- जीत ली गई हैं इंद्रियाँ जिसके द्वारा वह (मुनि)

(4) कर्मधारय समास- कर्मधारय समास में पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है।

जैसे- नीलकमल- नीला है जो वह कमल

पीताम्बर- पीला है जो अम्बर

कमलनयन- कमल रूपी नयन)

-कर्मधारय के भेद-

(अ) विशेषता वाचक- जिस समास से विशेष्य और विशेषण का भाव सूचित होता है उसे विशेषता वाचक कर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे- काला पानी काला (विशेषण)

पानी (विशेष्य)

(ब) उपमा वाचक- जिस समास में उपमान, उपमेय भाव जाना जाता है उसे उपमा वाचक कर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे- चन्द्रमुख- चन्द्र (उपमान)

मुख (उपमेय)

(5) द्विगु समास- जिस समास में पहला पद संख्यावांची विशेषण होता है और दूसरा पद प्रधान होता है।

जैसे- दोपहर- दो+पहर (दो)

नवशत्री-(नव+शत्री) (नव)

त्रिभुवन- (त्रि+भुवन) (त्रि)

त्रिशूल-(त्रि+शूल) (त्रि)

नवग्रह(नव+ ग्रह) (नव)

द्विगु समास के दो भेद हैं

(अ) समाहार द्विगु- समाहार का अर्थ है- समुदाय

जैसे-तीन लोकों का समाहार- त्रिलोक

(ब) उत्तरपद प्रधान द्विगु- उत्तरपद प्रधान द्विगु का अर्थ है- अंतिम पद।

जैसे- दो माँ का- दुमाता

(6) द्वंद्व समास- जिस समास के सभी पद प्रधान होते हैं, द्वंद्व समास कहते हैं।

द्वंद्व समास के तीन उपभेद हैं।

(1) इतरेतर द्वंद्व- जिसमें 'और' शब्द से सभी पद जुड़े हुए हों और वह प्रधान अस्तित्व रखते हों, उसे इतरेतर द्वंद्व कहते हैं।

जैसे- शम+लक्ष्मणार्शिम और लक्ष्मण

शत-दिनार्शित और दिन

शधे-श्यामार्शधे और श्याम

(2) समाहार द्वंद्व- जिस समास में अन्य पद छिपे रहते हैं और अपने अर्थ का बोध अप्रत्यक्ष रूप से कराते हैं, उसे समाहार द्वंद्व कहते हैं।

जैसे- हाथ-पाँव

(3) वैकल्पिक द्वंद्व- जिस समास में दो पदों के बीच 'या', 'अथवा' आदि विकल्पसूचक अव्यय छिपे हो उसे वैकल्पिक द्वंद्व कहते हैं।

जैसे- भला-बुरा
पाप-पुण्य
ठंडा-गरम

10.7 सारबिन्दु

- ध्वनियों के मेल को संधि कहते हैं और शब्दों के मेल को समास कहते हैं।
- संधि के तीन भेद हैं-(1) स्वर संधि (2) व्यंजन संधि (3) विसर्ग संधि।
- समास के 6 प्रकार हैं-(1) अव्ययीभाव समास (2) तत्पुरुष समास (3) बहुब्रीहि समास (4) कर्मधारय समास (5) द्विगु समास (6) द्वंद्व समास।

10.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- (1) संधि की परिभाषा बताते हुए स्वर संधि को समझाइए।
 - (2) संधि के भेदों पर प्रकाश डालिए।
 - (3) समास की परिभाषा बताते हुए समास के प्रकारों को समझाइए।
 - (4) समास के प्रकारों पर प्रकाश डालिए।
- टिपण्णी लिखिए।
 - (1) संधि की परिभाषा
 - (2) व्यंजन संधि
 - (3) विसर्ग संधि
 - (4) समास की परिभाषा
 - (5) तत्पुरुष समास
 - (6) कर्म धारय समास
 - (7) द्वंद्व समास
 - सही/गलत बताइए।
 - (1) नवशत्री द्विगु समास का उदाहरण है।
 - (2) दो या दो से अधिक शब्दों के संयोग को समास कहते हैं।
 - (3) समास के सात भेद हैं।
 - (4) जिस समास में पहला शब्द संख्यावाची विशेषण होता है उसे द्वंद्व समास कहते हैं।
 - (5) द्वंद्व समास के दो उपभेद हैं।
 - रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए।
 - (1) जहाँ बड़ी मात्रा आये वहाँसंधि होती है। (गुण संधि/ दीर्घ संधि)
 - (2)समास में पहला पद दूसरे प्रधान पद के साथ विभक्तिद्वारा जुड़ा होता है।
(अव्ययीभाव समास/ तत्पुरुष समास)

(3)समास में दोनों पद मिलकर किसी दूसरे अन्य पद की विशेषता बताते हैं। (बहुब्रीहि समास/द्वंद्व समास)

(4) नवशत्री.....समास का उदाहरण है। (द्विगु समास/द्वंद्व समास)

(5) संधि केभेद हैं। (तीन/चार)

• सही जोड़े मिलाइए.

अ	ब
(1) नवग्रह	(क) वृद्धि संधि
(2) लम्बोदर	(ख) कर्म तत्पुरुष
(3) मतैक्य	(ग) तीन
(4) गगनचुंबी	(घ) द्विगु समास
(5) संधि के प्रकार	(च) बहुब्रीहि समास

10.9 सहायक पाठ्य सामग्री

- (1) हिंदी व्याकरण इस-छंद-अलंकार सहित, डॉ. उमेशचन्द्र शुक्ल
- (2) हिंदी रूप रचना, सं. जयेंद्र त्रिवेदी
- (3) हिंदी व्याकरण, कामताप्रसाद गुरु
- (4) आधुनिक हिंदी व्याकरण, डॉ. रामगोपाल सिंह
- (5) हिंदी शब्द सागर
- (6) <https://hi.wikipedia.org>

इकाई : ११ पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थी शब्द और वाक्यांश के लिए
एक शब्द

रूपरेखा

- 11.1 उद्देश्य
- 11.2 प्रस्तावना
- 11.3 पर्यायवाची शब्द
- 11.4 विलोम शब्द
- 11.5 अनेकार्थी शब्द
- 11.6 वाक्यांश के लिए एक शब्द
- 11.7 सारबिंदु
- 11.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी
- 11.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

11.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रों! आप बी.ए. द्वितीय वर्ष के पंचम् प्रश्नपत्र के खंड-३ की ग्यारहवीं इकाई पढ़ने जा रहे हैं। इस इकाई में पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थी शब्द और वाक्यांश के लिए एक शब्द के बारे में बताया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद-

- पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं उसे समझ सकेंगे.
- पर्यायवाची शब्दों से परिचित हो सकेंगे.
- विलोम शब्द किसे कहते हैं उसे समझ सकेंगे.
- विलोम शब्द के भेद को समझ सकेंगे.
- विलोम शब्दों से परिचित हो सकेंगे.
- अनेकार्थी शब्द किसे कहते हैं उसे समझ सकेंगे.
- अनेकार्थी शब्दों से परिचित हो सकेंगे.
- वाक्यांश के लिए एक शब्द से परिचित हो सकेंगे.

11.2 प्रस्तावना

भाषा विचारों, भावों की अभिव्यक्ति का सबसे प्रमुख साधन है। आप जब कभी लिखते-लिखाते हैं या कोई बातचीत करते हैं तो किसी-न-किसी भाषा का सहाय लेते हैं। भाषाई अभिव्यक्तिके मूल में शब्द होते हैं। क्योंकि शब्द ही बातचीत में आने वाले व्यक्तियों, वस्तुओं, प्राणियों, गुणों, क्रियाओं आदि को प्रकट करते हैं और वाक्य बनाते हैं। आपने स्वयं अनुभव किया होगा कि बात-चीत करते-करते या परीक्षा में उत्तर लिखते-लिखते कभी-कभी आप अचानक रुक जाते हैं। क्योंकि कथ्य या विचार के लिए शब्द मिल नहीं पाया है या जो मिला है वह आपको बहुत उपयोगी नहीं लगता है। इससे आप समझ सकते हैं कि शब्द का भाषा में कितना अधिक महत्त्व है।

शब्द भाषा की अर्थ स्तर या लघुतम स्वतंत्र इकाई है किन्तु शब्द और अर्थ का प्रायः ऐसा अपरिवर्तनीय सम्बन्ध नहीं होता है कि एक शब्द का एक ही अर्थ रहे। अर्थ की दृष्टि से शब्दों के ६ भेद हैं-

- (1) पर्यायवाची शब्द
- (2) समानार्थक शब्द
- (3) विलोमार्थक शब्द
- (4) अनेकार्थक शब्द
- (5) अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द
- (6) समूहार्थक शब्द

11.3 पर्यायवाची शब्द

पर्याय शब्द की उत्पत्ति 'परि' उपसर्गपूर्वक 'इ' धातु से भाववाचक धातु से भाववाचक 'धङ्' (अ) प्रत्यय लगाने से हुई है। पर्याय का अर्थ है- समान। अर्थात् समान अर्थ का बोध करनेवाले शब्द को 'पर्यायवाची' कहते हैं। पर्यायवाची शब्दों से हमें एक ही शब्द के लिए प्रयोग होने वाले अन्य शब्दों का पता चलता है। पर्यायवाची शब्दों का अधिक प्रयोग शब्दकोश (छद्मलूट्टुडुह्) में होता है, जिससे किसी शब्द का अर्थ ढूँढने में मदद मिलती है।

पर्यायवाची शब्द के अन्य नाम- (1) पर्यायवाची शब्द

(2) समानार्थी शब्द

(3) समानार्थक शब्द

किसी भाषा के पर्यायवाची शब्द का प्राचुर्य भाषा समृद्धी का प्रतीक है। इस दृष्टि से संस्कृत सर्वाधिक संपन्न भाषा है। हिन्दी भाषा में तद्भव पर्यायवाची शब्दों की कमी है। संस्कृत में ही तत्सम या पर्यायवाची शब्दों को हिन्दी में ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया है। स्मरणीय एक बात यह है कि सभी पर्यायवाची शब्दों का एक अर्थ नहीं होता है,

उसमें अन्तर होता है। कुछ अपवादों को छोड़कर वास्तविकता यह है कि किसी भी जीवित भाषा में ठीक एक अर्थ के एक से अधिक शब्द नहीं होते हैं। दो पर्याय समझे जाने वाले शब्दों में भी किसी न किसी स्तर पर कुछ न कुछ अंतर होता है। कभी कभी यह अंतर अधिक होता है तो कभी- कभी अत्यंत सूक्ष्म। जैसे- नीरज, अम्बुज, जलज एक दूसरे के पर्याय होते हुए भी एक-दूसरे से भिन्न हैं, परन्तु यह भिन्नता अत्यंत सूक्ष्म है, जबकि धनुष, पिनाक, सारंग एक-दूसरे के पर्याय होते हुए भी अधिक भिन्न हैं।

समानार्थक शब्दों की दो कोटियाँ पूर्ण पर्याय और अपूर्ण पर्याय हैं। पूर्ण पर्याय वे हैं जो किसी वाक्य में एक दूसरे का स्थान ले सकते हैं और उनके अर्थ में कोई अंतर नहीं पड़ता है।

जैसे- आकाश को ५० अंक मिले या मुझे २५ नंबर मिले।

अंधकार छा गया या अंधेरा छा गया।

अपूर्ण पर्याय वे हैं जिनके अर्थ और प्रयोग में परस्पर अंतर होता है। प्रायः लोग इसे असावधानी से पूर्ण पर्याय मानकर प्रयोग करते हैं, किन्तु पढ़े-लिखे आदमी इसके सूक्ष्म भेद को समझते हैं।

जैसे- 'नाप' मीटर या सेंटीमीटर में होगा,

'माप' लीटर के हिसाब से।

● पर्यायवाची शब्द-

1. अनुपम- अप्रतिम, अद्वितीय, अद्भुत, अनूठा, अपूर्व, अनोखा, अतुल्य।
2. अंग- हिस्सा, भाग, अंश, अवयव।
3. अप्सरा- विद्याधरी, यक्षिणी, किन्नरी, परी देवबाला।
4. अग्नि- आग, वैश्वानर, अनल, धूमकेतु, पावक, जातदेव, ज्वलन, कृशानु।
5. अमृत- सोम, पीयूष, अमी, सुधा, सुरभोग।
6. अनी- कटक, सेना, वाहिनी, फौज, चमू।
7. अरण्य- वन, जंगल, कानन, बिपिन, कान्ताश।
8. असुर- शक्षस, दैत्य, तमीचर, दनुज, निशाचर, रजनीचर, दानव, इन्द्रारि, सुरारि।
9. अश्व- धोड़ा, घोटक, तुरंग, बाजि, सेंधव।
10. आम- आम्र, अमृतफल, अतिसौरभ, रसाल, पिकबन्धु।
11. आँख- नेत्र, लोचन, दृग, चक्षु।
12. आनंद- प्रसन्नता, उल्लास, सुख, हर्ष, आमोद।
13. आकाश- गगन, अन्तरिक्ष, नभ, आसमान, दिव, व्योम, अम्बर, शून्य, अन्नत, तारापथ, पुष्कर, वियत।
14. आँसू- अश्रु, नयनवारि, लोचनजल।
15. इच्छा- आकांक्षा, इर्षा, अभिलाषा, मनोरथ, कामना।
16. इंद्र- देवराज, शक्र, सुरपति, महेंद्र, शकारिपु।

17. इन्द्राणी- इंद्रवधू, शची, पुलोमजा, शतावरी, पौलमी
18. कपड़ा- वस्त्र, चीर, पट, वसन, अम्बर, चैल
19. कामदेव- कंदर्प, कुसुमायुध, मदन, मंथर, मार, अनंग, मनोज, विश्वकेतु, रतिपति, पंचसर, मीनकेतु, स्मर, काम, आत्मभू, अतनु, मनोभव, मकरकेतु.
20. कुमुदिनी- इन्द्रमल, कैरव, नलिनी, कुई
21. कमल- सरोज, सरोरुह, जलज, अम्बुज, वारिस, तामरस,
22. कार्तिकेय- स्कन्द, कुमार, षडानन, शरभव
23. कुबेर- यक्षराज, राजराज, किन्नरेश.
24. किरण- रश्मि, मयूर, कर, मरीच, अंशु
25. किला- गढ़, दुर्ग, कोट
26. कोयल- कोकिल, पिक, वसंतदूत, परभृत
27. क्रोध- गुस्सा, कोप, शेष, अमर्ष
28. कृष्ण- केशव, मोहन, माधव, पुरुषोत्तम, मधुसुदन, रणछेड़, वासुदेव, द्वारकाधीश, नन्दनंदन, जनार्दन, गिरिधर, मुशरि, गोपाल, बंशीधर, शधारमण
29. खग- पक्षी, चिड़िया, विहग, द्विज, शकुनि
30. गंगा- जाह्नवी, सुरसरी, भागीरथी, मन्दाकिनी, देवापगा, देवनदी, सुरसरिता, त्रिपगथा, सुरापगा, विष्णुपदी
31. गणेश- गजानन, गणपति, गिरिजानंदन, गौरीसुत, लम्बोदर, एकदंत, विनायक, विधनाशक, भवानीनंदन, महाकाय, मोदकप्रिय, मोददाता, मूषकवाहन, वक्रतुंडा
32. गाय- गो, धेनु, सुरभि, पयस्विनी
33. गरुड़- खगेश, उरगादि, वैनतेय, हरियान, विष्णु रथ, सुवर्ण, विषमुख
34. गेह- गृह, घर, निकेत, निवास, भवन, ओम, मंदिर, आवास, निलय, धाम
35. घास- दूर्वा, तृण, दूब, कुश
36. चोर- साहसिक, तस्कर, रजनीचर, खनक, मोषक
37. चतुर्- प्रवीण, निपुण, पटु, कुशल, योग्य
38. चांदनी- चन्द्रिका, जुह्वाई, कौमुदी, चन्द्र मरीचि
39. चोटी- शृंग, मूर्धा, शिखर, सानु
40. चन्द्र- चंद्रमा, कलानिधि, हिमांशु, सोम, सुधांशु, क्षपानाथ, रजनीपति, द्विजराज, निशापति, तारापति, सुधाकर, शशि, शकेश, हिमकर, कलाधर
41. जानकी- सीता, वैदेही, जनकात्मजा, जनकसुता, जनकतनया
42. जहाज- जलयान, बोहित, पोत
43. जंगल- वन, कानन, अरण्य, बिपिन
44. झरना- निर्झर, उत्स, स्रोत, प्रपात
45. झंडा- ध्वज, पताका, केतु

46. तलवार- खड़ग, शमशीर, सिशोही, कृपाण, असि, चन्द्रहास, कश्वाल
47. तिमिर- तम, अंधकार, तमिस्रा, अँधेश
48. तीर- नाशक, शर, बाण, शिल्लीमुख
49. दिन- दिवस, दिया, वासर
50. दूध- दुग्ध, अमृत, क्षीर, पय, स्तन्य
51. देवता- देव, सुर, अजर, अमर, विवस, वृन्दाशय, आदित्य, भद्रारक
52. दुःख- पीड़ा, उत्पीडन, व्यथा, कष्ट, संताप, शोक, विशाद, क्षोभ, क्लेश, वेदना, यातना, यंत्रणा
53. धनुष- सारंग, धनु, चाप, कोदण्ड, शशसन
54. नदी- सरिता, तरंगिनी, कुलंकषा, आपगा, निर्झरिणी, निम्नगा
55. नौका- नाव, तरिणी, जलयान, जलपात्र, बेड़ा, डोंगी
56. नरक- यमलोक, यमालय, यमपुर
57. पति- स्वामी, कान्त, वल्लभ, आर्यपुत्र, वर, नाथ, ईश
58. पत्नी- भार्या, अर्धांगिनी, त्रिया, वामांगी, वामा, सहधर्मिणी, गृहिणी, बहू, वधू, कलत्र, प्राणप्रिया, वल्लभा, धरणी, जोय, जाया
59. पत्थर- उपल, पाहन, प्रस्तर, पाषाण
60. पथ- शह, मार्ग, शस्ता
61. पर्वत- गिरि, पहाड़, धराधर, अचल, नग, भूधर, धरणीधर, अद्रि, कुधा
62. पार्वती- गौरी, उमा, गिरिजा, सती, अभया, ईश्वरी, शैलसुता, शिवा, भवानी, सर्वमंगला, अपर्णा, दुर्गा, आर्या, अम्बिका, रुद्राणी
63. पिता- जनक, तात, बाप, पितृ
64. पुत्र-बेटा, लड़का, आत्मज, पुत्र, तनय, सुत
65. पुत्री- तनया, तनुजा, सुता, बेटा, लड़की, नंदिनी, आत्मजा
66. पृथ्वी- भू, भूमि, इल, वसुमति, धरणी, धरित्री, वसुधा, श्याम, मेदिनी, अवनि, वसुंधरा, क्षिति
67. पेड़- वृक्ष, पादप, गाछ, तरु, द्रुम
68. पैर-पाद, चरण, पाँव, पद
69. प्रकाश- आलोक, धूति, चटक, ज्योति
70. पंडित- प्रज्ञ, विचक्षण, मनीषी, धीर, सुधी, विद्वान
71. फूल- पुष्प, प्रसून, कुसुम, पुहुप
72. बाग- उपवन, उद्यान, वाटिका, फुलवारी.
73. बाघ- व्याघ्र, शार्दूल, चित्रक, श्वापद, वनश्च
74. बाण- सायक, सर, तीर, नाशक, शिल्लीमुख, विशिख
75. बाल- चूल, केश, कच, चिकुर

76. बिजली- चपला, चंचला, सौदामिनी, तदित, क्षमप्रभा
77. ब्रम्हा- पितामह, विधि, विधाता, आत्मभू, स्वयंभू, प्रजापति, चतुरानन, हिरण्यगर्भ, सदानंद, कमलासन, अज, कर्ता
78. बन्दर- हरि, शखामृग, मर्कट, कपि, वानर
79. भँवर- अलि, मधुप, मधुकर, भृंग, भ्रमर
80. भाई- भ्राता, अनुज, भ्रातृ
81. मछली- सकरी, जलजीवन, मीन, मत्स्य, झख
82. मदिश- शशब, मध, हाला, मधु, सुरा, आसव
83. मनुष्य- आदमी, जन, मनुष, मानव, नर
84. महादेव- शिव, शम्भू, पशुपति, गिरजापति, शंकर, महेश्वर, भूतेश, रूद्र, चंद्रशेखर, गिरीश, त्रिलोचन, कैलाशनाथ, वामदेव, भूतनाथ
85. मेघ- बादल, घन, जलधर, धराधर, वारिद, वारिधर, पयोद, पयोधर, जगजीवन
86. मोर- नीलकंठ, कलापी, शिखंडी, मयूर, शिखा
87. मोक्ष- मुक्ति, सद्गति, निर्वाण, परमधाम, परमपद
88. मुर्गा- तमचर, अरुणाशिखा, ताम्रचुड
89. यम- सूर्यपुत्र, श्राध्यदेव, कृतार्थ, जीवनपति, धर्मराज, शमन, कीनाश, दण्डधर
90. यमुना- कालिंदी, सूर्यसुता, रवितनया, तरुणि-तनुजा, कलिकतनया, तरुणिजा
91. रक्त-लोहित, शोणित, रुधिर, लहू, खून
92. नृप, नरेश, नरपति, भूप, महीप, भूपति, शव, नरेंद्र, भूपाल
93. शत्रि- शत, रैन, रजनी, निशा, शर्वरी, यामिनी, विभावरी, क्षणदा, क्षपा, तमी
94. लड़का- बालक, शिशु, किशोर, सुत, अभर्क
95. लड़की- बालिका, कुमारी, बाला
96. लक्ष्मी- रमा, कमला, इंदिरा, पद्मजा, श्री
97. वर्षा- वर्षाऋतु, बरसात, पावस, वर्षाकाल, चौमासा
98. वदन- मुख, मुंह, आनन
99. विष्णु- केशव, माधव, गोविन्द, पीताम्बर, जनार्दन, विश्वम्भर, नाशायण, दामोदर, लक्ष्मीपति, जलाशायी, वनमाली, उपेन्द्र, चतुर्भुज सोना- स्वर्ण, सुवर्ण, कंचन, हेम, हाटक, जातरूप

❖ बोध प्रश्न

- जोड़े मिलाइए.

अ	ब
(1) आकाश	(क) प्रवीण, निपुण
(2) चतुर	(ख) तम, अंधकार, अँधेरा
(3) मदिश	(ग) व्योम, अम्बर, नभ
(४) तिमिर	(घ) स्वामी, वर, नाथ
(५) पति	(च) शराब, हाल, मधु

11.4 विलोम शब्द

ये संसार विषमताओं का घर है यदि कहना चाहें तो कह सकते हैं कि संसार का जन्म ही विषमताओं से हुआ है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी. विलोम शब्द का अर्थ है- विपरीत (उल्टा). इस प्रकार 'विलोम' शब्द उसे कहते हैं जो परस्पर अर्थों में विरोध रखते हैं. विपरीतार्थक, विपर्याय, विलोमार्थक आदि विलोम के पर्याय हैं.

जैसे- 'सामान्य' 'असामान्य' शब्द. 'असामान्य' शब्द 'सामान्य' शब्द का 'विलोम' है क्योंकि यह उसका विपरीत अर्थ व्यक्त करता है. विलोम शब्द का ज्ञान उपयोगी है क्योंकि इनके प्रयोग से भाषा की अभिव्यक्तिकक्षमता में वृद्धि होती है. इस दृष्टि से विलोम शब्दों का पर्यायवाची शब्दों से अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व है. पर्यायवाची शब्दों का पारस्परिक अंतर इतना सूक्ष्म होता है कि उनका सरलता से सही ज्ञान कठिन होता है. जिसके कारण पर्याय शब्दों में निहित सूक्ष्म अर्थ के कारण उनका सटीक प्रयोग सरल नहीं होता है. इसके विपरीत 'विलोम' में एक शब्द का ठीक-ठीक विपरीत अर्थ व्यक्त करनेवाला शब्द आते ही उसका भाव स्पष्ट हो जाता है. जैसे- 'पूर्व' का 'पश्चिम', 'रात' का 'दिन', 'भला' का 'बुरा' इत्यादि. इस प्रकार विलोम का ज्ञान रचना के क्षणों में बहुत उपयोगी हो जाता है.

विलोम शब्दों की रचना निम्नलिखित रूप से होती है-

- (1) स्वतंत्र शब्दों द्वारा
- (2) उपसर्गों की सहायता से
- (3) उपसर्गों के योग से
- (4) उपसर्गों के परिवर्तन से
- (5) लिंग के परिवर्तन से

(1) स्वतंत्र शब्दों द्वारा निर्मित विलोमार्थक शब्द

स्वतंत्र शब्द से तात्पर्य उन विलोम शब्दों से है जो अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र अस्तित्व रखते हैं. उनका मूल से कोई सम्बन्ध नहीं होता है. जैसे-

- | | |
|------------------|---------------------|
| (1) गुण-दोष | (16) गीला-सूखा |
| (2) असली-नकली | (17) खरा-खोटा |
| (3) गर्मी-सर्दी | (19) कोमल-कठोर |
| (4) कल-आज | (20) कल-आज |
| (5) कम-ज्यादा | (21) उदय-अस्त |
| (6) ऐसा-वैसा | (22) अमृत-विष |
| (7) ऊपर-नीचे | (23) जीत-हार |
| (8) ऊँच-नीच | (24) चतुर-मूर्ख |
| (9) उत्थान-पतन | (25) नूतन-प्राचीन |
| (10) अपना-पराया | (26) ताप-शीत |
| (11) आगे-पीछे | (27) तरल-ठोस |
| (12) अधिक-कम | (28) नया-पुराना |
| (13) जड़-चेतन | (29) ठंडा-गर्म |
| (14) छोटा-बड़ा | (30) ज्येष्ठ-कनिष्ठ |
| (15) जन्म-मृत्यु | |

(2) उपसर्गों की सहायता से-

उपसर्गों की सहायता से विलोम शब्द की रचना दो प्रकार से की जाती है-

- (1) उपसर्गों के योग से
- (2) उपसर्गों के परिवर्तन से
- (3) उपसर्गों के योग से-

इसमें वे विलोम शब्द आते हैं जिनकी रचना 'शब्द' के पहले उपसर्ग लगाकर की जाती है। ये उपसर्ग विभिन्न प्रकार के उपसर्ग लगाने से बनते हैं, जैसे- 'अ', 'अन' 'निः', 'वि', 'अप', 'प्रति', 'अव' इत्यादि उदाहरण के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

'अ' उपसर्ग-

चेतन-अचेतन

धर्म-अधर्म

विकारी-अविकारी

'अन' उपसर्ग-

ज्ञान-अज्ञान

आर्य-अनार्य

'निः' उपसर्ग-

अभिमान-निःअभिमान

आशा-निःआशा

‘वि’ उपसर्ग-
ऋय-विक्रय
भव-विभव
‘अप’ उपसर्ग-
मान- अपमान
यश- अपयश
‘प्रति’ उपसर्ग-
घात-प्रतिघात
वादी-प्रतिवादी
‘अव’ उपसर्ग-
गुण-अवगुण
मूल्यन-अवमूल्यन

(4) उपसर्गों के परिवर्तन से-

इसमें वे शब्द आते हैं जो अपने उपसर्ग परिवर्तन के द्वारा विपरीतार्थ हो जाते हैं।

स्वदेश- विदेश
इहलोक- परलोक
आशोहण- अवशोहण
अनुकूल- प्रतिकूल
सार्थक- निरर्थक
प्रत्यक्ष- परोक्ष
सुमति- कुमति
आयात- निर्यात
एकतंत्र- बहुतंत्र
विशालकाय- लघुकाय
अल्पसंख्यक- बहुसंख्यक

(5) लिंग परिवर्तन से-

संस्कृत भाषा में तीन लिंग है- (1) पुल्लिंग (2) स्त्रीलिंग (3) नपुंसकलिंग, पर हिन्दी भाषा में दो लिंग- पुल्लिंग और स्त्रीलिंग है। दोनों लिंग एक-दूसरे के विलोम हैं। अतः पुल्लिंग से स्त्रीलिंग तथा स्त्रीलिंग से पुल्लिंग शब्द बनाकर भी विलोम शब्दों की रचना की जाती है।

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग शब्द बनाकर-

मामा-मामी
नर-नारी
पुत्र-पुत्री
कुमार-कुमारी
लड़का-लड़की
सिंह-सिंहनी इत्यादि.

स्त्रीलिंग से पुल्लिंग शब्द बनाकर-

मयूरी- मयूर
विधवा-विधुर
नानी-नाना
हिरनी-हिरण
शुकी-शुक

विलोम शब्द-

अवनति- उन्नति
अनुशङ्ग- विशङ्ग
अन्तर्मुखी- बहिर्मुखी
अस्त- उदय
अर्वाचीन-
अग्रज- अनुज
अस्वस्थ- स्वस्थ
अपेक्षा- उपेक्ष
अनुलोम- प्रतिलोम
अपमान- सम्मान
अपना- पश्या
अंत-आदि
अतिवृष्टि-अनावृष्टि
अल्पायु- दीर्घायु
इहलोक-परलोक
इष्ट-अनिष्ट
इष्ट-अनिष्ट
इसका-उसका

आरम्भ- अंत
आस्था- अनास्था
आय- व्यय
आसक्त- अनासक्त
आतुर- अनातुर
आवृत्त- अनावृत्त
आदर- अनादर
आयात- निर्यात
आहार- निशहार
आकाश- पाताल
आदान-प्रदान
आशेह-अवशेह
आगामी- विगत
इच्छा-अनिच्छा
एक-अनेक
एकता-अनेकता
एकता-अनेकता
एकाग्र-चंचल

ईश्वर-अनीश्वर
उदात्त-अनुदात्त
उपकार-अपकार
उन्मुख-विनीत
उत्तम-अधम
उचित-अनुचित
उदय-अस्त
उद्घाटन-समापन
उत्साह-निरुत्साह
उन्नति-अवनति
उपसर्ग-अपसर्ग
ऊँच-नीच
ऊपर-नीचे
गेय-अगेय
गमन-आगमन
गुरु-लघु
गृही-त्याग
गौरव-अगौरव
गुण-अवगुण
गुप्त-प्रकट
घात-प्रतिघात
चेतन-अचेतन
चतुर्-मूढ़
जय-पराजय
जन्म-मृत्यु
जाति-विजाति
तृष्णा-वितृष्णा
तृप्त-अतृप्त
दयालु-निर्दय
भिखाशी-दा
भल्ल-बुझ
भोगी-योगी
मानवीय-अमानवीय
मित्र-शत्रु

ऐतिहासिक-अनैतिहासिक
एश्वर्य-अनैश्वर्य
ओजस्वी-निस्तेज
औपचारिक-अनौपचारिक
औचित्य-अनौचित्य
कोप-कृपा
कायर-सूड
कृत्रिम-प्रकृत
कुलदीप-कुलगांधार
कार्य-अकार्य
कुटिल-सरल
कनिष्ठ-ज्येष्ठ
गोचर-अगोचर
दिन-रात
निर्क्षर-साक्षर
नागरिक-ग्रामीण
नाश-निर्माण
नैसर्गिक-कृत्रिम
निर्र्थक-सार्थक
नाम-अनाम
नख-शिख
नर-नारी
परमार्थ-स्वार्थ
प्रत्यक्ष-परोक्ष
क्ष-विपक्ष
परकीया-स्वकीया
पुरस्कार-तिरस्कार
प्रमुख-गौण
भय-निर्भय

मुख्य-गौण
शग-विशग
विस्तार-संक्षेप
शिव-अशिव
शुभ-अशुभ

❖ बोध प्रश्न

- विलोम शब्द बताइए.

- (1) वादी
- (2) ओजस्वी
- (3) उन्नति
- (4) शग
- (5) गेय

11.5 अनेकार्थी शब्द

अनेकार्थी शब्द उसे कहते हैं कि जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं। ये अलग-अलग अवसरों में वाक्यों के साथ मिलकर अलग-अलग अर्थ देते हैं।

जैसे- 'कनक' कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय' में प्रथम 'कनक' का अर्थ स्वर्ण और दूसरे 'कनक' का अर्थ धतुरा है।

अनेकार्थी शब्द-

- (1) अतिथि- मेहमान, अपरिचित व्यक्ति, अग्नि, शम के पौत्र का नाम, साधु
- (2) अक्षर- ब्रह्मा, वर्ण, विष्णु, शिव, धर्म, मोक्ष, गगन, सत्य, जल, तपस्या
- (3) अंक- एक से नौ तक की गिनती, गोद, चिह्न, धब्बा, नाटक का अंक, अध्याय, रूपक का एक भेद
- (4) अज- शिव, ब्रह्मा, दशरथ के पिता, बकरा, मेष राशि, अजन्मा
- (5) अंग- शरीर, अवयव, टुकड़ा, भेद, पक्ष, सहायक
- (6) अरुण- लाल, सूर्य का सारथि
- (7) अपेक्षा- इच्छा, आवश्यकता, आशा
- (8) अनंत- आकाश, विष्णु, अंतहीन, शेषनाम, लक्ष्मण
- (9) अंतर- अवधि, अवसर, आकाश, मध्य, छिद्र, व्यवधान
- (10) अम्बर- वस्त्र, आकाश
- (11) अमृत- सुधा, जल, दूध, अमर, स्वर्ण, पारा, अन्न
- (12) आँख- नेत्र, छेद, अंकुर, चक्षु, नयन, लोचन
- (13) अर्थ- तात्पर्य, धन, कारण के लिए
- (14) आब- पानी, चमक, मान

- (15) अलि- भँवरा, सखि, बिच्छू
- (16) अर्क- सूर्य, मदार, सत्व, काढ़ा, बिजली की चमक, स्फटिक, ताँबा, श्विवाइ
- (17) कल- आने वाला या बीता दिन, चैन, शांति, पत्र, सुन्दर
- (18) कनक- सोना, धतुरा
- (19) आम- एक फल, मामूली, सर्वसाधारण
- (20) कर्ण- कान, अंग का राजा
- (21) कटाक्ष- व्यंग्य, आक्षेप, तिरछी नज़र
- (22) कुशल- खैरियत, चतुर
- (23) कुल- परिवार, सब
- (24) कुष्ण- काला, व्यास, नन्दनंदन
- (25) कौरव- धृतराष्ट्र, गीदड़
- (26) कोट- किला, पहनने का वस्त्र
- (27) काम- इच्छा, कामदेव, कार्य
- (28) केतु- एक ग्रह, ध्वजा, पुच्छलताश
- (29) गण- समूह, मनुष्य, शिव के गण, पिंगल का गण, भूतप्रेतादि
- (30) क्षमा-माफी, पृथ्वी
- (31) खीर- दूध, पायस, एक फल
- (32) खग- पक्षी, तारा, गन्धर्व
- (33) खल- धतुरा, दुष्ट, दवा कूटने का पात्र
- (34) गुण- स्वभाव, विशेषता, रस्सी, गुणा, शील, कौशल, सत्व-रज-तम गुण
- (35) गति- दशा, मोक्ष, चाल
- (36) गिरा- पतित, वाणी, सरस्वती
- (37) ठाकुर- स्वामी, देवता, राजपूत, नाई एक जाति, बड़ा
- (38) जीवन- जल, जिन्दगी, आजीविका
- (39) जलधर- बादल, समुद्र, सरेश्वर
- (40) जलज- कमल, मोती, शंख, मछली, सेवार
- (41) गोली- काँच की गोली, औषधि, वाटिका, कारतूस
- (42) घन- घना, बादल, अधिक, लम्बाई-चौड़ाई-ऊँचाई का गुणन फल
- (43) चारा- वश, पशु या मछली का खाना
- (44) जड़- मूल, मूर्ख
- (45) जरा- बुढ़ापा, थोड़ा, जल
- (46) पतंग- पक्षी, सूर्य, पतिंगा, गुड्डी
- (47) निशाचर- चोर, उल्लू, राक्षस, प्रेत
- (48) निशाला- एकांत, विचित्र

- (49) नाग- हाथी, साँप
- (50) नाक- नासिका, स्वर्ग, एक फल
- (51) धर्म- प्रकृति, कर्तव्य, स्वभाव, सम्प्रदाय
- (52) द्विज- पक्षी, चन्द्रमा, ब्राह्मण, तारा, दांत
- (53) दल- समूह, पत्ता, पक्ष
- (54) तत्व- पञ्चभूत, ब्रह्मा, मूल यथार्थ
- (55) तरुणि- नाव,
- (56) ढाल- उतार, रक्षक, ढलाई करके
- (57) तारा- नक्षत्र, बालिका, स्त्री, आँख की पुतली, बालि की स्त्री, बृहस्पति की स्त्री
- (58) पास- निकट, उत्तीर्ण
- (59) पानी- जल, चमक, इज्जत, शस्त्र की धार, आँख की आब
- (60) पक्ष- ओर, पंख, बल, सहाय, पन्द्रह दिन का समय
- (61) पय- दूध, पानी
- (62) बहार- आनंद, वसंत, एक राग
- (63) बलि- बलिहारी, उपहार, न्योछावर, एक राजा, पितरों को दिया भोग
- (64) फाटक- निःसार, तत्व, दरवाजा
- (65) फल- परिणाम, धुरी, हल, फूल का अंतिम रूप
- (66) पाशवार- समुद्र हृद
- (67) पोत- जहाज, बच्चा, वस्त्र, गुड़िया
- (68) पार्थिव- पृथ्वी सम्बन्धी, राजस, मिटटी का शिवलिंग
- (69) पृष्ठ- पीठ, पन्ना, पीछे का भाग
- (70) रंग- सातों रंग, आनंद, विलास, नाटक का प्रदर्शन
- (71) योग- जोड़, अभ्यास
- (72) यति- साधु, विश्राम
- (73) वार- दिन, बालक, बाल
- (74) भाव- दर, विचार, अर्थ, साशंश
- (75) भूत- प्रेत, प्राणी, बीता हुआ, तत्व
- (76) मधु- शहद, शशब, बसन्त-ऋतु
- (77) मगर- घड़ियाल, लेकिन
- (78) मित्र- सूर्य, दोस्त
- (79) माधव- कृष्ण, वैशाख, वसंत
- (80) मत- शय, सम्प्रदाय, नहीं
- (81) वन- जंगल, जाल

- (82) वर्ण- जाति, रंग, अक्षर
- (83) वर- श्रेष्ठ, वरदान, दूल्हा
- (84) वंश- कुल, बाँस
- (85) राग- प्रेम, स्वर, संगीत
- (86) रस- शरबत, नवरस, षटरस, स्वाद, भस्म, सार, आनंद, प्रेम
- (87) लंक- कमरा, लंका
- (88) लोक- भुवन, लोग, जनता
- (89) लौ- दीपशिखा, लगन
- (90) सर- तालाब, सिर, पराजित, तीर, श्रेष्ठ
- (91) शिल्लीमुख- बाण, भौरा
- (92) विषय- भोग, विलास, बाड़े में, विचारणीय वस्तु या भाव
- (93) वार- दिन, क्रम, शोक, आघात, गज
- (94) विधि- ब्रह्मा, ईश्वर, भाग्य, रीति
- (95) श्रुति- कान, वेद, किवदंती
- (96) शारद- सरस्वती, शरद ऋतु का
- (97) वीर- बहादुर, भाई, सखा, सखी
- (98) शिव- शंकर, कल्याण, श्रुंगाल
- (99) शान- घमंड, ऐंठ, ठाट,
- (100) हेम- सोना, तुषार
- (101) हार- माला, पराजय, गले का आभूषण
- (102) हलधर- बैल, किसान, बलराम
- (103) सूर- सूर, अंधा, वीर, एक कवि, शूल की पीड़ा
- (104) सुवर्ण- सोना, सुन्दर, रंग

❖ बोध प्रश्न

अनेकार्थी शब्द बताइए.

- (1) श्रुति
- (2) वर्ण
- (3) तरणी
- (4) जरा
- (5) गिरा

11.6 वाक्यांश के लिए एक शब्द

मनुष्य के अपने भाव या विचार की अभिव्यक्ति के साधन है। अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता, गंभीरता एवं स्पष्टता लाने के लिए लम्बी बात न कहकर किसी ऐसे शब्द विशेष की आवश्यकता होती है जो थोड़े में बहुत-सा अर्थ दे जाता है। अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द के द्वारा भावार्थ अभिव्यक्तिकी पद्धति नई नहीं है। समास शैली या सूत्र-शैली के रूप में इसका प्रयोग प्राचीन काल से होता आ रहा है। महान वैयाकरण पाणिनि ने १४ सूत्रों में ही संस्कृत भाषा के सम्पर्क व्यापार को निबद्ध कर दिया है। कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक भाव को व्यक्त करना प्रतिभा का प्रतीक माना जाता है। यहाँ तक कि व्याकरणशास्त्री शब्द की एक मात्रा भी 'बचा' पाते हैं तो उन्हें पुत्र जन्म का सुख मिलता है।

“एक मात्रा लाभेन पुत्रोत्सवा मन्यते वैयाकरणः”

अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द के प्रयोग की इस समास शैली के जानने वाले साहित्यकार को 'गागर में सागर' भरने की शक्ति प्राप्त होती है। जिस रचना में भाव या विचार जितने कम शब्दों में व्यक्त हुए हों वह रचना उत्तम कोटि की मानी जाती है। रचना की इस कोटि को पाने के लिए अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का ज्ञान बहुत उपयोगी सिद्ध होता है।

● वाक्यांश के लिए एक शब्द-

- (1) महल का भीतरी भाग- अंतःपुर
- (2) जो कहा न जा सके- अकथनीय
- (3) जिसका जन्म पहले से हुआ हो- अग्रज
- (4) गुरु के समीप रहनेवाले विद्यार्थी- अन्तेवासी
- (5) आगे का विचार करनेवाला- अग्रसोची
- (6) जिसका जन्म अन्त्य (छोटी) जाति में हुआ हो- अन्त्यज
- (7) अंडे से जन्म लेने वाला- अंडज
- (8) जो खाने योग्य न हो- अखाध्य
- (9) जिसकी चिंता नहीं हो सकती- अचिन्त्य
- (10) जो सबसे आगे रहता हो- अग्रणी
- (11) वह प्रतियोगिता जिसमें कविता के अंतिम अक्षर से दूसरी कविता प्रारम्भ की जाती है- अन्ताक्षरी
- (12) जिसका ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा न हो- अगोचर, अतीन्द्रिय
- (13) जिसका कोई शत्रु न उत्पन्न हुआ हो- अजातशत्रु
- (14) लक्ष्य में भी न घटित होने वाला दोष- अयासि
- (15) जिसके आने की तिथि ज्ञात न हो- अतिथि

- (16) लक्ष्य के अतिरिक्त किसी लक्ष्य या कथन में अन्य वस्तु के आ-जाने का दोष-
अतिव्याप्ति
- (17) आवश्यकता से अधिक वर्षा- अतिवृष्टि
- (18) जो बीत गया हो- अतीत
- (19) जो देखा न जा सके- अदृश्य
- (20) कर या शुल्क का वह अंश विशेष जो किसी कारण वश अलग से अधिक लिया
जाता है- अधिभार
- (21) जिसका जन्म न होता हो- अजन्मा
- (22) जिसे जीता न जा सके- अजेय
- (23) सीमा का अनुचित उल्लंघन- अतिक्रमण
- (24) किसी बात या कथन को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना- अतिशयोक्ति
- (25) जिसका अनुभव इन्द्रियों द्वारा न किया जा सके- अतीन्द्रिय
- (26) जिसके समान दूसरा न हो- अद्वितीय
- (27) वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले- अध्युढा
- (28) जिसका दूसरा उपाय न हो- अनन्योपाय
- (29) जिसका वचन द्वारा वर्णन न हो- अनिर्वचनीय
- (30) जो ज्ञान की सीमा से परे हो- अज्ञेय
- (31) जिसका निवारण न किया जा सके- अनिवार्य
- (32) अन्य से सम्बन्ध न रखनेवाला- अनन्य
- (33) जिसका कोई नाथ न हो- अनाथ
- (34) जो वर्णन के परे हो- अवर्णनीय
- (35) जिसे बुलाया न गया हो- अनाहूत
- (36) जिसका ध्यान किसी दूसरी ओर हो- अन्यमनस्क
- (37) एक भाषा में लिखी या कही गई बात को दूसरी भाषा में लिखना या कहना-
अनुवाद
- (38) जिसकी समानता प्रकट न की जा सके- अनुपम
- (39) जिसका जन्म पीछे हुआ हो- अनुज
- (40) परम्परा से चली आई हुई बात, उक्तिया कथा- अनुश्रुति
- (41) जिसका अनुभव किया गया हो- अनुभूत
- (42) बिना पलक गिराये- अनिमेष
- (43) जो स्त्री अभिनय करे- अभिनेत्री
- (44) जो इस लोक का न हो- अलौकिक
- (45) रात और संध्या के बीच की बेला- गोधूली
- (46) अवश्य होनेवाला- अवश्यम्भावी

- (47) जो शोक करने योग्य नहीं है- अशोक्य
- (48) जो मापा न जा सके- अपरिमेय
- (49) जिसकी आशा न की जा सकती हो- अप्रत्याशित
- (50) जिसे पराजित न किया जा सके- अपराजेय
- (51) जिसके बिना काम न चल सके- अपरिहार्य
- (52) जिसके पार न देखा जा सके- अपारदर्शक
- (53) जो पुरुष अभिनय करे- अभिनेता
- (54) न मरनेवाला- अमर
- (55) जो कम जानते हैं- अल्पज्ञ
- (56) कम बोलनेवाला- अल्पभाषी
- (57) बिना वेतन के- अवैतनिक
- (58) एक-एक अक्षर तक- अक्षरशः
- (59) वह स्त्री जिसका पति आनेवाला है- आगमिस्यत पतिका
- (60) जो संविधान के अनुकूल न हो- असंवैधानिक
- (61) इतिहास को जाननेवाला- इतिहासज्ञ
- (62) ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास- आस्तिक
- (63) आत्मा से सम्बन्ध रखनेवाला- आध्यात्मिक
- (64) देश में विदेश से आने की क्रिया- आयात
- (65) आदि से अंत तक- आद्यन्त, आद्योपांत
- (66) जन्म लेते ही गिर या मर गया हो- आदंडपात
- (67) इन्द्रियों को वश में करनेवाला- इन्द्रिय जीत, जितेन्द्रिय
- (68) वह कवि जो तत्क्षण कविता कर सके- आशुकवि
- (69) पुस्तक के गुण-दोषों की विवेचना करनेवाला- आलोचक
- (70) सिर से पैर तक- आपादमस्तक
- (71) सर्वप्रथम मत को प्रवर्तित करनेवाला- आदि प्रवर्तक
- (72) वह नायिका जिसका पति परदेश से लौटा हो- आगत पतिका
- (73) जो अपने आचरणों से ही पवित्र है- आचारपूत
- (74) जो कर्तव्य से भ्रष्ट हो गया हो- कर्तव्य भ्रष्ट
- (75) जिसे यह न सूझ पड़े कि अब क्या करना चाहिये- किंकर्तव्यविमूढ़
- (76) जो कहा गया है- कथित
- (77) जिसकी बुद्धि कृश की नोक के समान तेज हो- कृशाग्रबुद्धि
- (78) जो किये गये उपकारों को नहीं मानता- कृतघ्न
- (79) किसी की कृपा से परम संतुष्ट- कृतार्थ
- (80) जो स्त्री कविता रचती है- कवयित्री

- (81) कष्ट या कष्टों से भरा हुआ- कंटकाकिर्ण
- (82) जो कष्ट को सह सके- सहिष्णु
- (83) जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ है- कुलीन
- (84) जिसे बाहरी जगत का ज्ञान न हो- कूपमंडूक
- (85) जो किये गये उपकारों को मानता है- कृतज्ञ
- (86) वह नायिका जो अंधेरी रात में प्रेमी के पास संकेत स्थान में जाये-
कृष्णाभिसारिका
- (87) इंद्र को जीतनेवाला- इन्द्रजीत
- (88) जिसने ऋण चुका दिया हो- उऋण
- (89) जिस भूमि से कुछ उत्पन्न नहीं होता- ऊसर
- (90) इस लोक का- ऐहिक
- (91) जिसका करना या न करना अपनी इच्छा पर हो- ऐच्छिक
- (92) जो दूसरों से इर्ष्या करता है- ईर्ष्यालु
- (93) जिसका ऊपर या पहले उल्लेख हुआ हो- उल्लिखित
- (94) जो भूमि उपजाऊ होती है- उर्वरा
- (95) जिसका चित्त स्थिर हो- एकाग्र
- (96) जो छाती के बल चलता है- उरुप (सर्प)
- (97) जिसके विषय में उल्लेख करना आवश्यक हो- उल्लेखनीय
- (98) खाने योग्य पदार्थ-खाद्य
- (99) वह नायिका जिसका पति रात को किसी अन्य स्त्री के पास रहकर प्रातः उसके पास आवे- खंडिता
- (100) जो खड्ग सदा हाथ में लिए तैयार रहता है- खड्ग हस्त
- (101) जो चक्र धारण करता है- चक्रधर
- (102) जिसके हाथ में चक्र हो- चक्रपाणि
- (103) अधिक दिनों तक जीने वाला- चिरजीवी
- (104) जहाँ सेना रखी जाय- छावनी
- (105) जठर(पेट) की अग्नि- जठराग्नि
- (106) जीने की इच्छा- जिजीविषा
- (107) किसी भी बात को जानने की इच्छा- जिज्ञासा
- (108) सत्व रज तम- त्रिगुण
- (109) घृणा करने योग्य पदार्थ- घृणास्पद
- (110) जो चिरकाल तक ठहरे- चिरस्थायी
- (111) वात पित्त कफ- त्रिदोष
- (112) दिन पर दिन- दिनानुदिन

- (113) कठिनाई से समझ में आनेवाला- दुर्बोध
 (114) जो आसानी से भेदा न जा सके- दुर्भेद
 (115) दो बार जन्म लेनेवाला- द्विज
 (116) किसी के पास रखी हुई दूसरे की वस्तु- धरोहर, थाती, अमानत
 (117) सदा बना-ठना और प्रसन्न रहने वाला नायक- धीर ललित
 (118) बहुत प्रचण्ड चंचल और अपने गुणों का आप वर्णन करनेवाला नायक- धीरोद्धत
 (119) हवा में मिली हुई धूल या भाप के कारण होनेवाला अँधेरा- धुंध
 (120) दैहिक, दैविक, भौतिक ताप य कष्ट- त्रिताप
 (121) आँवला हर्ष बहेड़ा- त्रिफला
 (122) शीतल, मंद, सुगंध वायु- त्रिविध वायु
 (123) घोड़ों या चौपायों के बांधे जाने का स्थान- थान
 (124) पुलिस की बड़ी चौकी- थाना
 (125) जिसके दस आनन हो- दशानन
 (126) जिस समय बड़ी मुश्किल से भिक्षा मिलती है- दुर्भिक्ष
 (127) अनुचित बात के लिए आग्रह- दुराग्रह
 (128) जिसे कठिनाई से सहन किया जा सके- दुस्सह
 (129) धर्म में आस्था रखनेवाला- धर्मात्मा
 (130) अभी-अभी जन्म हुआ- नवजात
 (131) जिससे शुल्क (कर) न लिया हो- निःशुल्क
 (132) जिसके कोई संतान न हो- निःसंतान
 (133) जो अपने लाभ या स्वार्थ का ध्यान न रखता हो- निःस्वार्थ
 (134) जिसमें हानि या अनर्थ का भय न हो- निरापद
 (135) जिसके हृदय में ममता न हो- निर्मम
 (136) जिसके हृदय में दया न हो- निर्दय
 (137) निशि में आचरण करने वाला-निशाचर
 (138) जिसे कोई भ्रम या संदेह न हो- निर्भात
 (139) जिसे ईश्वर पर विश्वास न हो- नास्तिक
 (140) किसी के साथ सम्बन्ध न रखनेवाला- निसर्ग
 (141) जिसे कोई आकांक्षा न हो- निःस्पृह
 (142) जो कुछ भी पढ़ा-लिखा न हो- निरक्षर
 (143) बिना पलक गिराये- निर्निमेष
 (144) जिसके मन में भय न हो- निर्भीक
 (145) जिसके मन में पाप न हो- निष्पाप

- (146) जो तेजहीन हो- निस्तेज
- (147) वह स्त्री जिसे पति छोड़ दे- परित्यक्त
- (148) आँखों से परेह- पशेक्ष
- (149) पिता का पिता- पितामह
- (150) पंडितों में पंडित- पंडितश
- (151) जो दूसरों के अधीन हो- पशधीन
- (152) जिसके सामने रहने पर भी पाइ की चीज दिखाई दे- पाइदर्शक
- (153) जो उक्तिबाइ-बाइ कही जाय- पुनरुक्ति
- (154) पथ का प्रदर्शन करनेवाला- पथप्रदर्शक
- (155) जो पृथ्वी से सम्बन्धित हो- पार्थिव
- (156) कही हुई बात को बार-बार कहना- पिष्ट पेषण
- (157) दूसरों का भला चाहनेवाला- पशार्थी
- (158) आँखों के सामने- प्रत्यक्ष
- (159) जो पहरा देता है- प्रहरी
- (160) बच्चा जनने वाली स्त्री- प्रसूता
- (161) अन्यत्र रहनेवाला- प्रवासी
- (162) किसी आरोप के उत्तर में किया जाने वाला आरोप- प्रत्यारोप
- (163) प्राण देने वाली दवा- प्राणदा
- (164) पाप या अपराध करने पर दोष मुक्त होने के लिए किया जाने वाला धार्मिक या शुभ कार्य- प्रायश्चित
- (165) इतिहास का पूर्व काल- प्रागैतिहासिक
- (166) जो प्रिय बोलता हो- प्रियवादी
- (167) जो देखने में प्रिय हो- प्रियदर्शी
- (168) जो बहुत जानता है- बहुज्ञ
- (169) बहुत सी भाषाओं को जाननेवाला- बहुभाषाविद
- (170) जो भू को धारण करता है- भूधर
- (171) जो पूर्व में था या हुआ पर अभी नहीं है- भूतपूर्व
- (172) मो मत्स्य का आहार करता है- मत्स्याहारी
- (173) मन की दशा- मनोवृत्ति
- (174) कम खर्च करनेवाला- मितव्ययी
- (175) जिसने मृत्यु को जीत लिया है- मृत्युंजय
- (176) जिसकी भुजायें बड़ी हो- महाबाहु
- (177) कम बोलनेवाला- मितभाषी
- (178) शक्तिके अनुसार- यथाशक्ति

- (179) क्रम के अनुसार- यथाक्रम
- (180) वह जो एक जगह टिक कर नहीं रहता- यायावर
- (181) युग का निर्माण करनेवाला- युग निर्माता
- (182) यश वाला- यशस्वी
- (183) राष्ट्र का प्रमुख- राष्ट्रपति
- (184) जिसका उदर लम्बा हो- लम्बोदर
- (185) बच्चों को सुलाने के लिए गाया जाने वाला गीत- लोरी
- (186) स्वर्ग, मृत्यु और पाताल लोक- त्रिभुवन,
- (187) जो भूमि का हिसाब-किताब रखता हो- लेखपाल
- (188) इस लोक से सम्बन्धित- लौकिक
- (189) अधिक बोलनेवाला- वाचाल
- (190) जिस पर विश्वास किया गया है- विश्वस्त
- (191) जिसमें किसी प्रकार का विकार हो- विकृत
- (192) जिसका कोई अंग बेकार हो- विकलांग
- (193) सौतेली माता- विमाता
- (194) जो विज्ञान का ज्ञाता हो- वैज्ञानिक
- (195) जो व्याकरण का ज्ञाता हो- वैयाकरण
- (196) एक स्थान से दूसरे स्थान को हटाया गया- विस्थापित
- (197) जो व्याख्या करता है- व्याख्याता
- (198) इन्द्रियों को वश में रखनेवाला- वशी
- (199) सदैव रहनेवाला- शाश्वत
- (200) शिव के उपासक- शैव
- (201) सबको जीतनेवाला- सर्वजीत
- (202) सबकुछ जाननेवाला- सर्वज्ञ
- (203) सत्य के प्रति आग्रह- सत्याग्रह
- (204) एक ही समय में वर्तमान- समसामयिक
- (205) सब कालों में होनेवाला- सार्वकालीन
- (206) सबसे सम्बन्ध रहनेवाला- सार्वजनिक
- (207) जो अक्षर जानता है- साक्षर
- (208) जो स्वयं उत्पन्न हुआ हो- स्वयंभू
- (209) अपनी इच्छा से दूसरों की सेवा करनेवाला- स्वयं सेवक
- (210) स्वयं हित चाहनेवाला- स्वार्थी
- (211) पुरुषों को मोहित करने के लिए स्त्रियों की मान-हर चेष्टाएँ- हाव-भाव
- (212) भलाई की इच्छा रखनेवाला- हितैषी

- (213) क्षमा पाने योग्य- क्षम्य
 (214) भूख से व्याकुल- क्षुधातुर
 (215) तीनों कालों को देखने वाला- त्रिकालदर्शी
 (216) क्षण भर में नष्ट होने वाला- क्षणभंगूर

❖ बोध प्रश्न

- वाक्यांश के लिए एक शब्द बताइए.
- (1) जो कुछ नहीं जानता
 - (2) आदि से अंत तक
 - (3) जिसका चित्त स्थिर हो
 - (4) जहाँ सेना रखी जाय
 - (5) पिता का पिता

11.7 सारबिंदु

- समान अर्थ का बोध कराने वाले शब्द को 'पर्यायवाची' कहते हैं. पर्यायवाची शब्दों से हमें एक ही शब्द के लिए प्रयोग होने वाले अन्य शब्दों का पता चलता है.
- विलोम शब्द उसे कहते हैं जो परस्पर अर्थों में विरोध रखते हैं.
- विलोम शब्दों की रचना स्वतंत्र शब्दों द्वारा, उपसर्गों के परिवर्तन से, लिंग के परिवर्तन से होती है.
- अनेकार्थी शब्द उसे कहते हैं जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं.
- अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता, स्पष्टता एवं गंभीरता लाने के लिए ऐसे शब्द विशेष की आवश्यकता होती है जो थोड़े में बहुत-सा अर्थ दे जाता है.

11.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- टिप्पणी-
- (1) पर्यायवाची शब्द
 - (2) विलोम शब्द
 - (3) अनेकार्थी शब्द
 - (4) वाक्यांश के लिए एक शब्द

● वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

- (1) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द बताइए.
अमृत, आकाश, कमल, तिमिर, पर्वत, मदिश, शत्री, सूर्य, चतुर, घास
- (2) निम्नलिखित शब्दों के विरोधी शब्द बताइए.
जन्म, नूतन, उदय, विकारी, यश, प्रत्यक्ष, अपमान, आसक्त, पुरस्कार, गुण
- (3) निम्नलिखित शब्दों के अनेकार्थी शब्द बताइए.
अतिथि, कुल, कुशल, गुण, जलचर, निशला, माधव, सूर, हल्धर, हेम
- निम्नलिखित शब्दों के वाक्यांश के लिए एक शब्द बताइए.

- (1) जो खाने योग्य हो-
- (2) जिसे जीता न जा सके-
- (3) जो ज्ञान की सीमा के परे हो-
- (4) किसी आरोप के उत्तर में किया जानेवाला आरोप-
- (5) जो व्याख्या करता है-झ

● रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए.

- (1) अर्थ की दृष्टि से शब्दों के.....भेद हैं. (पाँच/छ)
- (2) अरण्य का पर्यायवाची.....है. (कानन/लोचन)
- (3) अलि.....का पर्यायवाची शब्द है. (भँवरा/अनुज)
- (4) ओजस्वी का विलोम.....है. ()
- (5) जो वर्णन के परे हो उसे.....कहते हैं. (अनुपम / अवर्णनीय)
- (6) जो चिरकाल तक ठहरे उसे.....कहते हैं. (चिरस्थायी/ चिरजीवी)
- (7) जो भूमि का हिसाब-किताब रखता हो उसे.....कहते हैं.
सर्वज्ञ/ लेखपाल
- (8) यथार्थ का विलोम.....है. (कल्पित/वास्तविक)

11.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

- (1) व्यावहारिक हिंदी व्याकरण तथा रचना- हरदेव बाहरी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.
- (2) हिन्दी व्याकरण इस-छंद-अलंकार सहित, डॉ.उमेशचन्द्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
- (3) मानक हिंदी व्याकरण, डॉ.लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, विद्या प्रकाशन, कानपुर

इकाई 12 : वाक्य : परिभाषा और प्रकार

रूपरेखा

- 12.1 उद्देश्य
- 12.2 प्रस्तावना
- 12.3 वाक्य की परिभाषा
- 12.4 वाक्य के अंग
- 12.5 वाक्य के प्रकार
 - 12.5.1 रचना के आधार पर
 - 12.5.2 आकृति के आधार पर
 - 12.5.3 अर्थ के आधार पर
 - 12.5.4 क्रिया के आधार पर
- 12.6 सारबिंदु
- 12.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली
- 12.8 उपयोगी पाठ्य सामग्री

12.1 उद्देश्य

आप द्वितीय वर्ष बी.ए. के पंचम प्रश्नपत्र के खंड- 3 की बारहवीं इकाई पढ़ने जा रहे हैं। इस इकाई में वाक्य: परिभाषा और प्रकार के बारे में बताया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- वाक्य से परिचित हो सकेंगे.
- वाक्य की परिभाषा से परिचित हो सकेंगे.
- वाक्य के अंग को जान सकेंगे.
- वाक्य के प्रकार को जान सकेंगे.
- व्याकरण में वाक्य के महत्व को जान सकेंगे.

12.2 प्रस्तावना

द्वितीय वर्ष बी.ए. के पंचम प्रश्नपत्र संबंधित खंड-३ की यह बारहवीं इकाई है। इस इकाई में आप वाक्य की परिभाषा और प्रकार का अध्ययन करेंगे। भाषा का प्रमुख कार्य विचारों एवं भावों को अभिव्यक्त करना है और यह अभिव्यक्ति वाक्य के माध्यम से होती है। वाक्य शब्द संस्कृत के 'वच्' धातु में 'ण्यत्' प्रत्यय के योग से बना है जिसका व्युत्पत्तिपङ्क अर्थ है- वक्तृता, वचन, वक्तव्य, उक्ति एवं कथानादि। प्रत्येक वाक्य अपने आप में पूरा अर्थ देता है, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो। अतः वाक्य को भाषा व्यवहार की लघुतम इकाई कहा जाता है। वैचारिक अभिव्यक्ति की स्पष्टता, संक्षिप्तता, विचारों को जागृत करने की क्षमता, माधुर्य, सौन्दर्य आदि वाक्य रचना के आवश्यक गुण हैं। भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है।

12.3 वाक्य की परिभाषा

पंडित कामताप्रसाद गुरु ने अपने ग्रन्थ 'संक्षिप्त हिंदी व्याकरण' में वाक्य की परिभाषा देते हुए लिखा है कि- "शब्दों के समूह को, जिससे पूरा विचार प्रकट होता है, वाक्य कहते हैं।"

डॉ.शमशोपाल सिंह ने अपनी पुस्तक 'आधुनिक हिंदी व्याकरण' में वाक्य की परिभाषा देते हुए लिखा है कि- "मानव समाज के विचारों और भावों को पूर्ण रूप से प्रकट करने वाले शब्द समूह को वाक्य कहते हैं।"

बी.डी.शर्मा ने अपनी पुस्तक "भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा" में वाक्य की परिभाषा देते हुए लिखा है कि- "वाक्य भाषा की लघुतम इकाई एवं सार्थक तथा सुव्यवस्थित पद समूह का नाम है।"

डॉ.उमेशचन्द्र शुक्ल ने अपनी पुस्तक "हिंदी व्याकरण रस-छंद- अलंकार सहित" में वाक्य की परिभाषा देते हुए लिखा है- "भाषा की न्यूनतम पूर्ण सार्थक इकाई वाक्य ही है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि- मनुष्य के भावों और विचारों को अभिव्यक्त करनेवाले शब्दसमूह को वाक्य कहा जाता है। दूसरे रूप में कह सकते हैं कि शब्दों का सार्थक योग वाक्य कहलाता है।

12.4 वाक्य के अंग

वाक्य के मुख्यतः दो अंग होते हैं- (1) उद्देश्य

(1) विधेय

(1) उद्देश्य- जिस वस्तु के विषय में कहा जाता है, उसे सूचित करनेवाले शब्दों को उद्देश्य कहा जाता है।

जैसे- सुमीत पढ़ता है.

आत्मा अमर है.

धोड़ा दौड़ रहा है.

इन वाक्यों में सुमीत, आत्मा और धोड़ा उद्देश्य है, क्योंकि इनके विषय में कुछ कहा गया है.

(2) विधेय- उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, उसे सूचित करनेवाले शब्दों को विधेय कहा जाता है.

जैसे- सुमीत पढ़ता है.

आत्मा अमर है.

धोड़ा दौड़ रहा है.

उपर्युक्त वाक्यों में - पढ़ता है, अमर है, दौड़ रहा है विधेय हैं, क्योंकि इनके द्वारा उद्देश्य के विषय में कुछ कहा गया है, सूचित किया गया है.

12.5 वाक्य के प्रकार

● रचना की दृष्टि से-

रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं-

(1) सरल वाक्य

(2) मिश्र वाक्य

(3) संयुक्तवाक्य

(1) सरल वाक्य- जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है उसे साधारण सरल वाक्य कहा जाता है.

जैसे- सुनिल सर पढ़ा रहे हैं.

विनय पुस्तक पढ़ता है.

बिजली चमकती है.

उपरोक्त पहले वाक्य में सुनिल सर उद्देश्य और पढ़ा रहे हैं- विधेय है. दूसरे वाक्य में विनय उद्देश्य और पुस्तक पढ़ता है- विधेय है. तीसरे वाक्य में बिजली उद्देश्य और चमकती है- विधेय है.

(2) मिश्र वाक्य- जिस वाक्य में साधारण वाक्य के अतिरिक्त एक (अंग) आश्रित वाक्य भी हो तो उसे मिश्र वाक्य कहते हैं.

जैसे- वह कौन सा मनुष्य है, जिसने महाप्रतापी राजा भोज का नाम न सुना हो.

प्रमुख साधारण वाक्य- वह कौन सा मनुष्य है

आश्रित (अंग) वाक्य- जिसने महाप्रतापी भोज राजा का नाम न सुना हो.

(3) संयुक्तवाक्य- जिस वाक्य में दो या दो अधिक वाक्य अथवा मिश्र वाक्य अव्ययों द्वारा जुड़े रहते हैं, उसे संयुक्तवाक्य कहते हैं।

जैसे- उसने परिश्रम किया और वह पास हो गया।

पहला वाक्य- उसने परिश्रम किया।

दूसरा वाक्य- वह पास हो गया।

- आकृति के आधार पर-

आकृति के आधार पर वाक्य के दो भेद हैं- (1) योगात्मक वाक्य

(2) अयोगात्मक वाक्य

(1) योगात्मक वाक्य- शब्द के साथ विभक्ति या प्रत्यय के योग से बने वाक्यों को योगात्मक वाक्य कहते हैं।

जैसे- रामः गृह गच्छति।

राम ने शवण को बाण से मारा।

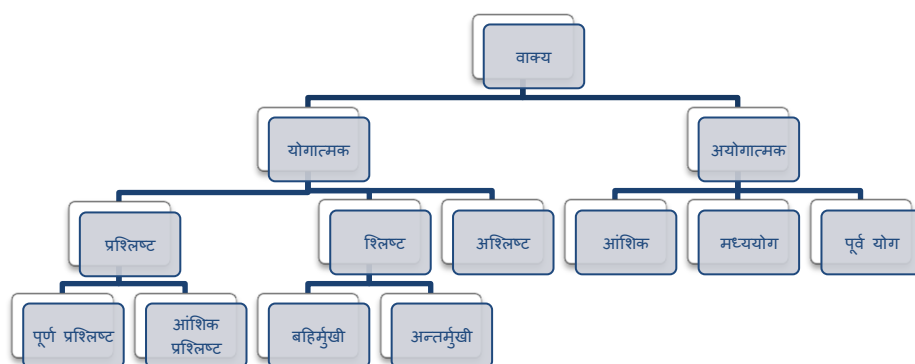
(2) अयोगात्मक वाक्य- अयोगात्मक वाक्य में विभक्ति और प्रत्यय नहीं होता। उसके स्थान पर शब्दों का वाक्य में स्थान निश्चित रहता है। स्थान परिवर्तन से वाक्यार्थ में परिवर्तन हो जाता है।

चीनी भाषा में पदक्रम पूरी तरह निश्चित है।

जैसे- ता लेन- बड़ा आदमी

लेन ता - आदमी बड़ा है।

योगात्मक और अयोगात्मक वाक्य के आधार पर आकृतिमूलक वर्गीकरण किया गया है-



- अर्थ के आधार पर-

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं-

(1) विधिवाचक वाक्य

(2) निषेधवाचक वाक्य

- (3) प्रश्नवाचक वाक्य
- (4) आज्ञार्थ वाक्य
- (5) सन्देशवाचक वाक्य
- (6) इच्छावाचक वाक्य
- (7) संकेतवाचक वाक्य
- (8) विस्मयादिबोधक वाक्य
- (1) विधिवाचक वाक्य- विधिवाचक वाक्य उसे कहते हैं जिनमें क्रिया द्वारा कार्य होने की सूचना मिले।

जैसे- मैंने स्नान किया।

- (2) निषेधवाचक वाक्य- निषेधवाचक वाक्य में कार्य का निषेध पाया जाता है।

जैसे- मैं पद नहीं रहा हूँ।

मैं कल बनाइस नहीं जाऊँगा।

- (3) प्रश्न वाक्य- प्रश्नवाचक वाक्य में किसी से कोई बात पूछी जाती है या प्रश्न पूछा जाता है।

जैसे- कहाँ जाते हैं?

कल कौन आया था?

- (4) आज्ञार्थ वाक्य- आज्ञार्थ में किसी को आज्ञा, पार्थना, उपदेश या आदेश दिया जाता है।

जैसे- आ जाओ।

तुम्हें यह काम कर लेना होगा।

- (5) सन्देशवाचक वाक्य- सन्देशवाचक वाक्य उसे कहते हैं जिनमें सन्देश, शंका, सम्भावना आदि की सूचना मिलती है।

जैसे- शायद वह कल यहाँ आए।

राम पढ़ता होगा।

- (6) इच्छावाचक वाक्य- इच्छावाचक वाक्य से इच्छा, शुभकामना या आशीर्वाद प्रकट होता है।

जैसे- भगवान तुम्हारा भला करे।

- (7) संकेतवाचक वाक्य- संकेतवाचक वाक्य में शर्त या संकेत रहता है। यह सदा मिश्र वाक्य होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो जहाँ एक कथन दूसरे कथन पर निर्भर हो तो उसे संकेतवाची वाक्य कहते हैं।

जैसे- अगर वह आएगा, तो मैं जाऊँगा।

- (8) विस्मयादिबोधक वाक्य- विस्मयादिबोधक वाक्य के द्वारा हर्ष, शोक, आश्चर्य आदि भाव प्रकट होते हैं।

जैसे- अरे! ग़ज़ब हो गया.

- क्रिया के आधार पर

क्रिया के आधार पर वाक्य के तीन प्रकार हैं- (1) कर्तृवाच्य

(2) कर्मवाच्य

(3) भाव वाच्य

(1) कर्तृवाच्य-क्रिया के उस रूपांतर को कर्तृवाच्य कहते हैं जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो.

जैसे- मैंने पुस्तक पढ़ी.

(2) कर्म वाच्य- क्रिया के उस रूपांतर को कर्मवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध हो.

जैसे- पुस्तक पढ़ी जाती है.

(3) भाव वाच्य- क्रिया के उस रूपांतर को भाव वाच्य कहते हैं जिससे वाक्य में क्रिया अथवा भाव की प्रधानता का बोध हो.

जैसे- पुस्तक पढ़ी नहीं जाती.

12.6 सारबिन्दु

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि भाषाविज्ञान में वाक्य का सर्वोपरि महत्त्व है.

- आधुनिक भाषाविज्ञान में वाक्य को ही भाषा की पूर्ण इकाई माना जाता है.
- मनुष्य के भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करनेवाले शब्द समूह को वाक्य कहा जाता है.
- वाक्य के मुख्यतः दो अंग हैं- उद्देश्य और विधेय
- वाक्य के रचना के आधार पर तीन प्रकार हैं- (1) सरल (2) संयुक्त (3) मिश्र
- आकृति के आधार पर दो भेद हैं- (1) योगात्मक (2) अयोगात्मक
- अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ प्रकार हैं- (1) विधिवाचक (2) निषेधवाचक (3) प्रश्नवाचक (4) आज्ञार्थवाचक (5) संदेहवाचक (6) इच्छावाचक (7) संकेतवाचक (8) विस्मयादिबोधक.
- भाषा में व्याकरण का सबसे बड़ा अंग वाक्य है.

12.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- (1) वाक्य की परिभाषा देते हुए रचना की दृष्टि से वाक्य के प्रकार को समझाइए.
- (2) वाक्य की परिभाषा देते हुए अर्थ के आधार पर वाक्य के प्रकार को समझाइए.
- टिपण्णी लिखिए.

- (1) वाक्य की परिभाषा
- (2) वाक्य के अंग

- (3) आकृति के आधार पर वाक्य के प्रकार
- (4) क्रिया के आधार पर वाक्य के प्रकार

• सही/ गलत बताइए.

- (1) वाक्य के तीन अंग हैं.
- (2) वाक्य भाषा व व्याकरण का सबसे बड़ा अंग है.
- (3) रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं.
- (4) अर्थ के आधार पर वाक्य के नौ प्रकार हैं.
- (5) मनुष्य के विचारों एवं भावों की अभिव्यक्तिवाक्य के माध्यम से होती है.

• रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए.

- (1) जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय हो उसे..... वाक्य कहते हैं.
(मिश्र / सरल)
- (2) शब्द के साथ विभक्तिया प्रत्यय के योग से बने वाक्यों को..... वाक्य कहते हैं.
(योगात्मक / अयोगात्मक)
- (3) क्रिया के आधार पर वाक्य के..... प्रकार हैं. (दो / तीन)
- (4) वाक्य में क्रिया अथवा भाव की प्रधानता होती है.
(भाववाच्य / कर्मवाच्य)
- (5) प्रकार के वाक्य में आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश या आदेश दिया जाता है.
इच्छावाचक / आज्ञार्थ वाचक)

• सही जोड़े मिलाइए.

- | अ | ब |
|---------------------------------|-----------------------|
| (1) वाक्य के अंग | (क) विस्मयादिबोधक |
| (2) वाह! कितना सुन्दर पक्षी है. | (ख) विधानवाचक वाक्य |
| (3) ईश्वर तुम्हें सफलता दे. | (ग) निषेधवाचक वाक्य |
| (4) वर्षा हो रही है. | (घ) दो |
| (5) तुम मत लिखो. | (च) इच्छावाचक वाक्य |

12.8 उपयोगी पाठ्य सामग्री-

- (1) व्यावहारिक हिंदी व्याकरण तथा रचना- हरदेव बाहरी, लोकभारती प्रकाशन- इलाहाबाद.
- (2) संक्षिप्त हिंदी व्याकरण- कामताप्रसाद गुरु, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी.
- (3) आधुनिक हिंदी व्याकरण- डॉ. रामगोपाल सिंह, नवप्रभात प्रिंटिंग प्रेस, अहमदाबाद.
- (4) हिंदी व्याकरण-इस- छंद- अलंकार सहित- डॉ.उमेशचन्द्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली.
- (5) हिंदी व्याकरण- कामताप्रसाद गुरु, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.
- (6) भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा- बी.डी. शर्मा, ओमेगो पब्लिकेशन्स, दिल्ली.

इकाई 13 : संप्रेषण— अवधारणा, प्रकार, माध्यम, तकनीक, चरण और महत्व

रूपरेखा

- 13.1 उद्देश्य
- 13.2 प्रस्तावना
- 13.3 संप्रेषण का अर्थ एवं परिभाषा
- 13.4 संप्रेषण की अवधारणा
- 13.5 संप्रेषण के प्रकार
- 13.6 संप्रेषण के माध्यम
- 13.7 संप्रेषण की तकनीक
- 13.8 संप्रेषण प्रक्रिया के तत्व या चरण
- 13.9 संप्रेषण का महत्व या उपयोगिता
- 13.10 सारबिंदु
- 13.11 परिक्षोपयोगी प्रश्नावली
- 13.12 उपयोगी पाठ्य सामग्री

13.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रों! आप बी.ए. द्वितीय वर्ष में हिंदी प्रश्नपत्र-०५ के खंड-४ की इकाई-१ संप्रेषण का अध्ययन करने जा रहे हैं। इस इकाई में संप्रेषण के बारे में बताया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- संप्रेषण का अर्थ एवं महत्व समझ सकेंगे।
- संप्रेषण की अवधारणा और प्रकार को जान सकेंगे।
- संप्रेषण के माध्यमों की कार्यप्रणाली से अवगत हो सकेंगे।
- संप्रेषण के तकनीकी जानकारी से आने वाले समय में शेजगारी व व्यावसायिक अवसर खड़े कर पाएंगे।

- तकनीकी क्षेत्र में नवीन आविष्कारों की प्रेरणा भी प्राप्त कर सकेंगे.

13.2 प्रस्तावना

‘संप्रेषण’ का मानव जीवन में अत्यधिक महत्व है. बातचीत के ज़रिए हम अपना अभिप्राय और विचार दूसरों तक पहुँचाते हैं. गोष्ठी, सभाओं और मेले, तमाशाओं में एक व्यक्ति अनेक लोगों तक अपनी बात पहुँचा सकते हैं और प्रभावित कर सकते हैं. संप्रेषण का आशय मात्र सूचनाओं, विचारों एवं मानवीय क्रियाओं का व्यक्तिसे व्यक्ति की तरफ संचार से है यही संचार, संचार संबंध है. यह एक प्रक्रिया है जिसका जन्म मनुष्य की सीखने और सीखे हुए को व्यक्त करने की कला के रूप में हुई. संप्रेषण मात्र संचार ही नहीं है, यह सामाजिक को निर्धारित करनेवाला एक महत्वपूर्ण तत्व है. मानव इतिहास के एक लंबे काल तक कोई संदेश दूसरों तक पहुँचाने हेतु सीमित दायरे और तदनुकूल सीमित प्रभाववाला यही वाचिक माध्यम ही रहा है. लिखित संदेश या मंतव्य यातायात के साधनों की क्षमता के अनुसार दूर तक और संदेश की प्रतिलिपियाँ कराकर एक ही समय में एक साथ कई स्थानों और कहीं लक्ष्य तक पहुँचाया जाता रहा है. संक्षेप में संप्रेषण अभिव्यक्तिका संपूर्ण विज्ञान है, आदर्श कला है, उत्तम व्यवसाय है और मानव चेतना को उद्दीप्त करने का सशक्त साधन है. आज यह अनेकों साधनों से संपर्क सूत्र होता है.

१३.३ संप्रेषण का अर्थ एवं परिभाषा

‘संप्रेषण’ के लिए अंग्रेजी भाषा में ‘कम्युनिकेशन’ शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसकी उत्पत्ति लैटिन शब्द कम्युनिज शब्द से हुई है, जिसका अर्थ किसी विचार या तथ्य, सूचनाओं को एक व्यक्तिसे दूसरे व्यक्तितक इस प्रकार पहुँचाना की वह जान एवं समझ सके. संप्रेषण एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक दूसरे व्यक्ति को, एक समूह हो दूसरे समूह को भावनाओं, सूचनाओं का आदान-प्रदान करना है.

परिभाषा- ‘संप्रेषण’ की परिभाषा देते वक्त हम भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों विद्वानों की दी गई परिभाषा को मान्य रखेंगे. क्योंकि दोनों का परिप्रेक्ष्य और उद्देश्य भिन्न होने से उसको समझने समझाने के मानदंड भी अलग हो सकते हैं. यथा—

- (1) फ्रेड जी. मेयर- “मानवीय विचारों और सम्मतियों का शब्दों, पत्रों एवं संदेशों के माध्यम से आदान-प्रदान करना संप्रेषण कहलाता है.”
- (2) आक्सफोर्ड डिक्शनरी- “विचारों, जानकारीयों आदि का विनिमय दूसरों तक पहुँचाना या बाटना चाहे वे मौखिक, लिखित या संकेत में हो.”

- (3) एडविन एमरी, फिलिप एच, आल्ट एवं डब्लू.के एगी- “सूचना, विचारों और अभिव्यक्तियों को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक सम्प्रेषित करने की कला का नाम संचार है.”

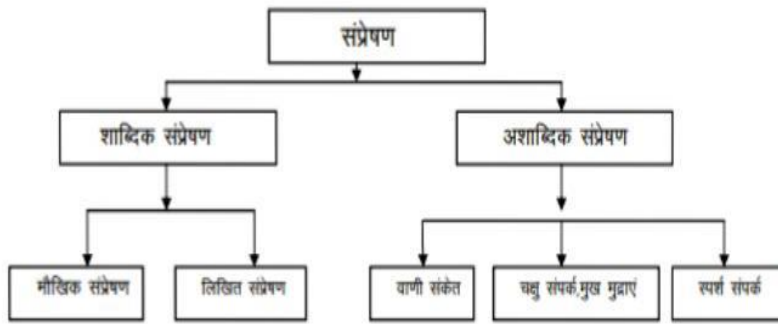
इन परिभाषाओं से कहा जा सकता है कि अत्यधिक लोगों तक बात पहुंचा नहीं संप्रेक्षण है। यह एक तरह से फैलने या व्याप्त होने की क्रिया है। संप्रेक्षण में संदेश भेजने का कार्य सम्मिलित है। किसी तथ्य, सूचना, ज्ञान विचार और मनोरंजन को व्यापक ढंग से जनसमूह तक पहुंचाने की प्रक्रिया ही संप्रेक्षण कहलाती है।

13.4 संप्रेक्षण की अवधारणा

‘संप्रेक्षण’ प्राकृतिक आवश्यकता के रूप में मानव के अस्तित्व के साथ ही जन्मा है। इसके बिना आपसी भावाभिव्यक्ति, विचार, व्यवसाय, परंपरा, कला आदि सब गूंगे हो जाते हैं। संप्रेक्षण को संचार भी कहा जाता है। संचार ही मूल शब्द है जो संस्कृत के ‘चर’ धातु से बना है, जिसका अर्थ है-चलना। संचार को अंग्रेजी में ‘कम्युनिकेशन’ कहा जाता है। संप्रेक्षण की उत्पत्ति लैटिन के शब्द कम्युनिस से मानी जाती है जिसका अर्थ है- सामान्य, साधारण या आम। तात्पर्य यह है कि जब भी हम किसी के साथ संप्रेक्षण करते हैं, तो हमारा प्रयास वह होता है कि संप्रेषित किये जा रहे व्यक्ति के साथ सूचना, विचार या भावों की साझेदारी से हमारा कुछ सीमाओं तक तादात्म्य स्थापित हो जाए। जब हम एक से ज्यादा लोगों से अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, तो उससे ही कम्युनिकेशन कहते हैं। संप्रेक्षण कहते हैं। जब वह एक से ज्यादा अनेकों जनों को एक साथ संप्रेषित करें तो इसे जनसंचार कहते हैं।

13.5 ‘संप्रेक्षण’ के प्रकार-

1. मौखिक संप्रेक्षण
2. लिखित संप्रेक्षण
3. औपचारिक संप्रेक्षण
4. अनौपचारिक संप्रेक्षण
5. अधोमुखी संप्रेक्षण
6. ऊर्ध्वमुखी संप्रेक्षण
7. क्षैतिज संप्रेक्षण



(1) मौखिक संप्रेषण

मौखिक संप्रेषण का अर्थ है आमने सामने मौखिक बातचीत करके सूचनाओं का आदान प्रदान करना. यह संप्रेषण प्रत्यक्ष व्यक्तिगत वार्तालाप के द्वारा भी किया जा सकता है और अप्रत्यक्ष व्यक्तिगत वार्तालाप के द्वारा भी. दूसरी पद्धति में सन्देश प्रेषक टेलीफोन तथा मोबाइल जैसे उपकरणों का प्रयोग करता है.

(2) लिखित संप्रेषण

लिखित संप्रेषण से आशय ऐसे संप्रेषण से है जो कि लिखित में हो. ज्यादातर दशाओं में यह औपचारिक संप्रेषण होता है. संगठन के कुशल संचालन के लिए यह जरूरी है कि उसमें रिपोर्ट, नीतियाँ, कार्यविधियाँ, योजनाएं, समझौते, स्मरण पत्र आदि लिख कर तैयार किये जाएँ जिससे इनका रिकॉर्ड रखा जा सके तथा सम्बद्ध व्यक्ति उन पर अपने-अपने दायित्व के अनुसार उचित कार्यवाही कर सकें.

(3) औपचारिक संप्रेषण

जब सन्देश के प्रेषक और प्रापक के बीच औपचारिक सम्बन्ध होते हैं तो संप्रेषण औपचारिक रूप में होता है. इस प्रकार के संप्रेषण में सन्देश अपने अधीनस्थ कर्मचारी को दिया जाता है. और यदि कोई कर्मचारी कोई सुझाव या शिकायत अधिकारी को देना चाहता है तो उसको अपने अधिकारी को इसे प्रेषित करना होता है.

(4) अनौपचारिक संप्रेषण

जब सन्देश के प्रेषक एवं प्रापक के बीच अनौपचारिक संबंध होते हैं तो संप्रेषण भी अनौपचारिक रूप में होता है. इसमें सूचनाओं का प्रवाह औपचारिक व्यवस्था के अनुसार नहीं होता है बल्कि भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के बीच अनौपचारिक तथा मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के आधार पर होता है. ऐसा संप्रेषण सामान्यतः प्रत्यक्ष एवं मौखिक होता है. ऐसा संप्रेषण प्रायः समान स्तर के पदाधिकारियों के बीच पाया जाता है. इस संप्रेषण को अंगूरीलता संप्रेषण भी कहते हैं क्योंकि इसमें सूचना कानों कान फैलती है. एक ने दूसरे से कहा, दूसरे ने तीसरे से, और फिर तीनों ने अगले तीन से. इस सूचना का कोई

निश्चित व सीधा सादा शस्ता नहीं होता बल्कि यह उसी तरह टेढ़ामेढ़ा होता है जैसे अंगूर की बेल.

(5) अधोमुखी संप्रेषण

अधोमुखी संप्रेषण से तात्पर्य ऐसे संप्रेषण से है जो उच्च अधिकारियों से चलकर नीचे अधिकारियों की ओर जाता है जैसे विपणन प्रबन्धक के द्वारा विक्रय प्रबन्धक को आदेश देना. यह संप्रेषण लिखित भी हो सकता है तथा मौखिक भी. इस संप्रेषण की विषय वस्तु सूचनाएं, निर्देश, आदेश, संस्था के उद्देश्य, नीतियां तथा कार्यक्रम आदि हैं.

(6) उर्ध्वमुखी संप्रेषण

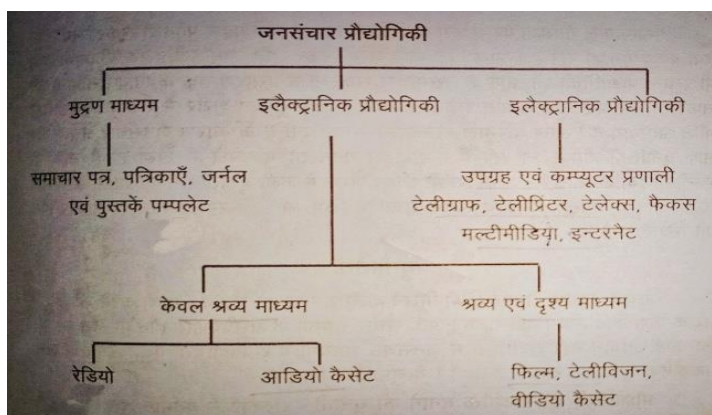
जब संप्रेषण निम्न से उच्च स्तर की ओर होता है तो उसे उर्ध्वमुखी संप्रेषण कहते हैं. इस प्रकार के संप्रेषण में कर्मचारियों द्वारा विभिन्न प्रकार की जानकारी, सुझाव, शिकायतें, विचार एवं प्रतिक्रियाएं उच्च अधिकारियों तक पहुँचाई जाती हैं. उदाहरण के लिए यदि कोई कर्मचारी अपने अधिकारी से छुट्टी के लिए कहता है तो इसे उर्ध्वमुखी संप्रेषण कहते हैं. उर्ध्वमुखी संप्रेषण औपचारिक भी हो सकता है और अनौपचारिक भी.

(7) क्षैतिज संप्रेषण

क्षैतिज अथवा समतल संप्रेषण वह है जो किसी संस्था के समान स्तर के अधिकारियों के बीच होता है. यदि किसी व्यावसायिक उपक्रम के विभिन्न विभागाध्यक्ष आपस में कोई विचार-विनिमय करते हैं तो यह समतल संप्रेषण होता है. समतल संप्रेषण लिखित भी हो सकता है और मौखिक भी.

13.6 संप्रेषण के माध्यम

संचार प्रक्रिया में सार्थक संदेश प्रेषण हेतु किसी न किसी माध्यम की जो पारस्परिक समझदारी के उद्देश्य की पूर्ति करता हो, आवश्यकता होती है. आज संचार हेतु प्रचलित जन माध्यमों को हम इस तालिका द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं—



1. मुद्रण माध्यम:-

संचार के प्रति जन-माध्यमों में मुद्रण-माध्यम अन्य आधुनिक जन माध्यमों की अपेक्षा सबसे प्राचीन है। मुद्रण के अन्तर्गत समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, जर्नल, पुस्तकें इत्यादि माध्यम आते हैं ये लिखित माध्यम आज भी अन्य आधुनिक जन-संचार माध्यमों की अपेक्षा अधिक विश्वनीयता रखते हैं। इनके प्रामाणिकता में जनता इसलिए भी भरोसा रखती है, क्योंकि रेडियो तथा टेलीविजन जैसे संचार माध्यमों पर सरकारी नियंत्रण है मुद्रण-माध्यम उनकी अपेक्षा अधिक स्वतन्त्र हैं, क्योंकि वे स्वशासित हैं विश्व के प्रायः सभी विकसित और विकासशील देशों में लगभग प्रत्येक पढ़ा लिखा दैनिक समाचार पत्र पढ़ता है। आज बिना समाचार पत्र के हम किसी आधुनिक समाज या शहर की कल्पना कर ही नहीं सकते। समाचार पत्र किसी समुदाय की रचना तो नहीं करते, किन्तु वे उस समुदाय की सीमाओं का निर्धारण एवं उसकी एकता को अवश्य बनाये रखते हैं वे सामान्य रुचि तथा आचरण को बढ़ावा देते हैं। विशेषकर ऐसे समाज में जहाँ एक ही समाचार पत्र पढ़ा जाता है। इसी तरह एक स्थानीय अखबार किसी कस्बे अथवा जनपद की पहचान इसकी अस्मिता की भावना सुरक्षित रखने में सहायता करता है और व्यापक दृष्टि से एक समाचार-पत्र हजारों किलोमीटर दूर घटने वाली हल्की-फुल्की अथवा मानवीय करुणा शोक इत्यादि की घटनाओं को समाचार के माध्यम से आधुनिक विश्व की एकता के सूत्र में भी बाँधते हैं। आज हमारे देश में हजारों समाचार-पत्र, पाक्षिक, साप्ताहिक तथा मासिक पत्र-पत्रिकाएँ निकल रही हैं, सभी का उल्लेख करना यहाँ सम्भव नहीं है। संक्षेप में कहें तो प्रेस ने राष्ट्रीय चेतना के विकास में, अंग्रेजी के अनीतियों के विरोध में, सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में साहित्यिक, सांस्कृतिक जागरण में जनता में राजनीतिक चेतना जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस जनसाचर माध्यम ने देश के कोने-कोने में स्वतन्त्रता, समता और बंधुत्व का मंत्र फूँका है।

2. श्रव्य संप्रेषण माध्यम:-

प्रेस के उपरान्त दूसरा महत्वपूर्ण जनसंचार माध्यम है 'रेडियो' जो श्रव्य माध्यम की श्रेणी में आता है। यह माध्यम श्रवणोन्द्रियों के जरिये सारी दुनिया को स्रोता के निकट ले जाता है। इस माध्यम से दुर्गमस्थानों में रहने वाले लाखों करोड़ों बाहरी दुनिया से जुड़ जाते हैं। जहाँ मुद्रण माध्यम की पहुँच नहीं है, या लोग इस लोकप्रिय माध्यम को मनोरंजन एवं अन्य ज्ञान व दर्शक कार्यक्रमों के कारण पसन्द करते हैं। इस माध्यम में रेडियो प्रमुख हैं।

रेडियो के आविष्कार ने संचार की प्रक्रिया को दूरस्थ स्थानों तक सम्भव बनाकर मनुष्य समाज के भीतर अपना स्थान एक विश्वसनीय मित्र के रूप में बना लिया। वास्तव में रेडियो ऐसा संचार माध्यम है जिसके माध्यम से व्यापक जन समुदाय तक एक संदेश पहुँचाया जा सकता है रेडियो विद्युत ऊर्जा के द्वारा ध्वनि तरंगों को काफी

दूर तक भेजता है। अब तो सामान्य बैटरी से काम हो जाता है। किसी रेडियो स्टेशन से जिस समय संदेश प्रसारित होता है, ठीक उसी समय (कुछ सैकड़ों) में वह हजारों मील दूर बैठे लोग उसे अपने रेडियो सेट पर सुन सकते हैं। रेडियो संचार का सस्ता, सुविधाजनक, एवं लोकप्रिय साधन बन चुका है। रेडियो निरक्षरों के लिए भी एक वरदान है क्योंकि तीसरी दुनिया के देशों में अब भी ९० करोड़ लोग निरक्षर हैं। रेडियो द्वारा निरक्षर लोग केवल सुन कर अधिक से अधिक सूचना, ज्ञान और मनोरंजन हासिल कर लेते हैं। रेडियो पर प्रायः प्रसारण की निम्न लिखित विधाएँ संयोजित की जाती हैं - समाचार, फीचर, वार्ता, साक्षात्कार, डाक्यूमेन्टरी, विचारगोष्ठी, आँखों देखा हाल, नाटक, कहानी, काव्यपाठ, कविसम्मेलन, विशेष प्रसारण, न्यूज, रील, रेडियो रिपोर्ट, बच्चों का कार्यक्रम, महिला कार्यक्रम, युवा कार्यक्रम, कृषकों के लिए कार्यक्रम, संगीत के विविध कार्यक्रम, खेल जगत, पर्व और जयन्तियाँ, बुजुर्गों के लिए परिवार कल्याण, स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रम आदि।

3. दृश्य श्रव्य संप्रेषण माध्यम:-

दृश्य-श्रव्य माध्यम में फिल्म तथा टेलीविजन की गणना होती है। आज फिल्म और टेलीविजन की लोकप्रियता सबसे अधिक है। आज फिल्म माध्यम टेलीविजन के साथ सांठ-गाँठ कर दुनिया का चेहरा बदलने में अपनी भूमिका निभा रहा है। वैसे देखा जाये तो टेलीविजन ने हमारी पढ़ने की आदत बिगाड़ दी है और कम्प्यूटर ने हमारी गणित की क्षमता को बाँध दिया है। इसके बावजूद इन माध्यमों की लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आ रही है। अब तो कम्प्यूटर ने भी फिल्म और टेलीविजन के साथ अपना प्रगाढ़ सम्बन्ध बना लिया है।

हमारे दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों को दो वर्गों में रखा जा सकता है। (1) ऐसे कार्यक्रम जिनमें उच्चारित शब्द का महत्व सर्वोपरि है, और (2) ऐसे कार्यक्रम जिनमें संगीत और मनोरंजन ही एक मात्र लक्ष्य है। प्रथम वर्ग के कार्यक्रम में हैं - समाचार वार्ता, साक्षात्कार, रिपोर्ट, नाटक, परिचर्चा, रूपक या फीचर कमेंटरी, खेल आदि का आँखों देखा प्रसारण, वृत्तचित्र, कवि सम्मेलन और मुशायरा, यू. जी. सी. एन. सी. ई. आर. टी. के शिक्षण कार्यक्रम इत्यादि। द्वितीय वर्ग के कार्यक्रम में आते हैं - फीचर, फिल्म, फिल्मी गीत एवं संगीत, लोकगीत, संगीत, शास्त्रीय संगीत, गायन, वाद्य संगीत आदि।

4. नव इलेक्ट्रॉनिक संप्रेषण माध्यम:-

नव इलेक्ट्रॉनिक जन माध्यम में उपग्रह (सैटेलाइट) है। उपग्रहों के कारण आजकल संचार की दुनिया में पर्याप्त विकास हुआ है। इसके लिए विषुवत रेखा के ऊपर एक निश्चित ऊँचाई पर उपग्रह स्थापित किया जाता है। इन उपग्रहों को भूस्थिर उपग्रह की संज्ञा दी जाती है। ये भूस्थिर उपग्रह प्रसारण की सुविधा प्रदान करते हैं।

जिससे अंतर्राष्ट्रीय संचार प्रणाली विकसित होती है। कोई उपग्रह पृथ्वी की किसी कक्षा में एक स्थान पर स्थिर हो जाता है, तो वह पृथ्वी के साथ-साथ घूमने लगता है। इस प्रकार उपग्रहों का परिक्रमा करने का समय एवं पृथ्वी के स्वयं अपनी कक्षा में घूमने का समय समान होता है। अतः इनको सुविधापूर्वक संचार उपग्रहों की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है।

इस प्रणाली में सर्वप्रथम पृथ्वी से कुछ सिगनल उपग्रह की ओर भेजे जाते हैं। उपग्रह उन्हें ग्रहण करता है और उनका आवर्धन कर लेता है इसके बाद उपग्रह द्वारा वे आवर्धित सिगनल विभिन्न दिशाओं में प्रेषित कर दिये जाते हैं। इन सिगनलों को पृथ्वी पर स्थित अनेक केन्द्र ग्रहण कर लेते हैं और प्रसारित करते हैं।

उपग्रहों द्वारा प्रेषित समाचार दिन रात पृथ्वी की परिक्रमा कर रहे हैं, जिनको दुनियाभर के रेडियो एवं टेलीविजन केन्द्रों द्वारा प्राप्त कर प्रसारित करते हैं। इन उपग्रहों से सुदूर अन्तरिक्ष की अज्ञात बातों की जानकारी भी होती है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर नये तथ्यों का उद्घाटन हो रहा है। उपग्रह ने सूचना क्रान्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज हमारे प्रायः सभी जनसंचार माध्यम उपग्रह से जुड़े हैं, और प्रभावशाली ढंग से संचार प्रक्रिया में लगे हुए हैं।

5. अन्य कतिपय संप्रेषण माध्यम:-

मुद्रण, श्रव्य, दृश्य तथा नय इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के अतिरिक्त कुछ अन्य जनसंचार के माध्यम हैं। अब हम यहाँ ऐसे अन्य कतिपय जनसंचार के माध्यम पर दृष्टिपात डालेंगे।

● **टेलीग्राफ:-** यह आधुनिक दूरसंचार का माध्यम है। इसके आविष्कर्ता इंग्लैण्ड के कुक, चार्ल्स व्हीट टोन तथा अमेरिका के सेमुअल मोर्स हैं। सन् 1895 में इटली के प्रसिद्ध भौतिकशास्त्री मुगलिल्लिओ मार्कोनी ने इस यन्त्र की खोज की है। इस संयन्त्रों को परिपक्वता प्रदान की और वायरलेस टेलीग्राफी पद्धतियाँ सामने आयी। मार्कोनी ने 28 मार्च 1888 में इंग्लैण्ड के डोवर नामक स्थान से फ्रांस के विमरौक्स के बीच में टेलीग्राफ संदेश भेजा था टेलीग्राफ के द्वारा संदेश को भेजने के लिए सेमुअल मोर्स द्वारा निर्धारित मानक कोड प्रयोग में लाया जाता है। टेलीग्राफ में संदेश भेजने के लिए बिन्दु डॉट. (देश) प्रणाली का प्रयोग होता है। जो कि 'मोर्स कोड' के नाम से जानी जाती है। संदेश प्रेषित करने के लिए टेलीग्राफ में एक कुंजी पटल (की बोर्ड) लगा रहता है। यह एक प्रकार का स्विच है। इस कुंजी का सम्बन्ध तारों द्वारा संदेश प्रेषणस्थल एवं संदेश ग्रहण स्थल पर लगे मोर्स कुंजी पटल से होता है। जब मोर्स की चाबी को दबाकर तुरन्त छोड़ दिया जाता है तो एक बिन्दु (डॉट) पन जाती है, इसीवर पर एक क्लिक की आवाज सुनाई पड़ता है। दो बार बिन्दु बनाने से डैश बन जाता है। एक लम्बा इस चार बिन्दुओं के बराबर होता है। शब्दों के बीच का अन्तराल तीन बिन्दुओं से

अभिव्यक्त होता है। अक्षरों को जोड़ने के लिए अनिवार्य अन्तर्गल दो बिन्दुओं द्वारा प्रकट होता है।

- **इंटरनेट:-** इंटरनेट इस शती की सबसे बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धि है दूरसंचार के क्षेत्र में 'इंटरनेट' व्यवस्था का आगमन इसे हाइवे के नाम से भी पहचाना जाता है। इसके आगमन से सारा विश्व सुकुड़ कर मुड़ी में आ गया है। 'इंटरनेट' विश्वभर में फैले कम्प्यूटरों पर एक व्यवस्थित जाल है। इसके माध्यम से सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जाता है, इसका ज्ञान भंडार विशाल है। इस प्रणाली में सभी कम्प्यूटर संचार तकनीकों से आपस में जुड़े होते हैं। इसके उपभोक्ता अपनी मनचाही पुस्तक, इच्छित सूचनाएँ, फिल्म, संगीत कुछ ही क्षणों में सुन देख सकते हैं। सम्प्रति लगभग पाँच करोड़ लोग इस प्रणाली से जुड़े हैं।

- **टेलीप्रिंटर :-** 'टेलीप्रिंटर' दूरसंचार के क्षेत्र में वरदान सिद्ध हुआ है। इसे ताश्घरों, समाचार पत्रों, कार्यालयों और सरकारी संस्थानों में प्रयोग किया जाता है। इसका आविष्कार 1874 ई. में फ्रांस एमिल वॉडॉट ने किया। सन् 1927 में टेलीप्रिंटर ने विधिवत कार्य प्रारम्भ किया। यह बिजली से चलने वाला ऐसा यंत्र है जो टाईप द्वारा टेलीग्राफ परिपथ पर अथवा रेडियो तरंगों द्वारा संदेश भेजने और प्राप्त करने का कार्य करता है। इस यंत्र पर एक ही बार में कई संदेश एक साथ भेजे जा सकते हैं। यह देखने में एक टाइपराइटर जैसा प्रतीत होता है। लेकिन इसकी आन्तरिक संरचना जटिल होती है। इसमें एक की बोर्ड या कुंजीपटल होता है, जिसमें अंग्रेजी के 26 अक्षर, हिन्दी के मात्रा सहित लगभग 66 अक्षर तथा 0-9 तक संख्यायें तथा विराम, कौमा आदि चिन्ह होते हैं।

- **फैक्स- 'फैक्स'** एक ऐसी प्रणाली है, जिसमें चित्र, आकृतियों की हूबहू नकल या फोटो कॉपी एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजी जा सकती है। इस तकनीक को फेसीमाइल, टेलीफोटो, ट्रांसमिशन, टेलीकॉपियर आदि नामों से भी जाना जाता है।

'फैक्स' शब्द लैटिन के दो शब्दों फेंकर एवं सिमिलिस का सम्मिलित शब्द है। इसकी कार्यप्रणाली को देखकर इसे 'फार अवे जिराक्स' कहा जाता है। फैक्स मशीन की सम्पूर्ण कार्य प्रणाली सांशतः तीन चरणों में पूर्ण होती है। 1. बांछित कागजात को पढ़ना और उसमें लिखे संदेश या बने हुए चित्र को इलेक्ट्रानिकतरंगों में बदलना।

2. उन इलेक्ट्रानिक तरंगों को टेलीफोन के तारों द्वारा दूसरे स्थान पर लगी फैक्स मशीन तक पहुँचाना।

3. दूसरे स्थान पर लगी फैक्स मशीन द्वारा प्रेषित इलेक्ट्रानिक तरंगों को ग्रहण करके पुनः एक विशेष प्रकार के कागज पर हूबहू प्रिंट, कर देना

इस प्रणाली को कार्यान्वित करने के लिए फोन हमेशा अनिवार्य है। संदेश प्रेषण के लिए टेलीफोन के माध्यम से नम्बर डायल करके दूसरी फैक्स मशीन से सम्पर्क स्थापित

करते हैं और लाइन ओ. के. हो जाने पर, भेजे जाने वाले दस्तावेज को, दस्तावेज मार्ग के अंदर डाल देते हैं। कागज स्वतः धीरे-धीरे मशीन के अन्दर चला जाता है। मशीन के अन्दर कागज पर लिखे शब्द महीन बिन्दुओं में परिवर्तित होते हैं। यह प्रक्रिया 'स्कैनिंग' कहलाती है। इस प्रक्रिया में 1 मि.मी. मोटे शब्द को 4.8.15 बिन्दुतर पंक्ति में परिवर्तित किया जाता है। पंक्तियों की संख्या फैक्स मशीनों की सुविधानुसार होती है। बिन्दुओं द्वारा निर्मित मसौदे को फैलाब सुविधा के लिए कम किया जाता है। यह क्रिया 'आकडासम्पीडन' कहलाती है। इसके लिए तीन विधियाँ हैं- मोडीफाई - हॉफमन, मोडिफाई- शेड. सम्पीडन के पश्चात् बिन्दुओं द्वारा बनी आकृति को विद्युत चुम्बकीय संख्यात्मक तरंगों (डिजिटल वेव) में परिवर्तित किया जाता है। इसके बाद इन तरंगों को टेलीफोन द्वारा भेजने हेतु 'एनालॉग' तरंगों में बदला जाता है। यह प्रक्रिया 'माडुलेशन' कहलाती है। इतना कार्य होने पर संदेश, प्रेषक तक पहुँचाने के लिए तैयार हो जाता है। प्राप्ति केन्द्र पर लगी फैक्स मशीन, प्रेषक केन्द्र से प्राप्त एनालॉग, तरंगों की संख्यात्मक तरंगों में परिवर्तित करके सिकुड़े हुए बिन्दुओं को मूल आकार में फैलाती है। इसे 'आँकड़ा पुनः प्राप्ति' प्रक्रिया कह सकते हैं। इसके बाद संख्यात्मक तरंगों को प्रिंटर प्रणाली में भेज दिया जाता है। प्रिंटर में लगे फैक्स कागज पर प्रेषित संदेश हूबहू छप जाता है। यह प्रणाली टेलीफोन से जुड़ी होती है। अतः इसके माध्यम से संदेश भेजने में एस. टी. डी. काल के बराबर व्यय आता है। सम्प्रति मोदी वी पी. एल. आदि विभिन्न कम्पनियों की मशीनें बाजार में उपलब्ध हैं।

● टेलीफोन :-

'टेलीफोन' ग्रीक भाषा का शब्द है। 'टेली' का अर्थ है 'दूर' और 'फोन' का अर्थ है - 'ध्वनि'। इस प्रकार टेलीफोन का अर्थ हुआ ध्वनि को दूर तक भेजना। टेलीफोन का आविष्कार अमेरिका के स्वर-शरीर विज्ञान के आचार्य अलेक्जेंडर ग्राम बेल द्वारा सन् 1876 में किया गया। सन् 1877 में अमेरिका के ही प्रसिद्ध वैज्ञानिक थोमस अल्वा एडिसन ने इसमें अनेक सुधार किये। कालान्तर में अलग-अलग तारों से जुड़े टेलीफोन में सन् 1923 से डायलिंग सिस्टम, सन् 1941 से पुश बटन सिस्टम विकसित हुआ। 1960 में इलेक्ट्रॉनिक एक्सचेंज की स्थापना हुई।

भारत में सर्वप्रथम 1881-82 में कलकत्ता शहर में ५० लाइनों वाले टेलीफोन एक्सचेंज की स्थापना की गयी। 1913-14 में शिमला में पहला स्वचालित टेलीफोन एक्सचेंज शुरू हुआ। सन् 1960 में लखनऊ और कानपुर के बीच सर्वप्रथम एस. टी. एस. सेवा प्रारम्भ की गयी।

सम्प्रति, टेलीफोन, जनजीवन की आवश्यकता का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है। टेलेक्स, फैक्स आदि प्रणालियाँ इसके बिना क्रियान्वित नहीं की जा सकती। आजकल टेलीफोन की विभिन्न, प्रणालियाँ प्रचलित हैं।

- कार्डलेस टेलीफोन -

कार्डलेस तारविहीन टेलीफोन होता है। इस प्रकार के फोन से यह सुविधा होती है कि किसी भी समय एक निश्चित दायरे में रहते हुए संदेश प्राप्त किया जा सकता है। इसमें बेस (प्रमुख भाग) और चोंगा दो भाग रहते हैं। मुख्य भाग एक स्थान पर रहता है और चोंगा को तार-विहीन होने के कारण कहीं भी लेकर घूमा जा सकता है। पहले तो इन टेलीफोनों की क्षेत्रीय परिसीमा होती थी, किन्तु संचार उपग्रह के कारण अब कभी भी, कहीं भी इनके माध्यम से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है।

- इन्टरकॉम-

'इन्टरकॉम' टेलीफोन के अन्तर्गत मुख्य टेलीफोन से अन्य टेलीफोन जुड़े हुए होते हैं जिससे व्यक्तिको मुख्य टेलीफोन के पास उठकर नहीं आना पड़ता है। अगर उसके पास इन्टरकॉम उपलब्ध है तो आप उसी स्थान से बात कर सकते हैं। दफ्तरों, उद्योगों के लिए यह प्रणाली अत्यन्त लाभदायक रही है क्योंकि इसके माध्यम से आसानी के साथ अलग-अलग स्थानों पर होते हुए भी सम्पर्क बनाये रखा जा सकता है। बहुत से कार्यालयों एवं व्यावसायिक केन्द्रों में अपने 'मिनी एक्सचेंज' होते हैं। इनमें पी. ए. बी. एक्स. (इलेक्ट्रॉनिक प्राइवेट ऑटोमेटिक ब्रांच एक्सचेंज) स्थानीय सेवाओं के लिए लगाये जाते हैं।

- एस. टी. डी.-

एस. टी. डी. 'सबस्क्राइबर ट्रैक डायलिंग' का संक्षेप है। तात्पर्य यह है कि एस. टी. डी. का सामान्य अर्थ है - घुमा-घुमाकर काल करने वाले ग्राहक। इस प्रणाली में ग्राहक ऐसे टेलीफोन से जिसमें एस. टी. डी. सुविधा हो, जिसके द्वारा नम्बर घुमा कर मनचाहे उक्त सुविधा वाले स्थान पर बातचीत कर सकता है। इस प्रणाली में प्रत्येक शहर को अलग-अलग कोड़ों के मध्य से पहचाना जाता है। सर्वप्रथम एस. टी. डी. सुविधा लखनऊ - कानपुर के माध्यम प्रारम्भ हुई। एस. टी. डी. को क्रियान्वित करने के लिए सबसे पहले प्रयोक्त संकेतक शून्य '0' डायल करे, तत्पश्चात् वांछित शहर का नम्बर जैसे लखनऊ के लिए 522 तथा इसके बाद परिचित व्यक्तिका टेलीफोन नम्बर जैसे 215397. इसका निम्नलिखित रूप सामने आयेगा - 0522-215397. अगर लाइन खाली होगी तो तुरन्त आपकी बात वांछित नम्बर से हो जायेगी। किराया स्थान की दूरी के अनुसार तय होता है।

- आई.एस. डी-

एस. टी. डी. सुविधा के द्वारा केवल एक राष्ट्र के अन्तर्गत ही सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। विदेश में रहने वाले लोगों से सम्पर्क करने के लिए आई. एस. डी. सुविधा अनिवार्य है। आई. एस. डी. से तात्पर्य है- इंटरनेशनल सबस्क्राइबर ट्रैक डायलिंग अर्थात् अन्तर्राष्ट्रीय काल डायलिंग द्वारा सम्पर्क। इसके लिए दो शून्य '00' का कोड़ है।

विदेशों से सम्पर्क स्थापित करने के लिए सर्वप्रथम '00' डायल करना पड़ेगा, फिर राष्ट्र का कोड जैसे यू. के. का कोड है 44 उसके बाद शहर का कोड जैसे लंदन का 1 कोड है, इसके बाद वांछित व्यक्ति का नम्बर. इस प्रकार स्थिति आती है 00441 भारत में प्रथम आई. एस. डी. सेवा वर्ष 1976 में मुम्बई एवं ब्रिटेन के मध्य चालू हुई.

● पेजर-

यह एक तरफा संदेश प्राप्त करने वाला एक बेतार उपकरण है जो बैटरी से चलता है. इस प्रणाली का विकास चिकित्सकों के लिए किया गया था. पेजर सुविधा से व्यक्तिको एक निश्चित दायरे में रहते हुए, आवश्यक संदेश लिखित रूप में पहुँचाया जा सकता है. पेजर के अन्तर्गत एक स्क्रीन होती है जिसे व्यक्ति अपनी बेल्ट आदि में लगा सकता है. प्रत्येक पेजर का टेलीफोन की भाँति एक कोड नम्बर होता है व्यक्ति द्वारा टेलीफोन से पेजर कोड नम्बर डायल करने पर, पेजर रखने वाले व्यक्तिके यन्त्र में से आवाज यानी प्रारम्भ हो जाती है और संदेश लिखित रूप से सम्बन्धित व्यक्तिके पास पहुँच जाता है. आजकल इसका प्रचलन चिकित्सा के अतिरिक्त आम जीवन में भी हो गया है.

● सेल्युलर टेलीफोन-

सेल्युलर टेलीफोन वॉकी टॉकी के आकार का यन्त्र है इसे सेल्युलर मोबाइल रेडियो भी कहते हैं. सेल्युलर टेलीफोन पद्धति में एक बड़े क्षेत्र को सेल्स या छोटे-छोटे क्षेत्रों में विभाजित कर दिया जाता है. इनमें से हर एक क्षेत्र का अपना अलग ट्रांसमीटर होता है. ट्रांसमीटर से सेल्युलर फोन सेवा के उपभोक्ता के पास उपलब्ध एक विशेष एन्टीनायुक्त टेलीफोन जुड़ा होता है. जहाँ बेस स्टेशन पर कम्प्यूटर नियन्त्रित प्रणाली द्वारा उसे इच्छित नम्बर से रेडियो तरंगों के माध्यम से जोड़ा जाता है.

सेल्युलर फोन प्रणाली, वैल लेबोरेट्रीज के इंजीनियर डी. एच. रिंग ने सन् 1947 में दी थी. लेकिन वर्ष 1978 में यह विधिवत् प्रारम्भ हुई. इस प्रक्रिया का लाभ यह है कि एक ही समय में एक ही आवृत्ति (फ्रीक्वेंसी) पर अनेक लोग वार्तालाप कर सकते हैं. इस पद्धति का विशेष उपयोग उस समय ज्ञात होता है जब किसी दैनिक आपदा-भूकम्प, बाढ़ आदि के समय नारों पर आधारित संचार प्रणालियाँ ध्वस्त हो जाती हैं. भविष्य में इसकी उपयोगिता प्रत्येक क्षेत्र में दिखाई पड़ेगी.

● वीडियोफोन :-

वीडियोफोन, दूरसंचार के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण उपलब्धि है इस यन्त्र के माध्यम से केवल व्यक्तिकी आवाज ही नहीं सुनी जाती बल्कि उसका चित्र भी दिखाई पड़ता है. इस प्रक्रिया में टेलीफोन से एक कैमरा और वीडियोस्क्रीन जुड़ी रहती है. टेलीफोन नम्बर मिलाते ही कैमरा चालू हो जाता है और विद्युत संकेतों के माध्यम से आवाज एवं चित्र लक्ष्य व्यक्तिके पहुँचाये जाते हैं.

● टेलीटेक्स्ट :-

"यह प्रणाली वीडियो टेक्स्ट प्रणाली के समान है। इसमें केवल यह अन्तर है कि सूचना प्राप्त करने वाला व्यक्ति टेलीफोन द्वारा सम्पर्क स्थापित करता है। टेलीटेक्स्ट केन्द्र के कम्प्यूटर से सम्पर्क स्थापित हो जाने पर सूचना प्राप्त हो जाती है और कनेक्शन पुनः कट जाता है। सम्प्रति भारत में रेलवे एवं टेलीफोन केन्द्र द्वारा इसका प्रयोग किया जा रहा है। इस प्रणाली का सर्वप्रथम शुभारम्भ मार्च 1982 में ब्रिटिश टेलीग्राफ संस्था द्वारा किया गया।

● टेलीकान्फ्रेंस:-

टेलीकान्फ्रेंस से तात्पर्य है कि दूरसंचार साधनों द्वारा दो या दो से अधिक व्यक्तियों का एक साथ विचार-विमर्श करना। यह क्रिया टेलीफोन, टेलीविजन, कम्प्यूटर के द्वारा सुलभ हो पाई है। इसके तीन प्रकार प्राप्त होते हैं। 1. ऑडियो कान्फ्रेंस 2. वीडियो कान्फ्रेंस ३. कम्प्यूटर कान्फ्रेंस आडियो कान्फ्रेंस टेलीफोन के माध्यम से सम्पन्न होती है। इसमें विचारकर्ता एक-दूसरे को देख नहीं सकते। किन्तु वीडियो कान्फ्रेंस प्रणाली में यह सुविधा उपलब्ध है कि वार्ताकार एक दूसरे को देख सकें। कम्प्यूटर कान्फ्रेंस में अलग-अलग स्थानों पर लगे कम्प्यूटर के माध्यम से सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जाता है।

● टेलेक्स:-

'टेलेक्स दूरसंचार के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ है। विश्वभर में आने वाले संदेश समाचार-पत्र कार्यालयों में टेलेक्स द्वारा ही प्राप्त होते हैं। इनका उपयोग विभिन्न उद्योगों डाक एवं मौसम प्रभाग को निर्देश देने के लिए भी होता है। तार विभाग में जनता तथा सरकारी कामकाज दोनों ही दृष्टि से टेलेक्स की व्यवस्था की है। टेलेक्स शब्द टेली प्रिंटर एक्सचेंज का संक्षिप्त वस्तु है। आधुनिक टेलेक्स को हम टेलीप्रिंटर टेलीग्राफ और टेलीफोन का मिलाजुला रूप कह सकते हैं। इस प्रणाली में प्रयोक्त मुँह से बातचीत नहीं करता बल्कि अपना संदेश टाईप रूप में भेज या प्राप्त कर सकता है। इस टेलेक्स एक्सचेंज के माध्यम से संसार के किसी भी टेलेक्स एक्सचेंज से सम्पर्क किया जा सकता है। विश्व का पहला विद्युत चालित टेलेक्स सन् 1933 में जर्मनी में स्थापित हुआ। प्रत्येक टेलेक्स का अपना एक नम्बर होता है। अपने टेलेक्स से इस नम्बर को डायल करके सम्पर्क स्थापित करके संदेश भेजा जा सकता है।

● वीडियो टेक्स्ट :-

यह संचार की अद्यतन प्रणाली है, जो केवल कम्प्यूटर द्वारा संचालित होती है। इस प्रणाली में टेलीविजन प्रसारण केन्द्र पर कम्प्यूटर की सहायता से संदेशों को संचित किया जाता है। इसे 'डाटावेस' कहते हैं। 'डाटावेस' में पाठ्य सामग्री को पन्ने के रूप में संचित किया जाता है। एक पन्ने में लगभग 40 पंक्तियाँ होती हैं। जिसके प्रसारण में 15 से

20 सेकेंड लगते हैं। टेलीविजन की स्क्रीन पर एक बार में ३१२ पंक्तियाँ आती हैं किन्तु केवल २१० पंक्तियाँ देखी जा सकती हैं।

इस सुविधा वाले लोगों को टेलीविजन में एक 'डीकोडर' लगाना पड़ता है। इसमें संचित करने के लिए स्मृति होती है। कम्प्यूटर के माध्यम से पाठ्यसामग्री टी. वी. स्क्रीन पर मूल रूप में उपलब्ध होती है और दर्शक अपनी रुचि अनुरूप न्यूमैटिक की पैड द्वारा उसे चुनता जाता है। यह प्रणाली अखबार, पुस्तकालयों एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में अत्यन्त लोकप्रिय हो रही है।

● इलेक्ट्रानिक मेल:-

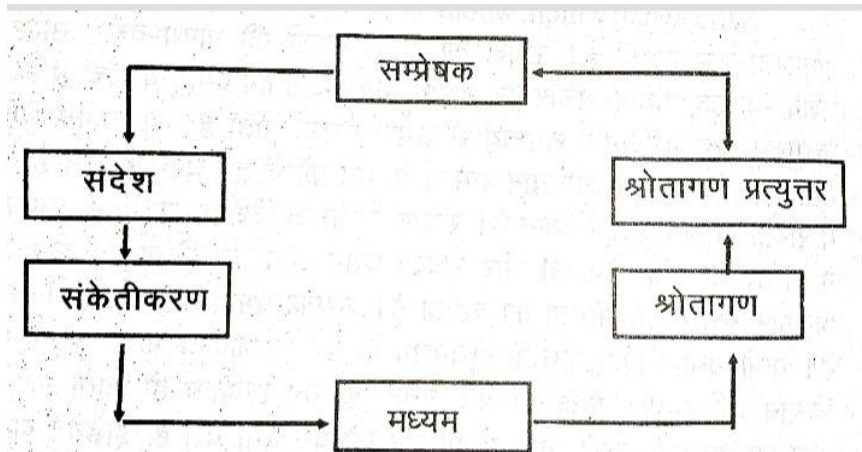
यह पत्र प्रेषण की अधुनातन एवं तीव्र प्रणाली है। इस प्रणाली में कम्प्यूटर द्वारा पत्र घोषित किया जाते हैं। जिस पत्र को भेजना है इसका मसौदा कम्प्यूटर के द्वारा तैयार किया जाता है, फिर उसे वांछित पतों पर भेजा जाता है। पत्र की समस्त सामग्री प्राप्तकर्ता के टी. वी. स्क्रीन पर प्रदर्शित हो जाती है। आवश्यकता होने पर उसे प्रिंट भी किया जा सकता है। प्राप्तकर्ता की अनुपस्थिति में भी स्मृति के अन्तर्गत संचित हो जाता है।

13.7 संप्रेषण की तकनीक

वस्तुतः 'संचार' एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अर्थपूर्ण संदेशों का संप्रेषण ही कहलाता है। 'संचार' शब्द को अनेक विद्वानों यथा- हावलैण्ड लूमिक और बीगल, जे०पॉल लीगन्स, मैगीनसन, कौफीन और शाँ पर्सिंग ने परिभाषित करने का यथाशक्ति प्रयास किया है जिनके आधार पर यह निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि विचारों, अनुभवों, तथ्यों एवं ज्ञानपरक सूचनाओं का ऐसा आदान-प्रदान जिससे उभय पक्षों को संदेश का सहजता से सामान्य ज्ञान हो सके तथा जिस प्रक्रिया के माध्यम से संप्रेषक और संग्राहक के मध्य सामञ्जस्य तथा जागरूकता पैदा हो सके, 'संचार' कहलाता है। संचार की संरचना में तीन घटक प्रमुख हैं-

1. स्रोत या संप्रेषण
2. सार्थक संदेश
3. ग्रहणकर्ता (संग्राहक)

● लीगन्स का संचार मॉडल-



उपर्युक्त मॉडलों से सुस्पष्ट है कि संचार में संप्रेषक, स्रोत, संदेश- सृणि तथा संग्राहक की सक्रियता होती है।

1. संचार प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने वाले कारक:-

प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में संचार प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले निम्नलिखित कारक हैं-

- (1) संदेश प्रेषित करने के पूर्व संप्रेषक को स्वतः उस सूचना, तथ्य और विचार को हृदयंगम कर लेना चाहिए तत्पश्चात् श्रोताओं की पसन्द तथा संचार माध्यम पर ध्यान देना चाहिए।
- (2) संचार प्रक्रिया द्विमार्गी पद्धति है। संप्रेषक और संग्राहक के बीच मैत्री भाव हो, सौहार्दपूर्ण वातावरण हो। प्रशोत्तर पद्धति उपयुक्त होती है।
- (3) भौतिक वातावरण अधिक प्रभावशाली है। संग्राहकों हेतु उपयुक्त भौतिक वातावरण उपस्थित करके ही संचार में सफलता प्राप्त की जा सकती है।
- (4) संचार प्रक्रिया में संलग्न सभी व्यक्तियों को प्रेरित किया जाय कि वेमनसा, वाचा. कर्मणा कार्य सम्पादन हेतु जुटे रहें।
- (5) संग्राहक का मूल्यांकन भी अपेक्षित है। समय-समय पर यह अवश्य जान लेना चाहिए कि संदेश का प्रभाव कितना पड़ रहा है ?

उपयुक्त श्रव्य दृश्य साधनों के प्रयोग से संचार को सफल बनाया जा सकता है। 'यदि मैं केवल सुनता हूँ तो भूल जाता हूँ, यदि मैं केवल देखता हूँ तो मैं याद रखता हूँ, पर यदि मैं करता हूँ तो सीखता हूँ' इस कहावत के अनुरूप संप्रेषक को ऐसा प्रयास करना चाहिए कि संग्राहक सुने, देखे करे तथा दीर्घकाल तक लाभान्वित हो।

संचार स्रोत, संदेश, संचार माध्यम तथा संग्राहक के बीच सुगम समन्वय स्थापित कर संचार प्रक्रिया को सफल, समाजोपयोगी और जनमानस हेतु प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

2. संप्रेषण प्रक्रिया सिद्धांत:-

संदेश, माध्यम और सम्प्रेषक में कौन अधिक महत्वपूर्ण है इससे सम्बन्धित जनसंचार के विशेषज्ञों में संचार सम्बन्धी तीन सिद्धांत प्रचलित हैं। प्रथम सिद्धांत के अनुरूप संचार या प्राणतत्त्व संदेश है। संदेश ही समस्त जनसंचार प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु है। इस सिद्धांत के अनुसार न तो सम्प्रेषक का महत्व है और न माध्यम का। वे मानते हैं कि 'संदेश' यदि उत्तम है तो वह जन-जन में प्रभावशाली सिद्ध होगा ही। "घी का लड्डू टेढ़ो भला के अनुरूप संदेश को महत्वपूर्ण मानने वाले विशेषज्ञ 'भाव अनूठो चाहिये पर बल देते हैं।

संचार के द्वितीय सिद्धांत के पोषक माध्यम को ही अपरिहार्य मानते हैं। वे माध्यम को ही संदेश कहते हैं। मार्शल मैकलुहान के मतानुसार संदेश से बढ़कर संदेश देने वाला माध्यम महत्वपूर्ण है। वे दूरदर्शन को 'शीतल' माध्यम मानते हैं क्योंकि बिना मस्तिष्क पर जोर दिये ही संदेश का अर्थ समझ लिया जाता है। समाचार-पत्र, पुस्तक, पत्रिका को वे 'गर्म' माध्यम मानते हैं क्योंकि इनसे अर्थ निकालने में मस्तिष्क पर जोर देना पड़ता है।

तीसरे सिद्धांत के मानने वालों ने संदेश और माध्यम की अपेक्षा सम्प्रेषक (वक्ता) को महत्वपूर्ण माना है। वक्ता ही अपने मोहक, रोचक जादूगर सदृश चमत्कारपूर्ण भाषणों से जनसामान्य को प्रेरित करता है। हिटलर और गोबेल्स अपनी वाक्पटुता से झूट को सच में बदलने की शक्ति रखते थे। अटलबिहारी वाजपेयी की वक्तृत्व कला सर्वविदित है जिससे वे जनमत को अपने पक्ष में करने की दिशा में सफल होते हैं।

3. संप्रेषण प्रक्रिया का क्षेत्र:-

- (1) मौखिक- जन सामान्य तो लगभग 70% मौखिक संचार करते हैं। अवण, वार्ता, पठन-पाठन, लेखन में भाषा का प्रयोग होता है। भाषा संचार प्रक्रिया का संकेत है जिसके द्वारा समाज में संचार स्थापित होता है।
- (2) अमौखिक- अंग संचालन से भी संचार का कार्य होता है। चेहरे का हाव-भाव, हाथ-पैर का हिलना - ये सभी अभिव्यक्तिके साधन हैं।
- (3) व्यापक-संचार बहुत से व्यक्तियों द्वारा बहुत स्तर पर, बहुत कारणों से बहुत लोगों के साथ बहुत विधियों से सम्पन्न होता है।
- (4) संचार का क्षेत्र 'प्रबन्ध' के रूप में उद्योगों के प्रचार-प्रसार सेवाओं की सूचना, विज्ञापन आदि अनेक क्षेत्रों में उत्तम प्रबन्ध की भूमिका निर्वहन संचार द्वारा होता है। सभा, गोष्ठी, साक्षात्कार के प्रबन्ध में इसकी महत्ता है।
- (5) सभ्यता माध्यमों में कार्य करने का बहु आयामी क्षेत्र संचार विशेषज्ञ को सुलभ होता है।

(1) संप्रेषण या स्रोत-संचार द्विध्रुवी प्रक्रिया है। इसके एक ध्रुव पर सम्प्रेषक और दूसरे ध्रुव पर संग्राहक होता है। इन दोनों के बीच संदेशों का आदान-प्रदान गत्यात्मक ढंग से तब तक चलता है, जब तक संचार का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो जाता। इन दोनों के बीच संचार की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है संचार प्रक्रिया को क्रियान्वित करने वाला संचारक कहलाता है। श्रोत का सामान्य अभिप्राय उत्पत्ति स्थान है। संचार श्रोत या सम्प्रेषक व्यक्तिको संचारित विषय की पूरी जानकारी होनी चाहिए।

(2) चयनित सूचना - सम्प्रेषक सभी घटनाओं का संकलन भले ही कर ले, किन्तु उसका संप्रेषण आवश्यकताओं के अनुरूप ही कर सकता है, इसलिए उसे प्राप्त सूचनाओं से स्रोत अथवा समाज के लिए महत्वपूर्ण सूचनाएँ ही प्रेषण के लिए चुननी पड़ती हैं। और उसे चयनित सूचना कहा जाता है।

(3) संदेश- सम्प्रेषक जब बोलकर लिखकर या चित्र बनाकर या संकेत द्वारा अपने विचारों को प्रकट करता है या सूचना देता है वह संदेश कहलाता है। जिसके आदान-प्रदान से ही संचार प्रक्रिया चलती है संदेश उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए तथा प्रापक की जरूरतों के अनुकूल एवं ग्रहण क्षमता के अनुरूप होना चाहिए। इसका प्रभाव सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों हो सकता है।

(4) संचार साधन- संचार प्रक्रिया में संचार साधन या मार्ग वह संघटक है जिसके द्वारा स्रोत से श्रोता तक संदेश पहुँचाता है। वस्तुतः संचार मार्ग वह साधन है जिसके द्वारा सम्प्रेषक प्रेषित संदेश को प्रापक ग्रहण करता है जैसे टेलीफोन संचार में टेलीफोन का तार है उसी प्रकार अन्तर्व्याप्ति संचार में संचार का शारीरिक अंग है।

(5) संचार माध्यम - स्रोत तथा श्रोता अथवा सम्प्रेषक तथा संग्राहक के बीच सेतु ही संचार माध्यम है। यह अंग्रेजी शब्द मीडिया का हिन्दी पर्याय जिसका अर्थ है दो बिन्दुओं को जोड़ने वाला। संदेश को प्रभावशाली ढंग से प्रापक तक पहुँचाने के लिए संचारक जिस माध्यम का सहारा लेता है, वही संचार माध्यम है। ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर संचार माध्यमों को तीन वर्गों में बाँट सकते हैं-

(6) श्रोता या प्रापक - सम्प्रेषक का संदेश प्राप्त करने वाला प्रापक या श्रोता है जो संचार प्रक्रिया में दूसरे छोर पर है संचार प्रक्रिया में श्रोता उतना ही महत्वपूर्ण है। जितना की सम्प्रेषक। अतः प्रापक या स्रोत में भी वे सभी गुण होने चाहिए, जो सम्प्रेषक के लिए जरूरी हैं। जैसे सम्प्रेषक लोकसभा की कार्यवाहियों का प्रसारण ही श्रोता के लिए भी। परम्परागत तथा वर्तमान प्रापक के चरित्र एवं व्यवहार में मूलभूत

कर रहा हो तो लोकसभा की कार्यवाहियों का ज्ञान जितना सम्प्रेषक के लिए जरूरी है उतना अन्तर है। परम्परागत संचार माध्यमों का प्रापक वर्ग किसी प्रकार एक निश्चित दायरे में सिमटा होता था। वर्तमान समय में जनसंचार माध्यमों के प्रापक वर्ग में भी गजब का विस्तार आया है। जहाँ तक संचार माध्यमों की पहुँच, प्रापक की भौगोलिक विस्तार सीमा भी वहीं तक मानी जा सकती है।

(7) संकेतीकरण- सम्प्रेषक जब भावा या विचारों को अपने रचनात्मक कौशल से संकेत रूप में परिवर्तित कर रचनात्मक विधि से प्रापक तक पहुँचाता है तो इसे संकेतीकरण कहते हैं। सूचना देने से पूर्व सम्प्रेषक सूचना को खातों को ध्यान में रखकर परिवर्तित करता है, उस परिवर्तन को भी संकेतीकरण की संज्ञा देना उपयुक्त होगा।

(8) संकेत वाचन- प्रापक सूचना ग्रहण करने से पूर्व अपने तरीके से सूचना को समझता है तथा उसे ग्रहण करता है, इसी प्रक्रिया को संकेत वाचन अथवा डिकोडिंग कहा जाता है।

(9) गंतव्य रचना- जिन व्यक्तियों अथवा व्यक्तिसमूहों के लिए संदेश का महत्व होता है। उन व्यक्तियों अथवा व्यक्तिसमूहों तक पहुँचना संदेश का गंतव्य स्थल या मंजिल है।

(10) प्रतिपुष्टि- जब प्रापक संदेश प्राप्त कर उस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है तो उसे प्रतिपुष्टि पुनर्निवेशन या फीडबैक कहते हैं। संचार प्रक्रिया को सफल बनाने में प्रतिपुष्टि अत्यन्त महत्वपूर्ण संघटक है। प्रतिपुष्टि के बिना संचार प्रक्रिया पूर्ण नहीं मानी जा सकती क्योंकि संचार तो सूचनाओं का आदान-प्रदान है। सम्पादक के नाम पत्र अथवा अखबार में पाठकों के पत्र, आकाशवाणी में श्रोताओं के पत्र तथा दूरदर्शन में दर्शकों के पत्र प्रतिपुष्टि के अन्तर्गत आते हैं।

फीडबैक सकारात्मक और नकारात्मक दो प्रकार की होती है। फीडबैक प्रक्रिया स्रडुष्ट हूँ स्रडुष्ट अथवा अन्तर्व्यक्तिस्तर पर भी होती है। इसमें आँख मुस्कुशहट एवं हावभाव के द्वारा तुरन्त प्रतिक्रिया होती है। फीडबैक स्वतः भी हो सकता है और प्रायोजित ढंग से भी। स्वतः फीडबैक में प्रापक अपनी प्रतिक्रिया स्वयं भेज देता है। जैसे सम्पादक के नाम पत्र जबकि प्रायोजित फीडबैक में प्रापक की प्रतिक्रिया, बातचीत, इंटरव्यू आदि के माध्यम से प्राप्त की जाती है।

13.9 'संप्रेषण' का महत्व या उपयोगिता-

संप्रेषण जीवन का आधार है। संप्रेषण शून्यता जीवन के विकास में बाधक है। आधुनिक जनजीवन और सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक व्यवस्था का ताना-बाना जन संचार

साधनों द्वारा सुव्यवस्थित है। संप्रेषण व्यवस्था समाज की प्रगति सभ्यता और संस्कृति के विकास का माध्यम है और सभ्य को सभ्य संकीर्ण को उदार तथा नर को नाशयण बनाने की अभूतपूर्व शक्तिसंप्रेषण से सत्य है।

आहार, निद्रा, भय और मैथुन तो सभी जीवधारियों में होते हैं। मात्र चिंतन, मनन, कथा, श्रवण एवं आत्मा अभिव्यक्तिकी क्षमता से संबंधित संचारकला ने ही मानव को सृष्टि में सर्वोच्च स्थान पर सुप्रतिष्ठित किया है।

संप्रेषण को निरंकुश भी नहीं होना चाहिए। विचारों का नियम, कानून औचित्य, मर्यादा, देशहित और समाज हित से जुड़ा होना चाहिए। अभिव्यक्तिकी आजादी का अर्थ स्वेच्छाचारीता नहीं है। आज जितना अधिक जानने की अदम्य इच्छा है, उतनी ही जानकारी को छिपाने की भरपूर कोशिश भी।

समाज में व्याप्त दोहरी जीवन, दोहरी नीतियाँ, ढोंग, अंधविश्वास, अंधेर्गदी, मदान्धता को मिटाने में जनसंचार साधन अहम भूमिका निभाते हैं। योग्यता और क्षमता के स्थान पर पैरवी और पैसा के प्रभाव को समाप्त कर नैतिक और बौद्धिक इमानदारी का वातावरण इनसे ही निर्मित हो सकता है। संप्रेषण का कार्य केवल सूचना देना एवं जनमत तैयार करना ही नहीं, अपितु प्रभावशाली ढंग से संपर्क बनाना एवं भ्रामक प्रचारोंको निरर्थक सिद्ध करना है। प्रजातांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ और जागरूक बनाने, जनमानस को समुन्नत करने में संप्रेषण की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। आलोचना, विशोध, असहमति के प्रकाशन से रचनात्मक सुधार की ओर जनसंचार ही उन्मुख करता है। भ्रम, विभ्रम, विश्वास, अंधविश्वास को तर्क, विद्वेष को मिटाने में भी संप्रेषण काङ्गड़ साबित हुआ है। संप्रेषण के अभाव में व्यक्तिका समाज से संपर्क ही नहीं बन सकता। उसका जीवन अवरूद्ध हो जाता है। शिक्ता आ जाती है

और समाज तथा देश के विकास में संप्रेषण की महत्ता सर्वमान्य है। उसके उचित उपयोग से इच्छित ध्येय की प्राप्ति हो सकती है।

संप्रेषण की उचित उपयोगिता से सुनिश्चित व सुनिश्चित समाजीकरण भी हो सकता है। वही समाज सुखी है, जिसने नैतिक गुणों को अपने जीवन में आत्मसात कर लिया हो। समाजवाद, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व की स्थापना करता है। वह शोषण मुक्त समाज की रचना करके अपनी मुश्किलों से बाहर निकल सकता है। मानव सामाजिक प्राणी तब बनता है, जब वह मौखिक परंपरागत मुद्रित या इलेक्ट्रॉनिक संचार साधनों द्वारा सांस्कृतिक मूल्यों और व्यवहारों को सीखता है, उसे अपना लेता है। मौखिक संप्रेषण से बालक परिवार और पड़ोस तक सीमित रहता है। लिपि ज्ञान के कारण संस्थाओं से जुड़ता है। पत्र-पत्रिकाओं, आकाशवाणी और दूरदर्शन के सहारे मानव का समाज विस्तृत होता है। वह पूरे विश्व की क्रियाओं में सहभागी होता है। संप्रेषण परंपरागत मान्यता को पुष्ट करता है तथा सामाजिक गतिविधियों पर पैनी दृष्टि रखता है। संचार सामाजिक नियंत्रण का साधन है। नई सूचनाओं के व्यक्ति और समाज की मानसिक

क्षमता को विस्तृत बनाना, उनकी कामना को स्वस्थ रूप देना, उनकी प्रवृत्तियों, अभिरुचियों को समाज हित में निर्मित करना यह सब संप्रेक्षण से ही सुलभ है। संप्रेक्षण के साधन मनोरंजन और विकास के संदेश देकर समाज का नव निर्माण करते हैं। प्रेम, सौहार्द एवं सद्भाव सहयोग द्वारा संप्रेक्षण शोषण मुक्त आदर्श समाज की रचना में अपना स्तुत्य योगदान देता है।

13.10 सार्विंदु

- संप्रेक्षण के लिए अंग्रेजी भाषा में 'कम्युनिकेशन' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसकी उत्पत्ति लैटिन शब्द 'कम्युनिज' शब्द से हुई है जिसका अर्थ किसी विचार या तथ्य सूचनाओं को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्तितक इस प्रकार पहुँचाना की वह उसे जान एवं समझ सके।
- अत्यधिक लोगों तक बात पहुँचाना ही संप्रेक्षण है।
- संप्रेक्षण के मौखिक, लिखित, औपचारिक, अनौपचारिक, अधोमुखी, उध्वमुखी, क्षेतिक संप्रेक्षण आदि प्रकार हैं।
- संप्रेक्षण के मुद्रण, इलेक्ट्रॉनिक, नव-इलेक्ट्रॉनिक आदि माध्यम हैं।
- संप्रेक्षण या स्रोत, चयनित सूचना, सन्देश, संचार माध्यम, संचार साधन, श्रोता या प्रापक, संकेतिकरण, संकेत वाचन, गंतव्य रचना, प्रतिपुष्टी आदि संप्रेक्षण प्रक्रिया के चरण हैं।
- संप्रेक्षण व्यवस्था समाज की प्रगति, सभ्यता और संस्कृति के विकास का माध्यम है और सभ्य को सभ्य, संकीर्ण को उदार तथा नर को नाशयण बनाने की अभूतपूर्व शक्तिसंप्रेक्षण से सत्य है।

13.11 परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी

- निम्नांकित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखिए।
 1. 'संप्रेक्षण' का शाब्दिक अर्थ बताते हुए उसके महत्व को समझाईए।
 2. 'संप्रेक्षण' की परिभाषा देते हुए वर्तमान में उसकी उपयोगिता को बताईए।
 3. 'संप्रेक्षण' प्रक्रिया के चरण अथवा तत्वों को विस्तृत रूप से समझाईए।
 4. 'संप्रेक्षण' के विभिन्न माध्यमों को समझाईए।
 5. संप्रेक्षण के प्रकार बताईए।
- निम्नांकित विषयों पर टिप्पणी लिखिए।
 1. संप्रेक्षण के मुद्रणमाध्यम।
 2. संप्रेक्षण के इलेक्ट्रॉनिक माध्यम।
 3. दृश्य श्रव्य संप्रेक्षण माध्यम की उपयोगिता।
 4. इलेक्ट्रॉनिक संप्रेक्षण माध्यम।

● निम्नांकित रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए.

- (1) 'संप्रेषण' से _____ संभव है. (नाट्य, संगीत, अभिव्यक्ति)
- (2) 'संप्रेषण' एकसंपूर्ण _____ है. (साहित्य, नाटक, विज्ञान)
- (3) 'कम्युनिज' शब्द _____ भाषा का है. (लैटिन, तुर्की, उर्दू)
- (4) 'संप्रेषण' में अंतिम चरण _____ है. (संदेश, संकेत, प्रतिपुष्टि)
- (5) रेडियो _____ संप्रेषण का माध्यम है. (दृश्य, श्रव्य, दृश्य-श्रव्य)

13.12 उपयोगी पाठ्य सामग्री

- (1) जनसंचार : विविध आयाम, ब्रजमोहन गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1992
- (2) प्रयोजनमूलक हिंदी, डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी, आशीष प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण-2005
- (3) प्रयोजनमूलक हिंदी अधुनातन आयाम, डॉ. अंबादास देशमुख, शैलजा प्रकाशन
- (4) जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- (5) <https://www.scotbo22.org>, ई-स्रोत

इकाई 14 : मुहावरे तथा लोकोत्तियाँ

रूपरेखा

- 14.1 उद्देश्य
- 14.2 प्रस्तावना
- 14.3 मुहावरे की परिभाषा
- 14.4 लोकोत्तियाँ
- 14.5 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली
- 14.6 उपयोगी पाठ्यसामग्री

14.1 उद्देश्य

बी.ए. द्वितीय वर्ष हिन्दी के बीज पाठ्यक्रमों के पंचम प्रश्नपत्र: हिन्दी भाषा-व्याकरण और संप्रेषण के खण्ड-4 (चार) की यह इकाई है। इस इकाई में मुहावरे तथा लोकोत्तियाँ का अध्ययन करने जा रहे हैं।

1. इस इकाई में आप मुहावरे का अर्थ जान सकेंगे।
2. इस इकाई में आप मुहावरे का वाक्य में प्रयोग देख सकेंगे।
3. इस इकाई में आप लोकोत्तियों का अर्थ जान पायेंगे।
4. इस इकाई में आप लोकोत्तियों का प्रयोग करना सीख सकेंगे।

14.2 प्रस्तावना

हिन्दी भाषा: व्याकरण और संप्रेषण नामक इस पाठ्यक्रम के खंड चार (4) की यह चौदहवीं इकाई है।

इस इकाई में आप मुहावरे और लोकोत्तियाँ का अध्ययन करने जा रहे हैं वह भाषा से संबंध है। इसके अध्ययन में वाक्य प्रयोग के विलक्षण अर्थ, लाक्षणिकता, लालित्य और भाषा प्रवाह को जान सकेंगे।

मुहावरे और लोकोत्तियों का अध्ययन आप ऐसे समय में करने जा रहे हैं जब मुद्रण तथा तकनीक माध्यमों के आधिपत्य से श्रवण तथा लेखन कौशल पर प्रश्नचिह्न लगे हैं। यह इकाई आपको न केवल भाषा एवम् लेखन से परिचित कराएगी, बल्कि इससे एक

सभ्यता एवम् संस्कृति की भी पहचान होगी. आप इसके अध्ययन से भाषा एवम् व्याकरण का सही परिप्रेक्ष्य पा सकेंगे, ऐसी आशा है.

14.3 मुहावरे की परिभाषा

वह शब्दसमूह जो सामान्य अर्थ को छोड़कर विशिष्ट अर्थ पैदा करता है उसे मुहावरा कहते हैं. 'मुहावरः' अरबी भाषा का शब्द है जो हिन्दी में 'मुहावरा' हो गया. उर्दू में 'मुहाविश' शब्द प्रचलित है. हिन्दी में 'मुहावरा' शब्द एक पारिभाषिक शब्द बन गया है. इसके लिए 'शेजमर्श' या 'वाग्धाश' शब्द का प्रयोग भी होता है.

मुहावरे के प्रयोग से भाषा में सरलता, सरसता, चमत्कार और प्रवाह उत्पन्न होते हैं. मुहावरे का शब्दार्थ नहीं होता, उसका अवबोधक अर्थ ही ग्रहण किया जाता है. प्रसंग के अनुसार इसका प्रयोग होता है. इसके प्रयोग से भाषा की समृद्धि और सभ्यता का पता चलता है. इनकी अधिकता अथवा न्यूनता से भाषा के बोलनेवाले के श्रम, सामाजिक सम्बन्ध, औद्योगिक स्थिति, भाषा-निर्माण की शक्ति, सांस्कृतिक योग्यता, अध्ययन, मनन और भावों का पता चलता है. समय के अनुसार मुहावरों के प्रयोग में अन्तर तथा नवीनता आती है. हिन्दी में ज्यादातर मुहावरे शरीर के भिन्न भिन्न अंगों से सम्बन्धित होकर प्रयोजित हुए हैं. कुछ निम्न उदाहरण से इसे समझा जा सकता है.

● हिन्दी में प्रचलित मुहावरे :

- सिर : (1) सिर आँखों पर (सादर स्वीकार करना)

प्रयोग - गुरुजी की आज्ञा सिर आँखों पर है.

- आँख : (1) आँखें चार होना (एक दूसरे को देखना)

प्रयोग - उनसे आँखें चार होते ही वे शरमा गईं.

- नाक : (1) नाकों चने चबाना (बहुत परेशान करना)

प्रयोग - पहाड़ी रास्ते की बात न पूछो, नाकों चने चबाने पड़े थे.

- मुँह : (1) मुँह उतरना (उदास होना)

प्रयोग - दिनेश का खेल में हारते ही मुँह उतर गया.

- दाँत : (1) दाँतों में तिनका दबाना (क्षमा माँगना)

प्रयोग - दाँतों में तिनका दबाना पड़ेगा तब कहीं जाकर उनका दिल पसीजेगा ५

- हाथ : (1) हाथ साफ करना (बेईमानी से लेना, मारना)

प्रयोग - आज उसने रमेश के घर में हाथ साफ किया, रमेश ने आज अपनी पत्नी पर हाथ साफ किया.

- कान : (1) कान खड़े करना (सचेत या सावधान करना)

प्रयोग - थोड़ी सी सरसराहा से ही कुत्ते के कान खड़े हो गए.

इसी तरह छाती, बाल, पेट, पीठ, पैर, शाल, कमर, जीभ, गरदन, उँगली, मन आदि पर अनेक संख्या में मुहावरे प्रचलित हैं। प्रकृति के अंगों - तत्वों से भी मुहावरे निर्मित हैं। यथा-

- पानी : पानी उतारना (इज्जत उतारना)

प्रयोग - रमेश ने मोहन का पानी उतार दिया।

- हवा : (1) हवा के घोड़े पर सवार (अत्यंत जल्दबाजी)

प्रयोग - राम हमेशा हवा के घोड़े पर सवार होकर ही आता है, कभी तो शान्ति से आया करो।

इसके अलावा कुछ सामान्य मुहावरों का भी प्रयोग प्रचलित है। यथा-

(1) अकल का दुश्मन (मुख होना)

प्रयोग - राम को मत समझाओ, यह तो अकल का दुश्मन है।

(2) आटे दाल का भाव मालूम होना (वास्तविक स्थिति का ज्ञान होना)

प्रयोग - अभी तो बाप के पैसों से मझे ले लो, शादी होगी तो आटे दाल का भाव मालूम होगा।

(3) खाली पुलाव पकाना (विचारों में ही सबकुछ करना, वास्तविकता में नहीं)

प्रयोग - बड़ी बड़ी बातें करके सिर्फ खाली पुलाव पकाते रहोगें या कोई काम भी करेंगे ?

(4) घी के दीए जलना (अमीर, पैसादार बनना)

प्रयोग - पहले तो मनोज दाने-दाने का मुहताज था लेकिन अब तो उसके यहाँ घी के दीए जलते हैं।

(5) झंडा गाड़ना (अधिकार होना)

प्रयोग - अब तो भारत में भाजप का झंडा गड़ गया है।

(6) बादल में चकती लगाना (असंभव काम करना)

प्रयोग मैश्वरान में विजेता होकर हीमा ने बादल में चकती लगा दी।

(7) रेत की दीवार खड़ी करना (व्यर्थ का कार्य करना)

प्रयोग - रेत की दीवार खड़ी करने से काम नहीं चलेगा।

इस तरह सामान्य अर्थ को छोड़कर विशिष्ट अर्थ पैदा करके वाक्य को आकर्षक बनाया जा सकता है। आप भी उपरोक्त उदाहरणों के अध्ययन से विभिन्न तरह के मुहावरे, अर्थ व प्रयोग का अभ्यास कर सकते हैं।

❖ बोध प्रश्न :

● रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए :

1. 'मुहावरा' जजज.भाषा का शब्द है.
2. उर्दू में शब्द प्रचलित है.
3. मुहावरे प्रयोग से भाषा की और का पता चलता है.
4. 'अक्ल का दुश्मन' मुहावरे का अर्थ होता है.
5. समय के अनुसार के प्रयोग में अन्तर तथा नवीनता आती है.

14.4 लोकोक्तियाँ

इसे अंग्रेजी में Proverbs कहते हैं . लोकों के द्वारा प्रचलित उक्तियाँ ही लोकोक्तियाँ कहलाती हैं . लोकोक्ति के पीछे कोई कहानी या घटना होती है. उससे निकली बात, बाद में लोगो की जुबान पर जब चल निकलती है, तब 'लोकोक्ति' हो जाती है. लोकोक्तिशब्द लोक तथा उक्तिशब्दों के मेल से बना है जिसका अर्थ है - लोक में प्रचलित उक्ति बांग्ला में लोकोक्ति को 'प्रवाद वाक्य' कहते हैं. इसके प्रयोग से थोड़े में बहुत कहा जा सकता है. लोकोक्तिका मतलब काव्य में शैचकता उत्पन्न करनेवाला एक अलंकार. अर्थ को पूरी तरह स्पष्ट करने वाला वाक्य लोकोक्ति कहलाता है. लोकोक्ति को कहावतें भी कहते हैं। कहावतें कही हुई बातों के समर्थन में होती हैं। महापुरुषों, कवियों व संतों के कहे हुए ऐसे कथन जो स्वतंत्र और आम बोलचाल की भाषा में कहे गए हैं जिसमें उनका भाव निहित होता है तो ये लोकोक्तियाँ कहलाती हैं. कुछ उदाहरण निम्नांकित रूप से दिए जा रहे हैं.

(1) आगे नाथ न पीछे पगहा (किसी भी तरह की जिम्मेदारी का न होना)

→ अर्थ प्रयोग - अरे, तुम यहाँ वहाँ समय निकालते रहो, तुम्हारे आगे नाथ न पीछे पगहा है. बस, मौज किये जाओ.

(2) घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध (निकट का गुणी व्यक्ति कम सम्मान पाता है, पर दूर का ज्यादा)

→ अर्थ प्रयोग - जगू को लोग जगुआ कहकर पुकारते थे. घर त्यागकर सिद्ध पुरुष की संगति में रहकर उसने सिद्धि प्राप्त कर ली और उसका नाम हो गया- स्वामी जगदानन्द. गाँव लौटा, तो किसी ने उसके गुणों की ओर ध्यान नहीं दिया. ठीक ही कहा गया है : घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध .

इसी तरह लोकोक्तियाँ हिन्दी में प्रचलित हैं - यथा - काशी बसकर क्या हुआ जो घर औरंगाबाद, खिसयानी बिल्ली खंभा नोचे, अपनी अपनी डफली अपना अपना राग, हाथी मरा भी तो नौ लाख का, घर का भेदी लंका ठावे, मन चंगा तो कठौती गंगा &

आप भी उपरोक्त उदाहरण से अध्ययन कर अपने आस-पास, परिवार, समाज में प्रचलित लोकोक्तियों का संग्रह कर अभ्यास कर सकते हैं।

(3) 'अपनी अपनी डफली अपना अपना राग . '

जहाँ एक होकर कोई काम न किया जाता है . सब अपनी-अपनी दलील पेश करते हैं वहाँ यह लोकोक्ति लागू होती है . जैसे- देश में अनेक 'वाद' बन गए हैं. सब अपनी-अपनी विचारधारा को ही श्रेष्ठ मानते हैं . सब अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग अलापते रहते हैं . ऐसी स्थिति में देश की उन्नति कैसे हो सकती है ?

(4) 'मन चंगा तो कठौती में गंगा '

मन की पवित्रता से धर्म प्राप्त होता है. गंगा नहाने पर भी अगर मन उपवित्र है तो नहाना व्यर्थ हुआ . जैसे-एक पंडित जी ने रैदास चमार से कहा- महतो, इतना बड़ा पर्व लग रहा है, दुनिया गंगास्नान करने जा रही है और तुम बैठे जूता सी रहे हो? पंडितजी, अगर मैं गंगा नहाता फिरूँ तो मजदूरी कैसे चलेगी और बच्चों को शेटियाँ कौन देगा? मन चंगा तो कठौती में गंगा. अगर मेरा मन पवित्र रहेगा तो यहीं कठौती में गंगाजी आ सकती है.

(5) 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा . '

खुद काम न जानते हुए जब कोई दूसरों को दोष देता है तब कहते हैं . जैसे- परीक्षाभवन में विपिन कहने लगा- प्रश्नपत्र अच्छा नहीं है . किताब से प्रश्न नहीं पूछे गए हैं. शिक्षकलोग विद्यार्थियोंको ठीक से नहीं पढ़ाते हैं.

इस पर शिक्षक महोदय ने कहा- 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा .

(6) 'अपने मुँह मियाँ मिट्टू'

जब कोई डींग मारता है, अपने बारे में खूद ही बड़ाई करता है तो तब उसे कहते हैं- 'अपने मुँह मियाँ मिट्टू'.

रेश्मा कविता से बात-बात में खूद की ही बड़ी तारीफ करके खुद की ही बड़ाई कर रही थी तब कविता ने मन ही मन कहा - अपने मुँह मियाँ मिट्टू'.

❖ बोध प्रश्न :

एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

1. लोकोक्तिको अंग्रेजी में क्या कहते हैं?
2. लोकोक्तिकी व्याख्या बताइए.
3. 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' लोकोक्तिका अर्थ बताइये.
4. बांग्ला में लोकोक्तिको क्या कहा जाता है?

14.5 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- विस्तृत उत्तर वाले प्रश्न

- (1) मुहावरों का महत्व बताईए.
- (2) मुहावरों से भाषा वैशिष्ट्य किस प्रकार बढ़ता है?
- (3) लोकोत्तियों किस प्रकार निर्मित होती हैं?

- टिप्पणी लिखिए :

- (1) 'अपनी-अपनी डफली अपना अपना राग' लोकोक्तिका विस्तृत अर्थ
- (2) प्रकृति सम्बन्धी मुहावरे
- (3) सामान्य मुहावरे
- (4) हिन्दी के मुहावरे एवम् संस्कृति का सम्बन्ध
- (5) मुहावरे का प्रयोग और सामाजिक सम्बन्ध

- वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही-गलत की पहचान कीजिए .

- (1) 'ऊँट के मुँह में जीरा' का अर्थ है-
(अ) बहुत थोड़ा (ब) ऊँट के मुँह में बीमारी होना
(क) ऊँट को जीरा खिलाना (ड) पेट भरना
- (2) 'दाल-भात में मुसलचन्द' का अर्थ है-
(अ) खाने में कंकड़ होना (ब) भोजन के पीछे मरना
(क) बेकार दखल देना (ड) अपने को बहुत समझना
- (3) 'छठी का दूध याद आना' का अर्थ है-
(अ) बुरा हाल होना (ब) पराजित होना
(क) बचपन की याद करना (ड) भूख लगना
- (4) 'एक पन्थ दो काज' का अर्थ है-
(अ) अनेक कार्य करना (ब) क्या करें, क्या करें सोचना
(क) एक साथ दो लाभ होना (ड) एक साथ दो पद ग्रहण करना
- (5) 'सब धान बाईस पसेरी' का अर्थ है-
(अ) बहुत सस्ती होना (ब) बहुत महँगी होना
(क) अच्छा-बुरा सबको एक समझना (ड) अधिकता से सुविधा होती है
- (6) लोकोत्तियाँ कैसे बनती हैं?
(अ) किसी कहानी या घटना से (ब) लेखक द्वारा
(क) विज्ञापनो द्वारा (ड) चित्रकार द्वारा

(7) 'ऊ पड़ी जानकारी रखकर भी रमेश संपूर्ण ज्ञानी बन रहा है' इसके लिए कौन सी लोकोक्तिसही होगी?

(अ) अधजल जगरी छलकत जाय

(ब) अपने मुँह मियाँ मिट्टू

(क) तारीफ के पुल बाँधना

(ड) ज्यादा पढ़ा-लिखा होना

(8) 'ऊँची दूकान फीके पकवान' लोकोक्तिके लिए सही अर्थ होगा-

(अ) बड़ा मकान दिखाना

(ब) बड़े दिल का होना

(क) केवल बाह्य प्रदर्शन

(ड) केवल शान दिखाना

(9) 'मुखों में कुछ पढ़ा-लिखा व्यक्ति' अर्थ के लिए कौन सी लोकोक्तिसही होगी?

(अ) बड़ा ज्ञानी होना

(ब) अन्धों में काना राजा

(क) ठीक व्यक्तिका होना

(ड) सर्वगुण सम्पन्न होना

(10) 'चिराग तले अन्धेरा' लोकोक्तिका अर्थ है-

(अ) गहरा अन्धेरा होना

(ब) अपनी बुराई नहीं दिखती

(क) कुछ समझ न पाना

(ड) चिराग में तेल न होना

• जोड़ों का सुमेल कीजिए :

(1) गर्दन काटना

(1) उम्र पता लगाना

(2) सिर पीटना

(2) उदास होना

(3) दाँत गिनना

(3) शोक करना

(4) मुँह उतरना

(4) बुरी शय देना

(5) पट्टी पढ़ाना

(5) इज्जत बचाना

(6) जान से मारना

14.6 उपयोगी पाठ्यसामग्री

1. हिन्दी व्याकरण और लेखन - लेखक - पुरुषोत्तम पटेल, लक्ष्मीनारायण जानी, नरेन्द्र अंजारीया, प्रकाशक - ज्योति प्रकाशन : तिलकमार्ग, अहमदाबाद, द्वितीय संस्करण 1967
2. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना-डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद, प्रकाशक: भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स) ठाकुरबाडी रोड, कदम कुआँ, पटना-800003, संस्करण-22 वाँ संशोधित एवं पुनरीक्षण संस्करण 1991
3. <https://www.google.com/search>
4. <http://www.knowledgesagar.com/1éã€±øi>

इकाई 15 : पल्लवन एवं संक्षेपण

रूपरेखा

- 15.1 उद्देश्य
- 15.2 प्रस्तावना
- 15.3 शीर्षक 1 : पल्लवन
 - 15.3.1 पल्लवन की परिभाषा
 - 15.3.2 पल्लवन, व्याख्या और भावार्थ में अन्तर
 - 15.3.3 पल्लवन के कुछ सामान्य नियम
 - 15.3.4 पल्लवन के कुछ उदाहरण
- 15.4 शीर्षक 2 : संक्षेपण
 - 15.4.1 संक्षेपण की परिभाषा
 - 15.4.2 संक्षेपण के गुण
 - 15.4.3 संक्षेपण के विषयगत एवम् शैलीगत नियम
 - 15.4.4 संक्षेपण के लिए निर्देश
 - 15.4.5 संक्षेपण के कुछ उदाहरण
- 15.5 सार-बिंदु
- 15.6 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली
- 15.7 उपयोगी पाठ्य सामग्री

15.1 उद्देश्य

बी.ए. द्वितीय वर्ष हिन्दी के बीज पाठ्यक्रमों के पंचम प्रश्नपत्र: 'हिन्दी भाषा, व्याकरण और सम्प्रवेशन' के खण्ड - 4 की यह 15वीं इकाई है। इस इकाई में पल्लवन एवं संक्षेपण का अध्ययन करने जा रहे हैं।

15.3.3 पल्लवन के कुछ सामान्य नियम

- पल्लवन के लिए मूल अवतरण के वाक्य, सूक्ति, लोकोक्ति अथवा कहावत को ध्यानपूर्वक पढ़िए, ताकि मूल के सम्पूर्ण भाव अच्छी तरह समझ में आ जायें.
- मूल विचार अथवा भाव के नीचे दबे अन्य सहायक विचारों को समझने की चेष्टा कीजिए.
- मूल और गौण विचारों को समझ लेने के बाद एक-एक कर सभी निहित विचारों को एक-एक अनुच्छेद में लिखना आरंभ कीजिए, ताकि कोई भी भाव अथवा विचार छूटने न पाय.
- अर्थ अथवा विचार का विस्तार करते समय उसकी पुष्टि में जहाँ-तहाँ ऊँ पर से कुछ उदाहरण और तथ्य भी दिये जा सकते हैं.
- भाव और भाषा की अभिव्यक्ति में पूरी स्पष्टता, मौलिकता और सरलता होनी चाहिए. वाक्य छोटे-छोटे और भाषा अत्यन्त सरल होनी चाहिए.
- अप्रासंगिक बातों का अनावश्यक विस्तार या उल्लेख बिलकुल नहीं होना चाहिए.
- 'पल्लवन' में लेखक के मूल तथा गौण भाव या विचार की टीका-टिप्पणी और आलोचना नहीं करनी चाहिए. इसमें मूल लेखक के मनोभावों का ही विस्तार और विश्लेषण होना चाहिए.
- 'पल्लवन' की रचना हर हालत में अन्य पुरुष में होना चाहिए.
- 'पल्लवन' व्यासशैली की होनी चाहिए, समास शैली की नहीं. अतः इसमें बातों को विस्तार से लिखने का अभ्यास किया जाना चाहिए.

15.3.4 पल्लवन के कुछ उदाहरण

उदाहरण- 1

- मूल अवतरण : 'नर और नारी जनमते और मरते हैं, परन्तु राष्ट्र सदा अमर रहता है.
- जवाहरलाल नेहरू

पल्लवन

संसार में असंख्य नर-नारियों का जन्म प्रतिक्षण होता रहता है और हर क्षण उनकी मृत्यु भी होती है. मनुष्य के साथ जीना - मरना सदा लगा रहता है. जन्म के साथ मृत्यु का सम्बन्ध अवश्यम्भावी है. जन्म होता है, तो मृत्यु भी होगी, यह निश्चित है. यह एक ऐसा सत्य है जिसके सम्बन्ध में किसी तरह का भ्रम हो ही नहीं सकता.

किन्तु राष्ट्र अमर है, इसकी आत्मा अमर है. यह मनुष्य की तरह जीता मरता नहीं है. राष्ट्र की शक्ति उसके नागरिक, उसकी संस्कृति, उसका साहित्य, उसकी परम्परा और उसकी ऐतिहासिक चेतना में है. नागरिकों की सबल एकता से राष्ट्र मजबूत होता है, उसकी आत्मा सशक्त और दीर्घजीवी होती है. जब तक राष्ट्र की आन्तरिक एकता सुदृढ़ रहती है, उस पर कोई भी बाहरी शक्ति उँगली उठाने की हिम्मत नहीं करती, उसका अमरत्व बना रहता है, उसका पतन नहीं होता. लेकिन, जब उसकी आन्तरिक शक्ति गृहकलह में

पड़कर विश्रृंखल होने लगती है, तब उसका हास अवश्यम्भावी हो जाता है। किन्तु यह 'हास' हास ही है, 'शष्ट' का नाश नहीं। शष्ट के साथ उसकी संस्कृति, साहित्य, परम्परा, कला, ऐतिहासिक चेतना - जैसे जो अमर तत्व हैं, वे किसी भी पतन के समय अपने नागरिकों को पुनः सचेत और प्रकृतिस्थ करते हैं और तब पहले से अधिक तीव्रता से वे नागरिक ही अपनी विश्रृंखलता को समाप्त कर एक हो जाते हैं, शष्टमय हो जाते हैं।

मनुष्य मरता है, मगर उसकी परम्परा कभी नहीं मरती; व्यक्ति मरता है, मगर शष्ट नहीं मरता। 'शष्ट' की परम्परा और इतिहास - चेतना ही प्रधान होती है। इतिहास में ऐसा भी हुआ है कि किसी राष्ट्रीय जाति को किसी भौगोलिक सीमा, अर्थात् देश से आक्रमणकारियों ने उखाड़ दिया। मगर अपनी परम्परा और ऐतिहासिक चेतना को लिये वह राष्ट्रीय जाति किसी ऐतिहासिक अवसर का लाभ उठाकर पुनः शष्टमय हो ही जाती है। इस आधार पर कहा जाय, तो जाति, कौम और शष्ट एक ही अर्थ प्रकट करनेवाले शब्द हैं। इन शब्दों का ऐतिहासिक अर्थ है, साम्प्रदायिक नहीं, क्योंकि इन शब्दों के पीछे एक जैसे सांस्कृतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक एकत्व का बोध है।

इसी प्रकार कश्मीर से कन्याकुमारी और कामरुप से कच्छ तक फैले भारतीय शष्ट में नदी, पर्वत, वृक्ष, लता, क्षेत्र इत्यादि के साथ जुड़ा आत्मीयता का सम्बन्ध केवल भौगोलिक ही नहीं, बल्कि वंशपरंपराओं का भी है। फिर ये वंशपरम्पराएँ एक-सी साहित्यिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, नैतिक और ऐतिहासिक विश्वासों से एक-दूसरे से बँधी हैं। आज भारत के किसी एक कोने का निवासी मूलतः किसी अन्य छोर का वंशज है; किसी एक कोने की भाषा बोलनेवाला मूलतः किसी दूसरे ही छोर की जन्मी भाषा बोलता है; सारे तीर्थ, सारी नदियाँ, सारे धाम और सारे यात्रापथ एक-दूसरे के ऐतिहासिक मिलन के साक्षी हैं; सारे वंशों की रंगों में एक ही पारम्परिक रक्त का संचार है। यही कारण है कि भारत एक शष्ट है। साम्प्रदायिक चिढ़ या स्वार्थ के कारण अपनी ही राष्ट्रीयता से इन्कार करनेवाले कुछ लोगों द्वारा बनाया गया पाकिस्तान भी भारत शष्ट का ही एक अंश है। किन्तु, वह मात्र राजनीतिक कारण से अलग है। राष्ट्रीयता का कोई राजनीतिक कारण नहीं होता, बल्कि सांस्कृतिक कारण ही होता है। समस्त सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और न्यायिक कारणों से पाकिस्तान के लोग भारत शष्ट की ही सन्तान हैं। रक्त से, भाषा से, खान-पान, आचार-व्यवहार या नस्ल से पाकिस्तान के लोग भी वही हैं जो भारत के लोग हैं। किसी के धर्मपरिवर्तन से ही नस्ल का परिवर्तन या शष्ट का परिवर्तन नहीं होता। यदि ऐसा होता तो मलय शष्ट में मलय नस्ल या मलय जाति का क्या अर्थ होता? मलय शष्ट में बहुसंख्यक मुसलमान होने पर भी वे अरबी क्यों नहीं हैं? मलयी और ठेठ मलयी परम्परा के ही क्यों हैं?

व्यक्ति के मरने से शष्ट नहीं मरता। व्यक्ति के धर्मपरिवर्तन से राष्ट्रीयता के परिवर्तन की साम्प्रदायिक नारेबाजी तो और भी बड़ी मूर्खता है। अतः नर-नारी के जनमते - मरने

पर भी राष्ट्र अमर है; बल्कि राष्ट्र की जो संस्कृति और राष्ट्रीयता है, वह सारे राष्ट्र के नागरिकों के धर्मपरिवर्तन तक कर लेने पर वही रहती है, बदलती नहीं।

इस तरह उपर्युक्त उदाहरण से आप 'पल्लवन' किस तरह किया जा सकता है यह समझ सकेंगे। 'पल्लवन' के लिए कुछ मूल अवतरणों को यहाँ निम्नांकित दिया गया है, जिनके आधार पर आप अभ्यास करके 'पल्लवन' करना सीख सकेंगे।

❖ बोध प्रश्न :

- निम्न लिखित अवतरणों का पल्लवन कीजिए।
- 1. प्रायश्चित्त से पिछले पाप के प्रति विशक्ति उत्पन्न होती है और आगे के लिए सावधानी। (महात्मा गाँधी)
- 2. क्रोध एक तरह का रोग होता है, जिसे क्षणिक पागलपन भी कह सकते हैं। (महात्मा गाँधी)
- 3. सोने से अंग भरता है, मन नहीं भरता - रंग खुलता है, दिल नहीं खुलता। (राजा शधिकाशमण)
- 4. जब आवै संतोष धन सब धन धूरि समान
- 5. सबै सहायक सबल के, कोऊ न निबल सहाय
- 6. विदेशी भाषा का विद्यार्थी होना बुरा नहीं, पर अपनी भाषा सर्वोपरि है। -महात्मा गाँधी

15.4 शीर्षक २ संक्षेपण

15.4.1 संक्षेपण की परिभाषा :

संक्षेपण में हम किसी लेख, भाषण आदि को इस रूप में छोटा करके लिखते हैं कि उसका केंद्रीय या मूल कथ्य आ जाए तथा गौण बातें निकल जाएँ। अन्वय, भावार्थ, मुख्यार्थ, आलेख से संक्षेपण बिल्कुल भिन्न है। इस परिभाषा के अनुसार, संक्षेपण एक स्वतः पूर्ण रचना है। उसे पढ़ लेने के बाद मूल सन्दर्भ को पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। इसमें हम कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक विचारों, भावों और तथ्यों को प्रस्तुत करते हैं। यह काम सरल नहीं, निरन्तर अभ्यास से इसमें महारथ हाँसिल की जा सकती है।

15.4.2 संक्षेपण के गुण :

संक्षेपण एक प्रकार का मानसिक प्रशिक्षण है, मानसिक व्यायाम भी। उत्कृष्ट संक्षेपण में निम्नांकित गुण होते हैं-

- पूर्णता : संक्षेपण स्वतः पूर्ण होना चाहिए।
- संक्षिप्तता : संक्षेपण को सामान्यतः मूल का तृतीयांश होना चाहिए।
- स्पष्टता : संक्षेपण की अर्थव्यंजना स्पष्ट होनी चाहिए।

- भाषा की स्पष्टता : भाषा सरल और परिष्कृत हो.
- शुद्धता : संक्षेपण में भाव और भाषा की शुद्धता होनी चाहिए.
- प्रवाह और क्रमबद्धता : संक्षेपण में भाव और भाषा का प्रवाह एक आवश्यक गुण है.

15.4.3 संक्षेपण के विषयगत एवम् शैलीगत नियम :

- विषयगत :

यद्यपि संक्षेपण के निश्चित नियम नहीं बनाये जा सकते, तथापि अभ्यास के लिए कुछ सामान्य नियमों का उल्लेख किया जा सकता है. इन्हें विषयगत एवम् शैलीगत इस प्रकार बता सकते हैं.

- मूल अवतरण कम-से-कम तीन बार पढ़कर भावार्थ समझ लेना चाहिए.
- आवश्यक शब्दों, वाक्यों अथवा वाक्यखण्डों को रेखांकित करें.
- आलोचना - प्रत्यालोचना को इसमें स्थान नहीं देना चाहिए.
- विचारों का तादात्म्य बना रहना चाहिए.
- सामान्यतया संक्षेपण मूल सन्दर्भ का एक-तिहाई होना चाहिए.
- संक्षेपण को व्याकरण के सामान्य नियमों के अनुसार एक क्रम से लिखना चाहिए.
- सभी तथ्यों को समेटने की क्षमता हो ऐसा लघु शीर्षक भी अन्त में देना चाहिए.
- शैलीगत :
- संक्षेपण में विशेषणों और क्रियाविशेषणों के लिए स्थान नहीं है. इन्हें निकाल देना चाहिए.
- संक्षेपण की शैली अलंकृत नहीं होना चाहिए.
- अर्थव्यंजना में सहायक शब्दों को ही लेना, रखना चाहिए.
- संक्षेपण की भाषा-शैली व्याकरण के नियमों से नियंत्रित होनी चाहिए.
- संक्षेपण में परोक्ष कथन सर्वत्र अन्य पुरुष में होना चाहिए.
- संक्षेपण में शब्द इकट्ठे, वाक्य छोटे, भाव सरल और शैली आडम्बरहीन होनी चाहिए.
- अप्रचलित शब्दों के स्थान पर प्रचलित और सरल शब्दों का प्रयोग करना चाहिए.
- संक्षेपण की भाषाशैली में साहित्यिक चमत्कार और काव्यात्मक लालित्य लाने का प्रयत्न व्यर्थ है.

15.4.4 संक्षेपण के लिए निर्देश

- संक्षेपण के मूल सन्दर्भ में उदाहरण, दृष्टान्त, उद्धरण और तुलनात्मक विचारों का समावेश नहीं होना चाहिए.
- सामान्यतः इसे भूतकाल और परोक्ष कथन में लिखा जाना चाहिए.
- अन्यपुरुष का प्रयोग होना चाहिए.
- भाषा सरल होना चाहिए, मुहावरे और आलंकारिकता से भरी नहीं.
- मूल तथ्य से असम्बद्ध और अनावश्यक बातों को छाँटकर निकाल देना चाहिए.
- आरंभ अथवा प्रथम वाक्य ऐसा हो, जो मूल विषय को स्पष्ट कर दे. लेकिन इसका अपवाद भी हो सकता है.
- यह निर्दिष्ट शब्द - संख्या में लिखा जाना चाहिए.
- समास, प्रत्यय और कृदन्त द्वारा वाक्यांश या वाक्य एक शब्द या पद के रूप में संक्षिप्त किये जायें.

15.4.5 संक्षेपण के कुछ उदाहरण

उदाहरण - 1

तेनसिंह का साहस देखकर उनके फ्रांसीसी साहब चकित रह गये. अन्त तक वे बहुत थक गये. यहाँ तक कि उनके पैर की दो ऊँगलियाँ मामूली ढंग से जम गयी थीं. कहा जाता है कि उनकी वीरता देखकर भावुक फ्रेंच साहब इतने जोश में आये कि वे तेनसिंह को हार पहनाना चाहते थे; पर वहाँ पुष्प नहीं थे, इसलिए खाने के लिए जो समोसे रखे थे, उनकी माला पहना दी. उक्त अभियान में दो साहब मारे गये, पर उसी साल जाड़ों में जिस अभियान में तेनसिंह ने भाग लिया वे उसमें स्वयं मृत्यु के जबड़ों में जाकर लौट आये. वे कब्र के दक्षिण में जार्ज फेर्ड के साथ को लंग शिकर पर चढ़ रहे थे, जो 19,900 फुट ऊँचा है. 1951 ई. के 29 अक्टूबर को जार्ज फेर्ड के साथ जहाँ से वे जा रहे थे, वह बहुत ढालवाली जगह थी. कुछ बर्फ जमी थी, पर बहुत पतली. ऊपर एक और पहाड़ी थी, जिस पर ढलान और अधिक थी. फेर्ड आगे-आगे थे. तेनसिंह दस कदम पीछे थे और, एक दूसरा शेरपा औदगवा उनसे भी दस कदम पीछे था. एकाएक फेर्ड का पैर फिसल और वे तेनसिंह की ओर चले. तेनसिंह ने उन्हें बचाने की चेष्टा की, पर स्वयं उनके पैर लड़खड़ा गये. (शब्द: 200)

संक्षेपण का प्रारूप :

तेनसिंह साहसी और वीर थे. फ्रांसीसी साहब जार्ज फ्रेंच उनपर मुग्ध थे. उन्होंने आवेश में उनके गले में समोसे की माला पहना दी. 29 अक्टूबर, 1951 ई. को तेनसिंह कोई और शेरपा औदगवा के साथ 19,900 फुट ऊँचे पहाड़ कोलंग के शिखर पर चढ़ ही रहे थे कि फेर्ड का पैर अचानक फिसल. तेनसिंह ने उन्हें बचाने की कोशिश की, लेकिन वे स्वयं लड़खड़ा गये.

तेनसिंह का साहस

टिप्पणी-

❖ बोध प्रश्न :

- रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए :
1. संक्षेपण एक प्रकार का प्रशिक्षण है
2. संक्षेपण स्वतः होना चाहिए.
3. संक्षेपण मे को स्थान नहीं देना चाहिए.
4. संक्षेपण की भाषा-शैली के नियमों से नियंत्रित होनी चाहिए.
5. सामान्यतया संक्षेपण मूल सन्दर्भ का होना चाहिए.

15.7 साइ-बिंदु

उपरोक्त चर्चा और उदाहरणों को देखने के बाद साफ रूप कह सकते हैं कि -

- किसी सुगठित एवं गुम्फित विचार अथवा भाव के विस्तार को 'पल्लवन' कहते हैं अंग्रेजी में इसके लिए 'रुद्धरुद्धुल्लहल्लु शब्द का प्रयोग होता है.
- हिन्दी में इसे लघु निबन्ध भी कहते हैं.
- पल्लवन 'गागर' में 'सागर' की तरह कम शब्दों में बहुत कुछ कह देता है.

- पल्लवन के लिए मूल अवतरण के वाक्य, सूक्ति, लोकोक्ति अथवा कहावत को ध्यानपूर्वक पढ़कर, उनके मूल के भाव को अच्छी तरह समझकर विचारों को सम्प्रेषित करना होता है.
- संक्षेपण में हम किसी लेख, भाषण आदि को इस रूप में छोटा करके लिखते हैं, जिसमें उनका मूल या केन्द्रीय क्तिबाह्य निकलकर आता है.
- संक्षेपण के विषयगत एवम् शैलीगत नियम कुछ नियम हैं जिसको ध्यान में रखना चाहिए.
- संक्षेपण स्वतः पूर्ण होना, मूल का तृतीयांश भाग, अर्थव्यंजना स्पष्ट, भाषा सरल और परिष्कृत हो.

1.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- विस्तृत रूप से उत्तर दिये .

1. “हिंसा बुरी चीज है, पर दासता उससे भी बुरी है” (जवाहरलाल नेहरू) उपर्युक्त अवतरण का पल्लवन कीजिए.
2. 'थोथा चने बाजे घना' इस अवतरण का पल्लवन कीजिए.
3. 'सबै सहायक सबल के, कोऊ न निबल सहाय' इस पंक्तिका पल्लवन कीजिए.
4. संक्षेपण लेखन के विषयगत नियम बताईए.

- टिप्पणि लिखिए

नोट : कोई भी उद्धरण, अवतरण, कहावत, काव्य पंक्ति, सूक्ति इसमें पूछी जा सकती है.
उदाहरण

1. अजगर करे न चाकरी, पंठी करे न काम.

दास मलूका कह गए, सबके दाता राम.

2. देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं.

इह भरोसे भाग्य के दुःख भोग पछताते नहीं.

3. संक्षेपण के शैलीगत नियम

4. संक्षेपण के गुण

- वस्तुनिष्ठ प्रश्न (वैकल्पिक, जोड़ों का सुमेल, रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए.)

1. पल्लवन में..... का ही विस्तार होता है. (विज्ञापन, पंक्ति, मूलकथ्य)
2. पल्लवन में आदि आ सकते हैं. (गज़ल, उदाहरण, श्लोक)
3. संक्षेपण में होनी चाहिए. (पूर्णता, अधूरापन, विस्तृतिकरण)
4. संक्षेपण में भाव तथा भाषा की जजजजज होनी चाहिए. (शुद्धता, पूर्ति, क्लृप्ता)

5. संक्षेपण में भाव और भाषा का प्रवाह जजजजज होना चाहिए. (क्रमबद्ध, निर्दिष्ट, सूचित)

● सही-गलत की पहचान :

1. पल्लवन छोटे वाक्य में ही होना चाहिए.
2. पल्लवन में आद्यान्त सहज प्रवाह होना चाहिए.
3. पल्लवन में मूल कथ्य का विस्तार नहीं करना चाहिए.
4. पल्लवन सामग्री सुगठित संयोजन को बनना चाहिए.
5. संक्षिप्तता संक्षेपण का प्रधान गुण नहीं है.

● जोड़ों का सुमेल

- | | | |
|----|----------------|---------------------------------|
| A. | संक्षेपण | (1) पल्लवन |
| B. | पल्लवन | (2) मूल कथ्य का विस्तार |
| C. | बड़े पैरेग्राफ | (3) प्रवाहपूर्ण संक्षिप्त संकलन |
| छ. | संक्षिप्तता | (4) संक्षेपण |
| | | (5) कहानी |

15.6 उपयोगी पाठ्य सामग्री

- विद्यार्थी व्याकरण तथा व्यावहारिक हिन्दी - उर्मिला मैदीरत्ता, जीवन पब्लिशिंग हाऊस प्रा. लि. इन्डिया (शैक्षिक प्रकाशक, मुद्रक, विचारक व निर्वातक) नई दिल्ली
- आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना - डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद, भारती भवन, कदमकुआ, पटना, संस्करण-1991

इकाई 16 : पत्रलेखन : विविध प्रकार

रूपरेखा

- 16.1 उद्देश्य
- 16.2 प्रस्तावना
- 16.3 पत्र-लेखन का स्वरूप और प्रकार
- 16.4 पत्र के आवश्यक अंग
- 16.5 सार बिंदु
- 16.6 परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी
- 16.7 उपयोगी पाठ्य सामग्री उद्देश्य

16.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रों! आप बी.ए. द्वितीय वर्ष में हिन्दी प्रश्नपत्र- 05 के खंड-04 की सोलहवीं इकाई पढ़ने जा रहे हैं। इस इकाई में पत्र-लेखन और उसके प्रकार के बारे में बताया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- इकाई से आप भावनाओं की स्वाभाविक अभिव्यक्तिपत्राचार से सीख सकेंगे.
- इस इकाई से आप विचारों की सुस्पष्टता एवम् संपूर्णता का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे.
- इस इकाई से आप व्यावहारिक लिखित आदान-प्रदान कर सकेंगे.
- पत्र लेखन के आवश्यक निर्देश से आप उत्तम पत्र - लेखन की प्रक्रिया सीख सकेंगे.

16.2 प्रस्तावना

As keys do open chests,

so letters open breasts

- James Howell

उक्त अंग्रेजी विद्वान के कथन का आशय यह है कि जिस प्रकार कुंजियाँ बक्स खोलती हैं, उसी प्रकार पत्र हृदय के विभिन्न पटलों को खोलते हैं। इस इकाई में आप पत्र लेखन के द्वारा किस प्रकार अपनी भावनाओं तथा व्यावहारिक आवश्यकताओं को लिखित रूप से स्वाभाविक अभिव्यक्तिकी जा सकती है इसका अध्ययन एवं अभ्यास करने जा

रहे हैं। पत्र लेखन का अध्ययन एवम् अभ्यास करके आप आज के 'डिजिटलाईजेशन' व 'ऑनस्क्रीन' के मशीनीयुग में भी अपनी भावनाओं, शब्दों व लिखित कौशल के ज़रिए अपना विशिष्ट स्थान व प्रभाव हाँसिल कर सकेंगे।

16.3 पत्रलेखन का स्वरूप एवं प्रकार

आधुनिक युग में पत्रलेखन को कला की संज्ञा दी गयी है। पत्रों में आज कलात्मक अभिव्यक्तियाँ हो रही हैं। साहित्य में भी इनका उपयोग होने लगा है। जिस पत्र में जितनी स्वाभाविकता होगी, वह उतना ही प्रभावकारी होगा। लेखन की अन्य विधाओं से पत्र इस बात में भिन्न हैं कि यह किसी-न-किसी व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से संबोधित करके लिखा जाता है। एक अच्छे पत्र के लिए कलात्मक सौंदर्यबोध और अन्तर्गम्य भावनाओं का अभिव्यंजन आवश्यक है। इससे लेखक के चरित्र, दृष्टिकोण, संस्कार, मानसिक स्थिति, आचरण इत्यादि भी स्पष्ट होते हैं। अतः पत्र लेखन एक प्रकार की कलात्मक अभिव्यक्ति है। लेकिन, इस प्रकार की अभिव्यक्ति व्यावसायिक पत्रों की अपेक्षा सामाजिक तथा साहित्यिक पत्रों में अधिक होती है। पत्र लिखनेवाले का नाम, पता भी रहता है। संबोधन द्वारा इस बात का भी पता लग जाता है कि पत्र - लेखक और संबोधित व्यक्तिके मध्य क्या संबंध है।

16.4 पत्र लेखन के प्रकार

- सामान्यतः पत्र तीन प्रकार के हैं-

- (1) सामाजिक पत्र
- (2) व्यावसायिक पत्र
- (3) सरकारी पत्र

आवश्यकता और स्थिति के अनुसार इन्हें मोटे तौर पर दो वर्गों में भी विभाजित किया गया है।

- (1) पारिवारिक पत्र : इसमें पारिवारिक सदस्यों के पारस्परिक व्यवहार के पत्रों को स्थान है। इन्हें अनौपचारिक या निजी पत्र भी कह सकते हैं।
- (2) औपचारिक पत्र : ये अनेक प्रकार के हो सकते हैं, जैसे- (1) आवेदन पत्र (2) शिकायती पत्र (3) संपादक को पत्र (4) व्यावसायिक-पत्र (5) अवसर विशेष के निमंत्रण पत्र इत्यादि।

★ पत्र लेखन के कुछ आवश्यक निर्देश एवम् विशेषताएँ :

एक अच्छे पत्र की कुछ विशेषताएँ एवम् निर्देश निम्नांकित हैं-

- सरलता: पत्र की भाषा साधारणतः सरल और बोलचाल की होना चाहिए। शब्दों के प्रयोग में सावधानी रखनी चाहिए। ये उपयुक्त सटीक, सरल और मधुर हों। सारी बात सीधे-सादे ढंग से स्पष्ट और प्रत्यक्ष लिखनी चाहिए।

- विचारों की सुस्पष्टता: पत्र में लेखक के विचार सुस्पष्ट और सुलझ होने चाहिए. कहीं भी पांडित्य-प्रदर्शन की चेष्टा नहीं होना चाहिए. बनावटीपन नहीं होना चाहिए.
- संक्षिप्त और सम्पूर्णता : पत्र अधिक लम्बा नहीं होना चाहिए. वह अपने में संपूर्ण और संक्षिप्त हो. उसमें अतिशयोक्ति, वाहजाव और विस्तृत विवरण के लिए स्थान नहीं है . इसके अतिरिक्त, पत्र में एक ही बात को बार-बार दुहराने के दोष से बचना चाहिए. पत्र में मुख्य बातें आरंभ में लिखी जानी चाहिए . सारी बातें एक क्रम में लिखनी चाहिए . इसमें कोई भी आवश्यक तथ्य छूटने न पाय . पत्र लेखन का सारा आशय पाठक के दिमाग पर पूरी तरह बैठ जाना चाहिए . पाठक को किसी प्रकार की उलझन में छोड़ना ठीक नहीं .
- प्रभावात्मक : पत्र का पूरा अंश पढ़नेवाले पर पड़ना चाहिए . आरंभ और अन्त में नम्रता और सौहार्द के भाव होने चाहिए .
- बाहरी सजावट : पत्र की बाहरी सजावट से हमारा तात्पर्य यह है कि उसका कागज सम्भवतः अच्छा-से-अच्छा होना चाहिए, लिखावट सुन्दर, साफ और पुष्ट हो; विशमादि चिह्नों का प्रयोग यथास्थान किया जाय, शीर्षक, तिथि, अभिवादन, अनुच्छेद और अन्त अपने-अपने स्थान पर क्रमानुसार होने चाहिए; पत्र की पंक्तियाँ सटाकर न लिखी जाएँ; विषयवस्तु के अनुपात से पत्र का कागज लम्बा-चौड़ा होना चाहिए .

★ पत्र के आवश्यक अंग :

- (1) भेजनेवाले का पता
- (2) पत्र भेजने की तिथि
- (3) संबोधन और अभिवादन
- (4) विषय सामग्री
- (5) अंतिम भाग
- (6) पत्र पाने वाले का पता

पत्र लेखन में संबोधन, अभिवादन तथा पत्र के अंत में लिखे जानेवाले शब्दों के कुछ

उदाहरण:

अ.नं.	संबंध	संबोधन	अभिवादन	अंत में लिखे जाने वाले शब्द (अभिनिवेदन)
1.	अपने से बड़ों को	पूज्य/पूज्या, पूजनीय, आदर्शनीय, मान्यवर, जूज्यवर, श्रद्धैय-माननीय .	चरण स्पर्श, सादर- प्रणाम, नमस्कार .	शब्द (अभिनिवेदन) आपका प्रिय पुत्र, भाई, प्रिय, पुत्री, आपका आज्ञाकारी शिष्य, भवदीय, कृपाकांक्षी, विनीत ५
2.	बराबर वालों/ मित्रों को	प्रिय मित्र, प्रियवर, बंधु, प्रिय बहन .	नमस्ते, नमस्कार, सप्रेम, नमस्ते.	तुम्हारा / आपका मित्र, अनुज, भाई, तुम्हारी प्रिय सखी, बहन, आपका अपना.
3.	अपने से छोटों को	प्रिय, चिरंजीव, आयुष्मान, आयुष्मती	चिरंजीव रहो, शुभाशीष, आशीर्वाद, प्रसन्न रहो .	शुभचिंतक, शुभाकांक्षी,
शुभेच्छु, हितैषी .				

पत्रों के कुछ उदाहरण

(1) निमंत्रण पत्र

विवाह का निमंत्रण

मान्यवर,

मेरी पुत्री आयुष्मती सीमा का शुभ विवाह आगश निवासी श्री अमरचंद के ज्येष्ठ पुत्र चि. महेश के साथ होना निश्चित हुआ है.

आपसे सानुमय निवेदन है कि शुक्रवार 18 फरवरी 2021 को सायं 7.00 बजे मेरे निवास स्थान पर सपरिवार पधारकर कृतार्थ करें और वर-कन्या को आशीर्वाद देने की कृपा करें.

कार्यक्रम

शुक्रवार दिनांक 18 फरवरी 2021 - स्वागत बांशत सांय 7.00 बजे

शनिवार दिनांक 19 फरवरी 2021 - विदाई प्रातः 4.00 बजे

27, वैशाली अपार्टमेंट,

रोहिणी, दिल्ली

दर्शनाभिलाषी

रवि मोहन शर्मा

सेवा में.

श्री/श्रीमती/कुमारी.....

.....

(2) आवेदन-पत्र

सेवा में,

श्रीमान प्रधानाध्यापक,

न्यू हाई स्कूल, दिल्ली

मान्य महोदय,

आपके द्वारा शिक्षक की शीतस्थान की पूर्ति हेतु समाचार पत्र में दी गई विज्ञप्ति के अनुसार मैं अपना आवेदन पत्र दे रहा हूँ। मेरा व्यक्तिगत तथा शैक्षिक परीचय निम्नांकित है-

पद का नाम : प्राथमिक शिक्षक पद नियुक्ति
नाम : रविकांत वर्मा
पिता का नाम : श्री सूर्यकांत वर्मा
जन्मतिथि : 25 अक्टूबर 1981
वर्तमान पता : सी-152, सुदर्शन पार्क, नई दिल्ली.
स्थायि पता : वही

शैक्षणिक योग्यताएँ :

परीक्षा	प्राप्तांक	वर्ष	बोर्ड/वि.वि.	विषय
सेकेंडरी परीक्षा	76%			
	1996	के. मा. शिक्षा बोर्ड (ए.क्र.स.ध.) नई दिल्ली	विषय अंग्रेजी, हिन्दी, गणित, विज्ञान	
सीनियर सेकेंडरी परीक्षा	80%	1998	के. मा. शिक्षा बोर्ड	अंग्रेजी, हिन्दी, इतिहास
बी. ए. (हिन्दी)	62%	2001	दिल्ली विश्वविद्यालय	हिन्दी, संस्कृत

कार्यानुभव :

गत एक वर्ष से जीवनदीप प्राथमिक विद्यालय, न्यू दिल्ली में सेवा दे रहा हूँ. प्रमाण- पत्र संलग्न है . मैं प्रमाणित करता हूँ कि जो सूचनाएँ सि आवेदन-पत्र में दी गई हैं, वे पूर्णतः सत्य हैं.

आशा करता हूँ, मेरी योग्यता को लक्ष कर मुझे सेवा का अवसर प्रदान करेंगे.

आवेदक के हस्ताक्षर

दिनांक :.....

संलग्न: (1) सभी अर्हताओं के प्रमाणपत्रों की फोटोस्टेट प्रतियुक्त

(3) शिकायती पत्र

अपने क्षेत्र के पेयजल की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए जिला स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी,

अहमदाबाद जिला,

अहमदाबाद।

मान्यवर,

मैं आपका ध्यान में पेयज की अपर्याप्त जल आपूर्ति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ.

इस क्षेत्र में प्रातःकाल केवल आधे घण्टे ही नलों में पानी आता है . ऊपर की मंजिलों में तो पानी चढ़ता ही नहीं, क्योंकि पानी का दबाव बहुत कम होता है . सायंकाल भी पेयजल की आपूर्ति बहुत ही अनियमित है . इस स्थिति से यहाँ के नागरिक अत्यंत परेशान हैं. स्थानीय अधिकारियों का ध्यान इस समस्या की ओर कई बार दिलाया गया, पर स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ .

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि इस क्षेत्र में पेयजल की समुचित व्यवस्था कराने हेतु उचित कदम उठाने की कृपा करें . हम आपके सदा आभारी रहेंगे .

धन्यवाद सहित,

भवदीय

सौरभ पटेल,

सचिव,

.....नगर निवासी संघ

दिनांक.....

संपादक को पत्र

श्रद्धा पटेल,

नरोडा, अमहदाबाद,

दिनांक : 12 मार्च 2021

श्रीमान संपादक महोदय,

माया प्रकाशन कार्यालय,

कानपुर,

मान्यवर महोदय,

सेवा में एक कहानी प्रकाशनार्थ भेज रहा हूँ . आशा है आप अपने माया प्रकाशन के अगले अंक में इसे प्रकाशित कर देंगे . अगर कारणवसात् पसन्द न आए तो शीघ्र ही वापस करने की कृपा करेंगे .

प्रतीक्षा में.....

विनीत,

श्रद्धा पटेल

अहमदाबाद

बधाई - पत्र

प्रिय रेणुका,

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम बी.ए. परीक्षा अच्छे अंकों से पास कर गयी हो . तुम्हारी इस शानदार सफलता पर मैं तुम्हें बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि अगली परीक्षाओं में भी तुम्हें इसी प्रकार सफलता मिलती रहेगी. चूँकि तुम परीक्षा में प्रथम आयी हो, इसलिए विश्वविद्यालय की ओर से छात्रवृत्ति और स्वर्णपदक दोनों तुम्हें मिलेंगे. मेरा पूर्ण विश्वास है कि तुम अपनी पढाई जारी रखोगी में नाम लिखाने का प्रबन्ध करोगी . मेरा तो विचार है कि तुम्हें आई. ए. एस. की प्रतियोगिता परीक्षा में भी सम्मिलित होना और एम.ए. चाहिए . भगवान तुम्हारा पथ प्रशस्त करें .

मैं कुशल से हूँ, तुम्हारा कुशल चाहती हूँ .

(पानेवाले का पता)

रेणुका शर्मा,

नंदनवन कॉलोनी, जयपुर

राजस्थान

तुम्हारी,

आशाकुमारी सिन्हा

चरित्र प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के लिए विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए .

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,

वेंकटेश्वर पब्लिक स्कूल,

चेन्नई.

विषय : चरित्र प्रमाण-पत्र हेतु आवेदन .

श्रीमान जी,

सविनय निवेदन है कि मैंने इस वर्ष इस स्कूल से दसवीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण की है. अब मुझे व्यावसायिक पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना है. वहाँ मुझे पिछले विद्यालय का चरित्र प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करना है .

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि मुझे ऐसा चरित्र प्रमाण-पत्र बनाकर देने की कृपा करें जिसमें मेरे व्यवहार एवं खेल संबंधी उपलब्धियाँ उल्लेखित हो . मैं विद्यालय की जूनियर हॉकी टीम का दो वर्ष तक कप्तान रहा मेरे व्यवहार से सभी अध्यापक संतुष्ट रहे हैं .

सधन्यवाद,

आपका आज्ञाकारी शिष्य

शकेश

दिनांक

16.5 सारबिंदु

सरकारी तथा पारिवारिक पत्र को उपर्युक्त पत्रों के उदाहरणों के द्वारा आप अभ्यास करके पत्र लेखन में महारथ हासिल कर सकते हैं.

16.6 परिक्षोपयोगी प्रश्नावली

- रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए.

1. आधुनिक युग में पत्र लेखन कोकी संज्ञा दी गयी है. (कला/ साहित्य)
2. सामान्यतः पत्र.....प्रकार के होते है. (चार/ तीन)
3. पारिवारिक पत्रहै. (औपचारिक / अनौपचारिक)
4. आवेदन पत्रपत्र है. (औपचारिक / अनौपचारिक)
5. संपादन को पत्रपत्र में आता है. (पारिवारिक पत्र/ औपचारिक पत्र)

इकाई 17 : रचनात्मक लेखन

रूपरेखा

- 17.1 उद्देश्य
- 17.2 प्रस्तावना
- 17.3 साइ लेखन
- 17.4 डायरी लेखन
- 17.5 उद्घोषणा लेखन
- 17.6 फीचर लेखन
- 17.7 रिपोर्ताज लेखन
- 17.8 पटकथा लेखन
- 17.9 वेब पोर्टल लेखन
- 17.10 सारबिंदु
- 17.11 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली
- 17.12 उपयोगी पाठ्य सामग्री

17.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रों! आप बी.ए. द्वितीय वर्ष में हिन्दी प्रश्नपत्र- ०५ के खंड-०४ की सत्रहवीं इकाई पढ़ने जा रहे हैं। इस इकाई में रचनात्मक लेखन के बारे में बताया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- रचनात्मक लेखन के अन्तर्गत आप विभिन्न रचनात्मक रचनाओं का लेखन कौशल सीख सकेंगे।
- लेखन, फीचर लेखन, रिपोर्ताज लेखन आदि को सीख सकेंगे।

17.2 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में अध्येता के लेखन कौशल तथा सृजन, विचार की मौलिक अभिव्यक्ति को सुदृढ़ बनाया जायेगा. विविध प्रकार के रचनात्मक लेखनों के द्वारा छात्र इसमें अपनी क्षमतानुसार क्षेत्रविशेष में रोजगार के अवसर भी ढूँढ सकेगा.

17.3 सारलेखन

परिभाषा : किसी गद्यांश के मुख्य विचार या भाव को छोड़े बिना उसका संक्षेप लिखना सार कहा जाता है. किसी लेख, आख्यान, विवरण, पत्र, सूचना आदि में निहित तथ्यों को सरल, सुबोध भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत करना कि मूल उद्घरण की मुख्य बातें उसके एक-तिहाई में आ जाएँ, सार लेखन कहलाता है.

सार- लेखक में अपेक्षित गुण :

कुशाग्र बुद्धि: सार- लेखक की बुद्धि पर्याप्त पैनी होनी चाहिए. उसमें तथ्यों को पढ़ने की क्षमता होना चाहिए.

मन की एकाग्रता : मन को एकाग्र करके ही मूल अवतरण को समझा जा सकता है और उसको हयंगम कर सार लिखा जा सकता है.

समाहार शक्ति: सार-लेखक में 'गागर में सागर' भरने की अद्भुत क्षमता होनी चाहिए.

स्पष्टता : सार-लेखक की अभिव्यक्ति स्पष्ट होनी चाहिए . भावों का प्रवाह बना रहना आवश्यक है.

भाषा पर अधिकार : सार - लेखक का भाषा - ज्ञान, अन्वय सम्बन्धी नियमों की जानकारी होनी चाहिए.

निरंतर अभ्यास : अभ्यास का महत्व सर्वविदित है . बार-बार अभ्यास करने से कुशलता और दक्षता में वृद्धि हो सकती है.

सार कैसे लिखें ? : जिस सामग्री का सार लिखना अपेक्षित है, उसे अत्यंत सावधानीपूर्वक पढ़ना चाहिए और समझने का प्रयत्न करना चाहिए.

पढ़ते समय गद्यांश के केन्द्रीय भाव के निकट पहुँचने का प्रयास करें.

महत्वपूर्ण अंशों और उन शब्द को रेखांकित कीजिए, जिनके आधार पर सार लिखना है.

एक तिहाई सार होना चाहिए

सार के वाक्य छोटे-छोटे तथा भाषा सरल होनी चाहिए.

लिखे गए सार को एक उपयुक्तशीर्षक भी देना चाहिए.

यहाँ सार-लेखन का एक उदाहरण दिया जा रहा है. छात्र इन्हें समझने का प्रयास करें तथा इसके आधार पर अन्य गद्यांश का सार लिखने का अभ्यास करें.

उदाहरण :

गद्यांश :

मानव को मानव के रूप में सम्मानित करके ही हम जातीयता, प्रांतीयता, श्रुद्ध शष्तीयता के संकीर्ण भेदों को तोड़ सकते हैं. आज मानव-मानव से दूर हटता चला जा रहा है. वह भूल चुका है कि देश, धर्म और जाति के भिन्न होते हुए भी हम सर्वप्रथम मानव हैं. हम सब समान हैं तथा सभी की भावनाएँ और लक्ष्य एक ही हैं. आज धर्म, सत्ता, धन आदि का भेद होने से एक मानव दूसरे मानव को मानवी ही नहीं मानता. सत्ताधारी वर्ग दूसरों को कुचलकर सारी-सुख सुविधाओं पर एकाधिकाश कर लेना चाहता है. एक आकाश के नीचे रहनेवाले सभी इंसान एक समान हैं. यथा मानवता का सार है. दया छोड़कर सत्य भी सत्य नहीं है. दया प्रेरित असत्य भी व्यावहारिक सत्य है. दया - धर्म मानवधर्म है.

गद्यांश का शीर्षक : 'मानव-धर्म'

गद्यांश का सारलेखन : देश में व्याप्त जातीयता, प्रांतीयता और श्रुद्ध शष्तीयता के भेदों को मिटाने के लिए मानव-रूप का सम्मान किया जाना चाहिए. आज मानव-मानव के मध्य अनेक विषमताएँ हैं. हमें सभी मनुष्यों को एक समान मानकर दया भावना को अपनाना चाहिए. यही मानव-धर्म है.

17.4 डायरी - लेखन

डायरी लेखन क्या है ?

डायरी को दैनंदिनी भी कहते हैं, क्योंकि इसमें निजी जीवन में घटित होने वाली प्रतिदिन की घटनाओं का लेखा-जोखा होता है. डायरी प्रायः सोने से पूर्व लिखी जाती है. इसमें दिन भर की घटनाओं एवं अनुभवों का वर्णन होता है. कभी-कभी डायरी कुछ अंतराल से भी लिखी जाती है. डायरी में प्रथमतः व्यक्तिगत जानकारी तथा अनुक्रम भी रहता है.

डायरी लेखन के कुछ निर्देश :

- इसमें प्रस्तुत किया गया विवरण संक्षिप्त हो.
- इसमें केवल महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख किया जाए.
- लेखन में सत्यता और ईमानदारी बरतनी चाहिए.
- अनावश्यक वर्णन से बचना चाहिए.
- नवीन जानकारी एवं सूचना का उल्लेख भी किया जाना चाहिए.
- व्यक्ति, स्थान अथवा घटना के प्रति अपनी प्रतिक्रिया तथा टिप्पणी भी डायरी में लिखी जा सकती है.

डायरी लेखन का एक नमूना :

नवीन की डायरी के कुछ पृष्ठ

10 फरवरी, 2021

कल से हरिद्वार में स्काउट - शिबिर लगने वाला है . शिबिर में जाने की खुशी में मैं प्रातः चार बजे ही उठ गया. समय पर तैयार होकर नई दिल्ली स्टेशन जा पहुँचा . वह अन्य सदस्य एवं स्काउट मास्टर मिल गए. सायं ३ बजे हम हरिद्वार जा पहुँचे.

11 फरवरी, 2021

हरिद्वार के स्काउट - शिबिर में सही स्थान पर ठहराया गया है. यहाँ सभी प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं. खाने-पीने की भी उचित व्यवस्था है. रात्रि कैंप - फायर का आयोजन हुआ . इसमें भरपूर मनोरंजन हुआ.

12 फरवरी, 2021

हमारा समाज-सेवा का कार्यक्रम शुरू हो गया. हमें मेले की व्यवस्था में अपना दायित्व निर्वाह के पर्याप्त निर्देश दिए गए हैं. हम प्रयास कर रहे हैं कि उनका सही ढंग से पालन कर सकें.

17 फरवरी, 2021

आज एक सप्ताह के शिबिर का समापन था. यह शिबिर इतना आनंददायक रहा कि समय बीतने का कुछ पता ही नहीं चला. यहाँ अनेक नए मित्र बने. यह शिबिर राष्ट्रीय एकता का जीता-जागता नमूना था.

अभ्यास

इसी रूपरेखा के आधार पर आप भी अपने एक सप्ताह, माह अथवा वार्षिक डायरी लेखन का अभ्यास कर सकते हैं.

17.5 उद्घोषणा लेखन

उद्घोषणा लेखन से तात्पर्य :

- उद्घोषणा को अंग्रेजी में Announcement कहा जाता है. विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों में उद्घोषणा की जाती है. विभिन्न कार्यक्रमों में उद्घोषक उद्घोषणा करने का काम करता है. उद्घोषणा करनेवाले को उद्घोषक कहा जाता है.

उद्घोषणा लेखन का स्वरूप एवम् आवश्यक निर्देश :

- उद्घोषणा एक प्रकार की कला है. इसकी प्रकृति इकाई 17 : रचनात्मक लेखन इकाई की रूपरेखा

- उद्घोषणा एक प्रकार की कला है। इसकी प्रकृति सृजनात्मक होती है। विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों की प्रस्तुति एवं प्रसारण प्रदर्शनकारी कला है और उद्घोषणा का संबंध इस प्रदर्शनकारी कला से है।
- उद्घोषणा का संबंध प्रमुख रूप से आकाशवाणी से है।
- दूरदर्शन में सीमित रूप में उद्घोषणाएँ होती हैं। दूरदर्शन दृश्य-श्रव्य माध्यम होने के कारण दूरदर्शन के कार्यक्रमों की एक अन्य सूचनाएँ दृश्य शब्दों के माध्यम से मिलती हैं।
- अच्छे-अच्छे कार्यक्रम जो अत्यंत परिश्रमपूर्वक तैयार किया गया हो, वह प्रस्तुतकर्ता उद्घोषक के निर्जीव एवं शुष्क उद्घोषक के हाथों पड़कर वही कार्यक्रम जीवंत और सश्व हो जाता है।
- उद्घोषक प्रस्तुत होने वाले कार्यक्रमों की प्रास्ताविकी रखता है और श्रोता तथा दर्शक को उस कार्यक्रम के स्थापना की मनोभूमिका तैयार करता है।
- विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों की प्रस्तुति एवं प्रसारण प्रदर्शनकारी कला है और उद्घोषणा का संबंध इस प्रदर्शनकारी कला से है।
- पहले रेडियो के कार्यक्रमों का सजीव प्रसारण होता था . अब कार्यक्रमों को स्टूडियो में टेप कर लिया जाता है और पूर्व निर्धारित समय सारिणी के अनुसार उनका प्रसारण होता है।
- उद्घोषक इन कार्यक्रमों को श्रृंखलाबद्ध रूप में प्रस्तुत करता है। उसकी आवाज कई लोग एख साथ सुनते हैं। अतः उसे अपनी आवाज़ एवम् शब्द के प्रति अत्यंत सचेत रहना चाहिए। इसके लिए उद्घोषणा का आलेख पहले से तैयार कर लेना अच्छा रहता है।
- उद्घोषणा आलेख लिखने के लिए रेडियो के उपयुक्त भाषा को सदैव दृष्टिगत रखना चाहिए।
- इस प्रकार चुने जाने चाहिए कि उनके पढ़ने पर वह लिखा हुआ नहीं बल्कि बोला हुआ प्रतीत हो। मुद्रित भाषा और मौखिक भाषा का अंतर ध्यान में रखना उचित होता है। उद्घोषणा की भाषा कहीं से भी किताबी भाषा नहीं लगनी चाहिए।
- रोचकता, संक्षिप्तता और नवीनता उद्घोषणा का आधारभूत और अनिवार्य गुण है।
- शुष्क एवं नीरस उद्घोषणा से श्रोता ऊ बकर न केवल उद्घोषणा सुनना बंद करेगा बल्कि आगे के कार्यक्रम को भी नहीं सुनेगा और रेडियो बंदकर देगा।
- थोड़े में बहुत कुछ कहने की क्षमता उद्घोषक में होनी चाहिए।
- उद्घोषणा तैयार करने में उद्घोषक पूर्णतः सुक्त होता है। अपने विवेक, ज्ञान और वाग्मिता का प्रयोग करते हुए अच्छी उद्घोषणा लिखी जा सकती है। उद्घोषणा में नवीनता लाने के प्रति सदैव सचोटे रहना चाहिए।

- उद्घोषणा में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उद्घोषणा लेखक को उद्घोषणा वाचन करते समय किसी भी परिवर्तन के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए.

17.6 फीचर लेखन

फीचर लेखन से तात्पर्य.

फीचर आधुनिक पत्रकारिता की नवीनतम विद्या है. 'फीचर' शब्द लैटिन के Feature से रुपान्तरित किया गया है जिसके कई अर्थ हैं. जैसे-आँख, कान, मुँह, आकृति, रुपरेखा इत्यादि. जिस प्रकार किसी वस्तु को उसके स्वरूप से, व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व एवं चेहरे से पहचाना जाता है उसी प्रकार आजकल समाचार पत्र की पहचान उसमें प्रकाशित फीचर से होने लगी है. फीचर के बिना समाचार-पत्र निष्प्राण हो जाता है.

डॉ. संजीव भानोवत ने फीचर को समझाते हे कहा है कि- "फीचर वस्तुतः भावनाओं का सरस, मधुर और अनुभूतिपूर्ण वर्णन है. फीचर लेखक गौण है, यह एक माध्यम है जो फीचर द्वाश पाठकों की जिज्ञासा, उत्सुकता और उत्कंठा को शांत करता हुआ समाज की विभिन्न प्रवृत्तियों का आकलन करता है. इस प्रकार फीचर में सामयिक तथ्यों का यथेष्ट समावेश हो जाता है साथ ही साथ वह अतीत की घटनाओं तथा भविष्य की संभावनाओं से भी जुड़ा है. समय की धडकन इसमें गूँजती हैं.

फीचर लेखन के आवश्यक निर्देश :

- समाचार किसी भी समाचार का मनोरंजक, श्रमणीय व काल्पनिक पक्ष को प्रतिपादित करता है.
- फीचर सौंदर्य से परिपूर्ण होता है तथा इसमें कल्पना के लिए पर्याप्त स्थान रहता है .
- फीचर का प्रभाव दीर्घकालिक होता फीचर लेखक अपनी कल्पनाशक्ति, लेखन कौशल के बल पर समाचारिता की तथ्यपरकता को ग्रहण कर पाठकों के समक्ष एक ऐसी लघुकथा को प्रस्तुत करता है जिसमें पाठक प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता जो पाठकों का मनोरंजन भी करती है.
- फीचर समाचार के सभी पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डालता है .
- फीचर का मूल उद्देश्य किसी भी घटना या विषय के तथ्यों व सत्यों को पाठक को समझाना होता है . परंतु फीचर में इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है कि लेख कहीं भी बोझिल न होने पाए और रोचकता सदैव बनी रहे.

- फीचर लिखते समय लेखक अपने ज्ञान और पांडित्य का प्रदर्शन न करके पाठकों के बौद्धिक स्तर को दृष्टिगत रखते हुए ऐसे विचार बिंदुओं, शब्दों व मानव जीवन के मार्मिक प्रसंगों का चयन करता है जो तरोताजा हो.
- फीचर लिखने के लिए लेखक को दिल व दिमाग दोनों का इस्तेमाल करना होता है.
- फीचर लेखक के समक्ष सामग्री स्रोत और उसके संकलन की बड़ी समस्या रहती है. यह सामग्री परिवेश में घटित घटनाओं, व्यक्ति या स्थान से ढूँढ लेता है. घटनास्थल का प्रत्यक्ष दर्शन, विषयवस्तु से संबंधित व्यक्तियों से बातचीत, पुस्तकों का संदर्भ, रिपोर्ट्स, दस्तावेज, साक्षात्कार आदि किसी फीचर लेखक के लिए महत्वपूर्ण सामग्री है.
- संरचना की दृष्टि से फीचर को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है- शीर्षक, आमुख, विवरण, उपसंहार, शीर्षक प्रतीकात्मक, उद्घरणात्मक, सांकेतिक, नवीन, संक्षिप्त होना चाहिए. फीचर का आमुख भी जिज्ञासावर्धक होना चाहिए. आमुख में कौन, क्या, कब, कहाँ और क्यों की प्रारंभिक जिज्ञासा का मूल निहित होना चाहिए. फीचर की मूल संवेदना को ध्यान में रखते हुए लेखक फीचर के इस भाग में अपने संदर्भ सामग्री से ज्ञात जानकारी का क्रमशः विवर्चन करता है और उसे अपनी भाषिक चतुर्दाई से विषयवस्तु का संवेदनात्मक विकास करता है. उपसंहार फीचर का अंतिम भाग है. इसमें फीचर लेखक अपने विषय सामग्री का संक्षेप में समाहार प्रस्तुत करता है.

फीचर के प्रकार :

आज भारतीय समाचार पत्रों में फीचर लेखन तेजी से लोकप्रिय हो रहा है. पाठकों का रुझाव भी इस ओर बढ़ा है. कुछ बड़े समाचार पत्र-पत्रिकाओं में फीचर प्रकाशित हो रहे हैं. वर्तमान समय में मानव जीवन के अधिकाधिक पहलुओं पर फीचर लिखा जा रहा है. इस दृष्टि से फीचर के विषयानुसार प्रकार हैं-समाचार फीचर, व्यक्तिगत संबंधी फीचर, ऐतिहासिक फीचर, पौराणिक फीचर, मानवीय रुचिपटक फीचर, यात्रा फीचर, कुतूहल शांत करनेवाला फीचर, विज्ञान फीचर, खेलकूद फीचर, व्यंग्यात्मक फीचर, चित्रात्मक फीचर, व्याख्यात्मक फीचर, स्वच्छंद वर्ग के फीचर, पारिवारिक फीचर इत्यादि.

17.7 रिपोर्टाज लेखन

रिपोर्टाज से तात्पर्य :

रिपोर्टाज का संबंध Reporter से है. रिपोर्टर या रिपोर्ट पत्रकारिता का अत्यंत महत्वपूर्ण शब्द है. यह एक विद्या है. इस विद्या का जन्म सबसे पहले रुस तथा फ्रांस में हुआ है. रिपोर्टाज रिपोर्ट मात्र नहीं है, इसमें लेखक का हृदय, उसकी अनुभूतियाँ, पैनी

निगाहें, संवेदनशील व्यक्तित्व तथा अंतः सौंदर्य निखर उठते हैं। अतः जिस व्यक्ति में उपर्युक्त उपादान नहीं होते, वह सिर्फ संवाददाता हो सकता है, रिपोर्ताज का लेखक नहीं। रिपोर्ताज पत्रकारिता में नये प्रकार के लेखक के लिए प्रचलित शब्द है। रिपोर्ताज के लिए दूसरा शब्द रिपोर्ट है। लेकिन दोनों में मौलिक अन्तर है। दोनों एक नहीं है। रिपोर्ताज का संबंध इसी रिपोर्ट से है पर इनके लेखन में अंतर है। किसी घटना के तथ्यों का संकलन वस्तुनिष्ठ विवेचन और विश्लेषण रिपोर्ट कहलाता है। इसमें घटना के कारणों और संभावित परिणामों का भी आकलन किया जाता है। रिपोर्ताज रिपोर्ट का साहित्यिक रूप है। यह घटना का वस्तुनिष्ठ नहीं बल्कि आत्मनिष्ठ एवं भावात्मक चित्रण है। किसी सभा सम्मेलन, खेल, घटना, अधिवेशन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, दैवीय आपदा आदि वास्तविक घटना का रोचक और भावनात्मक चित्रण है रिपोर्ट में लेखक के व्यक्तित्व की कोई झलक या प्रभाव नहीं होता है। रिपोर्ट तथा रिपोर्ताज दोनों तथ्यों पर आधारित होते हैं। रिपोर्ट के कलात्मक एवं साहित्यिक रूप को रिपोर्ताज कहते हैं।

रिपोर्ताज लेखन के आवश्यक निर्देश :

- मनुष्य के प्रति सहज, सुलभ आकर्षण तथा पीडित मानवता के प्रति गहरी संवेदना की अभिव्यक्ति रिपोर्ताज का प्रधान कार्य है।
- रिपोर्ताज में प्रभावपूर्ण चित्रों के रूप में छोटी-छोटी घटनाओं को प्रस्तुत किया जाता है।
- रिपोर्ताज विभिन्न शैलियों में लिखा जा सकता है।
- निबंध, पत्र, डायरी शैली में भी रिपोर्ताज लिखे गए हैं। लेखक जिस शैली को अपनी अभिव्यक्तिका समर्थ माध्यम मानता है और आत्मीयता से लिख सकता है, उसे अपना लेता है।
- रिपोर्ताज के आकार की कोई सीमा नहीं है। गीत की तरह छोटा भी हो सकता और कहानी उपन्यास की तरह बड़ा भी। रिपोर्ताज में कहानी की तरह कथा, चरित्र, वातावरण, उतार-चढ़ाव आदि का समावेश होता है।
- हिन्दी में शिवदान सिंह चौहान को प्रथम रिपोर्ताज लेखक माना जाता है। 'लक्ष्मीपुरा' हिन्दी का पहला रिपोर्ताज है।
- मीडिया के लिए इस विद्या में बहुत सारी संभावनाएँ हैं।
- इसका कथातत्व श्रोताओं को बांधता है और नाटकीयता, रोचकता, उत्सुकता पैदा करता है।
- इसमें कल्पनाप्रसूत अभिव्यंजना होती है, परंतु तथ्यों पर आधारित होने के कारण यह प्रामाणिक रिपोर्ट भी है।
- वैसे देखा जाए तो रिपोर्ताज लेखक की अपनी प्रविधि तथा विशेष तकनीक होती है।
- सत्य घटना को ही प्रमुख वर्ण्य विषय बनाकर रिपोर्ताज लिखा जाता है।

- लेकिन जहाँ वर्णन संवेदनशीलता को खोकर सिर्फ तथ्य या विवरण देने लगा कि वहाँ रिपोर्ताज की कला क्षीण हुई अतः जीवंत ऐतिहासिक तथ्य के साथ अनुभूत सत्य को संवेदनशील कथ्य में रूपांतरित करना ही असली रिपोर्ताज का लक्षण है।

17.8 पटकथा लेखन

पटकथा लेखन से तात्पर्य :

किसी कहानी को उसकी मूल स्थिति के आधार पर फिल्मांकित नहीं किया जा सकता। कहानी को दृश्य-श्रव्य माध्यम से अभिव्यक्त करने के लिए पटकथा लिखी जाती है। पटकथा लिखने के लिए मूल कथा तथा संवादों में यथोचित परिवर्तन करने पड़ते हैं। इसके अतिरिक्त कथा या कहानी के दृश्यों को फिल्मांकित करने के लिए विभिन्न लोकेशनों, कोणों की योजना भी पटकथा में शामिल होती है। कहानी का दृश्य विभाजन, कैमरा का स्थान तथा कोण, कलाकारों की भूमिका, उनकी वेशभूषा, हाव-भाव तथा संवादों का विस्तृत ब्यौरा पटकथा कहलाती है। फिल्म निर्माण के दौरान पटकथा की भूमिका एक समन्वयक के समान होती है। दृश्यों का पूरा विश्लेषण होने से फिल्म निर्माण से जुड़े अनेक व्यक्ति जैसे कैमरामैन, साउंड रिकार्डिस्ट, मैकअपमैन, सैट डिजाइनर, अभिनेता-अभिनेत्री आदि को पटकथा से अपने-अपने कार्यों की पूर्ण जानकारी मिल जाती है।

पटकथा लेखन की प्रविधि :

दृश्य श्रव्य माध्यम के लिए पटकथा लिखने के कई तरीके हो सकते हैं। यहाँ फिल्म के लिए पटकथा लिखने की प्रविधि के कुछ आवश्यक निर्देश देखे जा सकते हैं-

- सबसे पहले कहानी की विस्तृत रूपरेखा तैयार करके निर्माता, निर्देशक को सुनाया जाता है। पसंद आने पर उसे कलाकारों को सुनाया जाता है और उसकी स्वीकृति मिल जाने पर पटकथा तैयार की जाती है।
- पटकथा लेखन की दूसरी विधि यह भी है कि निर्माता, निर्देशक, कहानीकार को आइडिया या थीम दे देते हैं। पसंद आने पर फिर वही कलाकार की प्रक्रिया दोहराई जाती है।
- तीसरी विधि यह होती है कि कहानीकार के पास पहले से ही कहानी की रूपरेखा तैयार होती है। उसे सुनकर निर्माता-निर्देशक उसे पसंद करते हैं, तो कलाकारों को सुनाकर उनकी सहमति पाकर उसे खरीद लिया जाता है। फिर आवश्यक परिवर्तन (अनिवार्य) करके उसकी पटकथा तैयार की जाती है।
- एक अच्छी फिल्म बनाने में पटकथा लेखक की काबिलियत महत्वपूर्ण होती है, इसीसे फिल्म सफल या असफल होगी यह पहले से ही अंदाजा लगा लिया जाता है।

- पटकथा लेखन की प्रविधि में कथा के मूल विचार से प्रारंभ करके संपूर्ण कथा को अत्यंत संक्षिप्त रूप से लिखी जाती है। इसमें कर्ता के प्रमुख बिंदुओं का जिक्र कर दिया जाता है।
- अगले चरण में मूल कथा को कथात्मक रूपरेखा में विकसित किया जाता है जिसमें अन्य व्यौश्यों को भी सम्मिलित किया जाता है।
- कथानक का क्रमशः विकास चित्रित किया जाता है। इसे दृश्य रूपरेखा कहा जाता है। इसमें कथादृश्य-प्रतिदृश्य के रूप में लिखी जाती है। इसमें लेखक को दृश्य संगीत स्थापित करने में सुविधा हो जाती है। फिर तैयार पटकथा का पहला प्रारूप लिखा जाता है और फिर अपेक्षित परिवर्तनों के पश्चात् अंतिम प्रारूप तैयार होता है। इससे कथा के साथ-साथ कैमरा, ध्वनि, अभिनय आदि को भी पूर्ण निर्देश होते हैं।
- पटकथा में कथा का विकास तीन चरणों में होता है- द्वन्द्व विकास - चरम सीमा - कथा का अंत।
- पटकथा लेखन के लिए आवश्यक निर्देश :
- पटकथा लेखक के पास पर्याप्त शब्द - भण्डार होना चाहिए। शब्दों के सार्थक प्रयोग की समझ उपेक्षित है।
- संबंधित मीडिया एवं उसकी तकनीक से भलीभाँति परिचित होना चाहिए।
- पटकथा लेखन की मूल इकाई दृश्य है। दृश्य के माध्यम से कथा को विकसित करने की क्षमता होनी चाहिए। दृश्य प्रस्तुति के विविध ढंग से अवगत होना आवश्यक है।
- दृश्य, घटना और संवाद-पटकथा के मूल तत्व हैं। पटकथा तैयार करते समय चुनी हुई कहानी को संपूर्ण रूप से घटना और संवाद में ढालना पड़ता है। वर्णन के जितने भी बिंदु होते हैं, उन्हें पटकथा में ढालते समय उसका पल्लवन कर दृश्य में बदल दिया जाता है।
- पटकथा लेखक के सामने सबसे बड़ी चुनौती फिल्म के अनुकूल कथानक चयन करने की है। नाटकीय कथा सर्वाधिक उपयुक्त रहती है।
- नाटकीय कथानक के चयन के बाद उसे पटकथा के शिल्प में ढालने की आवश्यकता होती है। इसके कुछ निश्चित सोपान-आरंभ, कार्यविकास, चरमसीमा और अंत आदि कार्यावस्थाएँ होती हैं, और उनके अनुसार कथानक का विकास किया जाता है।
- प्रथम भाग में परिस्थितियों और पात्रों की मनःस्थिति का चित्रण, दूसरे भाग में संघर्ष के चित्रण से कथानक का विकास और तीसरे भाग में कथा को चरम अवस्था में पहुँचाकर समाधान प्रस्तुत कर दिया जाता है।
- पटकथा का शिल्पविधान इस चरमसीमा और अंत पर ही केन्द्रित होता है।

- इसी आधार पर पटकथा लेखन की प्रविधि बनती है.

17.9 वेब पोर्टल लेखन

वेब पोर्टल से तात्पर्य :

20वीं शदी के अंतिम दशक के साथ ही सूचना क्रांति ने एक अग्रगामी कदम रख दिया- इंटरनेट. आज के इस सूचना प्रवाही युग का सर्वाधिक तेज माध्यम इंटरनेट है, क्योंकि इसने समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविज़न आदि की क्षमताओं से युक्त एक नई विधा 'वेब पत्रकारिता' आविष्कृत की है. यह एक ऐसी प्रक्रिया से संपन्न माध्यम है जिसके द्वारा बिना सैन्य सामग्री के ही विश्व-विजय प्राप्त की जा सकती है. इलाक़्तायी संचार - व्यवस्था से यह सर्वाधिक विस्मयकारी, सूक्ष्म और तीव्र सूचना संवाहक है. इसे 'ऑनलाईन पत्रकारिता' अथवा 'ऑनलाईन मीडिया' भी कहा जा सकता है. ख़ूब यानी वर्ल्ड वाइड वेब एक प्रकार का डाटाबेस है . जो विश्व भर में फैला हुआ है. यह विश्वभर में सूचनाएँ प्रदान करने के साथ-साथ विभिन्न विषयों पर सूचनाएँ वेब पेज या वेब साईट जिसे हम 'वेब पोर्टल' कहते है उसमें स्टोर करके रखता है . प्रत्येक वेब पोर्टल का अलग नाम होता है. इसका आरंभ 1989 में जेनेवा मे प्रोजेक्ट के रुप में हुआ था, पर बाद में 1994 में यूरोपीयन न्यूक्लियर रिसर्च (ERN) (Centre for European Reserch in Nuclear) और रुरुज़ के एक समझौते में वेब के विकास के लिए ख़ूब कंसोर्टियम की स्थापना की गई.

वेब पोर्टल : संकलन, लेखन एवं संपादन के लिए आवश्यक निर्देश :

- सूचनाओं को विश्व में फैलाने का काम करनेवाले इस माध्यम में जिन संसाधनों पर आधार रखा जाता है उनमें मुख्य संकलन एवं संपादन विभाग है. सभी माध्यमों में समाचारों को पहुँचाने के लिए कई स्तरों पर काम करना पड़ता है . काम करने के कई डेस्क बेन होते हैं. जैसे- अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, खेल, वाणिज्य, मनोरंजन, मनोरंजन कला एवं साहित्य आदि. इन डेस्कों के लिए ख़बरों को इकट्ठा करने का काम संवाददाताओं के जिम्मे होता है.
- वेब पोर्टल के लिए ख़बर तैयार करते वक्त कई बातों का ध्यान रखना पड़ता है . जैसे कि वाक्य छोटा हो, भाषा सरल एवं स्पष्ट हो, ख़बरों की लंबाई छोटी हो एवं शीर्षक आकर्षक हो .
- डेस्क पर आई सभी ख़बरों को 'रिचेक' किया जाता है, उनकी हैडिंग सुधारी जाती है तथा ख़बरों को फिर से संपादित किया जाता है.
- वेब पोर्टल के लिए संपादकीय कक्ष अधिक सक्रिय रहता है. संपादकीय कक्ष में कार्यरत उप संपादक उस ख़बर की महता को ध्यान में रखते हुए और बिना वक्त

व्यर्थ किए साइट पर उक्तखबर को फ्लैश कर देते हैं। फिर तेजी से उस खबर को संपादित कर प्राथमिकता तय करते हैं और उसे ऑनलाइन कर देते हैं।

- वेब पोर्टल में समाचार संपादन का क्षेत्र निर्धारित करने के बाद उस क्षेत्र विशेष से एख पत्रकार एक खास विषयबिन्दु का चयन करता है जिससे आगे चलकर रचना - विशेष का सृजन होता है। राजनीतिक, सामयिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि विषयबिंदु हो सकते हैं।
- क्षेत्र के बाद स्टोरी तय करने में विषय सिद्धि होनी चाहिए। लीक से हटकर रोचक और कौतूहल, उत्सुकता आश्चर्य पैदा करनेवाली स्टोरी होनी चाहिए।
- संपादक के पास विचारपूर्ण, सारगर्भित, उद्देश्यपूर्ण एवं साथ ही विस्तृत ज्ञान की आवश्यकतानुसार अपेक्षा रहती है।
- शीर्षक की अहमियत खास रहती है।
- एस.एम.एस. सेवा वेब पोर्टल की सबसे प्रसिद्ध सेवा है। ब्रेकिंग न्यूज़ स्टोक, ऐक्सचेंज की खबरें, कंपनी संबंधी समाचार, मौसम की जानकारी आदि का एस. एम. एस. भेजा जाता है।
- वेब पोर्टल के लिए कुछ कानून भी बने हैं जिनका पालन और जानकारी इस क्षेत्र के विशेषज्ञ को होनी आवश्यक है।
- सूचना प्रौद्योगिकी कानून २००० के तीसरे अध्याय में ई-गवर्नेंस के लिए बनाए गए नियमों का उल्लेख है। इसके अनुसार विभिन्न आदेश इलेक्ट्रॉनिक रूप में स्वीकार किए जा सकेंगे।
- कोई व्यक्ति यदि जान-बूझकर सिस्टम के सोर्स-व कोड में गड़बड़ी करता है तो उसे तीन साल की कैद और दो लाख रुपये या दोनों का जुर्माना हो सकता है।
- निजी गोपनीयता और कानून का पूर्णतः ज्ञान होना जरूरी है।

17.10 सारबिंदु

विद्यार्थी मित्रो ! इस इकाई में आपने सार लेखन, डायरी लेखन, उद्घोषणा लेखन, फीचर लेखन, रिपोतार्ज लेखन, पटकथा लेखन, वेब पोर्टल लेखन के बारे में जाना।

आइये! इस इकाई की मुख्य मुख्य बातों को हम बिंदुओं के रूप में दुहरा लें –

किसी गद्यांश के मुख्य विचार या भाव को छोड़े बिना उसका संक्षेप लिखना सार कहा जाता है।

डायरी को दैनंदिनी भी कहते हैं, क्योंकि इसमें निजी जीवन में घटित होने वाली प्रतिदिन की घटनाओं का लेखा-जोखा होता है।

उद्घोषणा को अंग्रेजी में Annoncement कहा जाता है। विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों में उद्घोषणा की जाती है।

‘फीचर’ शब्द लैटिन के Feature से रुपान्तरित किया गया है जिसके कई अर्थ हैं। जैसे-आँख, कान, मुँह, आकृति, रुपरेखा इत्यादि। जिस प्रकार किसी वस्तु को उसके स्वरूप से, व्यक्तिको उसके व्यक्तित्व एवं चेहरे से पहचाना जाता है उसी प्रकार आजकल समाचार पत्र की पहचान उसमें प्रकाशित फीचर से होने लगी है। फीचर के बिना समाचार-पत्र निष्प्राण हो जाता है।

रिपोर्ताज रिपोर्ट मात्र नहीं है, इसमें लेखक का हृदय, उसकी अनुभूतियाँ, पैनी निगाहें, संवेदनशील व्यक्तित्व तथा अंतः सौंदर्य निखर उठते हैं। अतः जिस व्यक्ति में उपर्युक्त उपादान नहीं होते, वह सिर्फ संवाददाता हो सकता है, रिपोर्ताज का लेखक नहीं।

किसी कहानी को उसकी मूल स्थिति के आधार पर फिल्मांकित नहीं किया जा सकता। कहानी को दृश्य-श्रव्य माध्यम से अभिव्यक्त करने के लिए पटकथा लिखी जाती है। पटकथा लिखने के लिए मूल कथा तथा संवादों में यथोचित परिवर्तन करने पड़ते हैं। इसके अतिरिक्त कथा या कहानी के दृश्यों को फिल्मांकित करने के लिए विभिन्न लोकेशनों, कोणों की योजना भी पटकथा में शामिल होती है।

17.11 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

● विस्तृत उत्तर वाले प्रश्न :

- (1) सारलेखन से तात्पर्य समझाते हुए सारलेखक के गुण बताईए।
- (2) उद्घोषणा का अर्थ बताते हुए उद्घोषणा लेखन के लिए आवश्यक निर्देश बताईए।
- (3) फीचर लेखन किसे कहते हैं ? फीचर लेखन के लिए आवश्यक निर्देश बताईए।

● टिप्पणी :

- (1) डायरी लेखन कला
- (2) फीचर के प्रकार
- (3) रिपोर्ताज लेखन का महत्व
- (4) पटकथा लेखन की प्रविधि
- (5) डायलॉग लेखन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

● रिक्तस्थानों की पूर्ति

- (1) पटकथा जजजजके लिए लिखी जाती है। (सिनेमा, नृत्य, चित्रकला)
- (2) पटकथा को अंग्रेजी में जजज कहते हैं। (स्क्रिप्ट राइटिंग, स्क्रीन राइटिंग, स्क्रीन टच)
- (3) पटकथा के मूल तत्व जजज जैसे हैं। (दृश्य, पशु, संगीत)
- (4) जजजजहिन्दी का पहला रिपोर्ताज है। (लक्ष्मीपुरा, लक्ष्मीनगर, लक्ष्मीशंकर)

(5) रिपोर्ताज का सम्बन्ध जजजजसे है. (Reporting, Repowering, Repetition)

• सही अथवा गलत :

(1) उद्घोषणा लेखन कहानी में किया जाता है. (X)

(2) शैचकता उद्घोषणा का गुण है. ()

(3) डायरी को दैनंदिनी भी कहते हैं. ()

(4) डाक्यूड्रामा लेखन नृत्य के लिए होता है. (X)

(5) पटकथा में भाषा का ज्ञान अनिवार्य नहीं. (X)

(6) वेब पोर्टल का संबंध तकनीकी से नहीं है. (X)

• जोड़ों का सुमेल

- | | |
|---------------|------------------------|
| (1) पटकथा | (1) घटना का विवरण |
| (2) डायरी | (2) कार्यक्रम के पूर्व |
| (3) रिपोर्ताज | (3) सिनेमा |
| (4) उद्घोषणा | (4) तारीख (दिनांक) |
| | (5) नाटकीयता |

17.12 उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. https://en.wikipedia.org/wiki/Creative_writing
2. <https://www.himalayanwritingretreat.com/types-of-creative-writing/>



डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी
'ज्योतिर्मय' परिसर, सरखेज-गाँधीनगर हाईवे, छारोड़ी, अहमदाबाद-382481
E-mail : hindi@baou.edu.in | website : baou.edu.in

बी. ए. हिंदी (अनिवार्य)

प्रश्नपत्र द्वितीय : एकांकी और अन्य गद्य विधाएँ और व्याकरण

कृपया यह फीडबैक फॉर्म भरकर उपर्युक्त पते पर 'हिंदी विभाग, स्कूल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़' के नाम अवश्य भेज दें. आपकी अमूल्य राय आपको दी जाने वाली स्वाध्याय सामग्री की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायक होगी. यदि आप चाहें तो अपनी पहचान गुप्त रख सकते हैं, यानी नीचे 'नाम' और 'एनरोलमेंट नंबर' देना आवश्यक नहीं है. अन्य सभी कॉलम अवश्य भरें.

नाम : _____ एनरोलमेंट नंबर : _____

लिंग : स्त्री ☐ पुरुष ☐ ट्रांसजेंडर ☐ आयु वर्ग : 18-30 ☐ 31-40 ☐ 41-50 ☐ 50 से ऊपर ☐

नागरिकता : प्रदेश _____ देश _____

प्रवेश वर्ष : _____ आजीविका के लिए कार्यरत : हाँ ☐ नहीं ☐

कृपया अपनी राय नीचे दिए गए बिंदुओं के सामने सही खाने में सही (✓) का निशान लगाकर दें.

{अ – अच्छा; सा – सामान्य; ख – खराब}

	इकाई 1			इकाई 2			इकाई 3		
	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख
अध्ययन सामग्री पर्याप्त है									
भाषा सरल है									
विषय अच्छी तरह समझाती है									
आपके ज्ञान और कौशल को बढ़ाती है.									
इकाई के अंत में सारबिंदु अध्ययन दुहराने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.									
स्वमूल्यांकन के लिए पर्याप्त प्रश्नों का समावेश है.									
परीक्षोपायोगी प्रश्न पर्याप्त हैं									
अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हुई है.									

कृ.प.उ.

	इकाई 4			इकाई 5			इकाई 6			इकाई 7		
	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख
अध्ययन सामग्री पर्याप्त है												
भाषा सरल है												
विषय अच्छी तरह समझाती है												
आपके ज्ञान और कौशल को बढ़ाती है.												
इकाई के अंत में सारबिंदु अध्ययन दुहराने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.												
स्वमूल्यांकन के लिए पर्याप्त प्रश्नों का समावेश है.												
परीक्षोपायोगी प्रश्न पर्याप्त हैं												
अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हुई है.												

	इकाई 8			इकाई 9			इकाई 10		
	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख
अध्ययन सामग्री पर्याप्त है									
भाषा सरल है									
विषय अच्छी तरह समझाती है									
आपके ज्ञान और कौशल को बढ़ाती है.									
इकाई के अंत में सारबिंदु अध्ययन दुहराने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.									

स्वमूल्यांकन के लिए पर्याप्त प्रश्नों का समावेश है.									
परीक्षोपायोगी प्रश्न पर्याप्त हैं									
अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हुई है.									

	इकाई 11			इकाई 12			इकाई 13			इकाई 14		
	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख
अध्ययन सामग्री पर्याप्त है												
भाषा सरल है												
विषय अच्छी तरह समझाती है												
आपके ज्ञान और कौशल को बढ़ाती है.												
इकाई के अंत में सारबिंदु अध्ययन दुहराने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.												
स्वमूल्यांकन के लिए पर्याप्त प्रश्नों का समावेश है.												
परीक्षोपायोगी प्रश्न पर्याप्त हैं												
अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हुई है.												

आपकी सलाह या सूचना (यदि कोई हो तो) _____

યુનિવર્સિટી ગીત

સ્વાધ્યાય: પરમં તપ:

સ્વાધ્યાય: પરમં તપ:

સ્વાધ્યાય: પરમં તપ:

શિક્ષણ, સંસ્કૃતિ, સદ્ભાવ, દિવ્યબોધનું ધામ
ડૉ. બાબાસાહેબ આંબેડકર ઓપન યુનિવર્સિટી નામ;
સૌને સૌની પાંખ મળે, ને સૌને સૌનું આભ,
દશે દિશામાં સ્મિત વહે હો દશે દિશે શુભ-લાભ.

અભણ રહી અજ્ઞાનના શાને, અંધકારને પીવો ?
કહે બુદ્ધ આંબેડકર કહે, તું થા તારો દીવો;
શારદીય અજવાળા પહોંચ્યાં ગુર્જર ગામે ગામ
ધ્રુવ તારકની જેમ ઝળહળે એકલવ્યની શાન.

સરસ્વતીના મયૂર તમારે ફળિયે આવી ગહેકે
અંધકારને હડસેલીને ઉજાસના ફૂલ મહેકે;
બંધન નહીં કો સ્થાન સમયના જવું ન ઘરથી દૂર
ઘર આવી મા હરે શારદા દૈન્ય તિમિરના પૂર.

સંસ્કારોની સુગંધ મહેકે, મન મંદિરને ધામે
સુખની ટપાલ પહોંચે સૌને પોતાને સરનામે;
સમાજ કેરે દરિયે હાંકી શિક્ષણ કેરું વહાણ,
આવો કરીયે આપણ સૌ
ભવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ...
દિવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ...
ભવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ



DR. BABASAHEB AMBEDKAR OPEN UNIVERSITY

(Established by Government of Gujarat)

'Jyotirmay' Parisar,

Sarkhej-Gandhinagar Highway, Chharodi, Ahmedabad-382 481

Website : www.baou.edu.in | Email : office.scs@baou.edu.in



978-93-5598-845-4